इकाई-1 हिन्दी साहित्य : गद्य का उद्भव व विकास, कहानी एवं नाटक

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 गद्य साहित्य
1.4 हिन्दी गद्य की पृष्ठ भूमि
1.4.1 ब्रज भाषा में गद्य
1.4.2 खड़ी बोली में गद्य
1.5 हिन्दी गद्य का उद्भव व विकास
1.5.1 हिन्दी गद्य के उद्भव व विकास के कारण
1.5.2 प्रारम्भिक गद्य लेखन
1.5.3 अंग्रेजों की भाषा नीति
1.6 भारतेन्दु युग
1.7 द्विवेदी युग
1.8 प्रेमचन्द और उनके पश्चात्
5.9हिन्दीकहानीकाउद्भव
1 . 10हिन्दीकहानीकाविकास
1.11 सारांश
1.6 शब्दावली
1.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.14 उपयोगी पाठ्य सामग्री
1.15 निबंधात्मक प्रश्न

1.1प्रस्तावना

स्नातक प्रथम वर्ष के हिन्दी विषय प्रथम प्रश्न-पत्र खण्ड-1 के अन्तर्गत यह प्रथम इकाई है। इसमें हिन्दी गद्य के उद्भव विस्तार एवं विकास के विषय में चर्चा की गयी है। हिन्दी साहित्य इतिहास के आधुनिक युग से पूर्व का साहित्य मुख्यतः कविता में है। इससे पूर्व गद्य की कुछ रचनाएँ अवश्य

प्राप्त हुई हैं, लेकिन हिन्दी साहित्य परम्परा में उनका विशेष महत्व नहीं है गद्य का वास्तविक लेखन आधुनिक युग से हुआ, ऐसा क्यों हुआ तथा गद्य के विकास की स्थिति क्या रही, हम इस इकाई में इसी विषय पर विचार करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई में हिन्दी गद्य के उद्भव व विकास पर प्रकाश डाला गया है। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आपः

- गद्य एवं पद्य में अन्तर कर सकेंगे।
- हिन्दी गद्य के उद्भव व विकास के विषय में जान सकेंगे।
- ब्रज भाषा तथा खडी़ बोली के गद्य के सम्बन्ध में जानकारियाँ प्राप्त कर सकेंगे।
- अंग्रेजी शासन काल में भाषा सम्बन्धी विभिन्न दृष्टिकोणों को समझ सकेंगे।
- खडी़ बोली की प्रारम्भिक स्थितियों का उल्लेख कर सकेंगे।
- भारतेन्दु तथा द्विवेदी युग के गद्य साहित्य के उद्भव और विकास का उल्लेख कर सकेंगे।
- हिन्दी गद्य की कहानी के विषय में जान सकेंगे।
- हिन्दी कहानी के उद्भव की कथा को समझ सकेंगे।
- हिन्दी कहानी के क्रमिक विकास को जान सकेंगे।

1.3 *गद्यसाहित्य*

आपने अब तक अनेक उपन्यास कहानी और निबन्ध पढ़े होंगे, किन्तु क्या कभी आपने विचार किया है कि साहित्य की इन विधाओं का विकास कैसे हुआ? इस इकाई के अन्तर्गत हम इस विषय पर चर्चा करेंगे कि गद्य का उद्भव और विकास कैसे हुआ ? आपने कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, केशवदास आदि की रचनाएँ पढ़ी होंगी, इससे आपको अनुभव हुआ होगा कि कबीर, तुलसीदास, सूरदास और केशवदास की रचनाएँ उपन्यास और कहानी से भिन्न प्रकार की रचनाएँ हैं। साहित्य की भाषा में कबीर, तुलसीदास, आदि की रचनाओं को छन्दोबद्ध रचना या कविता कहा जाता है, जबकि उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि को गद्य। इस अन्तर को और अधिक स्पष्ट रूप में जानने के लिए आप कबीरदास की इन पंक्तियों को पढ़िए।

वकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल,
जो बकरी को खात है, तिनको कौन हवाल।।

अब नीचे दी गयी इन पंक्तियों की तुलना कबीरदास की उपरोक्त रचना से कीजिये। निम्नलिखित पंक्तियाँ डॉ0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल के निबन्ध कबीर और गाँधी से उद्धृत की गयी है।

''यदि कबीर अपनी ही कविता के समान सीधी सादी भाषा में उल्लिखित आदर्श हैं तो गाँधी उसकी और भी सुबोध क्रियात्मक व्याख्या, यदि प्रत्येक व्यक्ति इस विशद व्याख्या की प्रतिलिपि बन सके तो जगत का कल्याण हो जाय।"

उपरोक्त दोनों उदाहरणों की तुलना करने पर आप स्पष्ट रूप से जान जायेंगे कि भाषा के इन दो प्रयोगों में क्या भिन्नता है? छन्दोबद्ध कविता में गेयता तथा लय होती है, जबकि गद्य में भाषा व्याकरण के अनुरूप होती है। आरम्भ में समस्त संसार के साहित्य में काव्य रचना का प्रमुख स्थान था। भारत में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य इसी काव्य कला के अनुपम उदाहरण हैं। काव्य के अतिरिक्त नाटकों में काव्य भाषा का प्रयोग अधिक हुआ। प्रश्न यह कि आधुनिक युग से पहले गद्य की अपेक्षा कविता में ही रचना क्यों होती थी? उत्तर है कि कविता को गेयता, छन्दबद्धता और लय के कारण याद रखना सरल था। प्राचीन काल में मुद्रण कला का अभाव था, इसलिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी साहित्य को मौखिक परम्परा से आगे बढ़ाने में कविता भाषा सहायक थी। प्राचीन काल में गद्य में भी साहित्य रचना होती थी लेकिन इन रचनाओं की संख्या सीमित थी। उस युग में भावों की अभिव्यक्ति के लिए जहाँ काव्य रचना की जाती थी वहाँ सैद्धान्तिक निरूपण के लिए गद्य का प्रयोग होता था। इसका सबसे अच्छा उदाहरण संस्कृत साहित्य का लक्षण ग्रन्थ '' काव्य प्रकाश'' है जिसमें भावों को प्रकट करने के लिए कविता का प्रयोग हुआ है तो सिद्धान्त निरूपण के लिए संस्कृत गद्य का।

अब आपके मन में रह रहकर यह प्रश्न उत्पन्न हो रहा होगा कि आधुनिक युग में कविता की प्रमुखता होने पर भी गद्य में लेखन क्यों आरम्भ हुआ। इसके क्या कारण थे? आदि काल में परस्पर विचार- विनिमय के लिए एक भिन्न प्रकार की भाषा का प्रयोग होता था। यह सामान्य बोल-चाल की भाषा थी, जो कि कविता भाषा से भिन्न थी। भाषा के इसी रूप को गद्य कहा गया था। भाषा का यह रूप जो उसकी व्याकरणिक संरचना के सबसे अधिक निकट हो, गद्य कहलाता है, जबकि पद्य में व्याकरणिक नियमों की नहीं छन्द, लय और भावों की प्रधानता होती है। गद्य लेखन पूर्व था लेकिन मुद्रण प्रणाली के अस्तित्व में आने के पश्चात् ही प्रचलन में आया। आज सभी पत्र पत्रिकाओं और पुस्तकों के लेखन में इस गद्य भाषा का प्रयोग हो रहा है।

1.4हिन्दीगद्यकीपृष्ठभूमि

हिन्दी गद्य साहित्य का उद्भव और विकास कैसे हुआ? इस पर चर्चा करने के साथ-साथ ही हम अब यहाँ पर यह भी विचार करेंगे कि हिन्दी गद्य किस भाँति विकसित होकर वर्तमान स्वरूप को

प्राप्त हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व हिन्दी भाषा में गद्य रचनाएँ अधिक नहीं थी। उस समय ब्रजभाषा साहित्य की भाषा थी। जिसमें भाव-विचार की अभिव्यक्ति के लिए कविता भाषा का ही प्रयोग होता था लेकिन बोलचाल की भाषा गद्य थी। ब्रजभाषा के बोल-चाल के इस रूप का प्रयोग गद्य रचनाओं में होता था। हिन्दी गद्य विकास की दृष्टि से इन रचनाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए इन प्रारम्भिक रचनाओं के इस रूप से परिचय होना भी अनिवार्य है।

1.4.1 ब्रजभाषा गद्यः

जैसा कि आप जानते हैं कि विद्वानों की भाषा सामान्य जन की भाषा से भिन्न होती है। जिस समय ब्रजभाषा में कविता का सृजन हो रहा था, उसी समय जन सामान्य पारस्परिक बोल-चाल में ब्रजभाषा के गद्य रूप का प्रयोग करता था। लेकिन जब किसी संत महात्मा या कवि को अपने पंथ, सम्प्रदाय या मत के शुभ सन्देश सामान्य जनता तक पहुँचाने होते थे, वे अपनी कविता भाषा को छोड़कर ब्रजभाषा की बोल चाल की भाषा का ही प्रयोग करते थे। उनकी यही बोल चाल की भाषा धीरे-धीरे साहित्य की गद्य भाषा भी बनी। इसके साथ ही अनेक काव्य ग्रन्थों को सामान्य जनता तक पहुँचाने के लिए विद्वानों ने टीकाएं भी लिखीं, ये टीकाएं भी गद्य भाषा में होती थीं। इस युग की गद्य-रचना का एक उदाहरण दृष्टव्य है।

"सो वह पुरूष सम्पूर्ण तीर्थ स्थान करि चुकौ, अरू सम्पूर्ण पृथ्वी ब्राहमननि को दे चुको, अरू सहस्र जज्ञ कटि चुकौ, अरू देवता सब पूजि चुकौ, पराधीन उपरान्ति बन्धन नहीं, सुआधीन उपरान्त मुकति नाहीं, चाहि उपरान्त पाप नाहीं, अचाहि उपरान्त पुति नाहीं",(हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास- बाबू गुलाब राय -पृष्ठ 110)

उपरोक्त रचना अंश 'गोरख-सार' का गद्यांश है, जिसे संवत् 1400 की रचना माना जाता है। इसके अतिरिक्त महाप्रभु बल्लभाचार्य के पुत्र गोसाई विट्ठलनाथ जी ने ब्रज भाषा गद्य में 'श्रृगार मण्डन' लिखा, इनके बाद इनके पौत्र गोकुल नाथ ने ब्रजभाषा में चौरासी बैष्णव की वार्ता' तथा दो सौ बावन बैष्णवन की वार्ता'' लिखी, इनमें बैष्णव भक्तों की महिमा व्यक्त करने वाली कथाऐं लिखी हैं। इन सबकी गद्य भाषा व्यस्थित एवं बोल चाल रूप में हैं। इस भाषा का एक उदाहरण प्रस्तुत है।

''सो श्री नंदगाम में रहा हतो, सो खंडन, ब्राहमण शास्त्र प[illegible]ों हतो, सो जितने पृथ्वी पर मत हैं सबको खण्डन करतो, ऐसो वाको नेम हतो। याही से सब लोगन ने वाको नाम खण्डन पाखो हतो,''(हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)

इसी भाँति 1660 विक्रम संम्वत् के आस-पास भक्त नाभादास की ब्रजभाषा गद्य में लिखी 'अष्टयाम' नामक रचना प्रकाश में आयी, इसकी भाषा सामान्य बोलचाल की है। उस युग में ब्रजभाषा में गद्य की रचना कम ही होती थी। लेकिन इसका मुख्य कारण था। ब्रजभाषा में गद्य की क्षमता का विकास न हो पाना, क्योंकि ब्रजभाषा एक सीमित क्षेत्र में बोली जाती थी। इसलिए वह

ब्रज मण्डल के बाहर सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित नहीं हो पायी, जिससे इसमें गद्य का विकास उस तरह नहीं हो पाया जिस तरह से होना चाहिए था। इसी कारण खड़ी बोली ही गद्य भाषा को विकसित करने में अधिक सार्थक हुई।

1.4.2 खड़ीबोलीमेंगद्य

ब्रजभाषा गद्य भाषा की परम्परा आगे न बढ़ाने के कारण खड़ी बोली में गद्य का विकास होने लगा, इसका सबसे बड़ा कारण था खड़ी बोली का जन साधारण की भाषा होना, ब्रजभाषा के पश्चात् इस भाषा में साहित्य का सृजन होने लगा, चूँकि खड़ी-बोली का क्षेत्रफल बड़ा था। इसलिए यह धीरे-धीरे पद्य और गद्य भाषा बनने लगी। फिर तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों ने भी खड़ी बोली के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

14वीं शताब्दी में खड़ी बोली दिल्ली के आस पास की भाषा थी। इसलिए मुगलकाल में यह शासन और जनता की सम्पर्क भाषा बनी। चूँकि मुगलों की मातृ भाषा फारसी थी, इसलिए जब यह खड़ी बोली के सम्पर्क में आयी तो इसकी शब्दावली खड़ी बोली में प्रवेश करने लगी और इससे फारसी मिश्रित खड़ी बोली का जन्म हुआ, शिक्षित लोग इस भाषा को फारसी लिपि में लिखने लगे, तब इस नई शैली को हिन्दवी, रेख्ता और आगे चलकर उर्दू नाम दिया गया। कवियों ने इस भाषा में शायरी आरम्भ कर दी, चौदवीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने खड़ी बोली में रची गयी एक पहेली दृष्टव्य है-

एक थाल मोती से भरा, सबके ऊपर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।

अमीर खुसरों के पश्चात् खड़ी-बोली का विकास दक्षिण राज्यों के रचनाकारों ने किया। दक्खिनी हिन्दी के रूप में वहाँ 14 वीं शताब्दी से 18 वीं शताब्दी तक अनेक ग्रन्थों की रचनाऐं हुई, जिनमें गद्य रचनाओं का भी मुख्य स्थान है। ख्वाजा बन्दा नवाज़ गैसू दराज (1322-1433) शाह मीराँ जी (-1496) बुरहानुद्दीन जानम (1544-1583) और मुल्ला वजही जैसे साहित्यकारों ने काव्य रचनाओं के साथ गद्य ग्रन्थ भी लिखे। मुल्ला वजही ने 1631 ई0 में अपने प्रसिद्ध गद्य-ग्रन्थ ‘‘सब रस’’ की रचना की जिसका आरम्भ इस प्रकार से होता है-

‘‘नकल-एक शहर था। शहर का नाउं सीस्तान, इस सीस्तान के बादशाह का नाउं अक्ल, दीन और दुनिया का सारा काम उस तै चलता, उसके हुक्मवाज जरी कई नई हिलता........... वह चार लोकों में इज्जत पाए’’। (दक्खिनी हिन्दीः विकास और इतिहास- डॉ0 परमानन्द पांचाल)।।

इसी दक्खिनी हिन्दी का एक रूप खड़ी बोली भी थी । यो तो यह खड़ी बोली प्रारम्भ में कबीर, खुसरो, कवि गंग और रहीमदास की कविता की भाषा बन चुकी थी, लेकिन गद्य भाषा के

रूप में इसका प्रयोग अंग्रेज पादरी और अफसरों ने किया क्योंकि वे इस गद्य भाषा के माध्यम से जनता तक पहुँचता चाहते थे। सन् 1570 में मुगल बादशाह के दरबारी कवि गंग की प्रसिद्ध रचना ''चंद छन्द बरनन की महिमा'' में हिन्दी खडी़ बोली के जिस गद्य रूप के दर्शन होते हैं वह शिष्ट और परिष्कृत खडी़ बोली का गद्य है।

''इतना सुनके पातसाह जी श्री अकबर साह जी आध सेन सोना नरहा चारक को दिया। इनके डेढ़ सेर सोना हो गया, रास वचना पूरा भया, आम खास बारखास हुआ।''(हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल - पृष्ठ 281)

प्रस्तुत उदाहरण से ऐसा लगता है यह आज की शुद्ध परिमार्जित गद्य रचना है इसके पश्चात् खड़ी बोली ने साहित्य में अपना स्थान बना लिया और इससे तेजी से गद्य का विकास हुआा।

अभ्यास प्रश्न

आपने अब तक खडी़ बोली गद्य के प्रारम्भिक स्वरूप का परिचय प्राप्त किया। आपका ज्ञान जानने के लिए अब नीचे कुछ बोध प्रश्न दिये गये हैं। इनका उत्तर दीजिये। पाठ के अन्त में इन प्रश्नों के उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिये, इससे आपको ज्ञात होगा कि आपने ठीक उत्तर दिये हैं या नहीं।

(1) प्राचीन काल में साहित्य की रचना कविता में होती थीं, नीचे दिये कारणों में तीन सही और एक गलत है, गलत कारण के सामने (×) का निशान लगायें।

1. कविता में गेयता होती है, इससे इसको याद रखना सरल है।
2. प्राचीन काल में मुद्रण की आधुनिक प्रणाली का विकास नहीं हुआ था।
3. कविता अभिव्यक्ति का सबसे अक्षम रूप है।
4. प्राचीन काल में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाश नहीं होता था।

(2) भक्त नाभादास की ''अष्टयाम'' की रचना निम्नलिखित विक्रम सम्वत् में हुई। सही विकल्प के सामक्ष (√) चिह्न लगाए।

1. विक्रम सम्वत् 14400 में ( )
2. विक्रम सम्वत् 1500 में ( )
3. विक्रम सम्वत् 1660 में ( )
4. किक्रम सम्वत् 1700 में ( )

(3) नीचे कुछ पुस्तकों के नाम दिये गये हैं। उनके रचनाकारों का नाम लिखिए।

1. श्रृंगार मण्डन ( )
2. चौरासी बैष्णव की वार्ता ( )
3. सब रस ( )
4. चंद छन्द बरनन की महिमा ( )

1.5 हिन्दीग़द्यकाउद्भववविकास

खड़ी बोली गद्य का जो रूप वर्तमान में हमारे समक्ष है वह सहजता से विकसित नहीं हुआ, अपितु इसके इस रूप निर्माण में अनेक परिस्थितियों, संस्थाओं और व्यक्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिनकी चर्चा हम यहाँ करने जा रहे हैं।

1.5.1 हिन्दी गद्य के उद्भव व विकास के कारण

भारत में अंग्रजी साम्राज्य की स्थापना से यहाँ परिवर्तनों की जो श्रृंखला प्रारम्भ हुई, इसका भारतीय जनजीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा; इनमें से कई परिवर्तनों का सीधा-सीधा सम्बन्ध हिन्दी गद्य विकास से भी है। इनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिये जा रहा है। जैसा आप जानते हैं भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है। यहाँ हिन्दु, मुस्लमान, ईसाई सभी परस्पर मिलकर इस देश के विकास में अपना योगदान देते हैं। दक्षिण भारत के केरल और पूर्वी भारत के छोटे-छोटे राज्यों में ईसाई धर्म को मानने वालों की संख्या काफी है। आज से कई सौ वर्ष पूर्व ईसाई धर्म प्रचारक इस देश में आये। जब भारत पर अंग्रेजों का साम्राज्य हुआ तो इन ईसाई धर्म प्रचारकों ने अपनी गतिविधियाँ तेज कर दी, इनकी इन्ही गतिविधियों ने हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। चूँकि उस युग में जन सामान्य की बोल चाल की भाषा हिंदी गद्य थी। इसलिए इन धर्म प्रचारकों ने जनता में अपने धर्म का प्रचार करने के लिए छोटी-छोटी प्रचार पुस्तकों का निर्माण हिन्दी गद्य में किया। इसी क्रम में 'बाइबिल' का हिन्दी गद्यानुवाद प्रकाशित हुआ। जिससे हिंदी गद्य का काफी विकास हुआ।

नवीन □विष्कार- अंग्रेजों ने अपनी स्थति को और सुदृढ़ करने के लिए मुद्रण, यातायात और दूरसंचार के नये साधनों का प्रयोग किया। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने सन् 1844 से सन् 1856 तक इस देश में रेल और तार के साधन जोड़ दिये थे। यातायात के तेज संसाधनों से पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। अनेक पुस्तक प्रकाशित हुई जिससे हिन्दी गद्य लेखन का भी तीव्रता से विकास हुआ।

शिक्षा का प्रसार- सन् 1835 में लार्ड मैकाले ने भारत में शिक्षा प्रसार के लिए अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को जन्म दिया। इससे पूर्व इस देश की शिक्षा फारसी और संस्कृत के माध्यम से दी जाती थी। लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति से जहाँ-जहाँ भी शिक्षा दी जाती थी, उन स्कूल कॉलेजों में हिन्दी, उर्दू

पढ़ाने की विशेष व्यवस्था होती थी। सन् 1800 ई0 में स्थापित फोर्ट विलियम कॉलेज में सन् 1824 में हिन्दी पढ़ाने का विशेष प्रबन्ध हुआ। इससे पूर्व सन् 1823 में आगरा कॉलेज भी स्थापना हुई जिसमें हिन्दी शिक्षा का विशेष प्रबन्ध हुआ। इसने कॉलेजों में हिन्दी शिक्षा समुचित रूप से संचालित हो इसके लिए हिन्दी के अच्छे पाठ्यक्रम बनाये। इस शिक्षा विस्तार से भी हिन्दी गद्य का अच्छा विकास हुआ।

समाज सुधार □न्दोलन-19 वीं शताब्दी समाज सुधार की शताब्दी थी। इस सदी में भारतीय समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करने के लिए अनके आन्दोलन हुए। चूँकि समाज सुधार के आन्दोलनों को जिन नेताओं ने संचालित किया उन्हें जनता तक अपनी बात पहुँचाने के लिए भाषा की आवश्यकता पड़ी । 'ब्रहम समाज' के संस्थापक राजा राममोहन राय ओर आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने अपने-अपने मतों को समाज तक पहुँचाने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया वह हिन्दी भाषा थी। इसी से हिन्दी गद्य को एक नया रूप मिला।

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन- मुद्रण की सुविधा से पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा जिनके माध्यम से अनके गद्य लेखक लिखने लगे। 30 मई सन् 1826 ई0 में कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने 'हिन्दी' के प्रथम पत्र 'उदन्त-मार्तण्ड' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। यह हिन्दी का साप्ताहिक पत्र था। हिन्दी के पाठकों की संख्या कम हाने के कारण यह 4 दिसम्बर सन् 1827 को बन्द हो गया। इस पत्र के माध्यम से भी हिन्दी गद्य का विकास हुआ। 9 मई सन् 1829 को कलकत्ता से हिन्दी के दूसरे पत्र 'बंगदूत' का प्रकाशन हुआ। इसी तरह कोलकाता से प्रजामित्र' सन् 1845 में 'बनारस' से 'बनारस अखबार, सन् 1846 में 'मार्तण्ड' जैसे समाचार पत्रों का प्रकाशन हुआ। इन सबकी गद्य भाषा हिन्दी थी। इस तरह 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध में हिन्दी पत्र पत्रिकाओं की बाढ़ सी आ गयी। इन्ही पत्र पत्रिकाओं ने हिन्दी गद्य को और अधिक विकसित और परिमार्जित किया।

5.5.2 प्रारम्भिक गद्य लेखन

सन् 1803 ई0 में फोर्ट विलियम कालेज कलकत्ता के हिन्दी उर्दू प्राध्यापक जॉन गिलक्राइस्ट ने हिन्दी और उर्दू में पुस्तकें लिखवाने के लिए कई मुंशियों की नियुक्ति की । इन मुंशियों में 'नियाज' मुंशी इंशा अल्ला खाँ जैसे हिन्दी-उर्दू के विद्वान थे जिन्होंने हिन्दी गद्य को एकरूपता प्रदान की।

मुंशी सदासुखलाल नियाज- जन्म सं. 1803 मृत्यु सं. 1881 - दिल्ली निवासी मुंशी सदासुखलाल, फारसी के अच्छे कवि और लेखक थे। इन्होंने 'बिष्णु पुराण' के उपदेशात्मक प्रसंग को लेकर एक पुस्तक लिखीं इसके पश्चात् मुंशी जी ने श्रीमद्भागवत कथा के आधार पर 'सुख सागर' की रचना की जिसकी गद्य व्यवस्थित और निखरी हुई है। इनकी इस गद्य भाषा का एक उदाहरण निम्नवत् है-

''मैत्रेय जी ने कहा'' हे विदुर प्रचेता लोग साधु व बैष्णव की बड़ाई व परमेश्वर के मिलने के उपाय महादेव जी से सुनकर आनन्द पूर्वक बीच पढ़ने वाले स्रोतों को व करने ध्यान नारायण जी को लीन हुए। जब उनको इस हजार वर्ष हरि भजन करते बीत गये तब परमेश्वर ने प्रसन्न होकर दर्शन देके बड़े हर्ष से उन्हें वरदान दिया''(हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास- बाबू गुलाब राय - पृष्ठ 16)

मुंशी इंशा अल्ला खाँ- (जन्म सं0 1818- मृत्यु सं0 1857) मुर्शिदाबाद में जन्म लेने वाले मुंशी इंशा अल्ला खाँ उर्दू के बहुत अच्छे शायर थे। इन्होंने सम्वत् 1855 और सम्वत् 1860 के मध्य 'उदयभान चरित' या रानी केतकी की कहानी' लिखी। इनकी गद्य भाषा संस्कृत मिश्रित हिन्दी थी। इनकी गद्य भाषा का एक उदाहरण इस प्रकार है-

''कोई क्या कह सके, जितने घाट दोनों नदियों के थे। पक्के चाँदी के से होकर लोगों को हक्का-बक्का कर रहे थे। नवाड़े, बन्जरे, लचके, मोरपंखी, श्याम सुन्दर, राम सुन्दर और जितनी □ब की नावे थी। सुनहरी, रूपहरी, सजी-सजाई। कसी-कसाई सौ-सौ लचके खतियाँ फिरतियाँ थी''(हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास- बाबू गुलाब राय - पृष्ठ 114)

श्री लल्लू लाल जीः- (जन्म सं0 1820- मृत्यु सं0- 1882) आगरा निवासी लल्लू जी 'लाल' गुजराती ब्राहमण थे। फोर्ट विलियम कॉलेज में नियुक्ति के बाद इन्होंने सम्वत् 1860 में भागवत पुराण के दशम् स्कंध के आधार पर प्रेम सागर नामक ग्रन्थ का हिन्दी गद्य में सृजन किया। इसके अतिरिक्त इन्होंने ' वैताल पच्चीसी'' 'सिहासन बत्तीसी' ,'माधव विलास' तथा 'सभा विलास' नामक ग्रन्थ भी लिखे। इनकी गद्य भाषा का एक उदाहरण निम्नवत् है।

''महाराज इसी नीति से अनेक-अनेक प्रकार की बात कहते-कहते और सुनते-सुनते जब सब रात व्यतीत भई और चार घड़ी पिछली रही तब नन्दराय जी से उधौ जी ने कहा कि महाराज अब दधि मथनी की विरियाँ हुई, जो आकी आज्ञा पाऊँ तो युमना स्नान कर आऊँ''(प्रेम सागर)

पंडित सदलामिश्रः- (जन्म सम्वत् 1825-मृत्यु सं. 1904) बिहार निवासी पंडित सदलमिश्र ने अपनी पुस्तक ''नासिकेतोपाख्यान'' फोर्ट विलियम कॉलेज में लिखी। इनकी भाषा लल्लू जी लाल; की तरह ही ब्रज भाषा के शब्दों से ओत प्रोत है। जिसको एक उदाहरण प्रस्तुत है-

''इस प्रकार नासिकेत मुनि यम की पुरी सहित नरक वर्णन कर फिर जौन-जौन कर्म किये से जो भोग होता ठै सो ऋषियों को सुनाने लगे कि गौ, ब्राहमण माता -पिता , मित्र, बालक, स्त्री, स्वामी, वृद्ध, गुरू, इनका जो बध करते हैं वे झूठी साक्षी भरते, झूठ ही कर्म में दिन रात लगे रहते हैं।" (नासिकेतोपाख्यान)

1.5.3 अंग्रेजों की भाषा नीति

अंगेजों के भारत आगमन से पूर्व यहाँ की राज भाषा फारसी थी। लार्ड मैकाले के प्रयत्नों से सन् 1835 में अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार हुआ। सन् 1836 तक अदालतों की भाषा फारसी थी लेकिन अंग्रजों ने अपनी भाषाई नीति के अन्तर्गत सन् 1836 में सयुक्त प्रान्त के सदर बोर्ड अदालतों की भाषा 'हिन्दी' कर दी, लेकिन इसके पश्चात् अंग्रेजों की ओर से हिन्दी के विकास के लिए कुछ और नहीं किया गया। ऐसे समय में राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' और राजा लक्ष्मणसिंह के द्वारा हिन्दी के विकास के लिए जो कार्य किये गये वे उल्लेखनीय है-

राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द- (जन्म सं. 1823- मृत्यु सं. 1895) राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिन्दी शिक्षा विभाग में निरीक्षक के पद पर थे। ये हिन्दी के प्रबल पक्षधर थे इसलिए ये इसे पाठ्यक्रम की भाषा बनाना चाहते थे। चूँकि उस समय साहित्य के पाठ्यक्रम के लिए कोई पुस्तकें नहीं थी इसलिए इन्होंने स्वयं कोर्स की पुस्तकें लिखी और इन्हें हिन्दी पाठ्यक्रमों में स्थान दिलाया। इन्ही के प्रयत्नों से शिक्षा जगत ने हिन्दी को कोर्स की भाषा बनाया। इस बाद उन्होंने बनारस से 'बनारस अखबार निकाला। इसीके द्वारा राजा शिवप्रसाद ''सितारे हिन्द'' ने हिन्दी का प्रचार प्रसार किया। ये विशुद्ध हिन्दी में लेख लिखते थे। राजा जी ने स्वयं हिन्दी कोर्स लिए पुस्तके ही नहीं लिखी अपितु पंडित श्री लाल और पंडित बंशीधर को भी इस कार्य के लिए प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'वीरसिंह का वृतान्त' आलसियों का कोड़ा जैसी रचनाओं का सृजन भी किया। इनकी गद्य भाषा कितनी प्रभावशाली और सरल थी, इसका उदारहण ''राजा भोज का सपना'' का यह गद्यांश है।

''वह कौन सा मनुष्य है जिसने महाप्रतापी राजा भोज का नाम न सुना हो। उनकी महिमा और कीर्ति तो सारे जगत में व्याप्त रही है। बड़े-बड़े महिपाल उसका नाम सुनते ही काँप उठते और बड़े-बड़े भूपति उसके पाँव पर अपना सिर नवाते।''

राजा जी उर्दू के पक्षपाती भी थे। सन् 1864 में इन्होंने ''इतिहास तिमिर नाशक'' ग्रन्थ लिखा।

राजा लक्ष्मण सिंह (जन्म सम्वत् 1887- मृत्यु सम्वत् 1956)-आगरा निवासी राजा लक्ष्मणसिंह हिन्दी और उर्दू को दो भिन्न-भिन्न भाषाएँ स्वीकारते थे। फिर भी ये हिन्दी उर्दू शब्दावली प्रधान गद्य भाषा का प्रयोग करते थे। राजा लक्ष्मणसिंह ने कालिदास के 'मेघदूतम' अभिज्ञान शांकुन्तलम् और रघुवंश का हिन्दी अनुवाद किया। इन्होंने हिन्दी के गद्य विकास के लिए सन् 1841 में 'प्रजा हितैषी' पत्र भी सम्पादित और प्रकाशित किया। इनकी गद्य भाषा कितनी उत्कृष्ट कोटि की थी। प्रकाशित उदाहरण अभिज्ञान शाकुन्तलम् का यह अनुदित ग़द्य है-

अनसुया (हौले प्रियबंदा से) सखी मैं भी इसी सोच विचार में हूँ। अब इससे कुछ पूछूँगी। (प्रकट) महात्मा तुम्हारे मधुर वचनों के विश्वास में आकर मेरा जी यह पूछने को चाहता है क तुम किस

राजवंश के भूषण हो और किस देश की पुजा को विरह में व्याकुल छोड़ कर यहाँ पधारे हो? क्या कारण है?(हिन्दी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृष्ठ-300)

राजा शिवप्रसाद ‘सितारे हिन्द’ और राजा लक्ष्मण सिंह के अलावा कई अनेक प्रतिभाशाली लेखकों ने हिन्दी गद्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। जिन गद्य लेखकों ने अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद किये तथा कई पाठ्य पुस्तकें लिखी उनमें , श्री मथुरा प्रसाद मिश्र, श्री ब्रजवासी दास, श्री रामप्रसाद त्रिपाठी श्री शिवशंकर, श्री बिहारी लाल चौबे, श्री काशीनाथ खत्री, श्री रामप्रसाद दूबे आदि प्रमुख हैं। इसी अवधि में स्वामी दयान्द सरस्वती ने ‘‘सत्यार्थ प्रकाश’’ जैसे ग्रन्थ की हिन्दी गद्य में रचना करके हिन्दू धर्म की कुरीतियों को समाप्त किया। हिन्दी गद्य के विकास में जिन और लेखकों का नाम बड़े आदर से लिया जाता है उनमें से बाबू नवीन चन्द्र राय तथा श्री श्रद्धाराम फुल्नौरी हैं।

बाबू नवीन चन्द्र राय ने सन् 1863 और सन् 1880 के मध्य हिन्दी में विभिन्न बिषयों की पुस्तकें लिखी और लिखवाई, साथ ही ब्रहम समाज के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करने के लिए सन् 1867 में ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका का प्रकाशन किया। इसी तरह श्री श्रृद्धानन्द फुल्लौरी ने ‘सत्यामृत प्रवाह’, ‘आत्म चिकित्सा’, तत्वदीपक,‘धर्मरक्षा’, उपदेश संग्रह’ पुस्तकें लिखककर हिन्दी गद्य के विकास एक नयी दिशा प्रदान की।

अभ्यास प्रश्न

(4) हिन्दी गद्य विकास के कारण थे-

1. ईसाई धर्म प्रचारकों का योगदान ( )
2. मुद्रण प्रणाली का प्रारम्भ ( )
3. समाज सुधार आन्दोलन ( )
4. उपरोक्त सभी ( )

(5) ‘सत्यार्थ प्रकाशन’ की रचना की-

1. स्वामी विवेकानन्द ने ( )
2. राजा राय मोहन राय ने ( )
3. स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ( )
4. पंडित श्रद्धाराम फुल्लौरी ने ( )

(6) पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने कोलकाता से एक पत्र निकाला।

1. बंगदूत

2. मार्तण्ड
3. उदन्त मार्तण्ड
4. प्रजामित्र

(7) कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तलम् का हिन्दी में अनुवाद किया।

1. जान गिल क्राइस्ट ने ( )
2. राजा शिप्रसाद सितारे हिन्द ने ( )
3. राजा लक्ष्मण सिंह ने ( )
4. इंशा अल्ला खाँ ने ( )

(8) नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर हाँ या नहीं में दीजिये।

1. लल्लू लालजी फोर्ट विलियम कालेज से सम्बद्ध थे। हाँ/ नहीं
2. मुंशी सदासुख लाल ने ' प्रेमसागर' की रचना की हाँ/ नहीं
3. पंडित सदलामिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान की रचना की। हाँ/ नहीं
4. पंडित लक्ष्मण सिंस ने राजा भोज का सपना लिखा हाँ/ नहीं

लघु उत्तरीय

1. अंग्रेजों की भाषा नीति पर प्रकाश डालिये (मात्र तीन पंक्तियाँ)
2. हिन्दी गद्य के विकास में पत्र पत्रिकाओं की भूमिका पर प्रकाश डालिये (मात्र तीन पंक्तियों में)

1.6 भारतेन्दुयुग (सन्1868-1900)

19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक हिन्दी गद्य का व्यापक प्रसार हुआ और इससे साहित्य रचना के पर्याप्त अवसर प्राप्त हुए। इसी अवधि में महान साहित्यकार भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने हिन्दी साहित्य संसार में प्रवेश किया। जिनके प्रयत्नों से हिन्दी गद्य को नयी दिशा प्राप्त हुई। भारतेन्दु हरिशचन्द्र का जन्म 2 सितम्बर सन् 1850 ई. को बनारस के एक धनी परिवार में हुआ। इनके साहित्य प्रेमी पिता श्री गोपाल चन्द्र ने नहुष वध नाटक तथा कुछ कविताऐं लिखी। पिता के इन्ही संस्कारों की छाप भारतेन्दु हरिशचन्द्र पर पड़ी इसलिए इन्होंने मात्र ग्यारह वर्ष की अवस्था में काव्य रचना प्रारम्भ कर दी। विभिन्न भाषाओं के जानकार भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने युवावस्था में कई नाटक और काव्यों के लेखन के अतिरिक्ति 'कविवचन सुधा; हरिशचन्द्र मैगजीन' तथा हरिशचन्द्र चन्द्रिका' नामक पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया। इन्ही पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी के अनेक गद्य लेखक प्रकाश में आये। भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने उस युग तक प्रयुक्त खड़ी बोली के गद्य को परिमार्जित किया। साथ ही भारतेन्दु जी ने गद्य के विभिन्न क्षेत्रों नाटक, निबन्ध, समालोचना आदि विधाओं में नयी परम्परा का सूत्रपात

किया। 35 वर्ष की अल्पायु में हिन्दी साहित्य के लिए किये गये इनके कार्यों को हिन्दी गद्य विकास की दिशा में सर्वाकृष्ट कार्य स्वीकारा जाता है। ये अपनी भाषा के विकास के प्रबल पक्षधर थे। इनका यह मानना था।

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा शान के, मिटत न हिय को शूल''।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने ''वैदिक हिंसा, हिंसा न भवति'', प्रेम योगिनी, विषस्य विषऔषधम्, श्री चन्द्रावली नाटिका, भारत दुर्दशा, नील देवी और अंधेर नगरी जैसे मौलिक नाटक लिखे। इनके अनुदित नाटक हैं- ''विद्यासुन्दर, पाखण्ड विडम्बन, मुद्राराक्षस, सत्य हरिशचन्द्र, कर्पूर मंजरी, दुर्लभ बुंध आदि। स्वयं लेखन के अतिरिक्त भारतेन्दु ने अपने समय के अनेक लेखकों को गद्य लेखन के लिए प्रेरित किया । इससे लेखकों की एक ऐसी मंडली बनी जिसने भारतेन्दु की इस परम्परा को आगे बढ़ाया। भारतेन्दु की इसी परम्परा को ओग बढ़ाने वाले लेखकों में थे- पंडित प्रतापनारायण मिश्र, पंडित बालकृष्ण भट्ट, पंडित बद्री नारायण चौधरी प्रेमधन, श्री जगन्नाथ दास 'रत्नाकर', श्री बालमुकुन्द गुप्त, श्रीनिवासदास, श्री राधाकृष्ण दास आदि। इन सभी लेखकों ने गद्य की निबन्ध, नाटक, उपन्यास, एकांकी आदि विधाओं पर लेखनी चलायी।

पं0 प्रताप नारायण मिश्र ने कालि कौतुक व रूकमणि परिणय, हठी हमीर और गौ संकट जैसे नाटकों का सृजन किया। इसके अतिरिक्त पेट, मुच्छ, दान, जुआ आदि विषयों पर निबन्ध लिखे। इसके अतिरिक्त ब्राहमण' पत्रिका का प्रकाशन कर हिन्दी गद्य विधा को आगे बढ़ाया। पंडित बालकृष्ण भट्ट इसी श्रखंला की दूसरी कड़ी थे, जिन्होंने सम्वत् 1934 में 'हिन्दी प्रदीप' मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया। इन्होंने विभिन्न विषयों पर निबन्ध प्रकाशित किये। पंडित भट्ट ने पदमावती, शिशुपाल वध, चन्द्रसेन', जैसे नाटक सौ अजान एक सुजान, नूतन ब्रहमचारी, जैसे उपन्यास और आँख, नाक, कान जैसे विषयों पर ललित निबन्ध लिखे। पंडित बद्रीनारायण चौधरी ने इसी युग में, 'आनन्द कांदविनी, मासिक और 'नीरद' जैसे साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया। भारत सौभाग्य' वीरांगना रहस्य जैसे नाटक लिखकर चौधरी जी ने हिन्दी गद्य विधा को एक नया रूप प्रदान किया। भारतेन्दु युग के जिन प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाओं की आज भी प्रशंसा की जाती है वे हैं, श्री बालमुकुद गुप्त , लाल श्रीनिवास दास, श्री राधाकृष्ण दास, श्री बालकुकुद गुप्त ने हिन्दी गद्य की निबन्ध विधा को अत्यधिक समृद्धि प्रदान की। इनकी शिवशम्भू के चिट्ठे प्रसिद्ध रचना है। लाल श्रीनिवास दास ने इसी अवधि में 'प्रह्लाद चरित्र, तप्ता संवरण, रणधीर प्रेम मोहनी, संयोगिता स्वयंवर जैसे नाटक और 'परीक्षा- गुरू जैसा उपन्यास लिखा। श्री राधाकृष्णदास इस युग के प्रसिद्ध नाटकार थे। जिन्होंने दुःखिनी बाला, 'महारानी पदमावती, महाराणा प्रताप' सतीप्रताप जैसे नाटक तो 'निस्सहाय हिन्दु' जैस उपन्यास की रचना की।

भारतेन्दु युग के इन रचनाकारों के साहित्य के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि इन्होंने हिन्दी गद्य के विकास के लिए नाटक, निबन्ध , उपन्यास, आदि सभी विधाओं में साहित्य की सर्जना की। राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण इन लेखकों ने मौलिक साहित्य के अतिरिक्त अनेक अनुवाद भी किये। भारतेन्दु युग में जहाँ हिन्दी गद्य साहित्य को एक नयी दिशा मिली। वहाँ भाषाई संस्कार भी मिला।

अभ्यास प्रश्न

(9) भारतेन्दु हरिशचन्द्र के पिता का नाम था-

1. पंडित प्रतापनारायण मिश्र
2. चौधरी ब्रदीनारायाण
3. श्री गोपाल चन्द्र
4. श्री राधा कृष्ण दास

(10) भारतेन्दु युग में निम्नलिखित विधा का विकास हुआ।

1. निबन्ध गद्य विधा का।
2. नाटक गद्य विधा का।
3. उपन्यास गद्य विधा का।
4. उपरोक्त समस्त गद्य विधाओं का।

(11) भारतेन्दु हरिचन्द्र ने हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए प्रकाशित की।

1. ब्राह्मण पत्रिका
2. कविवचन सुधा पत्रिका
3. हिन्दीप्रदीप पत्रिका
4. आनन्द कादंवनी

(6) नीचे दी गयी रचनाओं के समक्ष उनके लेखकों के नाम लिखिए।

1. नीलदेवी -
2. हठी हमीर -
3. शिशुपाल वध -
4. संयोगिता स्वयंवर -

1.7 द्विवेदीयुग (सन्1900-1920)

पूर्व में हम यह चर्चा कर चुके हैं कि भारतेन्दु हरिचन्द्र जैसे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति से प्रेरणा प्राप्त कर अनेक लेखकों ने हिन्दी गद्य को समृद्ध किया। इस मंडली ने हिन्दी साहित्य के अनेक अध्येता और हिन्दी गद्य विकास और प्रचार के लिए अनेक मौलिक और अनुदित ग्रन्थ तैयार किये। इतना सब कुछ होने पर भी इस युग के गद्य लेखकों की गद्य भाषा में कई त्रुटियाँ मिलती हैं। इन कमियों को दूर करने के लिए जिस प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार ने अपनी लेखनी उठाई उन्हें साहित्य संसार पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम से जानता है। इन्होंने अपनी साहित्यिक पत्रिका ‘सरस्वती’ के माध्यम से हिन्दी भाषा का परिमार्जन किया।

हिन्दी की प्रसिद्ध पत्रिका ‘सरस्वती’ का प्रकाशन इंडियन प्रेस इलाहाबाद द्वारा सन् 1900 से प्रारम्भ किया गया। इस पत्रिका ने सन् 1903 से सन् 1920 तक आचार्य महावीर द्विवेदी के सम्पादकत्व में जितनी प्रतिष्ठा प्राप्त की उतनी अन्य सम्पादकों के सम्पादकत्व में नहीं। ‘सरस्वती’ पत्रिका ने उस समय राष्ट्रीय वाणी को दिशा देने के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश कर यह सिद्ध किया कि हिन्दी भाषा में भी कठिन से कठिन विषयों को प्रस्तुत करने की क्षमता है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित इस पत्रिका ने हिन्दी को गद्य की सभी विधाओं से सम्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। तथा इसमें व्याप्त अनगढ़पन और अराजकता को समाप्त कर इसे एक सुन्दर और सुगढ़ भाषा में प्रस्तुत किया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1861 तथा मृत्यु 1938 में हुई थी। ये एक कवि होने के साथ-साथ एक निबन्धकार और समालोचक भी थे। इनका एक और सबसे बड़ा कार्य यह था कि इन्होंने ‘सरस्वती’ में प्रकाशन के लिए आने वाली रचनाओं की भाषा को सुधार कर उसे शुद्ध और एक रूप किया। आचार्य द्विवेदी की इच्छा थी कि खड़ी बोली हिन्दी अपना मानक रूप ग्रहण करें क्योकि इसके बिना किसी महान साहित्य की रचना करना सम्भव नहीं।

द्विवेदी जी ने उस युग की राष्ट्रीय चेतना और नव जागरण की भावना को पूर्ण आत्मसात किया। उन्होंने साहित्य के मध्य युगीन आदर्शों का विरोध तथा रीतिकालीन भाव बोधों और कलारूपों को अस्वीकार किया। इन्होंने अपने युग के साहित्यकारों से साहित्य को समाज से जोड़ने के लिए निवेदन किया। इन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि किसी भी देश की उन्नति अगर देखनी हो तो उस देश के साहित्य को अवलोकन करना चाहिए। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने ‘सरस्वती’ के माध्यम से प्रेमचन्द, मैथलीशरण गुप्त, माधव मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, नाथूराम शर्मा, शंकर, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्री पद्मसिंह शर्मा और अयोध्या सिंह उपाध्याय ‘‘हरिऔध’ के साहित्य को समाज तक पहुँचाया।

द्विवेदी ने गद्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य लिखा गया। इस युग में निबन्ध, नाटक , उपन्यास, कहानी, आलोचना जैसी गद्य विधाओं ने अपना स्वतन्त्र रूप, ग्रहण किया जिनके माध्यम से अनेक साहित्यकार और रचनाएँ प्रकाश में आयीं। इसी काल में कहानी, उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द, नाटक के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद, निबन्ध के क्षेत्र में बालमुकुन्द गुप्त, सरदार पूर्णसिंह, रामचन्द्र शुक्ल तथा आलोचना के क्षेत्र में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ऐतिहासिक कार्य किये। इसके साथ ही इस काल में जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण या यात्रा वृतान्त जैसी कई नयी गद्य विधाओं में भी लेखन कार्य प्रारम्भ हुआ।

नाटक- हिन्दी नाटकों का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिचन्द्र ने अनेक नाटक लिख कर किया। भारतेन्दु युग के प्रायः सभी लेखकों ने नाटक लिखे। इसी का प्रभाव द्विवेदी युग पर भी पड़ा और उस युग में भी कई नाटक लिखे गये। इस युग में अंग्रेजी, बंगला और संस्कृत के नाटक अनुदित होकर हिन्दी में आये। अनुदित नाटकों में बंगला नाटककार द्विजेन्द्रलाल राय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, गिरिश बाबू, विद्या विनोद, अंग्रजी नाटकार, शेक्सपियर, संस्कृत के नाटककार, कालिदास, भवभूति आदि नाटककारों के नाटकों के हिन्दी अनुवाद प्रकाश में आये। मौलिक नाट्य लेखन में पंडित किशोरीलाल गोस्वामी- चौपट चेपट, और मयंक मंजरी, अयोध्या प्रसाद उपाध्याय ‘हरिऔध’- रूक्मणी परिणय और प्रधुम्न विजय बाबू शिवनन्दन सहाय सुदमा नाटक, जैसे नाटक लिखे गये, ये सभी सामान्य नाटक थे जिनपर फारसी थियेटर का प्रभाव पड़ा, लेकिन साहित्यक दृष्टि से ये उच्चकोटि के नाटक नहीं थे। नाटाकों के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद ने उच्च कोटि का कार्य किया जो कि उच्चकोटि की साहित्यकता से ओत प्रोत हैं।

उपन्यास- उपन्यास आधुनिक युग का महाकाव्य कहलाता है। हिन्दी में जैसे ही गद्य का विकास हुआ, उपन्यास विधा भी अस्तित्व में आयी। भारतेन्दु युग से पूर्व श्रृद्धाराम फुल्लौरी ने ‘भाग्यवती’ उपन्यास लिखकर हिन्दी में उपन्यास विधा का प्रारम्भ किया। इसके बाद भारतेन्दु युग में लाला श्री निवासदास ने ‘परीक्षा गुरू’ उपन्यास की रचना की। भारतेन्दु युग में श्री राधाकृष्ण दास का ‘निःसहाय हिन्दु’ पंडित बालकृष्ण भट्ट का ‘नूतन ब्रह्मचारी’ (सन् 1892) श्री लज्जाराम शर्मा का ‘स्वतन्त्र रमा और परतन्त्र लक्ष्मी’ (सन् 1899) और धूर्त रसिकलाल, (सन् 1907) जैसे उपन्यास काफी लोकप्रिय हुए। द्विवेदी युग के उपन्यास कारों में सबसे समादृत श्री देवकीनन्दन खत्री हैं। जिन्होंने ‘चन्द्रकान्ता’ और चन्द्रकान्ता सन्नति’ जैसे ऐयारी और तिलस्मी उपन्यासों के माध्यम से जिस गद्य भाषा का प्रयोग किया, वह उर्दू हिन्दी मिश्रित भाषा है। द्विवेदी युग में पंडित किशोरी लाल गोस्वामी ने करीब छोटे-छोटे 65 उपन्यास लिखे। साथ ही इन्होंने ‘उपन्यास’ नामक एक मासिक पत्र भी निकाला। इनके उपन्यासों में ‘चपला’ ‘तारा’ तरूण, तपस्विनी, रजिया वेग़म, लीलावती, लवंगलता आदि उपन्यास प्रसिद्ध हैं। इसी युग में ‘हरिऔध’ जी ने ‘ठेठ हिन्दी का ठाठ’, और अधखिला फूल, लज्जाराम मेहता ने हिन्दु धर्म, आदर्श दम्पत्ति, बिगड़े का सुधार,आदि उपन्यास लिखे।

कहानी- वैसे तो भारत में कहानी ‘कथा’ के रूप में आदिकाल से ही चली आ रही थी। किन्तु जिसे वर्तमान की कहानी कहा जाता है। उसका यह स्वरूप काफी नहीं है। वैसे तो समीक्षक मुंशी इंशा अल्ला खाँ की लिखी ‘‘रानी केतकी की कहानी’’ को हिन्दी की प्रथम कहानी के पद पर विभूषित करते हैं लेकिन इसमें वर्तमान की कहानी के स्वरूप का अभाव है। इसके पश्चात् राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने ‘राजा भोज का सपना’ की रचना की, लेकिन ये सभी कहानी लेखन के छोटे प्रयास थे। हिन्दी कहानी की रचना का प्रारम्भ बीसवीं शदी के प्रथम दशक में हुआ। जबकि हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद ने कहानी लिखना प्रारम्भ किया। सन् 1911 में प्रसाद जी की ग्राम कहानी प्रकाशित हुई तो सन् 1915 में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की प्रसिद्ध कहानी ‘‘उसने कहा था’’ का प्रकाशन हुआ। सन 1915-16 से पूर्व मुंशी प्रेमचन्द ने उर्दू में कई कहानियाँ लिखी। इस तरह द्विवेदी युग में जिन कहानीकारों ने कहानियाँ लिख उनमें श्री विश्म्भर नाथ शर्मा, कौशिक, श्री सुदर्शन, श्री राधिका रमण प्रसाद सिंह, श्री जी.पी0 श्रीवास्तव, आचार्य चतुरसेन, आदि कहानीकार मुख्य हैं।

निबन्ध और समालोचना- निबन्ध और समालोचना हिन्दी गद्य की अभिन्न गद्य विधाएँ हैं। जिनका विकास भारतेन्दु युग से होने लगा था। भारतेन्दु युग के निबन्धों में जहाँ राष्ट्र और समाज के प्रति चिन्ता व्यक्त की गयी, वहाँ इनमें तीखा व्यंग्य और विनोद भी दिखाई दिया। द्विवेदी युग के निबन्धकारों में श्री बालमुकुन्द गुप्त ने इसी शैली को अपनाकर अपने निबन्धों को चर्चित किया। इनकी प्रसिद्ध रचना ‘‘शिवशम्भू का चिट्ठा’’ इसी शैली के निबन्धों से ओत प्रोत कृति है। इनके अतिरिक्त, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, पंडित माधव मिश्र, सरदार पूर्णसिंह, बाबू श्याम सुन्दरदास, पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, बाबू गुलाब राय, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्विवेदी युग के ही निबन्धकार हैं। जिनकी निबन्ध भाषा और परिमार्जित है।

द्विवेदी युग में ही समालोचना का आरम्भ हुआ। वैसे इसका सूत्रपात भारतेन्दु काल में हो चुका था। इसकी सूचना इमें ‘आनन्द कादंबिनी’ से मिलती है। जिसमें कि लाला श्रीनिवास दास के नाटक ‘संयोगिता स्वयंवर’ की विशद आलोचना प्रकाशित हुई थी। किन्तु समालोचना का वास्तविक प्रारम्भ द्विवेदी युग से हुआ। इसी युग में आलोचना के सैद्धान्तिक पक्ष से सम्बन्धित कई लेख प्रकाशित हुए। वैसे भारत में समीक्षा की काई परम्परा नहीं थी यहाँ के विद्वान समीक्षा के नाम पर किसी भी कृति के गुण दोषों पर ही प्रकाश डालते थे लकिन द्विवेदी युग में ही इसका आरम्भ हुआ। इस युग की प्रथम समीक्षा कृति महावीर प्रसाद द्विवेदी की ‘कालिदास की निरंकुशता’ थी। जिसमें उन्होंने लाल सीताराम बी0ए0 के अनुवाद किये नाटकों के भाषा तथा भाव सम्बन्धी दोष बड़े विस्तार से प्रदर्शित किये। इस युग में आचार्य द्विवेदी के अतिरिक्त जिन अन्य लेखकों ने समीक्षा साहित्य को गतिप्रदान की उनमें मिश्र बन्धु, बाबू श्याम सुन्दर दास, पदम सिंह शर्मा, डॉ0 पीताम्बर दत्त बडथ्वाल, श्री कृष्ण विहारी मिश्र, बाबू गुलाब राय जैसे समीक्षक है। लेकिन समीक्षा के क्षेत्र में

जो युगांतकारी कार्य आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया उसे द्विवेदी युगीन कोई दूसरा समीक्षक नहीं कर सका।

अभ्यास प्रश्न

(13) हिन्दी भाषा और साहित्य को नई दिशा देने वाली पत्रिका 'सरस्वती' के सम्पादक थे।

1. बाबू गुलाबराय
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
3. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
4. बाबू श्याम सुन्दरदास

(14) द्विवेदी जी के साहित्य में निम्नलिखित चार प्रवृत्तियों में से एक सही नहीं है।

1. पद्य और गद्य की भाषागत एकता
2. राष्ट्रीय भावना और नवजागरण को प्रोत्साहन
3. रीतिकालीन भावबोध का समर्थन
4. समाज के अनुकूल साहित्य रचने की प्रेरणा

(15) नीचे कुछ रचनाओं के नाम दिये गये हैं। इनके रचना कारों के नाम लिखिये।

1. ठेठ हिन्दी का ठाठ
2. ग्राम
3. तरूण तपस्विनी
4. प्रेमा

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग के निबन्धों की दो भिन्नताएँ बताइए।
4. द्विवेदी युग के संन्दर्भ में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका का विवेचन चार पंक्तियों में कीजिये।

1.8 प्रेमचन्दऔरउनकेपश्चात्

द्विवेदी के पश्चात् जिन साहित्यकारों ने गद्य साहित्य को नयी दिशा प्रदान की, मुंशी प्रेमचन्द भी उनमें से एक हैं। मुंशी प्रेमचन्द ने यद्यपि लेखन का कार्य द्विवेदी युग से ही आरम्भ कर लिया था लेकिन इनकी रचनाओं में एक नवीनता के दर्शन होते हैं। इसीलिए इनकी उपन्यास और कहानी विधाओं से एक नये युग का प्रारम्भ होता है। प्रेमचन्द ने इस युग में कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध

और जीवनियाँ लिखी। इनकी इन सभी विधाओं में समाज और दशा की वास्तविक स्थिति के दर्शन होते हैं। प्रेमचन्द ने अपने जीवन में लगभग 300 कहानियों की रचना की। इनकी ये सभी कहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में संकालित हैं। इनमें से ईदगाह, कफन, शंतरंज के खिलाड़ी, पंचपरमेश्वर, अलग्योझा, बड़े घर की बेटी, पूस की रात', नमक का दरोगा, ठाकुर का कुआँ, श्रेष्ठ कहानियाँ हैं।

उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द उपन्यास सम्राट कहलाते हैं। इस विधा में इन्होंने देश की सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। इनके रंगभूमि, कर्मभूमि, सेवासदन, गबन जैसे उपन्यास देश की इन्ही समस्याओं को उजागर करते हैं। प्रेमचन्द के इस युग में उपन्यास साहित्य को समृद्ध करने में जिन साहित्यकारों का योगदान रहा है उनमें जयशंकर प्रसाद, आचार्य चतुरसेन, विश्वम्भर नाथ शर्मा कौशिक, बेचेन पाण्डेय, इलाचन्द्र जोशी, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', भगवती प्रसाद वाजपेयी, भगवती चरण वर्मा, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' जैनेन्द्र अज्ञेय, यशपाल, नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अमृतलाल नागर मुख्य हैं। इसी तरह प्रेमचन्द के समकालीन जिन कहानीकारों ने हिन्दी कहानी को एक नयी दिशा प्रदान की, उनमें उपरोक्त उपन्यासकारों के साथ-साथ अमृराय, मन्मथनाथ,गुप्त, रांगेय राघव, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, मार्कण्डेय, उषा प्रियवंदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोवती का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

प्रेमचन्द युग के नाटकों में जयशंकर प्रसाद के नाटय आदर्शवादी नाटक हैं,। इसलिए जयशंकर प्रसाद को इस युग का युग प्रवर्तक नाटककार माना जाता है। इनके ऐतिहासिक नाटकों में राष्ट्रीय चेतना और भारतीय संस्कृति की झलक सर्वत्र दिखायी देती है। कामना, जनमेजय का नाग यज्ञ, राजश्री, विशाखा, अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चन्द्र गुप्त और ध्रुवस्वामिनी इनके बड़े और महत्व वाले नाटक हैं। जयशंकर प्रसाद के अतिरिक्त इस युग के अन्य नाटककारों में प्रमुख हैं श्री जगदीश चन्द्र माथुर- कोणार्क, पहला राजा, शारदीय, मोहन राकेश- आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, और आधे अधूरे, इनके अतिरिक्त हरिकृष्ण प्रेमी, उदयशंकर भट्ट, गोविन्द बल्लभ पन्त, लक्ष्मी नारायण मिश्र, सेठ गोविन्द दास, जगन्नाथ दास मिलिन्द, लक्ष्मी नारायण लाल, विष्णु प्रभाकर, ब्रजमोहन शाह, रमेश बक्षी, मुद्राराक्षस, इन्द्रजीत भाटिया भी उच्चकोटि के नाटकार हैं।

प्रेमचन्द युग में नाटकों के अतिरिक्त एकांकी भी लिखे गये। जिन्हें उपरोक्त नाटकारों के अतिरिक्त कुछ एकांकीकारों में डॉ0 रामकुमार वर्मा का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। पृथ्वीराज की आँखें, रेशमी राई, कौमुदी महोत्सव, राजरानी सीता इनके प्रसिद्ध एकांकी हैं। प्रेमचन्द के युग में नाटक, उपन्यास, काहनी, एकांकी, के अतिरिक्त निबन्ध, आलोचना, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण आदि गद्य विधाओं की भी पर्याप्त प्रगति हुई। इस युग के निबन्धकारों में आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, बाबू गुलाब राय, वासुदेव शरण अग्रवाल सदगुरूशरण अवस्थी, शांतिप्रिय द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ0 नगेन्द्र, विद्यानिवास मिश्र, कुवेरनाथ राय, विष्णुकान्त शास्त्री, आदि निबन्धकार

मुख्य हैं। प्रेमचन्द जी के युग में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जिस समालोचना साहित्य का श्री गणेश किया उसी को आगे ब[illegible]मे में आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी, डॉ0 नगेन्द्र, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, डॉ0 देशराज, डॉ0 राम विलास शर्मा, शिवदान सिंह चौहान, नामवरसिंह, डॉ0 आनन्द प्रकाश दीक्षित की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

प्रेमचन्द और उनके बाद के साहित्य पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस युग के साहित्य पर युगीन परिस्थितियों का प्रभाव पड़ा। इस काला की रचनाओं में जहाँ लेखकों ने सामाजिक समस्याओं पर अपनी गहरी दृष्टि डाली वहाँ मनोवैज्ञानिक समस्याओं को भी साहित्य में स्थान दिया। इस युग के गद्य साहित्य में देश की राष्ट्रीय चेतना का प्रभाव भी पड़ा। यही नहीं अन्तराष्ट्रीय परिवर्तनों के प्रभाव से भी इस काल का साहित्य प्रभावित रहा। सन् 1947 में जब भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई और रूस में समाजवाद का उद्भव व उदय हुआ तो इस काल के गद्य साहित्य में प्रगतिवाद ने प्रवेश किया। इस काल के साहित्य पर पश्चिम की वैज्ञानिक प्रगति का भी प्रभाव पड़ा । इसी के फलस्वरूप गद्य की नयी-नयी विधाओं ने जन्म लिया। यात्रावृत्त, जीवनी, डायरी, आत्मकथा, रिपार्ताज जैसी नवीन गद्य विधाएँ इसी के परिणाम हैं।

1.9हिन्दीकहानीकाउद्भव

कहानी शब्द हमारे लिए अपरचित शब्द नहीं है, क्योंकि बचपन में हम जिसे कथा कहते थे, कहानी उसी कथा का साहित्यिक रूप है। इस कहानी को हमने कभी दादी-नानी के मुख से लोक कथा के रूप में सुना तो कभी पण्डित जी के मुख से धार्मिक कथा के रूप में, ये सभी राजा रानी की कहानियाँ, पशु पक्षियों की कहानियाँ, देवताओं और राक्षसों की कहानियाँ, चमत्कारों और जादूटोनों की कहानियाँ, भूत प्रेतों की कहानियाँ, मूर्ख और बुद्धिमानों की कहानियाँ वर्तमान की कहानियाँ कर पुरातन स्वरूप थीं, जिन्हें लोग बड़े चाव से सुनते और सुनाते थे। इनके अतिरिक्त, पुराण, रामायण, महाभारत, पन्चतंत्र, बेताल पच्चीसी, जातक कथाएँ आदि कई प्राचीन ग्रन्थ इन कहानियों का आदि स्रोत रहे हैं। इन कहानियों को पढ़ने-सुनने से जहाँ जन सामान्य से लेकर विद्वानों का मनोरंजन होता था, वहाँ इनके माध्यम से अनके शिक्षाएँ तथा उद्धेश्य प्राप्त होते थे। इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि इन्हें एक ही साथ कई घंटों और दिनों तक सुना जा सकता है। जिन्हें बार-बार सुनने पर नीरसता की अपेक्षा और अधिक सरसता प्राप्त होती है। ये सभी कहानियाँ हमें परम्परा से प्राप्त हुई, इनमें अतिसंख्य कहानियाँ कल्पना पर आधारित होती हैं, लेकिन कहीं-कहीं इन कहानियों में ऐतिहासिक तथ्यों को भी उजागर किया जाता है। ये ही कहानियाँ वर्तमान कहानी का प्राचीन स्वरूप है।

प्राचीन कहानियाँ घटना प्रधान होती थी, जिस घटना के माध्यम से लेखक या वक्ता अपने उद्धेश्य की पूर्ति करते थे। इसके लिए वे कहानियों की घटनाओं को मनोइच्छित रूप देते थे। कहानी की रचना के लिए वे काल्पनिक, दैवीय, और चमत्कारी घटनाओं का आविष्कार करते थे। लेकिन

वर्तमान की कहानी पुरातन कहानी से एकदम भिन्न है। क्योंकि आज का कहानीकार कहानी की घटना को मानव के यथार्थ जीवन से जोड़ता है, कहानी लिखते एमय कहानीकार यह ध्यान रखता है कि जिस कहानी की वह रचना कर रहा है वह अस्वाभाविक न लगे। जिस चरित्र को वह प्रस्तुत कर रहा है, वह समाज के अन्दर क्रियाशील मानव की भाँति ही प्रतीत हो। वह उसके द्वारा ऐसे कार्य नहीं करा सकता जो मुनष्य के लिए असम्भव हो। पुरातन कहानियों के चरित्र ऐसे होते हैं जो असम्भव कार्य को कर देते है। लेकिन वर्तमान की कहानियाँ के पात्र अपने समय और परिस्थितियों के अनुकूल क्रियाशील होते हैं। आज समाज में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं जिसका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ रहा है, इसीलिए इसी साहित्य के गद्य रूप कहानी में भी काफी बदलाव आ रहे हैं। वर्तमान की हिन्दी कहानी का उद्भव 18 वीं सदी से लेकर 19 वीं शदी के मध्य में हुआ। कुछ विद्वान हिन्दी कहानी के प्रारम्भ के अन्तर्सूत्र भारत की प्राचीन कथा परम्परा से जोड़ते है तो कुछ कहानी विधा को पाश्चात्य साहित्य की देन मानते हैं। कुछ साहित्यधर्मी हिन्दी कहानी का उद्भव स्रोत्र गुणा[illegible] की वृहद कथा, कथा सरित सागर, पंचतंत्र कथाएँ, हिंतोपदेश जातक कथाओं से जोड़ते हैं तो कुछ विद्वान स्वामी गोकुल नाथ की चौरासी वैष्णवन की वार्ता को हिन्दी का प्रथम कहानी संग्रह मानते हैं, लेकिन ये कहानियाँ नही जीवनियाँ मात्र हैं।

1.10हिन्दीकहानीकाविकास

जैसा कि विद्वान स्वीकारते हैं कि खड़ी बोली हिन्दी में कहानी का आरम्भ उस समय हुआ जब अंग्रेजों के प्रभाव से गद्य लिखा गया। अंग्रेजों ने हिन्दी गद्य के विकास के लिय जिन लेखकों को तैयार किया उनकी आरम्भिक रचनाएँ एक तरह की कहानियाँ हैं। इन गद्य लेखकों में इंशा अल्ला खाँ एक ऐसे गद्यकार थे जिन्होंने ‘‘रानी केतकी कहानी’’ जैस कहानी का सृजन किया लेकिन वर्तमान के समालोचक इसे आधुनिक हिन्दी कहानी के स्वरूप और कथ्य से भिन्न मानते हैं। वर्तमान में कहानी के लिए जिन तत्वों को निर्धारित किया गया है, रानी केतकी की कहानी में वे सभी तत्व नहीं मिलते। वर्तमान की कहानी लेखन की प्रेरणा पूर्व में अंग्रेजी और बंगला में रची गयी और हिन्दी में अनुदित कहानियों से मिली, क्योंकि 19 वीं शताब्दी में अंग्रेजी, रूसी, फ्रेंच आदि भाषाओं में कहानी का अच्छा विकास हो चुका था।

‘नासिकेतो पाख्यान’ तथा ‘रानी केतकी’ की कहानी को हिन्दी की प्रथम कहानी न मानने के पीछे उसमें कहानी तत्वों का अभाव है। इसके पश्चात् भारतेन्दु की ‘एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न’ तथा राधाचरण गोस्वामी की ‘यमलोक की यात्रा’ प्रकाश में आयी लेकिन विद्वानों ने इनमें भी कहानी कला के तत्वों के अभाव के दर्शन किये। वैसे हिन्दी कहानी का प्रारम्भ सन् 1900 में प्रकाशित होने वाली उस ‘सरस्वती’ पत्रिका से हुआ जिससे पंडित किशोरी लाल गोस्वामी को ‘इन्दुमती’

(1900ई0) को प्रकाशन हुआ था। हिन्दी कहानी के इस विकास पर गहरी दृष्टि डालने के लिए हमें हिन्दी कहानी के महान कहानी कार प्रेमचन्द को केन्द्र में ररखकर चर्चा करनी होगी।

अभ्यास प्रश्न

(1) हिन्दी की प्राचीन कहानियाँ हैं- एक पर सही का चिहन लगायें-

1. राजा-रानी की कहानियाँ ( )
2. देवताओं और राक्षसों की कहानियाँ ( )
3. पशुपक्षियों की कहानियाँ ( )
4. उपरोक्त सभी की कहानियाँ ( )

(2) प्राचीन कहानियाँ-

1. यथार्थवादी कहानियाँ हैं,
2. वैज्ञानिक कहानियाँ हैं,
3. काल्पनिक कहानियाँ हैं,
4. कहानी तत्वों के आधार पर लिखी कहानियाँ हैं,

(3) हिन्दी की प्रथम कहानी है-

1. नासिकेतोपाख्यान
2. रानी केतकी की कहानी
3. इन्दुमती
4. अद्भुत अपूर्व स्वप्न

(4) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें -

1. ‘चौरासी बैष्णवन की वार्ता,.................... की रचना हैं
2. वर्तमान कहानी लेखन की प्रेरणा पूर्व में .... कहानियाँ से मिली।

अभ्यास प्रश्न

(16) निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिये।

1. गोदान प्रेमचन्द का प्रसिद्ध .... है।
2. ‘आषाढ़ का एक दिन’ के लेखक हैं......................।
3. ‘पृथ्वीराज की आँखें’.......................... का प्रसिद्ध एकांकी है।

(17) प्रेमचन्द और उनके बाद के किन्ही चार उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

(18) हिन्दी निबन्ध के किन्ही तीन निबन्धकारों के नाम लिखिए।

1.11 सारांश

हिन्दी गद्य विकास की इस इकाई में आपने इन तथ्यों का अध्ययन किया।

- गद्य और पद्य का अन्तर
- हिन्दी गद्य की पृष्ठ भूमि
- हिन्दी गद्य का विकास
- अंग्रेजी की भाषा नीति
- भारतेन्दु युगीन गद्य

1.6 शब्दावली

सोद्देश्य- उद्देश्य के साथ
प्राणयण- तन-मन से
शून्यता - खालीपन
परिणाम- फलतः
उपदेशात्मकता- उपेदश देने की वृत्ति
सृजान- निर्माण
व्यक्त- प्रकट
श्रृंखला- कड़ी, जंजीर, पंक्ति वद्धता
साम्राज्य- शासन
ओत प्रोत- परिपूर्ण

1.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

(1) 1. कविता में गेयता होती थी (सत्य)

2. (सत्य)

3. (असत्य)

4. (सत्य)

(2) (3) विक्रमी सम्वत् 1660

(3)	1.	श्रृंगार मण्डल -	गोसाई विट्ठलनाथ
	2.	चौरासी बैष्णव की वार्ता -	गोकुलनाथ
	3.	सब रस -	मुल्ला वजही
	4.	चंद छन्द बरनन की महिमा -	गंग कवि

(4) 4. उपरोक्त सभी

(5) 3. स्वामी दयानन्द ने।

(6) 3. उदन्त मार्तण्ड

(7) 3. राजा लक्ष्मण सिंह

(8) 1. हाँ 2. नहीं 3. हाँ 4. नहीं

(9) 3.

(10) 4.

(11) 2.

(6)	1.	नील देवी-	भारतेन्दु हरिशचन्द्र
	2.	हठी हमीर-	पंडित बालकृष्ण भट्ट
	3.	शिशुपाल वध-	पंडित श्री निवासदास
	4.	संयोगिता स्वयंवर-	लाला श्री निवास दास

(13) 3. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

(14) 3. रीतिकालीन भाव बोध का समर्थन

(15) 1. अयोध्या सिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’
2. जयशंकर प्रसाद
3. पंडित किशोरी लाल गोस्वामी
4. मुंशी प्रेमचन्द

(16) 1. गोदान प्रेमचन्द का प्रसिद्ध उपन्यास है।
2. आषाढ़ का एक दिन के लेखक हैं- मोहन राकेश।
3. पृथ्वीराज की आँखें डॉ0 राम कुमार वर्मा का प्रसिद्ध एकांकी है।

(17) 1. जयशंकर प्रसाद
2. आचार्य चतुरसेन।
3. गुरूदत्त
4. यशपाल

(18) 1, डॉ0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल

2, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

3, पंडित बालकृष्ण भट्ट

1.14 उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास।
2. राय, बाबू गुलाब, हिन्दी साहित्य का सुगम इतिहास।
3. मिश्र, लल्लूलाल, प्रेम सागर।

1.15निबंधात्मकप्रश्न

1. हिन्दी गद्य के उदय की पृष्ठभूमि विवेचित कीजिए।
2. द्विवेदी युगीन गद्य की विशेषताएँ वर्णित कीजिए।

इकाई 2आत्मकथा 'अपनी खबर ' : परिचय, पाठ एवं आलोचना

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 पाठ का उद्देश्य

2.3 आत्मकथा साहित्य: इतिहास एवं विशेषता

2.3.1 आत्मकथा साहित्य का इतिहास

2.3.2 आत्मकथा साहित्य की प्रवृत्तियाँ’

2.4 जीवनीसाहित्य : इतिहासएवंविशेषता

2.4.1 जीवनी साहित्य का इतिहास

2.4.2 जीवनीसाहित्यकीविशेषता

2.5 संस्मरणसाहित्य

2.5.1 संस्मरण साहित्य का इतिहास

2.5.2 संस्मरण साहित्य की विशेषता

2.6 उपन्यास

2.7 सारांश

2.8 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई से पूर्व आपने नाटक एवं कहानी विधा का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। इस प्रश्न पत्र में आपने पूर्व में निबंध, उपन्यास आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करेंगे। साहित्य की प्रारंभिक दशा में विधागत इतने भेद नहीं हुआ करते थे। प्रारभिक अवस्था में केवल गद्य और पद्य का मोटा विभाजन प्रचलित था किन्तु कालान्तर में सामाजिक एवं एतिहासिक विकास क्रम में मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति की नयी नयी विधाएँ अस्तित्व लेने लगीं। साहित्यक विधाओं के अस्तित्व लेने के पीछे ठोस सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारण थे। उदाहरणस्वरूप हम प्रमुख विधाओं की उत्पत्ति के पीछे छिपे कारणों की संक्षेप में चर्चा करेंगें। जिससे हम उन विधाओं को और अच्छी तरह समझ सकेंगे। सभी साहित्यिक विधाओं में सबसे प्राचीन विधा कविता का जन्म भय-स्तुति एवं श्रम -परिहार के बीच हुआ है। प्रकृति से भय एवं देवताओं की स्तुति हमारे वेदों की उत्पत्ति का कारण है, उसी प्रकार कृषि - कर्म के दौरान गाये जाने वाले गीत लोक - गीतों का आधार बनते है। नाटक की उत्पत्ति के पीछे जहाँ अनुरण की वृत्ति है वहीं कहानी की उत्पत्ति के पीछे कहने का भाव यानी मनोरंजन है। इसी प्रकार 'महाकाव्य' के अस्तित्व के पीछे मानव समाज एवं संस्कृति को व्यापक रूप में चिन्तित करने की प्रवृत्ति काम कर रही थी।

आइए हम प्रमुख विधाओं के अंतर्सम्बन्ध को एक आरेख के माध्यम से समझने का प्रयास करें।

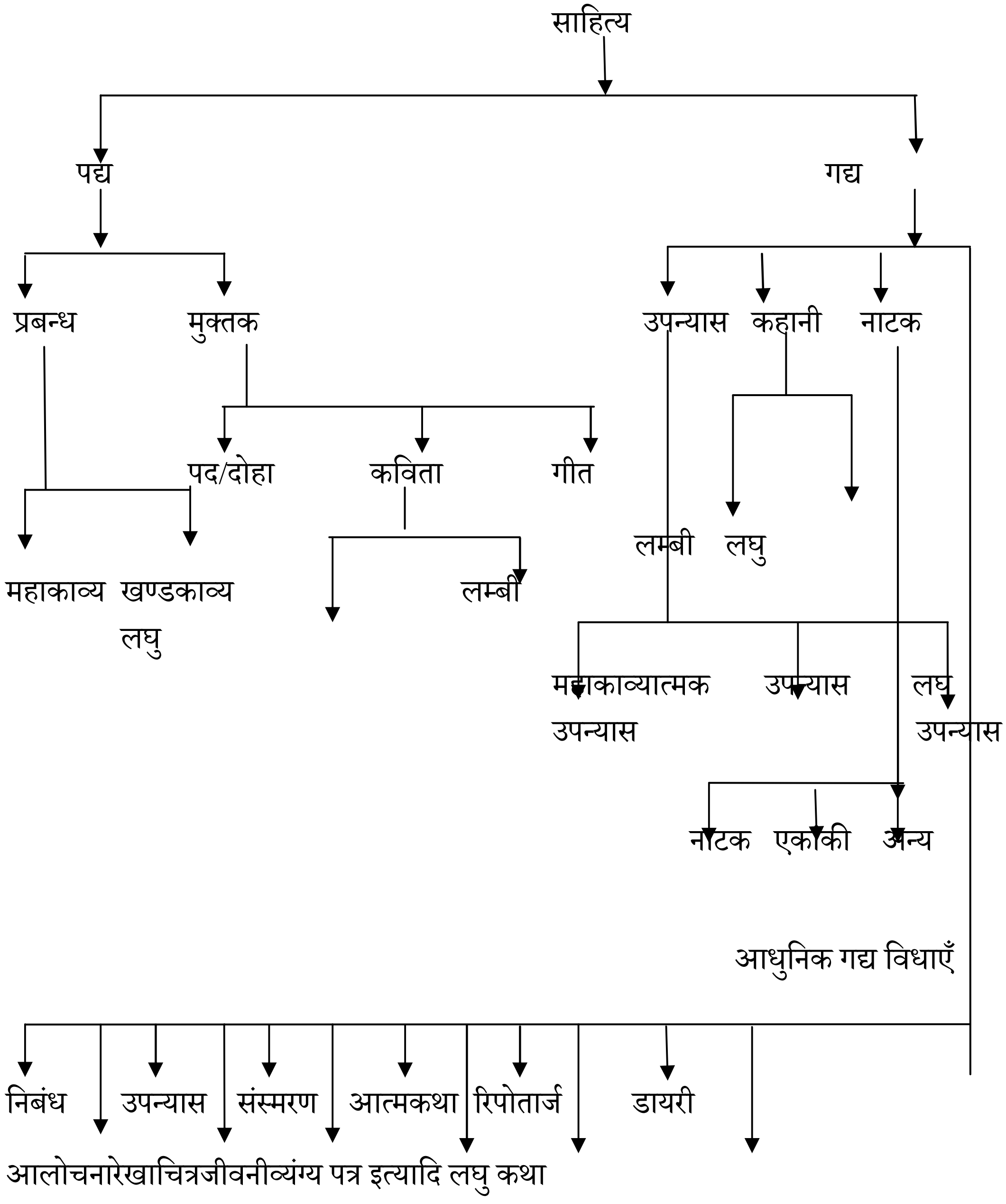
साहित्य
पद्य
गद्य
प्रबन्ध
मुक्तक
उपन्यास
कहानी
नाटक
पद/दोहा
कविता
गीत
लम्बी
लघु
महाकाव्य
खण्डकाव्य
लघु
लम्बी
महाकाव्यात्मक उपन्यास
उपन्यास
लघु उपन्यास
नाटक
एकांकी
अन्य
आधुनिक गद्य विधाएँ
निबंध
उपन्यास
संस्मरण
आत्मकथा
रिपोतार्ज
डायरी
आलोचनारेखाचित्रजीवनीव्यंग्य पत्र इत्यादि लघु कथा

ऊपर के आरेख से स्पष्ट है कि 'आत्मकथा ' विधा आधुनिक गद्य विधाओं की श्रेणी में आती है। आत्मकथा का तात्पर्य ऐसी गद्य विधा से है, जिसमें लेखक अपने बारे में (समाज भी शामिल है) सृजनात्मक □ग से अतीत को खंगालता है। आत्मकथा लेखन का बड़ा गुण ईमानदारी मानी जाती है,

2.2 उदेश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

- आधुनिक साहित्यिक विधाओं के भेदों से परिचित हो सकेंगे।
- आत्मकथा विधा के इतिहास को जान सकेंगे।
- संस्मरण विधा के इतिहास का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- जीवनी साहित्य के इतिहास का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- संस्मरण विधा के इतिहास का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

2.3 आत्मकथा साहित्य: इतिहास एवं विशेषता

'आत्मकथा' साहित्य आधुनिक युग की उपज है। फिर प्रश्न यह है कि आत्मकथा साहित्य मध्यकाल तक क्यों नही प्रचलित रूप में लिखा जाता था ? हमें मालूम है मध्यकाल तक के साहित्य में लेखक अपने बारे में कम से कम लिखता था । बहुत हुआ तो आत्मानुभूति एवं समाजानुभूति की प्रक्रिया में लेखक पंक्ति में अपना नाम लिख देता था। अपनी जाति, कुल, वंश -परम्परा के बारे में जिक्र कर देना भर आत्मकथा नहीं है। 'आत्मकथा' तो संपूर्ण समान की गतिशीलता के बीच लेखक द्वारा अपनी भूमिका की तलाश का सृजनात्मक प्रयास है। आत्मकथा के नाम पर मध्यकाल में भी आत्मकथा मिलती है, लेकिन जिस आधुनिक आत्मकथा साहित्य की यहाँ बात की जा रही है, वह मध्यकाल में कैसे संभव है। आत्मकथा के मूल में आत्मप्रकाशन की भावना मूल रूप में रहती है। हम जानते हैं कि पूँजीवादी विकास क्रम में व्यक्तिगत के प्रकाशन पर बहुत बल दिया जाने लगा था। पूँजीवादी के विकास से पूर्व अपने बारे में कुछ बोलना या लिखना 'अंहकार' का ही सूचना समझा जाता था। आधुनिक युग में सामाजिक विकास की गतिशीलता की प्रक्रिया में एक दूसरे को अपने अनुभवों से लाभ देने की भावना ने आत्मकथा साहित्य के उत्प्रेरक का काम किया। आज समाज से निरपेक्ष कुछ भी नहीं है। व्यक्ति की निजी अनुभूतियाँ सामाजिकता के स्पर्श से सामाजिक संपत्ति बन जाती हैं। व्यक्ति /लेखक में 'स्व' की अनुभूति जितनी तीव्र होगी वह आत्मप्रकाशन की ओर उतना

ही तेजी से मुड़ेगा। अभी आपने पढ़ा कि आत्मकथा साहित्य के उदय की पृष्ठभूमि क्या है। आगे आप आत्मकथा साहित्य के प्रमुख इतिहास से परिचय प्राप्त करेंगे।

2.3.1 त्मकथा साहित्य का इतिहास

छात्रो ! पूर्व में आपने साहित्य का विभाजन तथा गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं के बारे में संक्षिप्त रूप से अध्ययन किया। आपने आधुनिक गद्य विधाओं की उत्पत्ति की पृष्ठभूमि को भी समझने का प्रयास किया। इसी क्रम में आपने आत्मकथा साहित्य की पृष्ठभूमि को भी समझने का प्रयास किया। आत्मकथा साहित्य आधुनिक काल में ही क्यों लोकप्रिय और प्रतिष्ठित हुआ ? आप इस प्रश्न के उत्तर से भी परिचित हो चुके हैं। अब आप आत्मकथा साहित्य के संक्षिप्त इतिहास का अध्ययन करेंगे।

हिंदी साहित्य की पहली आत्मकथा मध्यकाल में लिखी गई थी। बनारसीदास जैन की आत्मकथा ‘अर्द्धकथानक’ को हिंदी की पहली आत्मकथा होने का गौरव प्राप्त है। 1641 ई. में ‘अर्द्धकथानक’ का लेखन वर्ष है। कृति में लेखक ने रचनाकाल का उल्लेख किया है। ‘‘सोलहवै अट्ठानवे, संवत् अगहन मास। सोमवार तिथी पंचमी, सुबल पक्ष परगास"। कृति के नामकरण के सम्बन्ध में उन्होने तर्क दिया है कि चूँकि मनुष्य की उम्र 110 वर्ष लगभग है, इसलिए इसकी आधी 55 वर्ष का विवरण कृति में विवरण दिया है। अतः ग्रन्थ का नाम अर्द्धकथानक सार्थक है। अपनी कृति की भाषा को लेखक ने मध्यदेश की बोली कहा है। रचना की भाषा का मूल ाँचा ब्रजभाषा का है जिससे खड़ी बोली का पुट है। अर्द्ध कथानक 675 छंदों में समाप्त हुआ है। अर्द्धकथानक का प्रधान छन्द चौपाई और दोहा है। आत्मकथा मे ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख हुआ है। जो इतिहास की पूर्ति कर पाने मे सक्षम है। अपने जीवन के उतार - चढ़ाव का वर्णन हो या तत्कालीन व्यापार व्यपस्था या राजतंत्र सभी का आभाष कृति में मिलता है। अर्द्धकथानक के अतिरिक्त मध्यकाल मे किसी अन्य प्रामाणिक रचना की सूचना प्राप्त नहीं हुई है। फिर क्या कारण है कि ‘अर्द्धकथानक’ और आधुनिक आत्मकथाओं में भेद किया गया है। इस संबंध में महत्वपूर्ण बात यह है कि ‘अर्द्धकथानक’ ब्रज भाषा में लिखित पद्धबद्ध रचना है। आधुनिक आत्मकथा का मूल गुण सामाजिक जीवन की गतिशीलता की प्रक्रिया से अपनी भूमिका को जोड़ने का सृजनात्मक प्रयास है। आइए अब हमें आधुनिक प्रमुख आत्मकथाओं का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करें।

आधुनिक काल में आत्मकथा साहित्य के प्रवर्तन का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ‘कुछ आपबीती, कुछ जगबीती’ नाम से आत्मकथा लिखी है, जो अधूरी है। भारतेन्दु की आत्मकथा उनके जीवन के प्रारम्भिक वर्षो के चिरण और सामाजिक अवरूद्धता के चित्रण के लिए

जानी जाती है। स्वामी दयानन्द जी की आत्मकथा का बड़ा हिस्सा उनके याथानों से संबंधित है। भारतेन्दु युग के पश्चात् 'द्विवेदी युग ' में आत्मकथा के छुटपुट प्रयास होते रहे। सन् 1901 ई० में अम्बिकादत्त व्यास ने 'निजवृत्तान्त 'नामक आत्मकथा लिखी। स्वामी श्रृद्धानन्द की आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पक्षिक ' नाम से प्रकाशित हुई है। आत्मकथा साहित्य का वास्तविक विकास छायावादी साहित्य के उत्थान काल के बाद शुरू होता है। छायावाद ने पहली बार 'स्व' के प्रकटीकरण का मार्ग प्रशस्त किया। प्रेमचन्द के संपादकत्व में 'हंस' पत्रिका का सन् 1932 में प्रकाशित ' आत्मकथा विशेषांक 'इस □' का हिंदी में पहला प्रयास है। इस विशेषांक के माध्यम से आत्मकथा साहित्य की अनिवार्यता के पक्ष या विपक्ष में विचारोंन्तेक बहस हुई, जिससे इस विधा के प्रचार - प्रसार एवं प्रतिष्ठा में काफी बल मिला। आत्मकथा के विधान की दृष्टि से श्यामसुन्दर दास की 'मेरी आत्मकहानी' हिंदी की पहली व्यवस्थि आत्मकथा है । यह आत्मकथा सन् 1941 में प्रकाशित हुई। इसी क्रम में राजेन्द्र प्रसाद की 'आत्मकथा' भी महत्वपूर्ण रचना है। यह आत्मकथा लेखक के व्यक्तिगत जीवन की सूचना के साथ ही साथ सम्पूर्ण समकालीन घटनाओं, व्यक्तियों एवं आन्दोलनों की भी प्रामाणिक रूप से हमारे सामने प्रस्तुत करती है। इसी परम्परा में कुछ और आत्मकथाएँ है। - गुलाबराय की 'मेरी असफलताएँ', सियारामशरण गुप्त की 'झूठ - सच', 'बाल्य स्मृति ' , राहुल सांकृप्यायन की 'मेरी जीवन यात्रा', यशपाल की आत्मकथा 'सिंहावलोकन', वियोगीहरि की आत्मकथा 'मेरा जीवन - प्रवाह' इत्यादि । हिंदी साहित्य में सर्वाधिक चर्चित आत्मकथा हरिवंशराय बच्चन की चार खण्डों में प्रकाशित आत्मकथा – 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर', ' बसेरे से दूर एवं दशद्वार से सोपान तक' रही है।

2.3.2 □त्मकथा साहित्य की प्रवृत्तियाँ

जैसा कि आपने पूर्व में पढ़ लिया है कि आत्मकथा साहित्य आधुनिक युग की गद्य विधा है। आत्मकथा या अत्य गद्य विधाएँ पद्य में क्यों नहीं लिखी जा सकतीं ? क्योंकि आधुनिक जीवन बुद्धि एवं विचार प्रधान युग है और इसके लिए गद्य के माध्यम ही उपयुक्त होते हैं पद्य के नहीं । पद्य मूलतः बिम्ब के आधार पर निर्मित होते है और मूलत: भाव को लेकर चलते हैं इसलिए सारी आधुनिक साहित्यिक विधाएँ गद्य में ही निर्मित हुई हैं । प्रश्न उठता है कि 'आत्मकथा ' साहित्य की शुरूआत किन परिस्थितियों में हुई ? आपने आत्मकथा साहित्य के इतिहास का अध्ययन करते हुउ देखा कि मध्यकाल तक आत्मकथा उस रूप में यह आज लिखी जाती है। मध्यकालीन कवि कभी-कभार एक दो पंक्तियों में अपने जीवन संबंधी विवरण दे दिया करते थे , किन्तु वह आत्मकथा की शर्तों का पालन नहीं करते हैं।

आइए अब हम देखें कि आत्मकथा साहित्य की मूल प्रवृत्ति क्या है ? 'आत्मकथा' दो शब्दों से मिलकर बना है। आत्म ओर कथा यानी लेखक द्वारा खुदी की लिखी गई जीवनी । जिस विधा में लेखक अपने प्रारंभिक जीवन से लेकर संम्पूर्ण जीवन का सृजनात्मक ग से रेखांकन करता है, उसे हम आत्मकथा कह सकते हैं। ' आत्मकथा के लिए यह शर्त नहीं है कि वह संम्पूर्ण जीवन का रेखांकन प्रस्तुत करे । हो सकता है कि कोई लेखक अपने जीवन के किसी एक समय को ही रेखांकित करे । इसीलिए ज्यादा अच्छा यह होता है कि लेखक जीवन के लम्बे हिस्से को अपनी लेखनी का विषय बनाये । आत्मकथा के लिए कहा गया है कि इसमें लेखक द्वारा अपनी खबर लेना और अपनी खबर पाठकों को देना - ये दोनों प्रक्रियाएँ शामिल हैं । आत्मकथा में लेखक सबसे पहले तो आत्मान्वेषण करता है । इस प्रक्रिया में सामाजिक अन्वेषण एवं सत्यान्वेषण की प्रक्रिया भी साथ चलती रहती है । इसीलिए आत्मकथा का एक बड़ा गुण प्रामाणिकता मानी जाती है। इसमें लेखक जिन आकंड़ो, तथ्यों को प्रस्तुत कर रहा है, वे सत्य हों । चूँकि लेखक के जीवन में घटित घटनाओं का साक्षी स्वयं लेखक होता है, इसीलिए सत्य का एकमात्र प्रामाणिक स्तोत भी स्वंय लेखक ही होता है। इसीलिए आत्मकथा में प्रामाणिकता का होना इसकी बड़ी शर्त मानी गई है। आत्मकथा में जीवन की प्रामाणिक एवं तथ्यपरक घटनाओं की अपेक्षा होती है, इसीलिए इसमें कल्पना एवं कुत्रिमता के लिए कोई स्थान नहीं होता। आत्मकथा मे अतीत की घटनाएं ही केंद्र में रहती हैं इसलिए भी इसमें प्रामाणिकता की संभावना ज्यादाहोती है। चूँकि आत्मकथाके मूल में आत्मनिर्माण या आत्म-परीक्षण अथवा दुनिया के जटिल परिवेश में अपने आपको जानने-समझने की इच्छा मख्य होती है, इसलिए आत्मकथा लेखक का बहुत बड़ा गुण उसकी ईमानदारी होती है। ईमानदारी के अभाव में आत्मकथा के आत्मप्रशंसा-प्रशस्ति बन जाने का बहुत बड़ा खत्तरा होता है। आत्मकथा में लेखक के जीवन का वास्तविक साक्ष्य चूँकि लेखक के ही पास होता है, इसीलिए भी लेखक से ईमानदारी की बहुत अपेक्षा होती है। आत्मकथा का एक अन्य गुण यह है कि लेखक के बहाने पाठक को एक युग के जीवन और समाज का प्रामाणिक दस्तावेज प्राप्त होता है। आत्मकथा वैसे ता ज्यादातर महापुरूषों, लेखकों, सफल पुरूष/युवतियों या चर्चित व्यक्तित्व द्वारा ही लिखे जाते हैं, लेकिन यह अनिवार्य नहीं है। आत्मकथा के लिए लेखकं का महान् आदमी होना जरूरी नहीं । आम आदमी (जिसका जीवन संघर्ष के बीच निर्मित हुआ है), जिसके जीवन-संघर्ष से हमें प्रेरणा मिलती है, द्वारा भी आत्मकथा लिखी जा सकती हे। फिर भी ज्यादातर जीवन में सफल व्यक्तित्व द्वारा ही आत्मकथाएँ लिखी जाती हैं क्योंकि उनके जीवन संघर्ष से हमें प्रेरणा मिलती है। आत्मकथा वही श्रेष्ठ समझी जाती है, जिसमें लेखक अपने जीवल को व्यापक परिवेश के बीच चित्रित करता है। आत्मकथा में जीवन की घटनाओं का संबंध सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक

पहलुओं से जुड़ी होनी चाहिए। आत्मकथा लिखने का उद्देश्य क्या है ? कई बार यह प्रश्न किया जाता है। दरअसल आत्मकथा का मूल उद्देश्य आत्मनिर्माण, आत्मपरीक्षण या आत्मसमर्थन होता है। इसमें लेखक अपने आपका मूल्यांकन भी करता है और अपना पक्ष भी प्रस्तुत करता है। कई बार ऐसा होता है कि लेखक को समाज से यह शिकायत होती है कि उसे संपूर्णता में नहीं समझा गया है। अतः लेखक अपने जीवन - संघर्ष के माध्यम से अपना पक्ष समाज के सामने प्रस्तुत करता है।' आत्मकथा लिखने का एक उद्देश्य यह भी है कि लेखक चाहता है कि उसके जीवनानुभव का लाभ अन्य लोग भी उठायें। श्रेष्ठ आत्मकथाएँ इसीलिए आगामी युग में अपने युग तथा समाज के प्रामाणिक दस्तावेज के रूप में पढ़ी जाती हैं। जैसे महात्मा गाँधी की आत्मकथा- सत्य के प्रयोग गाँधीजी के जीवन - संघर्ष के साथ ही उनके युग का भी एक प्रामाणिक दस्तावेज बन गई है।

आत्मकथा लेखन का एक बड़ा गुण निर्व्येक्तिकता या तटस्थता को माना गया है। श्रेष्ठ आत्मकथा लेखक द्वारा अपने बीते हुए जीवन के तटस्थ सिंहावलोकन का सार्थक प्रयास है। व्यापक जीवन संघर्ष की पृष्ठभूमि में अपने जीवन की सृजनात्मक ऊर्जा की खोज का प्रयास ही आत्मकथा साहित्य है। इसरे शब्दों में कहा जाये तो यह कि सरल भाषा में लेखक द्वारा स्वयं के जीवन की सृजनात्मक अन्वेषण की प्रक्रिया का नाम ही आत्मकथा है। आत्मकथा में लेखक अपने अतीत के जीवन को अपनी रचना का विषय बनाता है। लेकिन इस क्रम में वह घटनाओं को अपनी रचना का विषय नहीं बनाता । वह केवल सृजनात्मक तथ्यों को ही अपनी रचना में प्रस्तुत करता है।

2.4 जीवनीसाहित्य : इतिहासएवंविशेषता

जीवनी विधा आधुनिक कालीन संक्रमणशील युग की उपज है। जब-जब समाज में व्यक्तित्व का अभाव एवं जड़ता आती जायेगी, तब-तब जीवनी साहित्य की प्रासंगिकता बनी रहेगी। आगे के बिन्दुओं में हम जीवनी साहित्य की पृष्ठभूमि, इतिहास एवं विशेषता से परिचित होंगे।

2.4.1 जीवनी साहित्य का इतिहास

जीवनी साहित्य का इतिहास मध्यकालीन बहि:साक्ष्य के रूप में हमारे सामने मिलता है। गोस्वामी तुलसीदास की जीवनी बाबा बेनी माधव दास की गुसाई चरित और रघुवरदास की तुलसी चरित मिलती है। इस दिशा में पहला व्यवस्थित प्रयास नाभादास के 'भक्तमाल' में मिलता है। जिसमें 252 भक्तों का जीवन वृत्तात संकलित है। इस दिशा में महत्वपूर्ण पुस्तक 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' और 'दौ सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' है। किन्तु इन ग्रंथों में वैज्ञानिक दृष्टि का पूर्ण अभाव है। हिंदी में आधुनिक □ की जीवनियाँ 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लिखी गई। गोपाल शर्मा

शास्त्री द्वारा लिखित दयानन्द दिग्विजय (1881 ई.), चिम्मनलाल वैश्य कृत 'स्वामी दयानन्द'। 1893 ई. में कार्तिक प्रसाद खत्री ने मीराबाई का जीवन-चरित्र लिखा। इसी परम्परा में बाबू राधाकृष्ण दास कृत 'भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र' (1904 ई.) बाबू शिवनंदन सहाय कृत 'हरिशचन्द्र' (1905 ई.) महत्वपूर्ण जीवनियाँ हैं। राजनीतिक व्यक्तित्व के ऊपर लिखी जीवनियों में गंगाप्रसाद गुप्त कृत दादाभाई नौरोजी (1906 ई.) संपूर्णानंद कृत 'धर्मवीर गांधी' (1914 ई.), राजेन्द्र प्रसाद लिखित 'चम्पारन में महात्मा गाँधी' (1919 ई.), मन्मथनाथ गुप्त लिखित 'चन्द्रशेखर आजाद' एवं सीताराम चतुर्वेदी कृत 'महामना मालवीय' (1938 ई.) प्रमुख जीवनी है। विदेशी महापुरूषों पर भी कुछ उल्लेखनीय जीवनी लिखी गई है। रामवृक्ष बेनीपुरी कृत कार्ल मार्क्स (1951 ई.) राहुल सांकृत्यायन कृत 'माउप्से तुंग' (1954 ई.), कार्ल मार्क्स (1954 ई.) आदि उल्लेखनीय हैं। हिंदी में वैसे तो समृद्ध जीवनी साहित्य का अभाव है, किन्तु इस दिशा में कुछ उल्लेखनीय प्रयास हुआ है। हिंदी में प्रेमचन्द पर तीन जीवनी लिखी गई है। प्रेमचन्द की पत्नी शिवरानी देवी ने 'प्रेमचन्द घर में' (1944) नाम से जीवनी लिखी है वहीं उनके पुत्र अमृत राय ने 'कलम का सिपाही' (1962 ई.) नाम से अच्छी जीवनी लिखी है। तीसरी जीवनी मदन गोपाल ने 'कलम का मजदूर' (1964 ई.) नाम से लिखी है। डा. भगवतीप्रसाद सिंह ने कविराज गोपीनाथ की जीवनी- मनीषी की लोकयात्रा शीर्षक से लिखा है। इस दिशा में हिंदी में सर्वाधिक महत्वपूर्ण काम रामविलास शर्मा ने किया है। रामविलास शर्मा ने 'निराला की साहित्य साधना' नाम से निराला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को तीन खण्डों में प्रस्तुत किया है। यह जीवनी जहाँ निराला काव्य को समझने में हमारी मदद करती है वहीं दूसरी ओर छायावादी आन्दोलन एवं तत्कालीन सामाजिक-साहित्यिक परिवेश को समझने में हमारी मदद भी करती है। विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित 'आवारा मसीहा' (1974 ई.) हिंदी की श्रेष्ठ जीवनी में से एक है। विष्णु प्रभाकर जी ने बंगला उपन्यासकार शरतचन्द्र के जीवन को सृजनात्मक ꣻ से प्रस्तुत किया है। शांति जोशी ने सुमित्रानंदन पंत की जीवनी 'सुमित्रानन्दन पंत : जीवन और साहित्य' शीर्षक से दो खण्डों में लिखा है। (प्रकाशित 1970, 1977 ई.) शिवसागर मिश्र ने 'दिनकर एक सहज पुरूष' (1981 ई.) शीर्षक दिनकर की सुन्दर जीवनी लिखी है। शोभाकान्त मिश्र कृत 'बाबू जी' (1991 ई.) नागार्जुन के ऊपर लिखी गई जीवनी है। श्री विष्णुचन्द्र शर्मा की 'अग्निसेतु' (1976 ई.) शीर्षक से नजरूल इस्लाम की जीवनी 'जिन्होंने जीना जाना' (1971 ई.) इस दिशा में एक नया प्रयोग है। इसमें सात साहित्यकारों, को राजनेताओं, एक विचारक, एक कलाकार और एक अभिनेत्री का जीवन प्रस्तुत किया गया है।

6.4.2 जीवनीसाहित्यकीविशेषता

सामान्यत: जीवनी साहित्य को परिभाषित करते हुए कहा जाता है कि – यह एक लेखक द्वारा महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के जीवन को सृजनात्मक ꣻ से प्रस्तुत करने वाली गद्य विधा है। यानी

इसमें दो पक्ष अनिवार्य हैं – एक लेखक और दूसरे जीवनी का विषय अर्थात् महत्वपूर्ण व्यक्तित्व। जीवनी लेखक के लिए दूसरे का जीवन अनिवार्य होता है। यहाँ यह प्रश्न किया जा सकता है कि जीवनी विधा की आवश्यकता क्यों पड़ती है ? अर्थात् वह कौन सी परिस्थितियाँ हैं जो किसी लेखक को जीवनी लिखने के लिए बाध्य करती हैं। आपने जीवनी साहित्य के इतिहास का अध्ययन करते हुए देखा कि यह आधुनिक गद्य विधा के रूप में प्रतिष्ठित है, जबकि चरित काव्य या जीवनी लेखन के स्फुट प्रयत्न पहले से भी होते रहे हैं। फिर पुराने चरित काव्य या वार्ता ग्रंथ या जीवनी लेखन से आधुनिक जीवनी साहित्य का मुख्य भेद क्या है ? पुराने चरित काव्य वस्तुत: धार्मिक प्रेरणावश या स्तुति रूप में लिखे गये हैं जबकि जीवनी साहित्य की पहली शर्त यह है कि यह वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से युक्त होकर लिखी जाए। यह प्रश्न कि जीवनी साहित्य क्यों लिखा जाता है ? इसका तात्कालिक उत्तर यही हो सकता है कि जब-जब समाज के सामने संक्रमणशील स्थितियाँ होंगी, जब-जब सामज में व्यक्तित्व का अभाव होगा, तब-तब जीवनी लेखन की आवश्यकता बढ़ती जायेगी। जीवनी अपने मूल रूप में व्यक्तित्व निर्माण की ही विधा है। अकारण नहीं कि राष्ट्रीय पराधीनता के समय में सर्वाधिक जीवनी लेखन का कार्य हुआ। वैसे जीवनी लेखन की प्रासंगिकता हमेशा ही वर्तमान रहती है, क्योंकि समाज को हमेशा ही आदर्श व्यक्तित्व की आवश्यकता महसूस होती है। आइए अब हम यह देखें कि एक जीवनीकार के लिए जीवनी लिखने की शर्तें क्या हैं ? जीवनी साहित्य की सैद्धान्तिकी पर चर्चा करते हुए शिप्ले ने लिखा है – जीवनी को नायक के सम्पूर्ण जीवन अथवा उसके यथेष्ट भाग की चर्चा करनी चाहिए और अपने आदर्शरूप में यह विशिष्ट इतिहास होना चाहिए। यहाँ विशिष्ट इतिहास का तात्पर्य यह है कि नायक के जीवन-संघर्ष के चित्रण करने के क्रम में जीवनीकार तत्कालीन युग-परिस्थिति का भी प्रामाणिक वृत्त प्रस्तुत करे। जीवनी –साहित्य के विभिन्न भेद भी किए गए हैं। आत्मीय जीवनी, लोकप्रिय जीवनी, विद्वतापूर्ण जीवनी, मनोवैज्ञानिक जीवनी, व्याख्यात्मक जीवनी, कलात्मक जीवनी तथा व्यंग्यात्मक जीवनी। किन्तु शिप्ले इन्हें एक ही वर्ग में समाहित कर देता है। जीवनी के लिए यह आवश्यक है कि जीवनीकार नायक के चरित्र का विकास तत्कालीन परिस्थितियों के घात-प्रतिघात के बीच दिखाये। जीवन-समाज के संघर्षों से अछूती जीवनी महान् जीवनी नहीं बन सकती।

जीवनी की सामग्री के स्रोत कैसे विकसित करें। इस संबंध में कैसेल ने कुछ बिन्दु निर्धारित किये हैं – (क) उसी विषय अथवा सम्बद्ध विषयों पर लिखी गई पुस्तकें, (ख) मूल सामग्री, यथा-पत्र, डायरी या प्रामाणिक गवेषणा-सामग्री, (ग) समकालीनों के संस्मरण, (घ) यदि वर्ण्य विषय बहुत पहले का नहीं है तो जीवित व्यक्तियों की यादगारें, (ड्.) जीवनी-लेखक यदि अपने चरितनायक के सम्पर्क में रहा है तो उसके अपने संस्मरण और (च) उन स्थलों का भ्रमण तथा पर्यवेक्षण जहाँ चरित-नायक रहा था। (हिंदी साहित्य कोश, भाग एक, पृष्ठ-260) कैसेल द्वारा जीवनी साहित्य के लेखन

के लिए उपर्युक्त सामग्री-स्तोत का विवरण महत्वपूर्ण है। लेकिन इस संबंध में हमें यह ध्यान रखना होगा कि हर जीवनी के स्रोत भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। इस संबंध में किसी सैद्धान्तिकी को हर जीवनी पर लागू करना उचित नहीं है।

जब भी कोई लेखक जीवनी लेखन की दिशा में प्रवृत्त होता है तब सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की होती है कि वह जिस पर जीवनी लिख रहा है, उसके बारे में संपूर्ण तथ्यात्मक सूचनाओं का संग्रह करें। वह जो तथ्य, विवरण इकट्ठा कर रहा है, वह प्रामाणिक है कि नहीं, इस पर जीवनी की प्रामाणिकता निर्भर करती है। इस संबंध में यह प्रश्न उठाया गया है कि प्रामाणिक जीवनी के लिए लेखक का आलोच्य व्यक्तित्व को समकालीन होना अनिवार्य है! जीवनी की प्रामाणिकता के लिए यह अच्छा है कि जीवनीकार अपने वर्ण्य विषय व्यक्तित्व का समकालीन हो, लेकिन यह अनिवार्य नहीं है। कोई लेखक इतिहास की छानबीन करके, तथ्य संग्रह करके एवं सहानुभूतिपूर्वक किसी व्यक्तित्व पर अच्छी जीवनी लिख सकता है। जीवनी लेखन का सबसे बड़ा लाभ या उपयोगिता यह है कि किसी महत्वपूर्ण व्यक्तित्व/क़तित्व से आगे आने वाली पीढ़ी लाभान्वित हो सके और उसका लाभ उठा सके। जीवनी के संबंध में यह प्रश्न भी उठाया गया है कि चर्चित व्यक्तित्व ही केवल जीवनी के विषय क्यों बनते हैं। इस तर्क के पीछे कारण यह है कि सफल व्यक्तित्व का अनुकरण प्राय: लोग करते हैं, लेकिन यह हो सकता है कि सामाजिक रूप से कम सफल व्यक्तित्व का जीवन-संघर्ष भी महान हो और वह हमें प्रेरणा दे सकने की क्षमता रखता हो, ऐसी स्थिति में जीवनीकार किसी भी व्यक्तित्व को अपने लेखन का विषय बना सकता है। शर्ते यह है कि आलोच्य व्यक्तित्व का जीवन संघर्ष प्रेरणादायक हो। जीवनी लेखन के लिए सावधानी यह होनी चाहिए कि जीवनीकार किसी गलत तथ्य को न प्रस्तुत करे। जीवनी में तथ्य का बहुत महत्व है। गलत तथ्य से युक्त जीवनी प्रामाणिक नहीं हो सकती । जीवनी लेखन में वस्तुनिष्ठता का गुण अनिवार्य होना चाहिए। जीवनीकार को अपने नायक को महान सिद्ध करने का अनावश्यक प्रयत्न नहीं करना चाहिए। अपने नायक के अंतर्विरोधों को वस्तुनिष्ठ ◻ से प्रस्तुत करना ही जीवनी की सफलता है। जीवनी के लिए यह भी आवश्यक माना गया है कि उसमें क्रमबद्धता हो। पूरे जीवनी में घटनाओं की क्रमिकता बरकरार रहे। एक घटना से दूसरे घटना का क्रमानुसारी संबंध स्थापित होता हो। कोई घटना बिना कार्य-कारण सम्बन्ध के जीवनी में न आई हो। जीवनीकार के लिए यह भी आवश्यक है कि वह अपने नायक को संपूर्णता में चित्रित करे, लेकिन उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जीवनी में अति-महत्वपूर्ण घटनाओं को ही समावेशित करना चाहिए। जीवन का हर क्षण, हर घटना महत्वपूर्ण नहीं होते, सृजनात्मक नहीं होते। इस दृष्टि से विशेष का चयन जीवनी को सघन एवं महत्वपूर्ण बनाता है।

2.5 संस्मरणसाहित्य

2.5.1 संस्मरण साहित्य का इतिहास

आपने अध्ययन किया कि संस्मरण विधा आधुनिक काल की देन है। संस्मरण विधा के स्तर पर आधुनिक काल की देन हैं, लेकिन हमें यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि संस्मरण में स्मृति आधार बिन्दु है और प्राचीन काल से हर देश व संस्कृति में पूज्य पुरूषों एवं महापुरूषों के कृत्यों को स्मृरित किया जा रहा है। यहाँ प्रश्न उठता है कि प्राचीन स्मृति ग्रंथ एवं संस्मरण में मूलभूत अंतर क्या है ?प्राचीन स्मृति ग्रंथों में श्रद्धा, चमत्कार एवं अतिप्राकृत घटनाओं की बहुतायत रहती थी, किन्तु संस्मरण विधा में स्मृति-नायक को आत्मीय तटस्थता के साथ संस्मरणकार हमारे सामने प्रस्तुत करता है। एक के लिए श्रद्धा-स्तुति अनिवार्य है तो दूसरे के लिए तटस्थता-संपूर्णता। इसीलिए संस्मरण विधा को आधुनिक युग में आकर स्वीकृति मिली।

स्मरण विधा के इतिहास के संदर्भ में हम देखते हैं कि 20वीं शताब्दी के तीसरे दशक से इसकी शुरूआत होती है। सन् 1928 के लगभग प्रकाशित पद्मसिंह शर्मा के 'पद्मपराग' से संस्मरण विधा का प्रारम्भ स्वीकार किया जाता है। किन्तु व्यापक रूप से इसे स्वीकृति बाद के दशक में मिली। इस संदर्भ में महादेवी वर्मा विशेष उल्लेखनीय हैं। रेखाचित्र – संस्मरण विधा के संधि बिन्दु पर उनकी चार रचनाएँ प्रकाशित होती हैं। अतीत के चलचित्र (1941 ई.), स्मृति की रेखाएँ (1943 ई.), पथ के साथी (1956 ई.) और 'मेरा परिवार' (1972 ई.)। इन रचनाओं में संस्मरण की दृष्टि से स्मृति की रेखाएँ तथा पथ के साथी विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। इसी क्रम में बनारसीदास चतुर्वेदी की हमारे आराध्य, संस्मरण (1952 ई.), शिवपूजन सहाय रचित वे दिन वे लोग (1946 ई.), माखनलाल चतुर्वेदी कृत समय के पाँव (1962 ई.), जगदीशचन्द्र माथुर कृत दस तस्वीरें (1963 ई.), कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर रचित 'भूले हुए चेहरे' आदि रचनाएँ उल्लेख हैं। संस्मरण विधा की अन्य महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं –

- बच्चन निकट से (1968 ई.) अजित कुमार और ओंकार नाथ श्रीवास्तव
- गाँधी संस्मरण और विचार (1968 ई.) – काका कालेलकर
- संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ (1969 ई.) –रामधारी सिंह दिनकर
- व्यक्तित्व की झांकियाँ (1970 ई.) - लक्ष्मीनारायण सुधांशु
- अंतिम अध्याय (1972 ई.) – पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी
- स्मृति की त्रिवेणिका (1974 ई.) – लक्ष्मी शंकर व्यास
- चंद संतरें और (1975 ई.) – अनीता राकेश

- मेरा हमदम मेरा दोस्त (1975 ई.) – कमलेश्वर
- रेखाएँ और संस्मरण (1975 ई.) – क्षेमचन्द्र सुमन
- मैंने स्मृति के दीप जलाये (1976 ई.) – रामनाथ सुमन
- स्मरण को पाथेय बनने दो (1978 ई.) – विष्णुकान्त शास्त्री
- अतीत के गर्त से (1979 ई.) – भगवतीचरण वर्मा
- श्रद्धांजलि संस्मरण (1979 ई.) – मैथिलीशरण गुप्त
- पुन: (1979 ई.) – सुलोचना रांगेय राघव
- यादों की तीर्थयात्रा (1981 ई.) – विष्णु प्रभाकर
- औरों के बहाने (1981 ई.) – राजेन्द्र यादव
- जिनके साथ जिया (1981 ई.) – अमृतलाल नागर
- सृजन का सुख-दुख (1981 ई.) – प्रतिभा अग्रवाल
- युगपुरूष (1983 ई.) – रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'
- दीवान खाना (1984 ई.) – पद्मा सचदेव
- स्मृति लेखा (1986 ई.) – अज्ञेय
- हजारी प्रसाद द्विवेदी कुछ संस्मरण (1988 ई.) – कमल किशोर गोयनका
- भारतभूषण अग्रवाल : कुछ यादें कुछ चर्चाएँ (1989 ई.) – बिन्दु अग्रवाल
- हम हशमत (1977 ई.) – कृष्ण सोबती
- आदमी से आदमी तक (1982 ई.) – भीमसेन त्यागी।

2.5.2 संस्मरण साहित्य की विशेषता

संस्मरण साहित्य पर टिप्पणी करते हुए डा. रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है, "संस्मरण किसी स्मर्यमाण की स्मृति का शब्दांकन है। स्मर्यमाण के जीवन के वे पहलू, वे संदर्भ और वे चारित्रिक वैशिष्ट्य जो स्मरणकर्ता को स्मृत रह जाते हैं, उन्हें वह शब्दांकित करता है। स्मरण वही रह जाता है जो महत्, विशिष्ट, विचित्र और प्रिय हो। स्मर्यमाण को अंकित करते हुए लेखक स्वयं भी अंकित होता चलता है। संस्मरण में विषय और विषय दोनों ही रूपायित होते हैं। इसलिए इसमें स्मरणकर्ता पूर्णत: तटस्थ नहीं रह पाता। वह अपने 'स्व' का पुन: सर्जन करता है।" (हिंदी का गद्य-साहित्य, पृष्ठ 297) कहने का अर्थ यह हैं कि लेखक किसी व्यक्तिव की स्मृति को शब्दों के माध्यम से पुन: जीने की कोशिश करता है तो संस्मरण विधा की उत्पत्ति होती है। विधा के स्तर पर रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा से संस्मरण का निकट का संबंध है। लेकिन संस्मरण विधा की अपनी निजी कुछ

विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य विधाओं से अलग करती हैं। जीवनी में भी किसी का जीवन केन्द्र में होता है। जीवनी और संस्मरण में भी, लेकिन दोनों में अंतर है। जीवनी जहाँ चरित नायक के जीवन के संपूर्ण पक्ष पर आधारित होती है वहीं संस्मरण सीमित जीवन पर जीवनी की हर घटना में लेखक की सहभागिता अनिवार्य नहीं है लेकिन संस्मरण की प्रत्येक घटना लेखक द्वारा अनुभूत व संवेदित होनी अनिवार्य है। इस दृष्टि से संस्मरण में अंतरंगता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संस्मरणकार किसी व्यकित की जीवनी तथ्य-ब्यौरे के आधार पर भी लिख सकता है लेकिन संस्मरण तब तक नहीं लिखे जा सकते जब तक कि लेखक का स्मर्यमाण व्यक्ति से अंतरंग संबंध न हो। यहाँ तक कि रेखाचित्र के लिए भी अंतरंगता उतनी अनिवार्य नहीं है जितनी संस्मरण लेखक के लिए। किसी पागल को सड़क पर देखकर रेखाचित्र तो लिखा जा सकता है, लेकिन संस्मरण नहीं। लेखक किसी व्यक्ति से जब तक हार्दिक रूप से किसी व्यक्तित्व से नहीं जुड़ता तब तक वह उस व्यक्ति के आन्तरिक व्यक्तित्व का न तो चित्रण कर सकता है और न ही मूल्यांकन । संस्मरण उसी व्यक्ति पर लिखा जा सकता है जिस व्यक्ति से लेखक का घन्टिष्ठ संबंध है। संस्मरण का नायक इसके केन्द्र में होता है। लेकिन जीवनी विधा की तरह केवल नायक ही इसकी रचना के केन्द्र में नहीं होता बल्कि इसमें लेखक की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है। संस्मरण लेखक और नायक के संबंध, लगाव व हार्दिकता से जुड़ी रचना है। एक तरह से यह रचना लेखक की दृष्टि में स्मर्यमाण व्यक्ति का चरित्रांकन है, इसलिए इसमें विषय और विषयी दोनों का महत्व होता है। संस्मरण के लिए अतीत अनिवार्य है। इसलिए इसमें ‘स्मृति’ का बहुत महत्व है। लेखक अतीत की घटनाओं को अपनी स्मृति के माध्यम से पुन: जीवंत करता, इस क्रम में काल एवं स्मृति का कुशल संयोजन संस्मरण की विशेषता है। संस्मरण में चूँकि वही घटनाएँ स्थान पाती हैं इसलिए इसमें सघनता का गुण पाया जाता है। अतीत की स्मृति में वही चीजें स्थायी हो पाती हैं, जो अति-महत्वपूर्ण होती हैं। अत: इस दृष्टि से संस्मरण अतीत की स्मृति का सृजनात्मक प्रयास है। अतीत की स्मृति महत्वपूर्ण होकर भी लेखक का ध्येय नहीं है बल्कि महत्वपूर्ण है वह रचनात्मक प्रयास जो पाठक को दिशा दे सके या प्रभावित कर सके। संस्मरण के संदर्भ में यह प्रश्न हमेशा उठाया जाता है कि संस्मरण क्यों लिखा जाता है या संस्मरण लेखन के उद्देश्य क्या हैं ? संस्मरण विधा अन्य सृजनात्मक विधाओं की ही तरह मानवीय जरूरतों की पूर्ति का एक ‘स्मृति-प्रयास’ है। संस्मरण तब ज्यादा लिखे जाते हैं जब सृजनात्मक व्यक्तित्व का अधिकता किसी समाज में ज्यादा हो। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय में या राष्ट्रीय आन्दोलन की ऊर्जा से निर्मित व्यक्तित्व ही हिंदी संस्मरण विधा में रचना का केन्द्र बने हैं। इससे स्पष्ट है कि संस्मरण के केन्द्र में व्यक्तित्व निर्माण का प्रयास आधारभूत रूप में है। लेकिन जीवनी की तरह यह सामाजिक प्रेरणा के वशीभूत होकर ही नहीं रचित होता। इस विधा में संस्मरण नायक का संस्मरणकार के ऊपर पड़े प्रभाव की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक तरह से यह बर्हिमुखी और आत्ममुखी दोनों गुणों से युक्त विधा है।

2.6 उपन्यास

आपने 'हिन्दी गद्य का विकास' पढ़ते हुए देखा होगा कि हिन्दी गद्य का विकास किस तरह हुआ और किस तरह इस गद्य से हिन्दी की नई नई विधाओं का जन्म हुआ। हिन्दी कहानी के समान ही हिन्दी उपन्यास का इतिहास भी प्राचीन नहीं है। इस विधा का आरम्भ बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में हुआ। वैसे तो भारतेन्दु युग को ही हिन्दी उपन्यास को जन्म देने का श्रेय जाता है लेकिन इस युग से पूर्व 1877 में श्रृद्धाराम फुल्लौरी ने भाग्यवती उपन्यास लिखकर हिन्दी उपन्यास विधा का आरम्भ कर दिया था। हिन्दी साहित्य के इतिहास मे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लाला श्री विवास दास के ''परीक्षा गुरू'' (1882) उपन्यास को हिन्दी के मौलिक उपन्यास की मान्यता प्रदान की। उन्होंने यह स्वीकार किया कि यही हिन्दी का प्रथम उपन्यास है। इसके पश्चात् हिन्दी भाषा में अनेक तिलिस्मी जासूसी और ऐयारी उपन्यासों को सृजन हुआ, लेकिन मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों से इस विधा को नया आयाम मिला।

उपन्यास शब्द उप+न्यास दो शब्दों के मेल से बिना है। जिसके 'उप' उपसर्ग का अर्थ होता है सामने निकट या समीप, और 'न्यास' का अर्थ है , धरोहर और रखना, इस आधार पर उपन्यास का अर्थ है एक लेखक अपने जीवन एवं समाज के आस पास जो कुछ भी देखता हो उसे अपने भाव विचार से कल्पना द्वारा सजा सँवार कर जिस विधा के माध्यम से हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है वही 'उपन्यास' है। दूसरे शब्दों में जो साहित्यिक विधा जिसे पढ़कर यह आभास हो कि इसमें वर्णित घटना हमारे निकट की नहीं अपितु हमारी है 'उपन्यास' कहलाती है।

उपन्यास आधुनिक जीवन के सत्य को निकटता से समझने और उसे काल्पनिक रूप प्रदान करने वाली विधा है। यद्यपि उपन्यास की कथा काल्पनिक होती है किन्तु वह जीवन के यथार्थ का स्पर्श करती है। इसके पात्र समाज से जुड़े व्यक्ति होते हैं। इसकी घटनाएँ हमारे मध्य की होती है जिनमें एक तर्किक संगति होती है।

उपन्यास का जन्म पश्चिमी साहित्य से हुआ। पश्चिम के साहित्यकारों ने इस नयी विधा को जन्म दिया। समय-समय पर इसमें अनके परिवर्तन होते रहे। इसे सोद्देश्य लिखा जाता रहा और यह साहित्य की कहानी विधा का व्यापक रूप बन गया। पश्चिम से ही इसने भारतीय साहित्य में प्रवेश किया और आज यह हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं में से एक है। उपन्यास साहित्य के आचार्यों ने उपन्यास के निम्नलिखित तत्व निर्धारित किये हैं।

1. शीर्षक
2. कथावस्तु- कथानक
3. कथोपकथन-संवाद योजना
4. पात्र और चरित्र चित्रण

5. देशकाल और वातावरण
6. भाषा और शैली
7. उद्देश्य

इन्हीं तत्वों के आधार पर उपन्यास की समीक्षा की जाती है।

2.7 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आपने जाना कि –

- जीवनी विधा आधुनिक कालीन चेतना की उपज है। जीवनी विधा किसी महत्वपूर्ण, संघर्षशील चरित्र को सामाजिक गतिशीलता के बीच रखकर देखने का अनुशासनात्मक प्रयास है।
- संस्मरण विधा आत्मीयता पूर्ण □ा से संपर्क में आये हुए व्यक्तियों की स्मृति की रचनात्मक प्रस्तुति है।
- उपन्यास की परिभाषा बता सकेंगे।
- उपन्यास के तत्वों पर प्रकाश डाल सकेंगे।

2.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. संस्मरण और अन्य गद्य विधाओं का पारस्परिक साम्य/वैषम्य निरूपित कीजिए।
2. उपन्यास के तत्वों पर प्रकाश डालिए।
3. आत्मकथा के संप्रत्यय को स्पष्ट कीजिये|

इकाई 3- माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के लक्ष्य और उद्देश्य

इकाई की रुप रेखा

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 हिन्दी शिक्षण के लक्ष्य एंव उद्देश्य
3.4 शैक्षिक उद्देश्यों और शैक्षिक लक्ष्यों में अन्तर
3.5 सामान्य और विशिष्ट उद्देश्यों में अन्तर
3.6 हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य
3.6.1 हिन्दी भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्य
3.6.2 विद्यालय के विभिन्न स्तरों के अनुसार उद्देश्य
3.6.3 हिन्दी भाषा शिक्षण के मूल उद्देश्य/विशिष्ट उद्देश्य
3.7 हिन्दी ज्ञान की उपयोगिता
3.8 सारांश
3.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.10 निबन्धात्मक प्रश्न
3.11 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

3.1 प्रस्तावना

भाषा भावाभिव्यक्ति एंव विचार-विनिमय का सांकेतिक साधन हैं। जहाँ तक भावाभिव्यक्ति की बात है यह कार्य तो संसार के सभी प्राणी किसी न किसी रूप में करते हैं, जैसे- कुत्ते भौं-भौं करके, बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ करके और चूहे चूँ-चूँ करके, चिड़ियों की चीं-चीं और कू-कू किसने नहीं सुनी। छोटे से छोटे जीव में भी यह क्रिया देखी जाती हैं। चींटियाँ एक-दूसरे से मुँह मिलाकर न जाने क्या अभिव्यक्त करती हैं। व्यापक अर्थ में संसार के विभिन्न प्राणियों द्वारा प्रयुक्त भावभिव्यक्ति के इन साधनों अंग-प्रत्यंगों के संचालन, भाव-मुद्राओं और ध्वनि संकेतो को भाषा कहते हैं। इस अर्थ में संसार के सभी प्राणियों की अपनी-अपनी भाषाएँ हैं। परन्तु विचार अभिव्यक्ति विधाता ने केवल मनुष्य को ही दी हैं। वह भावाभिव्यक्ति के साथ-साथ विचार भी करता है और विचार-विनिमय भी। आदिकाल में तो

मनुष्य भी केवल भावाभिव्यक्ति तक सीमित था और तब वह कार्य प्रायः अंग-प्रत्यंगों के संचालन, भाव मुद्राओं और विभिन्न प्रकार की ध्वनियों के माध्यम से करता था परन्तु धीरे-धीरे उसने विचार प्रधान निश्चित ध्वनि संकेतों और उन ध्वनि संकेतों के लिए निश्चित लिपि का विकास किया आज जब हम भाषा की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य मनुष्य द्वारा विकसित इन ध्वनि संकेतों से ही होता हैं। पर इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि मनुष्य की भाषा में अंग-प्रत्यंगों के संचालन और भाव-मुद्राओं का कोई स्थान नहीं हैं। भाव एंव विचारों की स्पष्टता के लिए उनका उपयोग तो स्वभावतः होता ही है और होना भी चाहिए। इस अर्थ में भाषा केवल मनुष्य की विषेशता हैं। मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से भाषा का जन्म मनुष्य के मनोभावों और विचारों की अभिव्यक्ति के प्रयत्न स्वरूप हुआ हैं। आज उसके द्वारा मनुष्य अपने मनोवेगों और विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं। इस प्रकार भाषा विचार प्रक्रिया का परिणाम एंव आधार दोनों हैं। विचारों से भाषा का विकास होता हैं और भाषा से विचारों का विकास होता हैं। भाषा और विचार एक दूसरे पर निर्भर करते हैं।

3.2 उददेश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप योग्य हो सकेगें कि-

हिन्दी भाषा शिक्षण के लक्ष्य और उद्देश्य जान सकेगें।

शैक्षिक उद्देश्यों और शैक्षिक लक्ष्यों को जान सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण के लक्ष्य और उद्देश्य में अन्तर कर सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण के महत्व को जान सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण के सामानय उद्देश्यों को जान सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण के सामान्य और विशिष्ट उद्देश्यों में अन्तर कर सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण के मूल्य उद्देश्यों को जान सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण द्वारा बच्चों में हिन्दी विषय के ज्ञान की उपयोगिता को समझ सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण में बच्चों के सभी स्तरों के अनुसार लक्ष्य और उद्देश्यों को समझ सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्यों को बताने योग्य हो सकेगं।

3.3 हिन्दी शिक्षण के लक्ष्य एंव उद्देश्य

उद्देश्य एक पूर्वदर्शित लक्ष्य है जो किसी क्रिया को संचालित करता है अथवा व्यवहार को प्रेरित करता हैं। यदि लक्ष्य निश्चित तथा स्पष्ट होता है तो व्यक्ति की दिशा उस समय तह उत्साहपूर्वक चलती रहती हैं, जब तक वह उस लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर लेता। जैसे-जैसे लक्ष्य के निकट आता जाता है जब व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने को ही उद्देश्य की प्राप्ति कहते हैं। संक्षेप में उद्देश्य की पूर्वदर्शित लक्ष्य है जिसको प्राप्त करने के लिए व्यक्ति प्रसन्नतापूर्वक उत्साह के साथ चिंतनशील रहते हुए क्रियाशीला होता हैं।

भाषा वह व्यक्ति है जिसके माध्यम से हम अपने विचार दूसरों के सम्मुख प्रकट करते हैं और दूसरों के विचारों की समझते हैं। भाषा के आधार पर ही व्यक्ति साहित्य को जन्म देता हैं।

भाषा के विषय में श्री पंत लिखते हैं-

''भाषा संसार का नादमय स्वरूप है- यह विश्व ह्दय-तन्त्रों की झंकार है, जिनके स्वर में यह अभिव्यक्ति पाती हैं।'' इस आधार पर भाषा-शिक्षण के तीन प्रमुख उददेश्य निर्धारित किए गए हैंः-

1) भाव-प्रकाशन

2) भाषा-ग्रहण

3) सृजन

हिन्दी शिक्षण के उददश्यों के सम्बन्ध में श्री सीताराम चतुर्वेदी का विचार निम्नलिखित है- ''हिन्दी भाषा की शिक्षा का उददेश्य यह है कि हम दूसरों की कही और लिखी हुई बातें ठीक-ठीक समझ और पढ़ सकें तथा शुद्ध प्रभावोत्पादक और रमणीक ापे से बोल और लिख सकेगें।''

3.4 शैक्षिक उद्देश्यों और शैक्षिक लक्ष्यों में अन्तर

शैक्षिक प्रक्रिया के शिक्षण पक्ष में उददेश्यों का निर्धारण एक महत्वपूर्ण सोपान हैं। कक्षा में शिक्षक व छात्रों की समस्त गतिविधियाँ और उनका मूल्यांकन उद्देश्य बद्ध होना चाहिए, ताकि उनका परिणाम सार्थक, उपयोगी और स्थायी हो। पूर्व निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार कार्य सम्पादन से सिद्धि की सम्भावना अधिक हो जाती है। एक भाषा को जानने-सीखने के अनेक उद्देश्य और लक्ष्य होते हैं। किन्तु उन तक पहुँचने से पूर्व कुछ सन्दर्भो को समझना आवश्यक हैं। इनमें से पहला है- लक्ष्य और उद्देश्य का भेद, दूसरा-सामान्य और विशिष्ट उद्देश्यों का भेद और तीसरा विशिष्ट उद्देश्यों का स्वरूप। इनका सबका संक्षिप्त विवेचन यहाँ प्रस्तुत हैं-

शैक्षिक लक्ष्य

1. किसी विषय को पढ़ने-प□ने के कारण शैक्षिक लक्ष्यों द्वारा निर्धारित होते हैं।

2. शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में विधालय और शिक्षक के साथ ही सहपाठी, परिवार और समाज की भी भूमिका होती हैं।

3. शैक्षिक लक्ष्य व्यापक होते हैं। इन्हें किसी एक कक्षा या प्रकरण के अध्ययन से अर्जित नहीं किया जा सकता बल्कि समस्त अध्ययन परम्परा में इनका अधिगम होता रहता हैं।

4. शैक्षिक लक्ष्य उन भावात्मक आदर्शो को प्रस्तुत करते हैं जिन्हें सामने रखकर हम गति तो कर सकते हैं किन्तु उन्हें पूरी तरह अधिगत करना सम्भव नहीं होता। दूसरी बात कि शिक्षण उद्देश्यों का क्षेत्र इतना व्यापक होता है कि उनकी उपलब्धि का मापन सम्भव नहीं होता। उदाहरणतः भाषा शिक्षण का उद्देश्य है- भाषा का शुद्ध प्रयोग करना। इस दिशा में सतत प्रयासशील रहने पर भी विभिन्न परिस्थितियों एंव सन्दभों में भाषा प्रयोग में भूल‘चूक होना स्वाभाविक होता है और साथ ही कोई व्यक्ति अपने व्यवहारों में भाषा का शुद्ध प्रयोग कर रहा है या नहीं इसका मूल्यांकन कर पाना सम्भव नहीं होता।

शैक्षिक उद्देश्य

1. विषय को पढ़ने के उपरान्त होने वाले व्यावहारिक परिवर्तन शैक्षिक उद्देय की और संकेत करते हैं।

2. शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति विधालय की कक्षा में शिक्षक के प्रयासों से की जा सकती हैं।

3. शैक्षिक उद्देश्य सीमित होते है। इनका अधिगम किसी प्रकरण विशेष के अध्ययन से संभव होता हैं।

4. शैक्षिक उद्देश्य व्यावहारिक होते है और उन्हें प्रकरण विशेष के शिक्षण द्वारा अर्जित किया जा सकता हैं। साथ ही स्पष्टताः परिभाषित होने के कारण मूल्याकंन की विधियों द्वारा इनका मापन भी किया जा सकता हैं। उदाहरण के लिए संज्ञा की परिभाषा और उसके भेदों का शिक्षण। इस लक्ष्य को उपयुक्त इकाई शिक्षण द्वारा सरलता से पाया जा सकता है और साथ ही निर्धारित मूल्यांकन पद्धतियों के प्रयोग से इनके अधिगम का मूल्याकंन भी किया जा सकता हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न ***1-*** माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के मुख्य उद्देश्य लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

प्रश्न *2*- शैक्षिण उद्देश्य और शैक्षिण लक्ष्यों में मुख्य अन्तर लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3.5 सामान्य और विशिष्ट उद्देश्यों में अन्तर

हिन्दी भाषा शिक्षण के सामान्य और विशिष्ट उद्देश्यों मे निम्नलिखित अन्तर है-

सामान्य उद्देश्य सम्पूर्ण विषय के अध्ययन पर निर्भर होते हैं। इनका क्षेत्र काफी व्यापक होता हैं इसलिए इनका अधिगम अध्येता की वृत्ति, रूचि और क्षमता के अनुसार भिन्न होता है।

इनके अधिगम के दौरान-ज्ञानात्मक भावनात्मक और क्रियात्मक सभी उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयास किया जाता हैं। इस प्रक्रिया में भाषा शिक्षण के चारो मौलिक कौशलों-श्रवण, वाचन, पठन और लेखन का विकास होता है। लेकिन यह विकास भावात्मक होता है न कि वस्तुपरक उनका यथारूप मूल्यांकन या मापन सम्भव नहीं होता और अन्तिम बात कि ये काफी दीर्घावधिक होते हैं। इनका अधिगम, कक्षा, शिक्षक, सहपाठी, परिवार सभी के समन्वित प्रयास और सान्निध्य से किया जाता हैं।

विशिष्ट उद्देश्य विषय के किसी प्रकरण विशेष पर आधारित होते हैं। प्रकरण में निहित ज्ञान, भाव और क्रिया सभी पक्षों का अधिगम प्रकरण की समाप्ति पर अनिवार्यत से होना चाहिए। इसमें वृत्ति, रूचि या क्षमतागत भिन्नता के कारण ज्ञान, बोध व क्रियात्मक अधिगम के स्तर पर किसी किस्म की भिन्नता की कोई संभावना को कम से कम करने का प्रयास किया जाता है। प्रकरण के अनुसार विशिष्ट उद्देश्य सीमित प्रकृति के होते है और उनमें भाषा शिक्षण के किसी एक या दो कौशलों पर ही ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इन कौशलों को ध्यान में रखकर ही अधिगम की योजना तैयार की जाती हैं। अतः प्रकरण के उपरान्त उनका अधिगम सुनिश्चित किया जाता हैं। विशिष्ट उद्देश्यों का अधिगम प्रकरण की समाप्ति पर होना अनिवार्य होता हैं। उसके लिए कक्षा और उनकी अन्तर्क्रिया का योगदान होता हैं।

3.6 हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य

हिन्दी भाषा शिक्षण के उददेश्यों को सामान्यतः निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जाता हैंः-

1) सामान्य उददेश्य

2) विद्यालय के विभिन्न स्तरों के अनुसार उददेश्य

3) मातृ भाषा शिक्षण के मूल उदेदश्य

3.6.1 हिन्दी भाषा शिक्षण के सामान्य उददेश्य-

छात्रों में आत्म-अभिव्यक्ति की समुचित योग्यता उत्पन्न करना।

छात्रों की लेखन-शक्ति का समुचित विकास करना।

छात्रों में पठन, वर्तनों तथा स्वाध्याय की शक्ति उत्पन्न करना।

छात्रोंकी सृजनात्मकं व्यक्ति का विकास करना।

छात्रों में अन्य भाषाओं को समझनें की योग्यता उत्पन्न करना।

विभिन्न परिस्थिति का उच्च कोटि के साहित्य के माध्यम से ज्ञान कराना।

अर्जित ज्ञान को उपयुक्त शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करने की क्षमता उत्पन्न करना।

3.6.2 विद्यालय के विभिन्न स्तरों के अनुसार लक्ष्य एंव उददेश्य-

हिन्दी भाषा शिक्षण के उददेश्यों को निम्नलिखित स्तर पर विभाजित किया जाता हैं-

1. प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा षिक्षण के लक्ष्य एंव उद्देश्य-

भाषा के ध्वनि, अक्षर तथा वर्तनी पक्षों का ज्ञान।

शब्द, पद, वाक्यांश एंव वाक्यों का सामान्य ज्ञान।

भाषा को सुनकर यथारूप अर्थग्रहण की क्षमता।

मौखिक रूप से अपने विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति की योग्यता का विकास।

पढ़कर समझनें की योग्यता अर्जित करना। लिखित भाषा के माध्यम से विचारों और भावों की अभिव्यक्ति का कौशल।

सुन और पढ़कर हिन्दी भाषा एंव विषय के रसास्वादन की वृत्ति का विकास।

कथन और लेखन के माध्यम से अभिव्यक्ति के रसास्वादन की वृत्ति का विकास।

वाचन की शिक्षा इस प्रकार करना जिससे शुद्ध शब्दों का उच्चारण कर सकें।

बोध-शक्ति विकसित करने के लिए शब्द-भण्डार को विकसित करना तथा अन्य विषयों को समझने की योग्यता उत्पन्न करना।

बालक को वार्तालाप करने तथा शिष्टाचार की शिक्षा प्रदान करना।

कथा वाचन हेतु गति-यति-लय भाव तथा आरोह व अवरोह क्रम से वाचन की क्षमता प्रदान करना।

शिक्षार्थियों की कल्पना शक्ति को विकसित करना।

गध अथवा पध को सम्वाद रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता उत्पन्न करना।

विचारों को क्रमबद्ध करना तथा शिक्षार्थियों में लिपि में ठीक-ठीक ज्ञान व लेखन, कला को विकसित करना।

छात्रों में सुन्दर लेख, शुद्ध वर्तनी और व्याकरण सम्मत वाक्य रचना के कौशल का विकास करना।

छात्रों में शुद्ध एंव शिष्ट भाषा सीखने के साथ-साथ सद्वृत्तियों का विकास करना।

2. उच्च-प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण के लक्ष्य एंव उद्देश्य-

भाषा की ध्वनियों तथा शब्दों के शुद्ध उच्चारण और लेखन की शिक्षा।

सटीक शब्दावली और अवसरानुकूल भाषाशैली का विकास।

शुद्ध, प्रवाहपूर्ण तथा प्रभावोत्पादक वाचन।

पठन के दौरान रस, भाव तथा शब्दसौन्दर्य की अनुभूति का विकास।

संवादों के वाचन और अभिनय की कला का विकास।

शब्द, सूक्ति, मुहावरों इत्यादि के अर्थग्रहण एंव प्रयोग की क्षमता का विकास।

पाठ, कविता, मौखिक प्रस्तुति, व्याख्या इत्यादि को सुनकर यथार्थ भाव गहण करने की क्षमता।

उचित शब्दों गति एंव भाव तथा प्रसंगानुकूल शैली से मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति क्षमता का विकास।

स्वाध्याय वृत्ति का विकास।

व्याकरण के ज्ञान तथा प्रयोग की क्षमता व कौशल का विकास।

मौन वाचन का अभ्यास, क्षमता तथा इस माध्यम से तथ्यों को ग्रहण करने की योग्यता का विकास।

स्वाध्याय तथा सृजन वृत्ति का विकास।

छात्रों में नये-नये शब्दों जैसे उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि एंव समास सहित सूक्तियों का विकास करना।

छात्रों में शब्दों की शुद्ध वर्तनी वाक्य रचना के नियम एंव विराम चिह्नों के उचित प्रयोग सम्बन्धी जानकारी प्रदान करना।

छात्रों में उचित निर्गम, बल प्रवाह एंव धैर्य के साथ बोलने के कौशल का उत्तरोत्तर विकास करना।

छात्रों में मातृभाषा एंव उसके साहित्य के अध्ययन के प्रति रूचि का विकास करना।

छात्रों में दूसरे के द्वारा मौखिक एंव लिखित रूप में अभिव्यक्त विचारों को जानने की रूचि का विकास करना।

3. माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण के लक्ष्य एंव उद्देश्य-

भाषा व साहित्य की विभिन्न विधाओं की शब्दावली, प्रस्तुतिकरण शैलियों और अन्य विशिष्ट तत्त्वों को समझने की योग्यता का विकास।

मौन वाचन और द्रुत के माध्यम से पाठ्यवस्तु के शीघ्र अर्थग्रहण पूर्वक पाठ की योग्यता का विकास।

सस्वर वाचन के माध्यम से साहित्य की विविध विधाओं के प्रस्तुतिकरण के कौशल का विकास।

मौखिक तथा लिखित भाषा के माध्यम से अपनी चुनी हुई शैली तथा विधा में अभिव्यक्ति के कौशल का विकास।

पठित भाषा के भाव, रस तथा सौन्दर्य की त्वरित अनुभूति, रसास्वादन तथा सराहना का कौशल।

भाषा के साहित्य तथा अभिव्यक्ति विधाओं का ज्ञान।

विविध गध-पद्य शैलियों, उनकी विषेशताओं तथा उपयोग का ज्ञान।

सुन-पढ़कर चिन्तन तथा सृजन की क्षमता का विकास।

भाषा के विविध रूपों, विधाओं, गद्य-पद्य रचनाओं के समालोचन की वृत्ति का विकास।

भाषा के साहित्य के अन्तर्हित भावों, कला-संस्कृति, इतिहास जैसे अमूर्त भावों को समझने की क्षमता का विकास।

उच्च कोटि के साहित्य सृजन की वृत्ति, अभ्यास तथा क्षमता का विकास।

छात्रों में भाषा के अध्ययन के प्रति रूचि जागृत करना।

निबन्ध-सार, प्रस्ताव, पत्र आदि लेखन कला का परिचय व्यावहारिक रूप में प्रदान करना।

शब्द भण्डार में सूक्ति, मुहावरों तथा लोकोक्तियों का विकास।

व्याकरण के नियमों का ज्ञान विकसित कराना।

अभिनय, अनुकरण, सम्वाद आदि का ज्ञान विकसित कराना।

हिन्दी भाषा की पाठ्य पुस्तकों में निहित प्राकृतिक तथ्यों एंव महत्वपूर्ण घटनाओं एंव धार्मिक विश्वासों की जानकारी देना।

छात्रों में अपने मौलिक भाव एंव विचारों को उचित □ग से अभिव्यक्त करने के कौशल का विकास करना।

अन्य के द्वारा लिखित लेख आदि के गुण एंव दोषों की पहचान करना।

छात्रों में निज भाषा एंव निज साहित्य के प्रति आदर व सम्मान का भाव पैदा करना।

4. माध्यमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण के लक्षण और उद्देश्य का निर्धारण-

हिन्दी भाषा शिक्षण का साधारण उद्देश्य एंव लक्ष्य बालक अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट कर सके तथा दूसरों के विचारों को समझ सके। इसे निम्नलिखित प्रकार से प्रकट कर सकते हैं-

1. आत्माभिव्यक्ति-

अ) अपने विचारों को दूसरों पर वाणी द्वारा स्पष्ट करने की शक्ति पैदा करना।

ब) अपने विचारों का अन्य मनुष्यों पर लिखकर प्रकट करने की शक्ति को उत्पन्न करना।

इसका तात्पर्य है कि भाषा पर हमारा ऐसा अधिकार हो जैसा कि कारीगर का अपने औजार पर होता हैं।

2. विचार ग्रहण करने की शक्ति-

अ) दूसरों के द्वारा कही गई बातों को सुनकर उनका ठीक-ठीक अर्थ समझने की शक्ति।

ब) दूसरे मनुष्यों द्वारा लिखे गए विचारों को ठीक-ठीक समझने की शक्ति का विकास।

3.विशेष उद्देश्य-

अ) साहित्य सौष्ठव का ज्ञान-

भाषा की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है कि हम उस भाषा का साहित्य पढ़कर ठीक प्रकार से समझ सकें तथा तत्कालिन अवस्था के अनुसार आधुनिक समय आधुनिक समय में उसका मूल्यांकन कर सकें।

उनके कल्पनात्मक तथा गंभीर विचारों का ज्ञान कर सकें। उनके साहित्यिक कला पक्ष, भाव पक्ष सौंदर्य की प्रशंसा कर सकें तथा इस प्रकार से अपने विचारों, भाषा तथा शैली को उनके समान बनाने की चेष्टा करते रहें। एक दिन में कोई मनुष्य भाषा का ज्ञाता अथवा साहित्यिक सौंदर्य की परख करने वाला नहीं बन सकता। एवं इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए मनुष्य को निरंतर अभ्यास करने की आवश्यकता पड़ती हैं। तभी वह साहित्य का आनंद प्राप्त कर सकता हैं।

ब) साहित्य तथा कला की उन्नति-

भाषा सीखने पर ही मनुष्य साहित्य तथा कल के विशेष ज्ञान की ओर आकृष्ट होता है तथा स्वंय ऊँचा उठने की प्रयास करता हैं। इससे साहित्य तथा कला की उन्नति होती हैं। हमारे ऋृषियों का प्राचीन ज्ञान जो 'वेद' के रूप में सुरक्षित हैं। उसका ज्ञान हमें भाषा के बिना नहीं हो सकता। अतः बिना भाषा ज्ञान के हम किस प्रकार साहित्य तथा कला की उन्नति कर सकतें हैं।

4. ज्ञान वृद्धि का साधन-

बालक जब माता के उदर से जन्म लेता है तो वह कुछ ज्ञान वातावरण के प्रभाव से प्राप्त करता हैं। बड़ा होकर वह अनुभव द्वारा भी कुछ सीखता रहता हैं। परन्तु भाषा ही उसकी बढ़ती हुई ज्ञान पिपासा को शांत करने में समर्थ होती हैं।

मनुष्य जब किसी विषय पर कुछ सोचता है तो उसे अपने समान या विरूद्ध विचार वाले लेखकों के विचार पढ़कर कुछ अधिक ज्ञान हो जाता हैं।

5. विचार शक्ति का विकास-

हिन्दी भाषा के द्वारा मनुष्य दूसरे के विचारों को ग्रहण करता है तथा उनको अपने मस्तिष्क में एकत्रित करता हैं। फिर उन पर विचार तथा मनन करके दूसरों के समक्ष उन्हें उपस्थित करता हैं। यदि हिन्दी भाषा न होती तो, न तो वह विचार ग्रहण ही कर सकता था, न उन्हें सुरक्षित रख सकता था, न उन्हें दूसरों पर प्रकट ही कर सकता या न उसकी विचार शक्ति का विकास ही हो सकता था। आधुनिक विज्ञान मनुष्य की इसी विचार तथा मन शक्ति के विकास का फल हैं। यह सब कुछ भाषा के माध्यम से ही हो रहा हैं।

6. व्यक्तित्व का प्रकाशन-

प्रत्येक मनुष्य की भाषा पर उसके व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट होती हैं। कोई भी मनुष्य व्याख्यान देकर अथवा कोई बात कहकर यह सुनना पसंद नहीं करता कि इसकी भाषा तथा शैली उस मनुष्य के समान हैं। वह यही सुनना पसंद करता है कि इसकी भाषा में निरालापन हैं। मनुष्य की इस उत्कृष्ट इच्छा के कारण ही हमें साहित्य में भिन्न-भिन्न प्रकार की शैलियों के दर्शन सुलभ हुए हैं। एक ही बात को भिन्न-भिन्न रूप में कहना ‘स्वतंत्र व्याक्तिव’ के प्रकाशन का ही कारण हैं। यह बात ‘मीठे वचनों’ के लिए कही गई उक्तियों से स्पष्ट हो जाएगी।

वषीकरण एक मंत्र है तज दे बचन कठोर

गुण के गाहक सहस नर बिनु गुण लहैन कोय

□तुलसी

7. आनंद प्राप्ति का साधन-

आजकल नवीन प्रकार के साहित्य की रचनाओं तथा प्राचीन काल के ज्ञानात्मक साहित्य के पढ़ने से मनुष्य को आनंद की प्राप्ति होती हैं। हमारे संस्कृत साहित्य की ‘रसात्मक वाक्यं काव्यम्’ ‘लोकोत्तर आनंद दाता काव्यम्’ आदि सूक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि काव्य सृजन का मुख्य ध्येय ही

आनंद देना हैं। यदि हम हिन्दी भाषा वाणी अथवा लिखित के ज्ञान से ही शून्य हैं तो हमें इस आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती क्योंकि यह हिन्दी भाषा के माध्यम से ही प्राप्य है अन्य साधनों से नहीं। यह प्रायः सभी ने अनुभव किया है कि कभी-कभी किसी के व्याख्यान या उपदेश से आनंद विभोर हो वाह-वाह कर उठते हैं

इसके अतिरिक्त भाषा-शिक्षण के कुछ सामान्य उद्देश्य और भी हैं जिनका अनुभव मनुष्य नित्य प्रति करते हैं।

5. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण के लक्ष्य एंव उददेश्य-

1. इस स्तर तक छात्रों का मानसिक विकास पर्याप्त सीमा तक हो जाता है अतः उनमें सौन्दये-बोध का ज्ञान कराने के साथ-साथ सौन्दर्य-विवेचन की योग्यता विकसित करना।

2. छात्रों को उच्च कोटि के लेखकों की लेखन-शैली का समुचित ज्ञान कराना तथा उन्हें स्वंय अपनी शैली का निर्माण करने में सहायता देना।

3. भाषा की शुद्धता तथा अशुद्धता के सम्बन्ध में वांछित ज्ञान कराना।

4. उच्च स्तर की आत्माभिव्यक्ति तथा सृजनात्मक शक्ति का विकास करने के लिए वाद-विवाद, कहानी आदि में भाग लेने के लिए उत्साहित करना।

5. छात्रों को स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित करना तथा उनमें स्वंय साहित्य का सृजन कर सकने की योग्यता उत्पन्न करना।

3.6.3 हिन्दी भाषा शिक्षण के मूल उद्देश्य/विशिष्ट उददेश्य-

हिन्दी भाषा शिक्षण के विशिष्ट उददेश्यों का प्रतिपादन कौशलगत व्यवहार का उद्घाटन करता हैं। विशिष्ट उददेश्यों की संकल्पना शिक्षण में ज्ञानात्मक, कौशलात्मक, सृजनात्मक अभिवृत्यात्मक एंव रसात्मक तथा समीक्षात्मक उददेश्य की विशिष्टता को स्वीकार करती है जो हिन्दी शिक्षण की अधिगम प्रक्रिया में अपेक्षित हैं। यह शिक्षण प्रक्रिया को सारगर्मित एंव दायित्व प्रदान करती हैं।

इसका विस्तृत परिचय इकाई चार में दिया गया हैं।

3.7 हिन्दी ज्ञान की उपयोगिता

विज्ञान और तकनीक के इस युग में भाषा केवल मात्र व्यावहारिक सम्प्रेषण का माध्यम न रहकर अनेक व्यक्तिगत, सामाजिक, संस्थागत और अधिकारिक उद्देश्यों की पूर्ति का औजार भी बन गई हैं। ब⃞ते व्यवसायीकरण ने साधारण से साधारण व्यक्ति के लिए मानक, सर्वमान्य और औपचारिक भाषा का ज्ञानार्जन और अभ्यास अनिवार्य कर दिया हैं। इस दृष्टि से बोलियों और उपभाषाओं के

साथ किसी आधुनिक सम्पर्क भाषा पर अधिकार पाए बिना जीवन व्यवहारों में सफलता पाना कठिन हो चला हैं।

हिन्दी को भारतीय संघ की राष्ट्र भाषा का पद दिए जाने से पूर्व इसकी व्यापकता, स्वीकार्यता और अभिव्यक्ति क्षमता का पर्याप्त परीक्षा हो चुकी थी। उसी आधार पर इसे राष्ट्र की सम्पर्क भाषा का दायित्व सौंपा गया था। शासकीय कार्यो, विषयों, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के माध्यम और पश्चिमीकरण की प्रबल लहरों पर सवार अंग्रेजी के दारूण सम्पीडन के बावजूद हिन्दी आज भी लोगों के भाषा-व्यवहारों में प्रचालित हैं। अपनी आन्तरिक क्षमता के चलते आधुनिक भारतीय भाषा के रूप हिन्दी आज देश के लगभग सभी भागों और दुनियाभर के अनेक देशों का आतिथ्य ग्रहण कर रही हैं।

इन परिस्थितियों में प्रत्येक भारतीय के लिए हिन्दी का ज्ञान अपरिहार्य हो चला हैं। भारतवर्ष के अधिकांश राज्यों मेहिन्दी को मातृभाषा के रूप में विद्यालयी पाठ्यक्रम में शामिल किया गया हैं। जब कि हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी का शिक्षण द्वितीय भाषा के रूप में होता हैं। मध्य भारत के अधिकांश राज्यों में हिन्दी जनभाषा के रूप में स्थापित हैं। हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी लोकभाषा के रूप में तो नहीं लेकिन अजीविका और प्रव्रजन के कारण सीखी जाती हैं। कभी हिन्दी विरोध के चलते उग्र अभियान और दंगा-फसाद तक झेल चुके दक्षिण भारत में भी व्यापार, शिक्षा, नौकरी जैसे कारणों से हिन्दी का पठन-पाठन काफी प्रचालित हैं। इस प्रकार वास्तव में भारत की सम्पर्क और व्यवहार भाषा हिन्दी हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 3- हिन्दी शिक्षण के सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों में अन्तर कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

3.8 सारांश

प्रस्तुत सूची में हिन्दी शिक्षण के लक्ष्यों और उद्देश्यों का कथन किया गया हैं। इनमें से अधिकांश मूलतः तो हिन्दी शिक्षण के लक्ष्य हैं क्योंकि इनका अधिगम किसी एक कक्षा या प्रकरण के अध्ययन से नहीं किया जा सकता। लेकिन इतना जरूर है कि हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों का चयन भी इन्हीं लक्ष्यों की सूची से होता हैं। लक्ष्यों का निर्धारण किए बिना उद्देश्यों का निर्धारण नहीं हो सकता। लक्ष्य व्यापक दिशा-निर्देश हैं जिनके अधिगम के लिए अनुकूल पाठ्य-सामग्री, सहायक सामग्री और शिक्षण उपकरणों की व्यवस्था की जाती है। इस प्रक्रिया से सीधे तौर पर तो शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति होती है लेकिन परोक्ष रूप से लक्ष्यों का अधिगम भी होता रहता हैं।

3.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1-

भाषा व साहित्य की विभिन्न विधाओं की शब्दावली, प्रस्तुतिकरण शैलियों और अन्य विशिष्ट तत्त्वों को समझने की योग्यता का विकास।

मौन वाचन और द्रुत के माध्यम से पाठ्यवस्तु के शीघ्र अर्थग्रहण पूर्वक पाठ की योग्यता का विकास।

सस्वर वाचन के माध्यम से साहित्य की विविध विधाओं के प्रस्तुतिकरण के कौशल का विकास।

सुन-पढ़कर चिन्तन तथा सृजन की क्षमता का विकास।

भाषा के विविध रूपों, विधाओं, गद्य-पद्य रचनाओं के समालोचन की वृत्ति का विकास।

भाषा के साहित्य के अन्तर्हित भावों, कला-संस्कृति, इतिहास जैसे अमूर्त भावों को समझने की क्षमता का विकास।

छात्रों में भाषा के अध्ययन के प्रति रूचि जागृत करना।

व्याकरण के नियमों का ज्ञान विकसित कराना।

हिन्दी भाषा की पाठ्य पुस्तकों में निहित प्राकृतिक तथ्यों एंव महत्वपूर्ण घटनाओं एंव धार्मिक विश्वासों की जानकारी देना।

छात्रों में अपने मौलिक भाव एंव विचारों को उचित [illegible]ा से अभिव्यक्त करने के कौशल का विकास करना।

उत्तर 2- हिन्दी भाषा शिक्षण के शैक्षिक लक्ष्य और शैक्षिक उद्देश्य मे निम्नलिखित अन्तर है- ः

शैक्षिक लक्ष्य शैक्षिक उद्देश्य

किसी विषय को पढ़ने-प□मे के कारण शैक्षिक लक्ष्यों द्वारा निर्धारित होते हैं।

शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति में विधालय और शिक्षक के साथ ही सहपाठी, परिवार और समाज की भी भूमिका होती हैं।

शैक्षिक लक्ष्य व्यापक होते हैं। इन्हें किसी एक कक्षा या प्रकरण के अध्ययन से अर्जित नहीं किया जा सकता बल्कि समस्त अध्ययन परम्परा में इनका अधिगम होता रहता हैं।

विषय को पढ़ने के उपरान्त होने वाले व्यावहारिक परिवर्तन शैक्षिक उद्देय की और संकेत करते हैं।

शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति विधालय की कक्षा में शिक्षक के प्रयासों से की जा सकती हैं।

शैक्षिक उद्देश्य सीमित होते है। इनका अधिगम किसी प्रकरण विशेष के अध्ययन से संभव होता हैं।

उत्तर 3- हिन्दी भाषा शिक्षण के सामान्य और विशिष्ट उद्देश्यों मे निम्नलिखित अन्तर है- ः

सामान्य उद्देश्य

सामान्य उद्देश्य सम्पूर्ण विषय के अध्ययन पर निर्भर होते हैं। इनका क्षेत्र काफी व्यापक होता हैं इसलिए इनका अधिगम अध्येता की वृत्ति, रूचि और क्षमता के अनुसार भिन्न होता है।

इनके अधिगम के दौरान-ज्ञानात्मक भावनात्मक और क्रियात्मक सभी उद्देश्यों की पूर्ति का प्रयास किया जाता हैं। इस प्रक्रिया में भाषा शिक्षण के चारो मौलिक कौशलों-श्रवण, वाचन, पठन और लेखन का विकास होता है। लेकिन यह विकास भावात्मक होता है न कि वस्तुपरक उनका यथारूप मूल्यांकन या मापन सम्भव नहीं होता और अन्तिम बात कि ये काफी दीर्घावधिक होते हैं।

विशिष्ट उद्देश्य

विशिष्ट उद्देश्य विषय के किसी प्रकरण विशेष पर आधारित होते हैं। प्रकरण में निहित ज्ञान, भाव और क्रिया सभी पक्षों का अधिगम प्रकरण की समाप्ति पर अनिवार्यत से होना चाहिए। इसमें वृत्ति, रूचि या क्षमतागत भिन्नता के कारण ज्ञान, बोध व क्रियात्मक अधिगम के स्तर पर किसी किस्म की भिन्नता की कोई संभावना को कम से कम करने का प्रयास किया जाता है। प्रकरण के अनुसार विशिष्ट उद्देश्य सीमित प्रकृति के होते है और उनमें भाषा शिक्षण के किसी एक या दो कौशलों पर ही ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1- विद्यालय स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण के मूल उद्देश्य एवं लक्ष्यों को विस्तार से लिखिए।

3.11 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

चर्चा और स्पष्टीकरण के बिन्दु

इस इकाई के अध्ययन के बाद हो सकता है कि आप कुछ बिन्दुओं पर चर्चा करना चाहें व कुछ अन्य के बारे में कुछ स्पष्टीकरण चाहें, ऐसी स्थिति में कृपया उन्हें नीचे नोट कीजिए।

चर्चा के बिन्दु

....
....
....
....
....
....
....

....
....
....

स्पष्टीकरण के बिन्दु

....
....
....

....
....
....
....
....
....
....

इकाई 4-इकाई नियोजन का प्रत्यय, इसका महत्व और निर्माण विधि

इकाई की रुप रेखा

4.1 प्रस्तावना
4.2 उददेश्य
4.3 शैक्षिक नियोजन का अर्थ
4.3.1 शैक्षिक नियोजन की पृष्ठ भूमि
4.4 इकाई योजना-परिचय और प्रक्रिया
4.5 पाठ्य-सामग्री का इकाइयों में वर्गीकरण
4.5.1पाठ्यक्रम का साप्ताहिक वर्गीकरण
4.6 एक अच्छी इकाई की विशेषताएं
4.7 इकाई नियोजन के उपयोग एवं महत्व
4.8 भाषा इकाई नियोजन के उद्देश्य
4.8.1प्राथमिक स्तर पर इकाई नियोजन के उद्देश्य
4.9 प्राथमिक स्तर पर कक्षावार इकाई नियोजन का निर्माण
4.10 पाठ योजना का ईकाई उपागम
4.11 इकाई उपागम के गुण
4.12 इकाई उपागम के अवगुण
4.13 इकाई योजना का मूल्यांकन
4.14 शिक्षण शास्त्रूीय विश्लेषण के सोपान
4.15 सारांश
4.16 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.17 निबन्धात्मक प्रश्न
4.18 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

4.1 प्रस्तावना

भाषा इकाई नियोजन एक योजनाबद्ध प्रक्रिया हैं,भाषा अपनी मूल प्रकृति में वाणी और लेखन दोनो का संयुक्त रुप हैं। जां े भाषा हम बोलते है वह मौखिक या वाचिक होती हैं और जो भाषा हम पढ़ते हैं वह लिखित होती हैं इकाई का नियोजन भाषा के दोनों ही रुपों को ध्यान में रखकर करना आवश्यक हैं। भाषा ज्ञान का माध्यम तो हैं लेकिन ज्ञान विषय की अपेक्षा कौशल दक्षता और क्षमता का विशेषणिक है े। इसलिए इसे कौशल विषय या कहा जाता है। भाषा कौशलों का विकास सतत उन्मुखीकरण अभ्यास और भाषाई वातावरण में रहने से होता हैं। जिन्हे हम अभ्यास और व्यक्त

करना कहते हैं। ये कौशन विभिन्न दक्षताओं यानी में निहित होते हैं और जब निर्धारित दक्षताओं पर शिक्षार्थी का अधिकार हो जाता हैं तो यह माना जाता कि विद्यार्थी ने दक्षता प्राप्त कर ली हैं या मुख्यधारा में उपलब्ध कर लिया है। दक्षताओं का अभिप्राय ही यह है कि उस पर सतत अभ्यास और अध्ययन अध्यापन से अधिकार प्राप्त किया जाए।

भाषा शिक्षण में इकाई का नियोजन एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। अन्य विषयों में तो विषय प्रकरण या टॉपिक्स देकर उन पर सामग्री दी जा सकती हैं लेकिन भाषा दक्षताएँ और उनमें निहित कौषलों का नियोजन करना होता है। भाषा के मुख्य रुप से चार कौशल है- सुनना,बोलना,पढ़ना और लिखना इन चारों कौशलों को पृथक पृथक करके नहीं सिखाया जा सकता बल्कि ये एक दूसरे से जुड़े हैं- जैसे बोले बिना सुना नहीं जा सकता हैं या लिखा नही जा सकता हैं। सुनने के लिए अभ्यास सामग्री तैयार की जा सकती हैं लेकिन वह सामग्री बोलने से सम्बद्ध होगी। अब यह देखना होगा कि इन कौशलों का इकाई में नियोजन समन्वय के साथ किस प्रकार किया जाए और ये कौशल किन किन दक्षताओं में निहित हैं। भाषा शिक्षण चारों कौशलों के समन्वय के साथ ही प्रभावी और उपयोगी होता हैं। पृथक पृथक कौशल का शिक्षण उचित भी नहीं और सरलता से संभव भी नही हम भाषा को उसकी समग्रता में ग्रहण करते हैं। इसलिए एक साथ अनेक कौशलों और उनसे सम्बद्ध दक्षताओं का प्रयोग किया जाता है।

4.2 उददेश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप योग्य हो सकेगें कि-

हिन्दी भाषा शिक्षण में शैक्षिक नियोजन में समझ हो सकें।

इकाई योजना की प्रक्रिया को जान सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण में इकाई नियोजन के उपयोग और महत्व को जान सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण में इकाई नियोजन के उद्देश्यों को जान सकेगें।

भाषा इकाई नियोजन के उद्देश्य को सभी स्तरों के अनुसार स्पष्ट कर सकेगें।

भाषा शिक्षण में इकाई के विविध प्रकार का विवरण कर सकेगें।

पाठ योजना में इकाई के उपागम को समझा सकेगें।

इकाई उपागम के गुण और अवगुणों को जान सकेगें।

इकाई योजना के विभिन्न सोपानों का ज्ञान प्राप्त कर सकेगे।

भाषा शिक्षण में इकाई योजना का मूल्यांकन कर सकेगें।

4.3 शैक्षिक नियोजन का अर्थ

निश्चित, व्यावहारिक और अचुक योजना किसी भी कार्य की सफलता का आधार होती है। वृहत् परियोजनाओं से सामान्य घरेलू काम-काज तक समस्त व्यवहार पूर्व-निर्धारित या सामयिक योजना के अनुसार ही संचालित होते हैं। योजना के निर्माण से किसी कार्य के उद्देश्यों और लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सकती है। कार्य सम्पादन में प्रयुक्त होने वाले संसाधनों, प्रक्रियाओं और प्रयासों के पूर्व-निर्धारण द्वारा उससे सम्बद्ध सभी पक्षों के समय, श्रम ऊर्जा और संसाधनों का सदउपयोग किया जा सकता है और भविष्य के लिए सुदृढ़ तथा विश्वसनीय आधार की स्थापना की जा सकती है।

इन लाभों और कतिपय मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के प्रभाव से शिक्षण में भी नियोजन के महत्व को स्वीकार किया गया है। विद्यार्थियों के ज्ञान, विचार रूचि इत्यादि में स्थायी परिवर्तन का माध्यम होने के कारण, शिक्षण नियोजन का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मानवकेन्द्रित और भविष्योन्मुख होने से यह कार्य संवेदनशीलता और सावधानी से किया जाना चाहिए।

शैक्षिक नियोजन की प्रकृति

शिक्षण के तीनों ध्रुवों- पाठ्यक्रम, शिक्षक और विद्यार्थी के संदर्भ में नियोजन का अपना महत्व है। नियोजन द्वारा शिक्षण के लक्ष्यों का पूर्व निर्धारित शिक्षा सटीक व सामयिक अनुपालन और यथारूप मूल्यांकन सम्भव होता है। इन तीनों के अन्तसंम्बन्ध और अन्योन्याश्रय के कारण शैक्षिक नियोजन की प्रकृति काफी संवेदनशील है। किसी क क्षेत्र में योजनागत दुर्बलता या विसंगति; शिक्षण की पूरी प्रक्रिया के उद्देश्य एवं लक्ष्यों को दिग्भ्रमित कर सकती है। इसलिए शिक्षण में नियोजन की प्रकृति, कार्यो, प्रक्रिया एवं प्रविधि का ज्ञान प्रत्येक शिक्षक के लिए अनिवार्य है।

4.3.1 शेक्षिक नियोजन की पृष्ठ भूमि

शैक्षिक नियोजन का प्रादुर्भाव गैस्टाल्ट मनोविज्ञान के सिद्धान्तों के आधार पर हुआ है। इस सिद्धान्त का प्रादुर्भाव और विकास जर्मनी में हुआ। इसके अनुसार हमारे समस्त अनुभव गैस्टाल्ट से युक्त होते है। अर्थात् हमारे अनुभव जिन अवयवों या पहलुओं पर निर्भर होते है उन्हें किसी विषय के घटकों के रूप में नही देख जा सकता और न ही उन्हं किन्ही घटकों के जोड़ के रूप में देखा जा सकता है। गैस्टाल्टन का तात्पर्य है किसी उद्दीपन के प्रति हमारी प्रतिक्रिया अपने आप में परिपूर्ण और अविश्लेषणीय होती है। उसे किसी खण्डों या तत्वों के रूप में तोड़ा नहीं जा सकता।

इस सिद्धान्त को मानव व्यवहार के समस्त पहलुओं में मान्यता मिली और शिक्षण में तो इसे मानकता और वैज्ञानिकता के सापेक्ष के उपकरण के रूप में पर्याप्त उपयोगी माना गया । परिणाम यह हुआ कि पाठ्यक्रम-निर्धारण और शिक्षण-नियोजन को ज्यादा व्यावहारिक और सुसम्बद्ध बनाने

की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिको ने शिक्षण में गेस्टाल्सन के व्यावहारिक उपयोग के लिए अनेक उपाय प्रस्तुत किए । जिनका एक महत्वपूर्ण पक्ष है- शैक्षिक नियोजन।

इस प्राणाली के अन्तर्गत शिक्षक सम्पूर्ण सत्र के पाठ्यक्रम, शिक्षण गतिविधियों, सहायक उपकरणों इत्यादि का उद्देश्यपूर्ण ओर लक्ष्यबद्ध नियोजन करता है। इस नियोजन को इकाई योजना के नाम से जाना जाता है। इकाई योजना द्वारा शिक्षक अपने कार्य को अधिकाधिक उपयोगी, लक्ष्यबद्ध और फलप्रद बना सकता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न -1 शैक्षिक नियोजन से आप क्या समझते है?

....
....
....

....
....
....
....
....
....

4.4 इकाई योजना-परिचय और प्रक्रिया

इकाई योजना का तात्पर्य है- किसी सत्र के लिए उपलब्ध कार्य-दिवसों के अनुपात में, पाठ्यक्रम में निर्धारित समस्त पाठ्य-सामग्री, पाठ्य-क्रियाओं और सहगामी गतिविधियों के सुचारू सम्पादन के लिए कार्यक्रम निश्चित करना। ऐसा करने से शिक्षक को उपलब्ध समय व संसाधनों के अनुसार पाठ्यक्रम के नियोजन की सुविधा उपलब्ध होती है।

इकाई योजना के माध्यम से शिक्षक एवं को सुनिश्चित कार्यक्रमानुसार शिक्षण के लिए सन्नद्ध करता है और अपेक्षित संसाधनों की व्यवस्था भी सहज हो जाती है। यदि इकाई योजना को सूचनापट्ट के माध्यम से विद्यार्थियों की जानकारी के लिए उपलब्ध कराया जाता है तो विद्यार्थी भी उत्सक और तैयार रहते है, जिनका परिणाम सभी के लिए हितकर होता है।

पाठ्य योजना निर्माण के लिए शिक्षक को अनेक प्रयास करने होते हैं। इसमें काफी आकलन, नियोजन और अनुमान की अपेक्षा होती है। शिक्षक को सत्र के दौरान उपलब्ध कार्य-दिवसों तथा पाठ्यक्रम में निर्धारित समस्त पाठ्य-सामग्री, पाठ्य- क्रियाओं और सहगामी गतिविधियों का ज्ञान होना चाहिए। इन्हीं के आकलन और नियोजन से इकाई योजना का कार्य सम्पन्न होता है। इन गतिविधियों का परिचय इस प्रकार है-

पाठ्यसामग्री का आंकलन- शिक्षण सत्र के आरम्भ मे कक्षा विशेष के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तक, सहायक अथवा पूरक- पुस्तक, व्याकरण खण्ड और शिक्षण सहगामी क्रियाओ के सम्पूर्ण योग का आकलन करना। इस प्रक्रिया द्वारा शिक्षक को पठन, अभ्यास, अन्तर्क्रिया और अन्य उपायों द्वारा पाठ्य-सामग्री की मात्रा व प्रकृति का अनुमान हो सकेगा।

कार्य-दिवसों/कालांशों का आंकलन- शिक्षण सत्र के दौरान शिक्षण गतिविधियों के लिए उपलब्ध कार्य-दिवसों की संख्या और उनमें भाषा-शिक्षण के लिए उपलब्ध कालांशों की संख्या अवधि और इनके माध्यम से प्राप्त होने वाले कुल समय का आंकलन करना। इस कार्य के लिए शिक्षक को वार्षिक कैलेडर, आवश्यक-सूची और स्कूल कैलेन्डर की आवश्यकता होती है। उपलब्ध कालांशों की संख्या का आकलन करते हुए शिक्षक को कुछ अंश तक लचीलापन बरतना चाहिए ताकि किन्हीं परिहार्य कारणों से यदि विद्यालय में कुछ दिन अवकाश रहे, तो भी शिक्षण नियोजन प्रभावी और कार्यक्रम रहे।

शिक्षण सामग्री को क्रमबद्ध करना- पाठ्यक्रम में निर्धारित सामग्री को क्रमबद्ध करने का उद्देश्य भाषा- शिक्षण को अधिकाधिक अभ्यास और आवृत्ति द्वारा उपयोगी और सफल बनाना है। पाठ्यक्रम के परस्पर सम्बद्ध अंशों को समायोजित करके शिक्षण- अभ्यासों को सघन किया जा सकता है। यह सह-सम्बन्ध प्रणाली अनेक शिक्षाविदों जिनमें महात्मा गांधी और गुरूवर टैगोर भी शामिल है, को अत्यन्त लोकप्रिय रही है। इस क्रम-निर्धारण के लिए कतिपय विधियों का अनुपालन किया जा सकता है। जिनका परिचय इस प्रकार है-

क. वार्षिक कैलेण्डर के अनुसार- पाठ्यक्रम में महावीर जयन्ती, रामनवी, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा आदि ऋतुओं , स्वतन्त्रता दिवस, वन-महोत्सव और इसी प्रकार से अन्य अवसरों सम्बद्ध पाठों का क्रम उनके आयोजन के तिथिक्रम के अनुसार निश्चित किया जाए। परिवेश में अवसरानुकूल माहौल और पाठ्यक्रम में उनसे सम्बद्ध विवरण का संयोग विद्यार्थियों के लिए सरल, उपयोगी और सामयिक होता है। विद्यालय के भीतर और बाहर शिक्षण और व्यवहार में एक समान अनुभवो के कारण सम्बद्ध विषय का अधिगम सहज और चिरस्थायी होता है।

ख. बोध, अनुभव व अभ्यास के क्रमानुसार- पाठ्यपुस्तक, पूरक-पुस्तक और सहगामी क्रियाओं के जो तत्व समान विषय, प्रकृति और परिणाम वाले हो, उन्हें एक साथ रखा जाना चाहिए। किसी कक्षा

की पाठ्य पुस्तक के जो अंश एक ही कवि, समान भाव, समान छन्द, रस या भाव वाली हो उन्हें एक साथ प�ाया जाना चाहिए। इसी प्रकार यदि छठी कक्षा का उदाहरण लें तो इस कक्षा की पाठ्य-पुस्तक में तुलसीदास कृत रामचरित मानस से जो अंश संकलित हों उन्हें इसी कक्षा की पूरक पुस्तक संक्षिप्त रामायण के सम्बद्ध अंश के साथ पढ़ाया जाए तो आवृत्ति के कारण अधिगम व अभ्यास बेहतर हो सकता है।

ग. गद्य, पद्य और व्याकरण अंशो का क्रमशः शिक्षण- भाषा-शिक्षा की समस्त विधाओं को मूलरूप से गद्य, पद्य और व्याकरण के अन्तर्गत रखा जा सकता है। इनके शिक्षण के उद्देश्यों और विधियों में पर्याप्त अन्तर है। इसे देखते हुए यदि पाठयपुस्तक और पूरक पुस्तक के गद्य और पद्य अंशों को क्रमशः प�ाया जाए और फिर व्याकरण का शिक्षण किया जाए, तो भाषा कौशलों की प्राप्ति और इन विधाओं का शिक्षण बेहतर हो सकता है। इस प्रणाली में हर तिमाही के लिए गद्य, पद्य और व्याकरण अंशों का निर्धारण किया जा सकता है और क्रमशः उनका शिक्षण किया जाता है। यह विधि शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिए सरल है।

कक्षा में भाषा-शिक्षण के इकाई का विभाजन उपरोक्त में से किसी भी विधि से किया जाए किन्तु सरल से कठिन, ज्ञात से अज्ञात और रूपात्मक से भावात्मक जेसे कतिपय सिद्धान्तों का परिपालन हर स्थिति में अनिवार्य होता है। यदि इकाईयों का नियोजन क्रम और तार्किक सम्बन्ध सुस्थापित किया जा सके तो एक पाठ्य बिन्दु दूसरे के लिए आधार का कार्य कर सकता है। यदि विद्यार्थियों की रूचि, क्षमता और योग्यता को भी पाठ्यवस्तु के क्रम-निर्धारण का आधार बनाया जासके तो शिक्षण को रूचिकर और संतोषप्रद बनाया जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 10- इकाई योजना के विशिष्टओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

4.5 पाठ्य-सामग्री का इकाइयों में वर्गीकरण

पाठ्यक्रम को क्रमबद्ध करने के पश्चात्, शिक्षण की दृष्टि से उसको मासिक, साप्ताहिक और दैनिक शिक्षण-इकाईयों में विभाजन किया जाता है। एक शिक्षण सत्र में दो त्रैमासिक और एक वार्षिक परीक्षा अनिवार्य रूप से आयोजित की जाती है। जबकि कुछ विद्यालयों में मासिक और साप्ताहिक परीक्षाऐं भी आयोजित की जाती है। इसके अतिरिक्त इकाई के अन्त में परीक्षा के आयोजन का प्रचलन भी बहुत से विद्यालयों में है। इकाई वर्गीकरण इन परीक्षाओं के सार्थक आयोजन में उपयोगी है।

इकाई विभाजन का मुख्य आधार त्रैमासिक परीक्षाओं को बनाया जाए तो वर्गीकरण सरल हो सकता है। साप्ताहिक परीक्षाओं में गद्य, पद्य या व्याकरण में से किसी एक खण्ड की परीक्षा ली जा सकती है, जिसका उस सप्ताह शिक्षण किया गया हो।

मासिक परीक्षा में इनमें से किन्हीं दो को आधार बनाया जा सकता है जबकि त्रैमासिक परीक्षा में इन तीनों का समावेश किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से त्रैमासिक परीक्षा को पाठ्यक्रम विभाजन का आधार बनाना श्रेयस्कर है। इस क्रम से प्रत्येक पाठ, प्रकरण या पाठ्य-बिन्दु के शिक्षण के लिए अपेक्षित समयानुसार उनके शिक्षण का माह, सप्ताह और दिन निर्धारण किया जाए इसके लिए तालिका की सहायता ली जा सकती है।

4.5.1पाठ्यक्रम का साप्ताहिक वर्गीकरण

पाठ्यक्रम का साप्ताहिक वर्गीकरण

दिन	दिनांक	पाठ्य बिन्दु
सोमवार	11.08.08	सन्धि परिचय, सन्धियों के प्रकार, स्वर सन्धि, दीर्घ व गुण-परिभाषाएँ व उदाहरण।
मंगलवार	12.8.08	पुर्नभ्यास, वृद्धि,यण और आयादि सन्धि, परिभाषा व उदाहरण
बुद्धवार	13.8.08	व्यंजन सन्धि- विषय- प्रवेश, परिभाषा, स्वर सन्धि परिभाषाएँ व उदाहरण
गुरूवार	14.8.08	व्यंजन सन्धि- प्रथम को ततीय

		व अन्य सन्धियाँ, परिभाषाएँ व उदाहरण
शुक्रवार	15.8.08	स्वतंत्रता दिवस- राष्ट्रीय अवकाश
शनिवार	16.8.08	सन्धि के सभी प्रकारों की पुनरावृत्ति व मौखिक परीक्षा

इसी प्रकार मासिक और त्रैमासिक तालिकाए भी शिक्षक दैनन्दिनी में बनाई जा सकती है। यदि किसी इकाई के लिए विशेष शिक्षापकरणों की आवश्यकता हो तो रेखांकित चिह्न के माध्यम से उनका उल्लेख किया जा सकता है। इस प्रकार दैनिक शिक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण करके दैनिक पाठ योजनाएँ व सहायक सामग्री तैयार की जा सकती है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 3- पाठ क्रम के साप्ताहिक वर्गीकरण की सूची बनाओ।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

4.6 एक अच्छी इकाई की विशेषताएं

एक अच्छी इकाई की विशेषताएं होती हैं-

1. इकाई के भाग किये जा सकते हैं,एक अच्छी इकाई को भागों ओर उपभागों में बांटा जा सकता हैं।

2. नियोजन किया जा सकता हैं एक अच्छी इकाई को भागों में बाटकर उसका नियोजन किया जा सकता हैं उसके भागों को क्रमबद्ध रुप में लिखकर यह नियोजन किया जा सकता हैं कि किस भाग को कौन सी विधि से पढ़ाता हैं?और कौन सी सहायक शिक्षण सामग्री का प्रयोग उचित रहेगा।

3. व्यवहारपक उद्देश्य एक अच्छी इकाई के योजनाबद्ध रुप में उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते हैं।

4. शिक्षण एक अच्छी इकाई कों योजना तरीके से प□या जा सकता हैं।

5. मूल्यांकन एक अच्छी इकाई के लिए अच्छे मूल्यांकन के लिए उत्तम प्रश्न बनाए जा सकते है|

6. पुनरावृत्ति एक अच्छी इकाई की पुनरावृत्ति करना सरल होता हैं।

7. गृह कार्य एक अच्छी इकाई के लिए गृह कार्य पुर्वनिधारित किया जाना सरल होता है।

8. लम्बाई - एक इकाई लम्बाई इस प्रकार निर्धारित की जाती हैं कि उसका नियोजन सरल हो बहुत लम्बी या छोटी इकाई कभी अच्छी नहीं कहलाती समय इकाई की कसौटी हैं एक अच्छी इकाई उसे ही कहेगे जिसे समय सीमा में पूरा कर लिया जाए।

8. रुचि एकअच्छीइकाई विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार नियोजित एवं क्रियान्वित की जा सकती है।

9. ज्ञानवर्धक एक अच्छी इकाई ज्ञानवर्धन एवं आगे के लिए सीखने की प्रेरणा प्रोत्साहन देती है।

4.7 इकाई नियोजन के उपयोग एवं महत्व

इकाई नियोजन का उपयोग विद्यार्थियों के हित के लिए अध्यापकों द्वारा विषय वस्तु को सरल बनानें के लिए किया जाता हैं इससे अध्यापक को विषय को क्रमबद्व और प्रभावी □ा से पढ़ानें में मदद मिलती हैं एक नियोजित पाठ विद्यार्थियों को सुगमता से समझ आता हैं यह एक वैज्ञानिक पद्धित हैं अन्य लाभ एवं उपयोग -

1.विभाजन-पाठ को या इकाई को सरल विषयों या उपविषयों में विभाजित करके सरल बनाया जाता हैं, इससे एक नजर में विषय वस्तु की जानकारी हो जाती हैं अध्यापक और विद्यार्थी दोनों को ही इसका लाभ मिलता हैं इससे दोनों की विकसित होती हैं। सूत्र नियम सिद्धांन्त प्रत्यय आकद को क्रमबद्ध करके लिखा जाता हैं। इससे इनका प्रयोग उचित समय पर करने में मदद मिलती हैं।

2. विषयों उपविषयों सूत्रों नियमों आदि में सम्बन्ध प्रस्तुत करने के लिए ओर समझने में आसानी मिलती हैं।

3. विषयों और उपविषयों में क्रमबद्धता की झलक दिखाई देती हैं।

4. इकाई नियोजनद से अध्ययन को एक दिशा मिलती हैं अध्यापक नियोजित पाठ को नियोजित ा से प ाने में सक्षम होता हैं।

5. इकाई नियोजन के बाद पाठ नियोजन सरल हो जाता ही इकाई नियोजन के बहुत सारे पक्षों का पाठ नियोजन में उपयोग यूं का यूं होता हैं।

6. इससे विद्यार्थियों को भी अध्ययन के तरीकों में बदलाव लाने में आसानी होती हैं। इकाई नियोजन से उन्हे भी समझ आ जाता है कि उन्हे कक्षा में किन चीजों की आवश्यकता होगी किन बिन्दुओं पर जोर रहेगा।

7. अध्यापक को मूल्यांकन की विधियों सहायक शिक्षण सामग्री गृह कार्य शिक्षण विधियां आदि निर्धारित करने में बहुत मदद मिलती है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 4- इकाई नियोजन के उपयोग एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

4.8 भाषा इकाई नियोजन के उद्देश्य

भाषा इकाई नियोजन के उद्देश्य से तात्पर्य हैं कक्षा 1 से 5 तक भाषा शिक्षण के लिए इकाई क्यों बनाया जाए और उससे क्या उपलब्धियाँ संभावित या अपेक्षित हैं औपचारिक मानक भाषा सीखने का प्रारम्भिक स्तर हैं यहाँ ँ भाषा शिक्षण क्रमबद्ध ा से इस प्रकार करना आवश्यक हैं कि छात्र भाषा में आवश्यक कौशलों और दक्षताओं के माध्यम से निपुर्णता उपलब्ध कर सकें। इसलिए भाषा शिक्षण के लिए इकाई नियोजन के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं.

1. भाषा शिक्षण को क्रमबद्ध और व्यवस्थित रुप से सीखने की क्षमता उत्पन्न करना।

2. मतृभाषा और मानक भाषा के बीच अन्तर करने की समय विकसित करना।

3. भाषाई कौशलों और दक्षताओं का प्रत्येक कक्षा के लिए संयोजन करना एवं शिक्षण और अभ्यास सामग्री विकसित करना।

4. भाषाई त्रुटियों की पहचान कर सामान्य त्रुटियों मातृभाषा व क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभावों से मुक्त कर छात्रों को मानक भाषा आर्जित करने के अवसर प्रदान करना।

5. उच्चारण श्रवण पाठन और लेखन से जुडें शिक्षण के लिए आवश्यक क्रम और समन्वय निर्धारित करना संबन्धित भाषाई।

6. भाषा शिक्षण की सीमा और कक्षा एवं आयुवर्ग के अनुसार मात्रा निर्धारित करना।

7. आवश्यक दक्षमताओं का वर्गीकरण कक्षावार प्रस्तुत करना और जीवन स्थितियों में भाषा का उपयोग करना।

8. दक्षता आधारित शिक्षण व अभ्यास सामग्री अथवा पाठ्य पुस्तकों सहायक एवं पूरक पुस्तकों और अभ्यास पुस्तकों के लिए आवश्यक प्रकिया निर्धारित करना।

9. शब्द भण्डार व्याकरण और भाषा विकास की गतिविधियाँ और सामग्री निर्धारित करना।

10. मूल्यांकन प्रणाली निर्धारित करना।

4.8.1 प्राथमिक स्तर पर इकाई नियोजन के उद्देश्य

प्राथमिक स्तर पर इकाई नियोजन के उद्देश्य वर्गीकरण निम्नानुसार किया जा सकता हैं।

क- कक्षा 1-10 के लिए इकाई नियोजन के उद्देश्य कक्षा 1-10 को एक संयुक्त इकाई मानकर उदृदेश्यों का निर्धारण इस प्रकार किया जा सकता हैं।

बोलने और सुनने की दक्षताओं को प्रथम दो तीन माह में सर्वाधिक महत्व देना।

श्रवण और बोलने की दक्षमताओं का निर्धारण।

बालकों को भाषाई वातावरण में रखने और भाषा सीखने के लिए तैयार करने के लिए त्मकंपद में उजमतप से का आयोजन जैसे तुकबन्दी गीत कविता कहानी चित्र कहानी भाषाई खेल जैसी सामग्री का नियोजन।

शब्द या वाक्य प्रणाली से भाषा शिक्षण करने पर बालकों के वातावरण में उपलब्ध शब्दों और वाक्यों का नियोजन और उसके बाद उनका वर्णों से संबंध करने की प्रक्रिया समझना।

वर्णमाला प्रणाली में वर्ण सीखने की प्रतिक्षा का निर्धारण।

चार मुख्य कौशलों और दक्षताओं का समन्वय और अभ्यास।

भाषा उपलब्धियों का त्वरित सतत और व्यापक मूल्यांकन।

ख- कक्षा 3-4 और पाँच के लिए इकाई नियोजन के उद्देश्य -

चारों कौशलों के समावेश अभ्यास का निर्धारण

दक्षताओं पर आधारित सामग्री का नियोजन

अभ्यास सामग्री का नियोजन

पढ़ने और लिखने के कौशलों और दक्षताओं का सुदृढ़करण

शब्द भण्डार व्याकरण और भाषा विकास की समझ

विभिन्न विधाओं की समझ विकसित करना

जैसे-कविता,गीत,कहानी,नाटक,पत्र,जीवनी,संस्मरण यात्रावृत्र चुटकुले आदि।

भाषाई खेलों का उचित क्रम में निर्धारण।

शिक्षकों द्वारा भाषा सामग्री के उचित उपयोग के लिए मार्गदर्शन।

व्यक्तिगत और सामूहिक शिक्षण के लिए गतिविधियों का निर्धारण।

विभिन्न जीवन स्थितियाँऔर उनमें भाषा प्रयोग की समझ विकसित करना।

मूल्यांकन त्वरित सतत और व्यापक।

उपयुक्त उद्देश्यों के आधार पर भाषा इकाई का कक्षावार नियोजन किया जा सकता हैं यदि उद्देश्यों के अतिरिक्त अन्य उद्देश्य निर्धारण आवश्यक इसलिए है कि इकाई इन्ही उद्देश्यों को प्राप्त करने के क्रम का निर्धारित करता हैं। तदनुसार भाषा शिक्षण ही इसलिए भाषा शिक्षण का इकाई नियोजन मानक भाषा का इकाई नियोजन हैं। मानक भाषा का उपयोग निभिन्न औपचारिक जीवन

स्थितियों में करना होता है। इसलिए मानक भाषा का शिक्षण क्रमबद्ध और उद्देश्यों के अनुसार पर आवश्यक हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 5-भाषा इकाई नियोजन के उद्देश्य को विस्तार से लिखिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

4.9 प्राथमिक स्तर पर कक्षावार इकाई नियोजन का निर्माण

प्राथमिक स्तर पर कक्षावार इकाई नियोजन निर्माण के निम्नलिखित हैं-

क- कक्षा-1

पाँच वर्ष की उम्र पूर्ण करके छात्र कक्षा 1 में प्रवेश लेते हैं,प्रथम कक्षा में लगभग 6सप्ताह तक बच्चों को स्कूल वर्ग तैयारी के अन्तर्गत प्रोत्साहित करना उपयुक्त होगा। इस अवधि में बच्चों से परिचय बातचीत गति कहानी खेलकूद अधिक उपयुक्त धीरे धीरे भाषा शिक्षण के लिए चाहे वाक्य प्रणाली शब्द प्रणाली या वर्णमाला प्रणाली अपनाई जाए किन्तु इकाई का नियोजन निम्नानुसार करना उपयुक्त होगा।

बच्चों को आपस में परिचय के लिए अवसर देना।

चित्रकथा देखकर कहानी सुनना सुनाना।

तुकबंदी कविताएँ और पहेली सुनना -सुनाना।

विभिन्न पशुपक्षियों की बोली सुनना -सुनाना।

वाहनों की ध्वनियाँ सुनना -सुनाना।

शिक्षक के या समुह के निदर्शों को सुनना -सुनाना समझना पालन करना।

अपनी बात प्रश्न आदि बोलकर कहना।

हावभाव के साथ कहानी कविता सुनाना।

विभिन्न खिलौना और जीवन या घर परिवेश से जुड़ी चर्चा करना।

छोटे छोटे वाक्य शब्द वाक्यों को बार बार देखना बोलना व उनमें वर्णो को पहचानना।

वर्णों के अंगुली से जमीन और रेत पर बनाना या चाक या पेसिंल से बनाना।

लिखने का अभ्यास करना एवं अपने द्वारा लिखे गए को पढ़ना वर्णो छोटे छोटे शब्दों वाक्यों को लिखने के लिए अवसर देना और उच्चारण दोष का निवारण करना।

मातृभाषा के उपयोग को स्वीकार करना तथा धीरे धीरे मानक भाषा की ओर ले जाना।

पाठ्य सामग्री का दक्षता के अनुसार नियोजन करना और

मौखिक एवं लिखित मूल्यांकन करना निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा और भाषागत निर्योग्यता या उपेक्षओं को कठिन करने का अभ्यास करना।

ख- कक्षा-2

मौखिक भाव अभिव्यक्त करने के अधिक अवसर देना।

कहानी,चित्रकथा,कविता,गति,घटना,सुनना सुनाना

परिचय प्राप्त करना व देना।

अपनी वस्तुओं घर परिवेश संबंध आदि का वर्णन करना।

वर्णमाला के सभी अक्षरों को शब्दों वाक्यों में पहचानना उनका सही उच्चारण करना और लिखना।

शिष्टाचार की भाषा का मौखिक उपयोग करना

भाषा खेल पहेली शब्द अंताक्षरी का आयोजन समुहों में करना।

कक्षा एक व दो का संयुक्त भाषा शिक्षण करने योग्य सामग्री का चयन करना।

शब्द और वाक्य नकल करके एवं सुनकर लिखना सुलेख अनुलेख व श्रुत्रलेख के अवसर देना।

चरों कौशलों की जाँच करना निदानात्मक और उपचारात्मक परीक्षण सतत करना निर्योग्यता या त्रुटि परिस्कार करना।

मानक भाषा के उपयोग को प्रोत्साहित करना।

मूल्यांकन दक्षतावार करना।

ग- कक्षा -3

पढ़ने व लिखने की क्रियाओं को अधिक प्रोत्साहित करना।

आदर्शवाचन बोलकर सही और मौन वाचन के अवसर करना।

कहानी,चित्रकथा,गति,कविता,नाटक अभिनय घटना हाव के साथ सुनना सुनाना व पढ़ना।

विराम चिन्हों की पहचान कर गति और विराम के साथ पढ़ना।

श्रुतलेखन अनुलेखन व स्वयं अपने मन से लेखन करना।

भाषा खेलों का आयोजन करना।

छोटे छोटे वाक्यों में प्रश्नों के उत्तर बोलकर व लिखकर देना।

कविता गति कहानी,कठस्थ कर सुनाना और लिखना।

बोर्ड पर की लिखी किसी अन्य की लिखावट को पढ़ना।

निदानात्मक और उपचारात्मक परीक्षण व अध्यापन करना।

सतत और व्यापक मूल्यांकन दक्षता व पाठ्य सामग्री के आधार पर भाषा कौशलों का करना।

भाषा के अन्तर्गत विषय वस्तु की अपेक्षा कौशलों शब्द भण्डार व्याकरण भाषा प्रयोग आदि को अधिक महत्व देना।

घ-कक्षा-4

सुनने ,बोलने ,लिखने ,पढ़ने की दक्षताओं का एक साथ उपयोग करते हुए पाठ्य सामग्री का संयोजन करना।

दक्षताओं के आधार पर पाठ्य सामग्री का इकाई वार संयोजन करना।

कुछ विशेष विषयों पर कहानी चित्रकथाएँ गति कविता अभिनय जीवनी संस्मरण वर्णन आदि पढ़ने सुनाने के अवसर देना।

पत्र लेखन व लघु मौलिक निबन्ध लेखन के लिए प्रोत्साहित करना।

पत्र लेखन व लघु मौलिक निबन्ध लेखन के लिए प्रोत्साहित करना।

श्रुतलेखन व अनुलेखन कराना।

शहद भण्डार बढ़ानें के लिए सहायक व पूरक सामग्री का संयोजना करना।

त्रुटियों एवं निर्योग्यता को दूर करना।

प्रत्येक पाँचवे सातवे शब्द का रिक्त स्थान देकर पाठ पूरा करके पढ़ने के लिए अवसर देना,

दक्षताओं के आधार पर न्यूनतम अधिगम स्तर में दी गई व मुख्य दक्षताओं व उपदक्षताओं का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करना।

बाल शब्दकोश बनाने या देखने का अभ्यास करना।

च- कक्षा -5

सुनने बोलने पढ़ने व लिखने के कौशलों का समन्वित विकास करना।

जीवन स्थितियों से जुड़े व्यावहारिक विषयांें का ज्ञान कराने से संबन्धित दक्षताओं के लिए भाषा सामग्री का संयोजन करना।

मानक भाषा के अधिक से अधिक प्रयोग को बोलनंे पढ़ने व लिखने में अवसर देना।

गद्य और पद्य के अन्तर को समझकर पाठ करना।

कविता कहानी नाटक जीवनी संस्मरण यात्रावृत आदि।

कविता कहानी गति नाटक जीवनी केन्द्रीय विचार बनाना।

विभिन्न विषयों पर पत्र और आवेदन पत्र लिखना व पढ़ना।

वाद विवाद में भाग लेना।

स्वयं दी गई वस्तुओं और दिए गए शब्दों से कहानी बनाना।

त्रुटियों का निराकरण करना।

प्रश्नों के उत्तर बोलकर व लिखकर देना।

शब्द भण्डार वाक्य और अनुच्छेद करना।

श्रुतलेखन व अनुलेखन करना

पाठ्य पुस्तक के अभ्यासों को हल करना।

दक्षता आधारित सतत और व्यापक मूल्यांकन करना।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 6- प्राथमिक स्तर की कक्षा तीन के लिए इकाई की योजना बनाइए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

4.10 पाठ योजना का ईकाई उपागम

1. अन्वेषण- यह सोपान हरबर्ट उपागम के प्रस्तावना और तैयारी सम्बन्धी पद से मिलता- जुलता है। अन्वेषण का अर्थ होता है पता लगाना। छात्रों में पूर्व ज्ञान का पता लगाना ही अन्वेषण (म्गचसवतंजपवद) कहलाता है। शिक्षक को निम्न बातो का अन्वेषण करना चाहिए।

(1) छात्रों की रूचियों एवं अभिरूचियों का अन्वेषण।

(2) पाठ की इकाई से सम्बन्धित पूर्व ज्ञान का अन्वेषण।

(3) उपलब्ध वातावरण और शिक्षण स्त्रोतो का अन्वेषण।

(4) इकाई को प्रस्तुत करने हेतु आवश्यक विधियों और प्रविधियों का अन्वेषण।

1. प्रस्तुतीकरण- इसमें पाठ्-वस्तु की व्याख्या की जाती है। शिक्षक समस्त ईकाई के स्वरूप को छात्रों के सामने प्रस्तुत करता है। उद्देश्यों से भी छात्रों को परिचित कराया जाता है। यह पद हरबर्ट उपागम के प्रस्तुतीकरण से मिलता- जुलता है।

पाठ-योजना- शिक्षक अगली इकाई तब तक प्रस्तुत नहीं करता जब तक पहली इकाई का सामग्री विद्यार्थी पूरी तरह से सीख न लें। इस सोपान के अन्तर्गत शिक्षक छात्रों से अधिक सक्रिय रहता है और लगभग सभी क्रियाएँ या तो वह करता है अथवा उन पर उसका नियंन्त्रण रहता है।

3. आत्मीकरण- यह सोपान अर्जित किए गए ज्ञान को स्थाई करने से सम्बन्धित होता है। छात्र ज्ञान अर्जित करने हेतु पुस्तकालय एवं प्रयोगशालाओं का प्रयोग करते है। छात्र इस सोपान में निरीक्षण (Observation), शंकाओं का समाधान, तर्क-वितर्क आदि प्रविधियों का प्रयोग करके आत्मीकरण करते हैं। कठिनाईयों को नोट करने हेतु छात्रों को निद्रेशन पत्र (Guide sheets) भी दे दिए जाते हैं। विद्यार्थी कठिनाईयों का समाधान या तो स्वयं करने का प्रयत्न करते हैं अथवा शिक्षक से मदद लेते है।

4. व्यवस्थापन- इस सोपान में छात्र पढ़ी हुई विषय-वस्त का संगठन करते हैं। शिक्षक यह देखता है कि छात्र पुस्तक अथवा नोट्स की मदद से विषय-वस्तु तो लिखकर अभिव्यक्त करने में कितने समर्थ हो गए हैं। संगठन में छात्र सीखे हुए पाठ को लिखित रूप में प्रस्तुत करते हैं। मोरीसन ने इसे व्यवस्थापन अथवा संगठन का नाम दिया है। इस पद की उपयोगिता विशद विषय हेतु ही अधिक हो सकती है।

5. आवृत्ति- इस उपागम के अन्तिम पद में छात्र इकाई से सम्बन्धित अर्जित की गइ्र सामग्री को शिक्षक अथवा सह पाठियों के सामने मौखिक रूप से प्रस्तुत करते हैं। लेकिन इसमें छात्रों की रूचि का भी ध्यान रखना चाहिए। इससे छात्रों में विश्वास बढ़ जाता है। इस सोपान में लिखित अभिव्यक्ति, श्यामपट्ट पर कार्य, प्रयोगशाला में कार्य कराना आदि शामिल है। कुछ परिस्थितियों में ऐसा भी हो

सकता है कि प्रस्तुतीकरण सोपान से अन्तिम सोपान पर सीधे ही पहुचा जाए। इस अवस्था में आत्मीकरण व व्यवस्थापन सोपान की जरूरत नहीं पड़ती है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 7-पाठ योजना की इकाई के उपागम की सूची बनाओं।

....

....

4.11 इकाई उपागम के गुण

इकाई उपागम के गुण

इकाई उपागम के प्रमुख गुण निम्नलिखित है-

इस उपागम से विद्यार्थियों में स्वयं सीखने की आदत विकसित होती है।

यह उपागम मौखिक व लिखित दोनों प्रकार की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन देता है।

छात्रों में अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की योग्यता आ जाती है।

इस उपागम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को पारस्परिक सहयोग से चलाना होता है। अतः अन्तःक्रिया स्वस्थ रूप में विकसित होती है।

इस उपागम से छात्र एक इकाई से दूसरी इकाई को सीखता हुआ सारी शिक्षण सामग्री को आसानी से सीख लेता है।

किसी इकाई से सम्बन्धित पाठ्य-वस्तु को विद्यार्थी आसानी से आत्मसात् कर सकते है।

यह उपागम छात्र-प्रधान है।

पाठ्य-वस्तु को छोटी-छोटी इकाइयों व उप-इकाईयों में बाँट दिया जाता है। इससे शिक्षण व अधिगम सरल हो जाता है।

इसमें विद्यार्थी जो कुछ सीखतें है, पूरी तरह समझ कर सीखते हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 8- इकाई उपागम के प्रमुख गुणों की चर्चा करे।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

4.12 इकाई उपागम के अवगुण

इकाई उपागम के अवगुण निम्नलिखित हैं-

प्रत्येक इकाई को सार्थक बनाना व्यावहारिक रूप से असुविधाजनक होता है।

इस प्रणाली में शिक्षण धीमी गति से होता है जिसके फलस्वरूप पाठ समय पर समाप्त नहीं हो पाता।

इस उपागम के कई सोपान क्रिया और व्यवहार में एक-दूसरे से काफी मिलते-जुलते हैं। इसलिए इनमें आपस में अन्तर न होने के कारण काफी अस्पष्टता रहती है।

इसमें समय अधिक खर्च होता है। मन्द गति से सीखने वाले बच्चो के कारण सामान्य व प्रतिभाशाली बच्चो का काफी समय व्यर्थ चला जाता है।

शिक्षण की इस मन्दगति के कारण पाठ्यक्रम ठीक समय पर पूरा करने में कठिनाई होती है।

जो विद्यार्थी पहली इकाई से अनुत्तीण हो जाते है उन्हें पुनः वही इकाई पढ़नी पड़ती है। यह विचार व कार्य व्यावहारिक दृष्टि से ठीक नहीं है।

कई बार जरा-सी असावधानी बरतने से यह नीरस एवं निर्जीव हो जाती है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 9- इकाई उपागम के अगुण को लिखिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

4.13 इकाई योजना का मूल्यांकन

इकाई योजना के निर्धारण से शिक्षण-प्रक्रिया को व्यवस्थित व अनुशासित किया जा सकता है। शिक्षण को लक्ष्यबद्ध एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने और उनकी पूर्ति सुनिश्चित कराने के लिए इकाई नियोजन उपयोगी उपाय है। इकाई-नियोजन शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए पथ-प्रदर्शक होता है... जिस पर प्रत्येक चरण का क्रम, समय ओर विधि निर्धारित होती है। इस कारण शिक्षक और विद्यार्थी अपनी शिक्षण गतिविधियों के लिए सब दृष्टियों से सन्नद्ध रहते है । इस कारण कक्षा में सक्रियता अन्तःक्रिया और उदृदेश्यबद्धता कायम रहती है। परस्पर सम्बद्ध और संतुलित रहने के कारण पाठ्य बिन्दुओं का शिक्षण सुबोध और स्थायी होता है।

दूसरी तरफ इकाई नियोजन, पाठ्यक्रम केन्द्रित होने के कारण विद्यार्थियों और शिक्षको के लिए बाध्यकारी और अरूचिकर मालूम होता है। पाठ्यक्रम के यथाक्रम शिक्षण से विषयों और विधाओं की जो भिन्नता रहती है वह इकाई नियोजन में नजर नही आती। सहसम्बन्ध विधि से विहित नियोजन नीरस और बोझिल हो जाता है। समय अवसर रूचि और आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण-क्रम के निर्धारण या समायोजन की स्वतन्त्रता न होने के कारण कभी-कभी इकाई नियोजन निर्जीव और अनुपयोगी प्रतीत होता है। पूर्व-निश्चित होने के चलते इकाई के कार्यान्वयन में शिक्षक और

विद्यार्थी दोनों ही बन्धन अनुभव करते है। इन सीमाओं के चलते इकाई नियोजन को सर्वभावेन सम्पूर्ण नही माना जाता। सारतः कहा जा सकता है कि इकाई नियोजन को भाषा- शिक्षण की उपयोगी प्रक्रिया बनाने के लिए उसे लचीला और समायोजनकारी बनाया जाना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 10- इकाई नियोजन के मूल्यांकन पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

4.14 शिक्षण शास्त्रीय विश्लेषण के सोपान

किसी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित पाठयवस्तु पाठ्यपुस्तको में संकलित होती है इस पाठ्यवस्तु का संकलन विख्यात साहित्यकारों की अमर कृतियो, दस्तावेजों और विशेषज्ञो की इत्यादि से किया जाता है। इसलिए इनका विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप .अधिगम लक्ष्यों के अनुरूप होना सुनिश्चित नही होता । इस कारण इन रचनाओं और कृतियों को सम्पादित और संक्षिप्त करके ही संकलित किया जाता है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य है पाठ का .विद्यार्थियों के अधिगम लक्ष्यों के अनुरूप बनाना । इसके बाद .को छोटी शिक्षण इकाइयों में विभक्त करता है ताकि उनके माध्यम से. लक्ष्यो की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सके। इस प्रक्रिया में निम्नलिखित सोपानों का अनुसरण किया जाता है-

1. प्रकरण/इकाई विश्लेषण

2. अनुदेशानात्मक उद्देश्यों का निर्धारण और उनका व्यावहारिक में लेखन।

3. अनुदेशनात्मक उद्देश्यों के अधिगम हेतु शिक्षण-विधियॉ

4. अनुदेशनात्मक उद्देश्यो की प्राप्ति के मूल्यांकन के लिए तकनीको का उल्लेख।

पाठ्यवस्तु के शिक्षणशास्त्रीय विश्लेषण में शामिल सोपान और परस्पर सम्बद्ध और अन्योन्याश्रित है। इनकी परस्पर निभरता से एक निर्माण होता है, जो उप-इकाइयों के निर्धारण से आरम्भ होकर .के निर्माण पर समाप्त होता है। इस चक्र की एक अन्य विशेषता है कि प्रत्येक चरण के अनुपालन से अग्रिम चरण की भूमिका तैयार होती है पूर्ववर्ती चरण का पृष्ठपोषण होता है। इस प्रकार पाठ्यवस्तु के विश्लेषण की गतिविधि सर्वांग सम्पूण्र है और शिक्षक और विद्यार्थियों शिक्षण के निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति कराने में सक्षम है।

(i) कक्षा- सातवी (ii) पाठ का नाम- खानपान की बदलती तस्वीर

(iii) पाठ्यपुस्तक का नाम- विविधा (iv) लेखक- प्रयाग शुक्ल

प्रकरण/इकाई विश्लेषण	अनुदेशात्मक उद्देश्यों का निर्धारण	शिक्षण- विधियों , गतिविधियें और सहायक उपकरणों का निर्धारण	मूल्यांकन तकनीकों का निर्धारण
भाषा कौशलों से सम्बद्ध पाठ्यांश कठिन शब्दों का उच्चारण- फास्ट फ्रूड, बर्गर, नूडल्सय, सम्भवतः पैकेट बन्द विज्ञापित, व्यजनों, विविधता, गुणवत्ता गृहिणियों दुःसाध्य, प्रक्रियाओं, स्वाभाविक, निखालिस, एथनिक, प्रचारार्थ, पुनरूद्वार, दुर्गति और गड्डमड्ड वर्तनी का ज्ञान- बर्गर, नूडल्स, सम्भवतः पैकेटबंद, विज्ञापित,	विद्यार्थी- दिए गए शब्दों का शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण करते है। शब्दों के शुद्ध रूप की पहचान करते है। दिए गए शब्दों के समूह से शुद्ध और अशुद्ध शब्दरूपो को अलग कर सकते है।	शिक्षक सूची में दिए गए कठिन शब्दों को ऊँचे स्वर में स्पष्ट उच्चारण करते है और विद्याथियों को निर्देश देते है कि वे ध्यानपूर्वक उच्चारण को सुनें और मन में दौहराएँ दूसरे चरण में शिक्षक विद्यार्थियों से इन शब्दों का उच्चारण कराते है। इसके उपरांन्त वे अलग-अलग विद्याथर्ि्ियों को एक-एक शब्द का उच्चरण करने का निर्देश देते है और आवश्यकता	शिक्षक फ्लेश कार्डो पर लिखे कठिन शब्दों को एक-एक करके विद्यार्थियों को दिखाते है और उनका उच्चारण करने का निर्देश देते है। इसी कौशल के मूल्यांकन के लिए शिक्षक कक्षा के सामने एक पेटी पर डिब्बा रखते है। जिसमें बहुत सी पुडियॉ रखी गई है। वे एक-एक विद्यार्थी को उसमें से पुडिया

गृहिणियों, दुःसाध्य, प्रक्रियाओं, निखालिस, एथनिक, प्रचारार्थ, पुनरूद्वार और गड्डमड्ड		होने पर उनमें संशोधन करते है।	उठाकर उसमें लिखे गये शब्द का उच्चारण करने को कहते है।
नए व कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना- फास्ट फूड, बर्गर, नूडल्स, विज्ञापित, दुस्साध्य, निखालिस, एथनिक, पुनरूद्वार, दुर्गति और गड्डमड्ड	विद्यार्थी- दिए गए शब्दों को सही-सही लिख सकते है। दिए गए शब्दों के अशुद्ध रूपों को शद्ध करके लिख सकते है।	शिक्षक दिए गए शब्दों का ऊँचे स्वर से उच्चारण करते है और साथ-साथ उन्हें श्यामपट्ट पर अंकित करते है। इसके उपरान्त वे एक एक विद्यार्थी को बुलाकर इसी विधि से बोले गए शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखने का निर्देश देते है।	शिक्षक सभी विद्यार्थियों को श्रतलेख विधि से बोले गए शब्दों को अपनी अभयास पुस्तिका में लिखने का निर्देश देते है। बाद में उन्हीं शब्दों को वे श्यामपट्ट पर लिखते है और विद्यार्थियों को अपने शब्दों को जॉच कर अशुद्धि संशोधन का निर्देश देते है। इसी गतिविधि को दिए गए शब्दों में से शुद्ध और अशुद्ध शब्दों को छॉटने के द्वारा भी कराया जा सकता है।
पाठ्यवस्तु के अंशो का विश्लेषण खानपान की आदतांे में	विद्यार्थी- दिए गए शब्दों के अर्थ बताते हैं।	शिक्षक चित्र दिखाकर फास्ट फूड बर्गर और नूडल्स का अर्थ स्पष्ट करते है। विज्ञापित, दुःसाध्य,पुनरूद्वार और	शिक्षक बर्गर और नूडल्स दिखाकर विद्यार्थियों से उन्हें पहचानने को कहते है।

बदलाव के उदाहरण। तैयार भोजन की सहज उपलब्धि और लोकप्रियता भारत के अन्य प्रदेशांे और अन्य देशों के प्रसिद्ध व्यजनों की सहज उपलब्धि । पहले उच्चवर्गीय लोगों के सेवन के व्यंजनों का सर्वसुलभ होना। खानपान के प्रसिद्ध पारम्परिक व्यंजनों का व्यवसायीकरण	कठिन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करते है। विद्यार्थी नए व्यंजनो और भोजनों की ओर लोगों के ब[illegible] रूझान का वर्णन करते है।	दुर्गति, शब्दों का अर्थ बताने के लिए सन्धि विच्छेद कराया जाएगा वि+ज्ञापित = भली प्रकार बताया गया। दुर+साध्य = कठिनता से किया जाने वाला। पुनःरुउद्धार = फिर से उबारना। दुर+गति+ बुरी स्थिति। शिक्षक कुछ विद्यार्थियों से अपनी अपनी भोजन सूची बनाने को कहते है और पूछते है कि यह पारम्परिक भोजन शैली से कैसे अलग है? पाठ्यपुस्तक के उदाहरणों के आधार पर	वि और दुर उपसर्गो से बनने वाले अन्य शब्दों का संन्धि विच्छेद अथवा समास-विग्रह करने का निर्देश देते है। पुनः के संयोग से बनने वाले अन्य शब्दों को प्रस्तुत करने को कहा जाता है; जैसे पुनर्जन्म पुनर्वास। इस प्रकार के शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करने का अभ्यास कराया जाता है। शिक्षक विद्यार्थियों को उन व्यंजनों की सूची बनाने का निर्देश देते है जो वे बाजार से खरीद कर सेवन करते है और पूछते है कि वे व्यंजन पारम्परिक भोजन से अलग है या नही।

व्यस्तता, मँहगाई और कुशलता के अभाव में बाजार में निर्मित व्यजन का अधिक प्रयोग केवल स्वाद के लिए भोजन करना और विविध भोजनों के एक साथ स्वाद पाने के फेर में किसी एक प्रकार के भोजन का स्वाद न ले	विद्यार्थी बाजार में उपलब्ध व्यंजनों की सूची बनाते है जिन्हें लोग पसन्द करते है। विद्यार्थी दक्षिण भारतीय व्यंजनों, के उदाहरण देते है। बताते है कि ब्रेड, टोस्ट, चाय इत्यादि पहले केवल उच्च वर्ग के लोगों में ही प्रचलित थे। विद्यार्थी ऐसे व्यंजनों के उदाहरण देते है जो पहले पर्व या उत्सवों पर घर में बनाए जाते थे लेकिन अब बाजार में बनते है।	विद्यार्थियों रेहडियों, □बों और होटलों के लोकप्रिय भोजनों के विषय में चर्चा करते है। पुस्तक पठन और परस्पर चर्चा द्वारा उन व्यंजनों की सूची बनाई जाती है जो अन्य देशों प्रदेशों के पारम्परिक भोजन है- जैसे डोसा, भेलपूरी और चाउमिन। पुस्तक में वर्णित त्योहारों पर बनने वाले प्रसिद्ध व्यंजनों के बाजारी-करण पर चर्चा करते है। वे इसके लाभ-हानि का विश्लेषण भी करते है। विद्यार्थी अपने और परिवार के उदाहरणों के	विद्यार्थियो से पुस्तक और निजी अनुभव के माध्यम से उन व्यंजनों की सूची बनाने को कहा जाता है जो बाजार में लोकप्रिय हैं प्रश्नोंत्तर द्वारा विभिन्न राज्यों के उन व्यंजनों की सूची बनाई जाती है जो बाजार में सहज उपलब्ध है। उन भोजनों की भी सूची बनाई जाती है जो पहले केवल उच्च वर्ग को ही उपलब्ध थे लेकिन आज सर्वसुलभ है। शिक्षक होली, बसंत पंचती, संक्रान्ति, शरद्पूर्णिमा, दशहरा, दीपावली जैसे पर्वो पर घरो में बनाए जाने वाले व्यंजनों की सूची बनवाते है और पूछते है कि इनमें से कौन-कौन से व्यंजन अब बाजारों में उपलब्ध है।

	विद्यार्थी वर्णन करते है कि किस प्रकार व्यस्तता के कारण लोग बाजार के बने व्यंजनों को प्राथमिकता देते है। विद्यार्थी उदाहरण देते है कि लोग सहभोजों में लालच के कारण अनेक प्रकार से भोजनों का स्वाद लेना चाहते है जो स्वास्थ्य के लिए अच्छा नही है।	माध्यम से बाजारू भोजन पर ब□ी निर्भरता का वर्णन करते है। पुस्तक के वर्णन का सामान्यी करण करते हुए विचार करते है कि हमारी भोजन की आदतें कितनी विकृत हो चली है और उनमें कितने सुधार की गुजांइश है।	विद्यार्थियों से उन भोजनों की सूची बनाने को कहा जाता है जो घर पर बनाने के स्थान पर बाजार से मंगा लिए जाते है। यह भी पूछा जाता है कि ऐसा क्यों किया जाता है। विद्यार्थी बताते है कि शादी जैसे मौकों पर भोजन करते हुए लोग किन-किन व्यंजनों को एक-साथ थाली में रखकर खाते है। वे इस आदात के लाभ-हानि पर परिचर्चा करते हें

4.15 सारांश

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि इकाई नियोजन एक सतत प्रक्रिया हैं जिसमें अधिगम अनुभव के उत्पादन पर अध्ययन किया जाता है। इकाई नियोजन के अन्तर्गत पाठ्य पुस्तक के पाठों को भिन्न भिन्न इकाईयों में बांटा जाता हैं। जिसके लिए समय समय पर इकाई परीक्षा होती हैं। पाठ्यक्रम को भी इकाईयों में बांटने का प्रावधान हैं। इसमें नये पाठ्यवस्तु के साथ पुराने पाठ्यवस्तु का संशोधन भी होता हैं। इसका कार्यक्षेत्र पाठ्यचर्या अधिगम अनुभव उद्देश्यों का मूल्यांकन शिक्षण सामग्री आदि हैं। अतः इकाई नियोजन के द्वारा पाठ्यवस्तु की निर्माण विधि का उपयोग प्रमुख हैं विभिन्न मतों को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता हैं कि इकाई विषय वस्तु का वह भाग हैं जिसकों सम्पूर्ण विषय वस्तु से अलग कर लिया जाता हैं। यह एक ऐसी चयनित विषय वस्तु की रुपरेखा हैं जिसे विद्यार्थियों की आवश्यकता और रुचि के अनुसार कर लिया जाता हैं और जिसका अध्यापन के लिए सुगमतापूर्वक नियोजन किया जा सकता हैं।

4.16 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1- निश्चित, व्यावहारिक और अचुक योजना किसी भी कार्य की सफलता का आधार होती है। वृहत् परियोजनाओं से सामान्य घरेलू काम-काज तक समस्त व्यवहार पूर्व-निर्धारित या सामयिक योजना के अनुसार ही संचालित होते हैं। योजना के निर्माण से किसी कार्य के उद्देश्यों और लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सकती है। कार्य सम्पादन में प्रयुक्त होने वाले संसाधनों, प्रक्रियाओं और प्रयासों के पूर्व-निर्धारण द्वारा उससे सम्बद्ध सभी पक्षों के समय, श्रम ऊर्जा और संसाधनों का सदउपयोग किया जा सकता है और भविष्य के लिए सुदृढ़ तथा विश्वसनीय आधार की स्थापना की जा सकती है। विद्यार्थियों के ज्ञान, विचार रूचि इत्यादि में स्थायी परिवर्तन का माध्यम होने के कारण, शिक्षण नियोजन का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मानवकेन्द्रित और भविष्योन्मुख होने से यह कार्य संवेदनशीलता और सावधानी से किया जाना चाहिए।

उत्तर 2- इकाई योजना का कार्य सम्पन्न होता है। इन गतिविधियों का परिचय इस प्रकार है-

पाठ्यसामग्री का आंकलन- शिक्षण सत्र के आरम्भ मे कक्षा विशेष के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तक, सहायक अथवा पूरक- पुस्तक, व्याकरण खण्ड और शिक्षण सहगामी क्रियाओ के सम्पूर्ण योग का आकलन करना। इस प्रक्रिया द्वारा शिक्षक को पठन, अभ्यास, अन्तर्क्रिया और अन्य उपायों द्वारा पाठ्य-सामग्री की मात्रा व प्रकृति का अनुमान हो सकेगा।

कार्य-दिवसों/कालांशों का आंकलन- शिक्षण सत्र के दौरान शिक्षण गतिविधियों के लिए उपलब्ध कार्य-दिवसों की संख्या और उनमें भाषा-शिक्षण के लिए उपलब्ध कालांशों की संख्या अवधि और इनके माध्यम से प्राप्त होने वाले कुल समय का आंकलन करना। इस कार्य के लिए शिक्षक को वार्षिक कैलेडर, आवश्यक-सूची और स्कूल कैलेन्डर की आवश्यकता होती है।

शिक्षण सामग्री को क्रमबद्ध करना- पाठ्यक्रम में निर्धारित सामग्री को क्रमबद्ध करने का उद्देश्य भाषा- शिक्षण को अधिकाधिक अभ्यास और आवृत्ति द्वारा उपयोगी और सफल बनाना है।

उत्तर 3- पाठ्यक्रम का साप्ताहिक वर्गीकरण

दिन	दिनांक	पाठ्य बिन्दु
सोमवार	11.08.08	सन्धि परिचय, सन्धियों के प्रकार, स्वर सन्धि, दीर्घ व गुण- परिभाषाएँ व उदाहरण।
मंगलवार	12.8.08	पुर्नभ्यास, वृद्धि,यण और आयादि सन्धि, परिभाषा व

		उदाहरण
बुद्धवार	13.8.08	व्यंजन सन्धि- विषय- प्रवेश, परिभाषा, स्वर सन्धि परिभाषाएँ व उदाहरण
गुरूवार	14.8.08	व्यंजन सन्धि- प्रथम को ततीय व अन्य सन्धियाँ, परिभाषाएँ व उदाहरण
शुक्रवार	15.8.08	स्वतंत्रता दिवस- राष्ट्रीय अवकाश
शनिवार	16.8.08	सन्धि के सभी प्रकारों की पुनरावृत्ति व मौखिक परीक्षा

उत्तर 4- इकाई नियोजन का उपयोग विद्यार्थियों के हित के लिए अध्यापकों द्वारा विषय वस्तु को सरल बनानें के लिए किया जाता हैं इससे अध्यापक को विषय को क्रमबद्व और प्रभावी □ा से पढ़ानें में मदद मिलती हैं एक नियोजित पाठ विद्यार्थियों को सुगमता से समझ आता हैं यह एक वैज्ञानिक पद्धित हैं अन्य लाभ एवं उपयोग -

1.विभाजन-पाठ को या इकाई को सरल विषयों या उपविषयों में विभाजित करके सरल बनाया जाता हैं, इससे एक नजर में विषय वस्तु की जानकारी हो जाती हैं अध्यापक और विद्यार्थी दोनों को ही इसका लाभ मिलता हैं इससे दोनों की विकसित होती हैं। सूत्र नियम सिद्धांन्त प्रत्यय आकद को क्रमबद्ध करके लिखा जाता हैं। इससे इनका प्रयोग उचित समय पर करने में मदद मिलती हैं।

2. विषयों उपविषयों सूत्रों नियमों आदि में सम्बन्ध प्रस्तुत करने के लिए ओर समझने में आसानी मिलती हैं।

3. विषयों और उपविषयों में क्रमबद्धता की झलक दिखाई देती हैं।

4. इकाई नियोजनद से अध्ययन को एक दिशा मिलती हैं अध्यापक नियोजित पाठ को नियोजित □ा से प□ानें में सक्षम होता हैं।

5. इकाई नियोजन के बाद पाठ नियोजन सरल हो जाता ही इकाई नियोजन के बहुत सारे पक्षों का पाठ नियोजन में उपयोग यूं का यूं होता हैं।

6. इससे विद्यार्थियों को भी अध्ययन के तरीकों में बदलाव लाने में आसानी होती हैं। इकाई नियोजन से उन्हे भी समझ आ जाता है कि उन्हे कक्षा में किन चीजों की आवश्यकता होगी किन बिन्दुओं पर जोर रहेगा।

उत्तर 5- भाषा शिक्षण क्रमबद्ध □ा से इस प्रकार करना आवश्यक हैं कि छात्र भाषा में आवश्यक कौशलों और दक्षताओं के माध्यम से निपुर्णता उपलब्ध कर सकें। इसलिए भाषा शिक्षण के लिए इकाई नियोजन के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं.

भाषा शिक्षण को क्रमबद्ध और व्यवस्थित रुप से सीखने की क्षमता उत्पन्न करना।

मतृभाषा और मानक भाषा के बीच अन्तर करने की समय विकसित करना।

भाषाई कौशलों और दक्षताओं का प्रत्येक कक्षा के लिए संयोजन करना एवं शिक्षण और अभ्यास सामग्री विकसित करना।

भाषाई त्रुटियों की पहचान कर सामान्य त्रुटियों मातृभाषा व क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभावों से मुक्त कर छात्रों को मानक भाषा आर्जित करने के अवसर प्रदान करना।

उच्चारण श्रवण पाठन और लेखन से जुडें शिक्षण के लिए आवश्यक क्रम और समन्वय निर्धारित करना संबन्धित भाषाई।

भाषा शिक्षण की सीमा और कक्षा एवं आयुवर्ग के अनुसार मात्रा निर्धारित करना।

आवश्यक दक्षमताओं का वर्गीकरण कक्षावार प्रस्तुत करना और जीवन स्थितियों में भाषा का उपयोग करना।

दक्षता आधारित शिक्षण व अभ्यास सामग्री अथवा पाठ्य पुस्तकों सहायक एवं पूरक पुस्तकों और अभ्यास पुस्तकों के लिए आवश्यक प्रकिया निर्धारित करना।

शब्द भण्डार व्याकरण और भाषा विकास की गतिविधियाँ और सामग्री निर्धारित करना।

मूल्यांकन प्रणाली निर्धारित करना।

उत्तर 6- प्राथमिक स्तर पर कक्षा 3 की इकाई नियोजन का निर्माण निम्नलिखित हैं-

पढ़ने व लिखने की क्रियाओं को अधिक प्रोत्साहित करना।

आदर्शवाचन बोलकर सही और मौन वाचन के अवसर करना।

कहानी,चित्रकथा,गति,कविता,नाटक अभिनय घटना हाव के साथ सुनना सुनाना व पढ़ना।

विराम चिन्हों की पहचान कर गति और विराम के साथ पढ़ना।

श्रुतलेखन अनुलेखन व स्वयं अपने मन से लेखन करना।

भाषा खेलों का आयोजन करना।

छोटे छोटे वाक्यों में प्रश्नों के उत्तर बोलकर व लिखकर देना।

कविता गति कहानी,कठस्थ कर सुनाना और लिखना।

बोर्ड पर की लिखी किसी अन्य की लिखावट को पढ़ना।

निदानात्मक और उपचारात्मक परीक्षण व अध्यापन करना।

सतत और व्यापक मूल्यांकन दक्षता व पाठ्य सामग्री के आधार पर भाषा कौशलों का करना।

भाषा के अन्तर्गत विषय वस्तु की अपेक्षा कौशलों शब्द भण्डार व्याकरण भाषा प्रयोग आदि को अधिक महत्व देना।

उत्तर 7- 1. अन्वेषण

2. प्रस्तुतीकरण

3. आत्मीकरण

4. व्यवस्थापन

5. आवृत्ति

उत्तर 8- इकाई उपागम के प्रमुख गुण निम्नलिखित है-

इस उपागम से विद्यार्थियों में स्वयं सीखने की आदत विकसित होती है।

यह उपागम मौखिक व लिखित दोनों प्रकार की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन देता है।

छात्रों में अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की योग्यता आ जाती है।

इस उपागम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को पारस्परिक सहयोग से चलाना होता है। अतः अन्तःक्रिया स्वस्थ रूप में विकसित होती है।

इस उपागम से छात्र एक इकाई से दूसरी इकाई को सीखता हुआ सारी शिक्षण सामग्री को आसानी से सीख लेता है।

किसी इकाई से सम्बन्धित पाठ्य-वस्तु को विद्यार्थी आसानी से आत्मसात् कर सकते है।

यह उपागम छात्र-प्रधान है।

पाठ्य-वस्तु को छोटी-छोटी इकाइयों व उप-इकाईयों में बाँट दिया जाता है। इससे शिक्षण व अधिगम सरल हो जाता है।

इसमें विद्यार्थी जो कुछ सीखतें है, पूरी तरह समझ कर सीखते हैं।

उत्तर 9- इकाई उपागम के अवगुण निम्नलिखित हैं-

प्रत्येक इकाई को सार्थक बनाना व्यावहारिक रूप से असुविधाजनक होता है।

इस प्रणाली में शिक्षण धीमी गति से होता है जिसके फलस्वरूप पाठ समय पर समाप्त नहीं हो पाता।

इस उपागम के कई सोपान क्रिया और व्यवहार में एक-दूसरे से काफी मिलते-जुलते हैं। इसलिए इनमें आपस में अन्तर न होने के कारण काफी अस्पष्टता रहती है।

इसमें समय अधिक खर्च होता है। मन्द गति से सीखने वाले बच्चो के कारण सामान्य व प्रतिभाशाली बच्चो का काफी समय व्यर्थ चला जाता है।

शिक्षण की इस मन्दगति के कारण पाठ्यक्रम ठीक समय पर पूरा करने में कठिनाई होती है।

उत्तर 10- इकाई योजना के निर्धारण से शिक्षण-प्रक्रिया को व्यवस्थित व अनुशासित किया जा सकता है। शिक्षण को लक्ष्यबद्ध एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने और उनकी पूर्ति सुनिश्चित कराने के लिए इकाई नियोजन उपयोगी उपाय है। इकाई-नियोजन शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए पथ-प्रदर्शक होता है... जिस पर प्रत्येक चरण का क्रम, समय ओर विधि निर्धारित होती है। इस कारण शिक्षक और विद्यार्थी अपनी शिक्षण गतिविधियों के लिए सब दृष्टियों से सन्नद्ध रहते है । इस कारण कक्षा में सक्रियता अन्तःक्रिया और उद्‍देश्यबद्धता कायम रहती है। परस्पर सम्बद्ध और संतुलित रहने के कारण पाठ्य बिन्दुओं का शिक्षण सुबोध और स्थायी होता है।

4.17 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1- प्राथमिक स्तर पर कक्षावार इकाई योजना का निर्माण कीजिए।

प्रश्न 2- इकाई योजना के अवधारणा स्पष्ट करते हुए इसके उपयोग,महत्व,एव विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

इकाई 5- पाठयोजना: परिचय, उपयोग, महत्व, चरण, क्रियान्वयन पाठयोजना के संरचनात्मक उपागम का परिचय और अभ्यास

इकाई की रुप रेखा

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 पाठयोजना का परिचय व प्रत्यय
5.4 पाठयोजना की विशेषताएं
5.5 पाठयोजना की आवश्यता और महत्व
5.6 पाठयोजना के लक्ष्य
5.7 पाठयोजना के तत्व

5.8 पाठयोजना के उपागम
5.9 पाठयोजना के संरचात्मक उपागम
5.9.1 हरबर्ट उपागम (पंचपदीय शिक्षण उपागम)
5.9.2 ब्लूम उपागम
5.10 पाठयोजना की कसौटी
5.11 पाठयोजना के चरण एवं क्रियाएँ
5.12 पाठ योजना के उपयोग
5.13 पाठ योजना संबन्धित ध्यान देने योग्य बातें
5.14 पाठ योजना लाभ
5.15 पाठ योजना सीमायें
5.16 पाठ योजना का प्रारुप
5.17 सारांश
5.18 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.19 निबन्धात्मक प्रश्न
5.20 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

5.1 प्रस्तावना

पाठ-योजना में विषय से सम्बन्धित पाठ्यवस्तु को सुव्यवस्थित रुप प्रदान किया जाता हैं। विभिन्न सूचनाओं तथ्यों अथवा अनुभवों पर आधारित पाठ-योजना के माध्यम से शिक्षण के निर्धारण उद्देश्यों को सुगमता से प्राप्त किया जा सकता हैं। पाठ्य वस्तु का लघु खण्डों अथवा लघु इकाईयों में प्रस्तुतिकरण पाठ-योजना की प्रमुख विशेषता हैं। लघु खण्डों में पाठ योजना का यह विभाजन गैस्टाल्ट मनोविज्ञान की देन हैं। गैस्टाल्ट के अधिगम सिद्धांन्त के अन्तर्गत प्रत्यक्षीकरण की क्षमता का विकास करने के लिए सम्पूर्ण की अनुभूति खण्डों के माध्यम से की जाती है। इकाईयो पर आधारित पाठयोजना के वर्तमान स्वरुप का अविर्भाव गैस्टाल्ट के इसी अधिगम सिद्धांन्त पर आधारित हैं।

किसी भी कार्य को करने के लिये व्यक्ति को उचित दिशा निर्देश की आवश्यकता पड़ती हैं। जिसके अनुसार व्यक्ति उस कार्य को वांछित तरीके से कर पाता हैं। बिना किसी दिशा-निर्देश अथवा क्रमबद्धता रहित क्रिया को करने पर उचित प्रभाव नहीं पड़ता हैं। पाठ योजना भी शिक्षण प्रक्रिया में एक निश्चित क्रम हैं। परम्परागत शिक्षण उपागमों में शिक्षक और विषय वस्तु कक्षा शिक्षण की दृष्टि

से प्रमुख थे। परन्तु वर्तमान में विद्यार्थी में वांछित परिवर्तन लाने के लिए शिक्षण प्रक्रिया में एक निश्चित क्रम को पाठ योजना ही प्रदान करता है।

5.2 उददेश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप योग्य हो सकेगें कि-

हिन्दी भषा शिक्षण में पाठ्ययोजना के अर्थ को समझ सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण ने पाठ्ययोजना के चरणों को जान सकेगें।

पाठ्ययोजना के आवश्यकता के महत्व को समझ सकेगे।

पाठ्ययोजना के लक्ष्य एवं उद्देश्यों के जानकारी प्राप्त कर सकेंगें।

पाठ्ययोजना के निभिन्न तत्वों को जान सकेगें

हिन्दी भाषा शिक्षण में पाठ्ययोजना के विभिन्न उपागम और संरचनात्मक उपागम की जानकारी प्राप्त कर सकेगें।

पाठयोजना की विभिन्न कसौटियों को जान सकेगे।

पाठयोजना में आने वाली विभिन्न चुनौतियों को जान सकेगें।

पाठयोजना के लाभ, आवश्यकता एवं उपयोग को जान सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण में पाठयोजना के चरणों और प्रत्ययों को देखकर विकसित कर सकेगं।

5.3 पाठयोजना का परिचय व प्रत्यय

शिक्षण एक त्रिकोणीय प्रक्रिया है। इसके एक सिरे पर शिक्षक,दूसरे पर विद्यार्थी और तीसरे पर पाठ्यक्रम है। ये तीनों पक्ष परस्पर सम्बन्ध और अन्योन्यापेक्षी हैं। इनमें से एक भी स्तर पर अनियोजन अथवा उपेक्षा का परिणाम सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया को निष्फल कर सकता है। पाठ्यक्रम सार्थक हो पर शिक्षक कुशल न हो पर विद्यार्थी उत्सुक व सक्रिय न हों और शिक्षक व विद्यार्थी दोनों अपनी सही भूमिका में हों किन्तु पाठ्यक्रम यादि निम्नस्तरीय हो इन तीनों ही स्थितियों में शिक्षण लक्ष्यों के अधिगम की प्रक्रिया सफल नहीं हो सकती।

इन तीनों में से पाठ्यक्रम अर्थात शिक्षण बिन्दु प्रशासन द्वारा सुविचारित योजना व मानकों के अनुसार निर्धारित होना हैं। इसलिए विद्यालयों के पास उसकी योजना बनाकर लक्ष्य निर्धारित करके अपेक्षित उपकरणों व विधियों के अनुरुप शिक्षण का दायित्व शेष रहता है। इस दाायित्व की पूर्ति

के लिए शिक्षकों से अनेक प्रकार के प्रयासों की अपेक्षा होती है। जिनमें भाषा की प्रकृतिगत विशेषताओं पाठ्य सामग्री के ज्ञान कौशल व अभिरुचिगत पक्षों और व्यवहार कौशलों के हस्तांतरण की विधियों सर्व प्रमुख है। इन सभी दायित्वों व अपेक्षाओं के निर्वाह के लिए योजना का निर्माण अनिवार्य है।

पाठ-योजना का तात्पर्य पाठ्यक्रम के लक्ष्य व उद्देश्यों शिक्षण विधियों विद्यार्थी शिक्षक अन्तक्रिया मूल्यांकन व गृह कार्य जैसे तत्वों का पूर्व निर्धारण पाठ्योजना की आवश्यकता महत्व और अनिवार्यता को स्पष्ट करते हुए अन्तराष्ट्रीय शिक्षा शब्द कोश में कहा गया हैं-पाठ योजना किसी पाठ के उन आवश्यक बिन्दुओं की रुप रेखा है जिसे उस क्रम में व्यवस्थित किया जाता है,जिस क्रम में उन्हें शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाना हैं।

“lesson plan is the outline of the important paints of a lesson arranged in the order in which they are to be presented to students by the reacher.”

International dictionary of education.

इस प्रकरण में अन्य परिभाषा द्रष्टव्य है- दैनिक पाठ योजना में उद्देश्यों को परिभाषित करने पाठ्यक्रम वस्तु के चयन उसे क्रमवार प्रस्तुत करने और विधियों तथा प्रक्रियाओं के निर्धारण को सम्मिलित किया जाता है। यह परिभाषा बाइनिंग और बाइनिंग द्वारा प्रदत्त है।

“Daily lesson planning involves defining the objective selecting and arranging the subject matter and determining the method and procedure”.

Binnig &binning.

इन तथ्यों के प्रकाश में कहा जा सकता है कि पाठ योजना में किसी पाठ के सामान्य उद्देश्यों विशिष्ट उद्देश्यों व्यवहारिक उद्देश्यों ,शिक्षक क्रिया विद्यार्थी क्रिया सहायक उपकरणों मूल्यांकन विधि और गृह कार्य का नियोजन और लेखा जोखा संकलित किया जाता है।

पाठ योजना का प्रत्यय -

पाठ योजना शिक्षण प्रक्रिया की व्यवस्था का व्यावहारिक रुप होती हैं। यह शिक्षण की व्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शिक्षण प्रक्रिया की तीन अवस्थायें होती हैं। पूर्व व्यवस्था अतः क्रिया अवस्था एवं उत्तरोत्तर क्रिया अवस्था

पाठ योजना का जन्म पूर्व अवस्था में होता है,अर्थात अध्यापक के कक्षा में प्रवेश करने से पहले पाठ योजना का निर्माण कर लिया जाता हैं। पाठ योजना में अध्यापक अपनी समस्त शिक्षण क्रियाओं का एक ☐चा तैयार करता हैं। जिससे शिक्षण कार्य को निश्चित दिशा मिल सके । दूसरे शब्दों में

अध्यापक अनुदेशात्मक उद्देश्यों को अर्जित करने के लिए जो क्रियाए कक्षा में करेगा,उन्हें एक विशेष ,नियोजित ढ़ग से लिखना ही पाठ योजना कहलाता हैं।

पाठ योजना के जन्म के समय ही अध्यापक में आत्मविश्वास का जन्म होने लगता हैं। इससे अध्यापक बिना किसी हिचकिचाहट के कक्षा में शिक्षण कार्य कर सकता हैं तथा विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर देसकता हैं। पाठ योजना के अर्थ एवं विभिन्न पक्षों को समझने के लिए विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों ने विभिन्न परिभाषाएं दी हैं। इन सभी परिभाषाओं में यह बात निश्चित हैं कि पाठ योजना तैयार करने की व्यस्था में अध्यापक को शिक्षक से संबन्धित विभिन्न क्रियायों का नियोजन करना होता हैं इसमें परिभाषाएं इस प्रकार हैं-

अतर्राष्टीय शिक्षा शब्दकोष के अनुसार पाठ योजना किसी पाठ योजना आवश्यक बिन्दुओं की रुप रेखा हैं जिन्हें उस क्रम में व्यवस्थित किया जाता है जिस क्रम में उन्हें अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों के सम्मुख किया जाना होता हैं।

लैस्टर बी. सैन्ड्रज के अनुसार- पाठ योजना वास्तव में योजना हैं। अतः इसमें अध्यापक की क्रियात्मक दर्शन उसका ज्ञान उसका विद्यार्थियों से सम्बन्धित ज्ञान शिक्षण सम्बन्धी ज्ञान तथा प्रभावशाली विधि के प्रयोग के लिये उसकी योग्यता हैं।

बिनिंग और बिनिंग के अनुसार - दैनिक पाठ योजना में परिभाषित करना,पाठ्य वस्तु का चयन करना एवं उसके व्यवस्थित करना तथा विधियों एवं प्रक्रिया का निर्धारण करना हैं।

कार्टर वी गुड के अनुसार - पाठ योजना पाठ के महत्वपूर्ण शिक्षण रुपरेखा हैं। ये महत्वपूर्ण बिन्दु उस क्रम से एकत्रित हैं जिस क्रम में उन्हे प्रस्तुत करना होता हैं। इसमें लक्ष्यों बिन्दुओं पूछे जाने वाले प्रश्नों सन्दर्भ दत्तकार्यों आदि का समावेश होता हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1- पाठ योजना का संक्षिप्त परिचय लिखिये।

....
....
....

....
....
....
....

....

....

5.4 पाठयोजना की विशेषताएं

एक अच्छी पाठ योजना विस्तृत एवं क्रमबद्ध होनी चाहिए पाठ योजना इस बात पर निर्भर करती हैं कि कक्षा में क्या हो चुका हैं और क्या होना शेष हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के द्वारा प्रकाशित पुस्तक में अच्छी पाठ योजना की निम्नलिखित विशेषताओं का वर्णन किया गया हैं-

1. पाठ योजना भली भांति नियोजित हो- एक अच्छी पाठ योजना अच्छी तरह से नियोजित होती हैं,जिसमें विशिष्ट विषय के उपविषय या इकाई शिक्षण के उद्देश्यों के प्रातः करने के लिए विशिष्ट सामग्री का विवरण सशिक्षण विभिन्न प्रविधियों एवं युक्तियों अच्छी तरह से सोच कर चुनी होती हैं। कोई शिक्षक प्रतिदिन एक ही विधि का चयन नहीं कर सकता । वह शिक्षण विधियों में भिन्नता लाना चाहेगा । अतः एक अच्छी पाठ योजना में प्रकार का लचीलापन होता हैं। जिससे शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों बदलाव या भिन्नता ला सके। प्रभावी शिक्षण के लिए यह आवश्यक नहीं होता कि शिक्षक हर रोज एक ही विधि से पढ़ाता रहे ।

2. पाठ योजना के क्रियान्वयन में विचलन नहीं- अच्छी पाठ योजना की एक विशेषता यह भी होती हैं। कि शिक्षक पाठ योजना के अनुसार ही चले । नियोजित पाठ योजना लागू करते समय वास्तविक पाठ योजना विचलित नहीं होना चाहिए अच्छी पाठ योजना के क्रियान्वयन से विचलित नहीं होने देती । अतः यह आवश्यक हैं कि सभी प्रकार के निर्णय कक्षा में प्रवेश करने से पहले तथा पाठ योजना बनाते समय ही ले लेने चाहिए ताकि शिक्षक पाठयोजना से कम विचलित हों ।

11. अच्छी पाठ योजना कक्षा- एक अच्छी पाठ योजना इन बातों का पहले ही संकेत दे देती हैं कि कक्षा में क्या कुछ होने वाला हैं जैसे -किस पक्ष पर प्रश्न पूछे जाने हैं ब्लैक बोर्ड पर स्कैच कब बनाया जायेगा । शिक्षक किस समय एवं कैसे कथन करेगा सहायक सामग्री का प्रयोग किस समय एवं किस प्रकार किया जायेगा और पाठ के विकास के लिए विद्यार्थियों की सहभागिता किस स्तर पर ली जाएगी ?पाठ योजना की यह विशेषता तब बहुत ही सहायक होती हैं। जब कोई दुसरा शिक्षक पाठ योजना को पढ़कर शिक्षण कार्य करता हैं तथा शिक्षण कार्य उसी स्तर का होता हैं जैसा कि पाठ लिखने वाला शिक्षक करता ।

4. अच्छी पाठ योजना सहायक सामग्री की आवश्यकता की संकेतक हैं- एक अच्छी पाठ योजना हमें यह भी स्पष्ट संकेत देती हैं कि कक्षा में शिक्षण कार्य के लिए कौन कौन सी सहायक सामग्री तथा शाब्दिक सामग्री की आवश्यकता हैं। शाब्दिक सामग्री में सार और अन्य लिखित सामग्री आदि

शामिल हैं। यदि पाठ योजना बहुत ही पहले बना ली जाती हैं। तो इस तरह की सामग्री को एकत्रित किया जा सकता हैं।

5. विद्यार्थियों की निरन्तर रुचि बनाये रखना- एक अच्छी पाठ-योजना पूरी शिक्षण प्रक्रिया में विभिन्न विधियों और प्रविधियों का प्रयोग आवश्यक है जिनमें विद्यार्थी सक्रियता से भाग लें । इस सदंर्भ में यह कहना उपयुक्त होगा कि पाठ योजना की इस विशेषता को बनाये रखने के लिए शैक्षिक सिद्धांन्त और शैक्षिक मनोविज्ञान का ज्ञान अति आवश्यक हैं।

6. अच्छी पाठ योजना के विभिन्न पक्ष होते हैं- एक अच्छी पाठ योजना के विभिन्न पक्ष होते हैं। जो कि निम्नलिखित हैं-

क- उद्देश्यों की विवेकपर्ण अभिव्यक्ति ।

ख- विषयवस्तु के विवरण और विधि की विस्तृत रुप रेखा ।

ग- पूर्वज्ञान का संकेत जिसका नये पाठ में विस्तार करना हो क्रमबद्ध हो या प्रयोग करना हो।

घ- विद्यार्थियों के लिए क्रियाओं की सुझावत्मक सूची जिसमें उनके अधिगम का मूल्यंाकन भी शामिल हैं।

ड.- पाठ को नियोजित करने में प्रयोग की गई संदर्भ पुस्तकें और सामग्री ।

एक अच्छी तथा संतुलित पाठ योजना में इन पक्षों पर विशेष बल दिया जाता हैं। विद्यार्थियों की क्रियाओं विषय वस्तु के विवरण और विधि आदि का उद्देश्यों के साथ बहुत ही गहरा सम्बन्ध होता हैं।

7. शिक्षा मनोविज्ञान और अधिगम सिद्धान्तों का प्रतिबिम्ब- एक अच्छी पाठ योजना में शिक्षा मनोविज्ञान और अधिगम सिद्धान्तों का आधार होना अति आवश्यक हैं। शिक्षक पाठ योजना बनाने में इतना निपुण हो कि पाठ योजना में विद्यार्थी की विशेषताओं और विकास की झलक स्पष्ट दिखाई दे । पाठ योजना में अधिक लम्बे कथन नहीं होने चाहिए तथा निरीक्षण अध्ययन पर अधिक बल देना चाहिए और छोटे छोटे नोट तैयार किये जाने चाहिए ।

8. अच्छी पाठ योजना अध्यापक की अपनी शिक्षण शैली की खोज में सहायक- एक अच्छी पाठ योजना अध्यापक की अपनी विशेषताओं एवं दुर्बलताओं की ओर ध्यान दिलाती हैं। इससे अध्यापक को सृजनात्मक शिक्षण में सहायता मिलती हैं और उसी विशेष शिक्षण शैली की खोज करने में भी सुविधा रहती हैं। पाठ का निरीक्षण करने वालों को इस बात पर विश्ाेष बल देना चाहिए कि सभी अध्यापकों या छात्र अध्यापकों के शिक्षण का एक ही प्रकार से मूल्यांकन न किया जाए। जैसे यदि कोई अध्यापक धीमी आवाज में बोलता हैं परन्तु वह चित्र बनाने में कुशल हैं तो वह

अपने पाठ में कम से कम। श्यामपट्ट कार्य तथा प्रश्नों का प्रयोग करेगा। इस प्रकार वह अपनी एक विशेष शैली का विकास करने में सफल होगा।

9. भविष्य के लिए उत्तम नियोजन- एक अच्छी पाठ योजना कक्षा में क्रियान्वयन के पश्चात अध्यापक अथवा छात्र अध्यापक को इस बात की जानकारी देती हैं कि उसकी पाठ योजना किस प्रकार से और अच्छी तरह स्थिति का सामना कर सकती हैं। इससे भविष्य में शिक्षण के लिए उत्तम नियोजन का रास्ता मिल सकता हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 2- पाठयोजना के विशेषताओं को बताइए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

5.5 पाठयोजना की आवश्यकता और महत्व

पाठयोजना की आवश्यकता एवं महत्व को स्पष्ट करते हुए डेविस ने कहा हैं- कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक को पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए क्योकि शिक्षक की प्रगति के लिए कोई बात इतनी बाधक नहीं हैं। जितनी शिक्षण की अपूर्ण तैयारी । अच्छे शिक्षण के लिए पाठ योजना का निर्माण उचित रुप से किया जाना चाहिए रायबर्न ने इस सदर्भ में कहा हैं, शिक्षण के लिए हमें पूर्व प्राप्त अनुभव का प्रयोग अपने कार्य को आरम्भ करने के लिए करना चाहिए ।

पाठ योजना की आवश्यकता एवं महत्व को निम्नलिखित तथ्यों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता हैं-

1. आत्म-विश्वास अर्जित करना- कई परिस्थितियों में विशेषकर नवीन शिक्षण कार्य सम्भालते समय शिक्षक आत्मविश्वास रहित होते हैं। अनुभवी शिक्षक भी यह महसूस करते हैं कि पाठ योजना के बिना उसका शिक्षण कार्य बहुत अच्छा नहीं हो सकता । स्पष्ट पाठ योजना प्रभावी शिक्षण के लिए अति आवश्यक हैं।

2. शिक्षण उद्देश्यों की स्पष्टता- कक्षा में पढ़ाई जाने वाली विषय वस्तु के शिक्षण उद्देश्यों का स्पष्ट होना बहुत ही महत्वपूर्ण होता हैं। पाठ योजना के प्रभाव से अध्यापक के पास निरर्थक बातें करने का समय नहीं होता क्योंकि अध्यापक के सामने शिक्षण के समस्त उद्देश्य स्पष्ट होते हैं और वह उन्हें अर्जित करने के लिए प्रयत्नशील रहता हैं।

3. उद्देश्यों को परिभाषित करना- विषय के शिक्षण के लिए उद्देश्यों को परिभाषित करने के योजना बहुत ही सहायक होती हैं। पूर्व परिभाषित उद्देश्य पाठ्यवस्तु का संगठन तथा मूल्यांकन आदि को एक मानदण्ड हो जाता हैं।

4. अध्यापक द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त तैयारी और सोच विचार - प्रत्येक कक्षा शिक्षण के कुछ विशिष्ट उद्देश्य होते हैं। अध्यापक किस प्रकार से इन उद्देश्यों को प्राप्त करे इसके लिए पर्याप्त तैयारी का होना आति आवश्यक हैं। शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए पाठ योजना आवश्यक सामग्री तथा साधन एकत्रित करने में सहायता देती हैं।

5. शिक्षण क्रियाएँ का ज्ञान- प्रभावशाली शिक्षण के लिए अध्यापक को शिक्षण क्रियाओं तथा प्रयोग होने वाली सहायक सामग्री की पूर्ण जानकारी होना आवश्यक हैं। पाठ योजना इस प्रकार की जानकारी प्राप्त करने में अध्यापक की सहायता करती हैं। अध्यापक पहले ही तय कर लेता है कि कक्षा में उसे कौन कौन सी शिक्षण क्रियाएं करनी हैं तथा किस प्रकार करती हैं। इसके साथ ही सहायक सामग्री को कब तथा कैसे प्रयोग करता हैं- इसका निर्णय भी पाठ योजना में कर लिया जाता है।

6. सैद्धान्तिक पुनर्रचनाओं का उपयोग- विद्यालय के वास्तविक कार्यों में सैद्धान्तिक पुनर्रचनाओं के प्रयोग के लिए पाठ योजना का होना बहुत आवश्यक हैं। इससे व्यावहारिक कौशलों और सिद्धांन्तों को समझने में सहायता मिलती हैं।

7. समय का उचित विभाजन- पाठ्यक्रम में दी गई पाठ्य सामग्री को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं एवं उपलब्ध समय के अनुसार विभाजित किया जाना आवश्यक हैं। इसके लिए पाठ्य वस्तु को छोटी इकाईयों में विभाजित किया जाना आवश्यक हैं। अध्यापक वर्ष भर में पढ़ाये जाने वाले विषय वस्तु को कुल उपलब्ध कालाशों के आधार पर पुन संगठित करता हैं। पाठ योजना की सहायता से ही पाठ्य सामग्री को पुनः संगठित करने के कौशल का विकास किया जा सकता हैं।

8. क्रमबद्ध कार्य करने की क्षमता का विकास- पाठ योजना में अध्यापक पाठ्यवस्तु को क्रमबद्ध रुप में संगठित करके प्रस्तुत करता हैं। इससे अध्यापक में क्रमबद्ध रुप से कार्य करने की आदत का विकास होता हैं और उसमें वे सभी कौशल विकसित हो जाते हैं जिनसे वे पाठ का एवं जीवन सम्बन्धी कार्यों का नियोजन कर सके।

9. समस्याओं का ज्ञान- अध्यापक पाठ योजना के माध्यम से विषय वस्तु से सम्बन्धित समस्याओं तथा कठिनाइयों के विभिन्न पक्षों के बारे एवं उनके समाधान के बारे में कक्षा जाने से पूर्व अच्छी तरह विचार कर सकता हैं। इससे अध्यापक और विद्यार्थी के मधुर सम्बन्धी का विकास होता हैं।

10. मानसिक शक्तियों का विकास- पाठ योजना द्वारा विद्यार्थियों की तर्क विचार निर्णय एवं कल्पना शक्ति आदि का विकास किया जा सकता हैं। पाठ योजना बना कर अध्यापक विद्यार्थियों की विभिन्न मानसिक शक्तियों का निश्चित दिशा में विकास कर सकता है।

11. नये ज्ञान का आधार पूर्व ज्ञान - शिक्षण को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक हैं कि विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान को आधार बनाया जाए और उसे नवीन ज्ञान प्रदान किया जाए इसके लिए पाठ योजना सहायक होती हैं। पूर्व ज्ञान को आधार बनाने से पाठ में सरलता और निरन्तरता आती हैं। पाठ योजना में सभी क्रियाएं पहले ही कक्षा स्तर तथा पाठ्य वस्तु के अनुसार चुन ली जाती हैं इसलिए इससे विद्यार्थियों में पाठ के प्रति रुचि भी उत्पन्न होती हैं।

12. पाठों में निरंतरता -पाठ योजना केउपयोग द्वारा पढ़ायो जाने वाले विषयों के सभी उपविषयों में एक स्तिप्ता बनी रहती है। अध्यापक को इस बात का ज्ञान रहता हैं कि कौन से उपविषय पढ़ाये जा चुके हैं तथा कौन कौन से पक्ष शेष रह गये हैं। इसके अतिरिक्त अध्यापक को विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान सम्बन्ध जानकारी भी प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार पाठों या प्रकरण निरन्तरता बनाये रखने के लिए पाठ योजना एक महत्वपूर्ण साधन हैं।

13. विषय सामग्री का संगठन- शिक्षण प्रक्रिया में निर्धारण उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए इस योजना में विषय सामग्री को संगठित करना अति आवश्यक होता हैं। सुसंगठित विषय सामग्री का विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुतीकरण के अतिरिक्त मूलयांकन प्रक्रिया में भी पाठ योजना एक दिशा निर्देशक का कार्य करती है।

14. शिक्षण अधिगम में सम्बन्ध स्थापित करना- शिक्षण और अधिगम में सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है अन्यथा शिक्षण निरर्थक साबित होगा पाठ योजना द्वारा शिक्षण और अधिगम में व्यावहारिक रुप से सम्बन्धित स्थापित किया जा सकता हैं। अधिगम को प्रभावशाली बनाने के लिए विभिन्न शिक्षण सिद्धांतों युक्तियों कौशलों एवं तकनीकों का प्रयोग किया जाता हैं। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए पाठ योजना होना अति आवश्यक है।

15. व्यक्तिगत विभिन्नताओं का उपयोग - मनोविज्ञान के अनुसार कोई भी दो बालक या व्यक्ति एक समान नहीं होते हैं। उनमें व्यक्तिगत विभिन्नता होती हैं। इतना ही नहीं प्रतयेक व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्ष होते हैं। इन पक्षों की और पाठ योजना में ध्यान दिया जा जाता हैं। पाठ योजना में व्यक्तिगत विभिन्नताओं का उपयोग करके शिक्षण कार्य के व्यक्तित्व के अनुभव संचालित किया जा सकता हैं। कक्षा में सभी विद्यार्थी एक समान नहीं होते हैं,कोई प्रतिभाशाली है तो कोई पिछड़ा

विद्यार्थी कोई तीव्र वाला हैं तो कोई मन्द बुद्धि। अतः ऐसे विद्यार्थियों के शिक्षण के लिए पाठ योजना एक आवश्यकता होती है। ताकि अध्यापक कक्षा में जाने से पहले विद्यार्थियों की इन विभिन्नताओं के अनुरुप शिक्षण विधियों का चयन कर सके अध्यापक कक्षा के विद्यार्थियों की विभिन्नताओं को ध्यान मेंरखकर विभिन्न प्रकार की पाठ योजनाएं तैयार कर सकता हैं। अतः पाठ योजना की आवश्यकता का एक कारण व्यक्तिगत विभिन्नताएं भी है।

16. शिक्षण को रुचिकर बनाने के लिए- दृष्टि कोण के अनुसार पाइ को सरल स्पष्ट तथा रुचिकर बनाना अति आवश्यक होता है इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अध्यापक को उपयुक्त शिक्षण विधियों तकनीकों एवं पूर्ति के लिये अध्यापक को उपयुक्त शिक्षण विधियों तकनीकों एवं युक्तियों आदि का चयन कक्षा में जाने से पहले ही कर लेना होता है। पाठ योजना इस कार्य में अध्यापक की सहायता करती है। अतः विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने एवं शिक्षण में उनकी रुचि बनाये रखने के लिए पाठ योजना अध्यापक की स्पष्ट रुप से सहायता करती हैं।

17. अनुशासनहीनता पर नियंत्रण- प्रायः ऐसा देखने में आता है। कि यदि अध्यापक उचित रुप सेशैक्षिक तैयारी किये बिना कक्षा में आता हैं तो कक्षा में अनुशासनहीनता उत्पन्न हो जाती हैं,ऐसा अध्यापक विद्यार्थियों को ज्ञान की दृष्टि से संन्तुष्ट नहीं कर पाता कक्षा में अध्यापक की स्पष्ट क्रियाओं से विद्यार्थी उत्तेजित एवं अनुशासनहीनता हो जाते है। इस प्रकार की समस्या के समाधान के लिए पाठ योजना अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं क्योंकि पाठ योजना में विद्यार्थियों को कक्षा में व्यक्त रखने की सभी विधियों पर पहले ही विचार कर लिया जाता है।

18. अपव्यय को रोकना- पाठ योजना शिक्षण प्रक्रिया में अपव्यय को रोकती हैं क्योंकि यह शिक्षण को विधिवत एवं िनयमित बनाती है। यह शिक्षक को अस्त व्यस्त रुप से पढ़ानें से राकती है और अनावश्यक दोहराई से बचाती है।

19. सार एवं दत्त कार्यों की व्यवस्था- पाइ योजना पर्याप्त रुप से पाठों का सार प्रस्तुत करती है। और इसमें कक्षा को दिये जाने वाले कार्यों की निश्चित व्यवस्था होती हैं जो विद्यार्थियों तथा समझ को विकसित करते है।

पाठ योजना का हिन्दी शिक्षण में अत्यन्त महत्व हैं। पाठ योजना की सहायता से किसी विषय वस्तु के विशिष्ट उद्देश्यों एवं अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन को एक निश्चित ढ़ग सें प्राप्त किया जाता है। शिक्षण क्रिया में सतत्ता स्थापित करने प्रभावी शिक्षण बिन्दु चुनने तथा महत्वपूर्ण शिक्षण बिन्दुओं का ज्ञान कराने के लिए निर्देशन का साधन उपलब्ध कराता हैं। एक प्रभावशाली शिक्षक बनने के लिए उचित पाठ योजना का निर्माण अत्यन्त आवश्यक हैं। यह वास्तव में उन क्रिया कलापों का समूह हैं जिसे अध्यापक कक्षा शिक्षण में करता हैं। यह शिक्षक के हाथ में एक प्रभावशाली उपकरण की भाँति कार्य करता हैं।

पाठ योजना की आवश्यकताओं के संबंन्ध में निम्नलिखित बिन्दु हैं-

पाठयांजना शिक्षक के कार्यो को स्पष्ट दिशा निर्देश देता हैं।

पाठयांजना के द्वारा पाठ वस्तु का अच्छी तरह संगठन होता हैं।

पाठयांजना शिक्षक के कार्य को सुसंगठित कर देता हैं।

इससे छात्रों को उनके स्तर के अनुसार गृह कार्य देने में सहायता मिलती है।

पाठयांजना से शिक्षण कार्य में क्रमबद्धता उत्पन्न होती है।

पाठयांजना कक्षा में उचित वातावरण बनाने के लिए लाभ दायक है।

पाठयांजना के विकास से शिक्षण कार्य में उत्पन्न होने वाले कठिनाईयों का अनुमान लग जाता है।

पाठयांजना के निर्माण से शिक्षण कार्य मेंउत्पन्न होने वाली कठिनाईयों का अनुमान लग जाता है।

पाठयांजना के निर्माण से उदाहरणों के विकास में सहायता मिलती है।

पाठयांजना को पढ़ाने से अध्यापन कार्य उचित समय से समाप्त होता है।

अध्यापक के भुलने में कमी आने के लिए पाठ योजना का निर्माण होना अति आवश्यक हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 11- पाठयोजना के आवश्यकताओं के संबंध में महत्व पूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

5.6 पाठयोजना के लक्ष्य

पाठ योजना आज की शिक्षण प्रविधि का अनिवार्य अंग हैं। न केवल शिक्षण शिक्षा पाठ्यक्रमों अपितु वास्तविक कक्षा शिक्षण में भी इसका प्रयोग बहुतायत से होता हैं। सूक्ष्म शिक्षण अनुरुप शिक्षण और विद्यालय शिक्षण की गतिविधियों पाठ योजना के बिना नहीं की जा सकती हैं। इसके लाभों को स्वीकार करते हुए अनेक निजी विद्यालयों में पाठ योजना का निर्माण शिक्षण के अनिवार्य अंग के तौर पर हो रहा हैं । आज के वैज्ञानिक और तकनीकि युग में समय और संसाधनों के सदुपयोग की दृष्टि से पाठ नियोजन को पर्याप्त स्वीकृति मिल रही है। पाठ योजना के लक्ष्यों को निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत जाना जा सकता है।

1.शिक्षण अधिगम लक्ष्यों का निर्धारण- किसी भी पाठ योजना का प्रभाव चरण पाठ्य वस्तु शिक्षण के साधारण ,विशिष्ट एवं व्यवहारगत लक्ष्यों का निर्धारण होता है।साधारण लक्ष्य व्यापक होते है जबकि विशिष्ट लक्ष्यों का अधिगम किसी एक पाठ्यवस्तु के अध्ययन के समापन पर सुनिश्चित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया द्वारा शिक्षक को अपने शिक्षण की दशा दिशा के चयन और विद्यार्थियों के साथ की जाने वाली अन्तर्क्रिया व मूल्यांकन प्रविधि के नियोजन में मदद मिलती है।

2.शिक्षण बिन्दुओं का विभाजन- किसी कलांश के लिए निश्चित पाठ्य वस्तु को कभी भी एक इकाई के रुप में एक साथ नहीं पढ़ाया जाता अपितु प्रथक पदों अनुच्छदों या चरणों में विभाजित करके प्रस्तुत किया जाता है। इनमें से प्रत्येक अंश का अपना व्यवहारिक उद्देश्य होता है। जिसकी अवधि अग्रिम अंश की प्रस्तुति से पूर्व मूल्यांकन द्वारा सुनिश्चित की जाती है। सम्पूर्ण पाठ योजना में ऐसे चार से छह शिक्षण बिन्दु निश्चित किये जाते है।

3. संसाधनों का सदुपयोग- पाठ्यवस्तु शिक्षण बिन्दु शिक्षण प्रविधि और लक्ष्यों के पूर्व निर्धारित होने के कारण शिक्षक और विद्यार्थियों को सार्थक अन्तक्रिया तार्किक क्रम और सन्तुलित गति बनाये रखने में मदद मिलती है। इसका लाभ रखने में मदद मिलती है। कि कक्षा दिग्भ्रमित लक्ष्यहीन और निरर्थक गमिविधियों से बची रहती है। और मानव संसाधन और शिक्षण उपकरणों का सर्वोतम उपयोग सम्भव हो जाता है।

4. उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करना- पाठयोजना के आरम्भ में जिन लक्ष्यों का निर्धारण किया जाता है। कालाशं के दौरान शिक्षक शिक्षार्थी के माध्यम से उनके अधिगम का प्रयास किया जाता है। उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक शिक्षण बिन्दू का मूल्यांकन होता है। पाठ्यक्रम शिक्षण के अन्त में पठित वस्तु का पुनः स्मरण किया जाता है। इसके उपरान्त पाठ्यवस्तु शिक्षण के समस्त लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यांकन के परिणामों के सन्तोषप्रद होने से उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सकती है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 4- हिन्दी शिक्षण की पाठ योजना के मुख्य लक्ष्यों पर प्रकाश डालिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

5.7 पाठयोजना के तत्व

पाठ-योजना,शिक्षण से सम्बद्व पक्षों शिक्षक विद्यार्थी और पाठ्यक्रम और संसाधनों पाठ्य पुस्तक शिक्षण उपकरणों के साथ साथ उपलब्ध समय तथा श्रम के सदुपयोग का प्रयास है। यद्यपि इस प्रयासों को सार्थक करने में शिक्षण के सभी पक्षों का समन्वय आपेक्षित होता है किन्तु अधिकांश दायित्व शिक्षक के कन्धों पर है। वह पाठ योजना का सृजन दिशा,निर्धारण और मूल्य संवर्धन करता है।पाठयोजना का कार्यान्वयन और मूल्यांकन भी उसी की जबाव देती है। शिक्षक यदि पाठ योजना के उद्देश्य,प्रक्रिया तत्वों और प्रविधियों से परिचित हो तो उत्तम व्यवहार्थ और फलप्रद पाठ योजना का निर्माण कर सकता है।

1. पाठवस्तु- पाठयोजना का निर्माण पाठ्य वस्तु पर निर्धारित होता हैं। पाठ्य वस्तु की प्रकृति और विधा को भली प्रकार समझे बिना विद्यार्थियों तक उसके ज्ञान,बोध,प्रयोग आदि पक्षों का अत्तरण सम्भव नहीं हैं। पाठ्य वस्तु के ज्ञान का तात्पर्य केवल उसके शाब्दिक पक्ष का परिचय न होकर उसमें चिहिन्त क्रियात्मक और व्यवहारिक पक्षों के ज्ञान से भी है। उदाहरण के लिए यदि पाठ्य वस्तु में ग्रामीण परिवेश से सम्बन्ध कोई कहानी संकलित है तो पात्रों,संवादों और घटनाओं के साथ ग्रामीण जीवन शैली,विचार धारा मूल्य विश्वास और परम्परा आदि से परिचित होना अनिवार्य हैं।इसी प्रकार शहीद भगत सिंह जी की जीवनी को राष्टीय स्वतन्त्रता आन्दोलन उसकी दशा विचार दशा विचार धारा सरकारी नीतियों इत्यादि के परिचय के बिना पढ़ना उपयोगी नहीं हो सकता ।

2. शिक्षण लक्ष्य- पाठ्यवस्तु से भली प्रकार परचित होने पर शिक्षक उसके शिक्षण -उद्देश्यों का आकलन कर सकता है। शिक्षण लक्ष्यों के आकलन हेतु अनेक प्रणालियों और विधियां प्रचलित हैं।

इनमें से कुछ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ज्यादा उपयोगी और व्यवहार्य और व्यवहार्थ है। इस प्रकार के लक्ष्यों को सामान्य विशिष्ट और व्यावहारिक इन तीन श्रेणियों में रखा गया हैं। इन लक्ष्यों के निर्धारण के साथ ही उनके लेखन का भी समान महत्व है। इन उद्देश्यों को सटीक और व्यवहारिक शब्दावली में प्रस्तुत करना भाषा शिक्षकों के लिए गम्भीर चुनौती है।

3. शिक्षण विधियाँ- भाषा शिक्षण के विविध पक्षों (गद्य,पद्य व व्याकरण)और विधाओं (पद्य के छन्दों व गद्य की विधियों) के शिक्षण के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यवस्तु के सफल शिक्षण की दृष्टि से कब किसी विधि का प्रयोग उपयोगी और फलप्रद होगा ,यह निर्णय बहुत महत्वपूर्ण हैं यह निर्णय पाठ्यवस्तु और शिक्षण लक्ष्यों के साथ साथ विद्याथियों की श्रेणी और स्तर पर भी निर्भर होता हैं। इस दृष्टि से पाठ योजना बनाते हुए पाठ्यवस्तु शिक्षण लक्ष्य विद्याथियों के स्तर और प्रकृति का आकलन उपयोगी होता है।

4. विद्यार्थी- पाठ्यक्रम शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया शिक्षण उपकरण और प्रविधि इन सबका एक मात्र लक्ष्य विद्यार्थियों में अनुभवजन्य और स्थायी परिवर्तन लाना हैं। इस प्रकार विद्यार्थी सम्पूर्ण शिक्षण गतिविधियों व संसाधनों का केन्द्रीय तत्व हैं। समस्त शिक्षण गतिविधियों संसाधन और प्रणालियों उन्हीं को लक्ष्य करके निर्धारित और सृजित होती है। अतः विद्याथियों की प्रकृति श्रेणी स्तर रुचि पूर्वज्ञान और अभिवृत्ति को जाने बिना शिक्षण नियोजन का प्रयास आँखे मँूद कर जंगल पर करने जैसे होगा ऐसा प्रयास असफल तो निःसंन्देह होगा साथ ही शिक्षक व विद्यार्थियों को दिग्भ्रमित और कंुठित भी कर सकता है।

5. संसाधन- शिक्षण को निर्धारित लक्ष्य तक पहँुचाने में शिक्षण उपकरणों -जेैसे पुस्तक अभ्यास पुस्तिका लेखन,सामग्री,श्यामपट्ट और विद्यार्थियों की जिज्ञास ,समय, इच्छा रुचि,व शिक्षक की योग्यता क्षमता ज्ञान जैसे-अनुभवगम्य संसाधनों का बहुमूल्य योगदान है। पाठ-योजना बनाते हुए इनके आकलन व उपयोग विधियों का परिचय उपयोगी होता है। इनमें से किसी भी संसाधन की उपेक्षा का सफल पाठ-योजना का निर्माण नहीं किया जा सकता है। इन तत्वों की प्रकृति उपयोग प्रयोगविधि और महत्व का ज्ञान पाठयोजना के निर्माण और सफल कार्यान्वियन के लिए अनिवार्य हैं। यदि शिक्षक इनमें से किसी एक भी पक्ष से अनाभिज्ञ हैं या उसकी उपेक्षा करता है तो सफल कार्य योजना की आशा नहीं की जा सकती है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 5- पाठ योजना के शिक्षण पर संक्षिप्त नोट लिखों।

………………………………………………………………………………………………………
………………………………………………………………………………………………………
……………………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………………………………………
………………………………………………………………………………………………………
………………………………………………………………………………………………………
………………………………………………………………………………………………………
………………………………………………………………………………………………………
……………………………………………………………………………………………………

5.8 पाठयोजना के उपागम

पाठ-योजना के निर्माण अनेक उपागमों अथवा प्रतिविधियों का प्रयोग किया जाता हैं। इन उपागमों का संक्षिप्त उल्लेख निम्नलिखित हैं-

हरबर्ट उपागम-पाठ-योजना की संरचना हेतु प्रयुक्त विभिन्न उपागमों में हरबर्ट उपागम का अत्यन्त महत्व हैं। भारतीय शिक्षक प्रशिक्षण महविद्यालयों में प्रायः इसी उपागम के आधार पर पाठ-योजना का निर्माण किया जाता हैं। पाठ्य वस्तु को विभिन्न इकाईयों में विभाजित करके क्रमबद्ध रुप में छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करना हरबर्ट उपागम की महत्वपूर्ण विशेषता हैं। इस उपागम के अन्तर्गत नवीन ज्ञान का पूर्वज्ञान के साथ सम्बन्ध स्थापित करने पर बल दिया जाता हैं। प्रस्तावना व्यवस्था तुलना व मूल्यांकन सोपनों का व्यावहारिक नियोजन इस उपागम के आधार पर किया जाता हैं।

1. डी वी व किलपैट्रिक उपागम- यह उपागम अमेरिका में अधिक प्रचालित हैं। छात्रों को अधिकाधिक क्रियाशील रखकर उन्हें अधिगम के माध्यम से विकसित करना, इस उपागम की विशेषता हैं। इस उपागम में अनुभवों को प्रमुखता दी जाती हैं और अनुभवों के द्वारा ही विद्यार्थियों का बौद्धिक व सामाजिक विकास किया जाता हैं। इसके लिए योजना पद्धति को आधार बनाकर वांछित परिवर्तनों की दिशा में प्रयास पर बल दिया जाता है।

2. मेरीसन उपागम- यह उपागम मनोवैज्ञानिक सिद्धांन्त पर आधारित हैं। इस उपागम के अन्तर्गत मोरीसन ने पाँच सोपानों का निर्धारण किया हैं। ये पाँच सोपान हैं-योजना,प्रस्तुतीकरण, परिपाक व्यवस्था एवं वर्णन । परिपाक सोपाक को मोरीसन ने सर्वाधिक महत्व दिया हैं। छात्रों की आवश्यकता व अधिगम के उद्देश्यों को इस उपागम में प्रधानता दी जाती हैं।

3. बिट्रिश उपागम- यह उपागम बिटेªन में प्रयुक्त होता हैं। अधिगम परिस्थितियों के निर्माण व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में शिक्षक के प्रयासों को सर्वाधिक महत्व दिया जाता हैं। इसके

अतिरिक्त, उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किए गए प्रश्नों का मुल्यांकन करने हेतु किए गए प्रश्नों का मूल्यांकन करने हेतु भी ब्रिशिट उपागम अधिक बल देता है।

4. अमेरिकन उपागम- अमेरिकन उपागम में, अधिगम की परिस्थितियों व शिक्षण अधिगम के उद्देश्यों की प्रमुखता दी जाती हैं। प्रभावी अधिगम परिस्थितियों का निर्माण इस प्रकार किया जाता हैं, जिससे निर्धारित उद्देश्यों की दिशा में ही निरन्तर प्रयास किया जा सके। शिक्षण की समस्त क्रियाऐं भी इन उद्देश्यों दिशा में नियोजित व अग्रेसित होती है।

5. मूल्यांकन उपागम- यह उपागम बी.एस.ब्लूम की देन हैं। बालकों के व्यवहार परिवर्तनों पर इस उपागम में अधिक महत्व दिया जाता हैं। इस पूर्णतः उद्देश्य केन्द्रित उपागम हैं और इसके अन्तर्गत पाठ योजना का निर्माण उद्देश्यों एवं व्यवहार पर आधारित होता हैं। अनेक भारतीय प्रशिक्षण संस्थान इस उपागम के आधार पर पाठ योजनाओं के निर्माण को अधिक महत्व प्रदान करने लगे हैं।

6. भारतीय उपागम- भारतीय उपागम में सीखने के उद्देश्य व्यवहार परिवर्तनों व अधिगम अनुभवों पर बल दिया जाता हैं। एन.सी.आर. टी. द्वारा संचालित क्षेत्रीय महाविद्यालयों में इस उपागम को विकसित करने हेतु प्रयास किए गए हैं। भारतीय उपागम मूल रुप से ब्रिटेन व अमेरिका के उपागमों पर आधारित हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 6- पाठ योजना के विभिन्न उपागमों का वर्णन कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

5.9 पाठयोजना के संरचात्मक उपागम

पाठ की योजना को लिखित रुप में प्रस्तुत करना और फिर उसका कार्यान्वयन भारतीय शिक्षा में अंग्रेजी शासन के दौरान उपजी व्यवस्था है। हालाकि भारतवर्ष में पहला शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय

खोलने का श्रेय डेन मिश्नरियों के नाम हैं,लेकिन वुड घोषणापत्र 1954 के बाद ब्रिटिश सरकार ने प्राथमिक माध्यमिक और उच्च सभी स्तरों के अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था की। इन उद्देश्य शिक्षण महाविद्यालयों में जर्मन शिक्षा शास्त्री हरबर्ट द्वारा प्रणीत -पूर्वानुवर्ती प्रत्यक्ष सिद्धान्त पर आधारित और उनके शिष्य जिलर द्वारा विकसित पाठ योजना प्रणाली का अनुसरण होता था।

स्वन्त्रता के उपरान्त वर्ष 1961 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद का गठन होने पर शैक्षिक नियोजन में अमरीकी पद्धति ब्लूम उपागम का प्रचलन आरम्भ हुआ। ये दोनों उपागम मनोवैज्ञानिक और पर्याप्त व्यावहारिक हैं। आज भी भारतवर्ष के अधिकांश शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में इन्ही उपागमों का अनुसरण किया जाता हैं इनके अनुपात से छात्राध्यापकों में शिक्षण को सटीक और व्यावहारिक बनाने का संकल्प उपजता है और शिक्षण को कमबद्ध और परिणामोन्मुख बनाने में सहायता मिलती हैं। इन उपागमों का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत हैं-

5.9.1 हरबर्ट उपागम (पंचपदीय शिक्षण उपागम)-

जॉन फ्रड्रिक हरबर्ट जर्मनी के विख्यात दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक थे।उनके अध्ययन और शोध का क्षेत्र शिक्षा और शिक्षण तक व्याप्त था शिक्षण के क्षेत्र में तो उनके विचार और सिद्धांत इतने मौलिक और उपयोगी हैं िकवे शिक्षक शिक्षा के समस्त महाविद्यालयों में सभी स्तरों पर मान्य व अनुपालनीय है। हरबर्ट द्वारा उपस्थिापित शिक्षण प्रक्रिया सिद्धांत और पाठ योजना उपागम सर्वाधिक प्राचीन होने पर भी आज तक व्यवहार्य हैं। इसके प्रमुख बिन्दुइस प्रकार है।

1. पूर्वानुवर्ती प्रत्यक्ष का सिद्धांत- हरबर्ट के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया में संचित ज्ञान की भूमिका महत्वपूर्ण हैं। हम ज्ञान व अनुभव के रुप में जो प्राप्त करते हैं वह चेतन मस्तिष्क द्वारा ग्रहण किया जाता हैं। और फिर अवचेतन में संग्रहित हो जाता है।इस प्रकार अवचेतन मस्तिष्क में विभिन्न विषयों से सम्बद्ध शब्द,चित्र और अनुभव एकत्र होते जाते हैं। इन संग्रहीत विषयों से सम्बद्ध ज्ञान,विचार या अनुभव दोबारा उपस्थित होने पर अवचेतन में मौजूद प्रत्यय फिर से चेतन मस्तिष्क में उपस्थित होकर नए प्रत्ययों को आत्मसात् करने में मदद करते है। कुछ समय तक निक्रिष्य रहने से ये प्रत्यय फिर से अवचेतन मस्तिष्क में प्रस्तुत हो जाते है। इस क्रम से मस्तिष्क में विविध विषयों का ज्ञान संग्रहीत होता जाता हैं और नए अनुभवों के अधिगम में सहायक होता है। इस सिद्धान्त को पूर्वानुवर्ती प्रत्यक्ष के सिद्धान्त के रुप में जाना जाता है।

इस सिद्धान्त का शैक्षिक अनुप्रयोग ज्ञात से अज्ञात नामक शिक्षण-सिद्धान्त के रुप में जाना जाता हैं। व्यावहारिक दृष्टि से इसका एक अन्य उपयोग है कि विद्यार्थियों को जो भी ज्ञान व अनुभव उपलब्ध कराया जाए उसे उनके पूर्व ज्ञान से सम्बद्व होना चाहिए इसका बेहतर उपाय है कि किसी भी विषय के अध्यापन से पहले उससे सम्बद्ध पूर्वज्ञान का अनुमान और परीक्षा की जाए नए ज्ञान के पूर्व ज्ञान

से सम्बद्ध करके प्रस्तुत करने से उसे समझने और लम्बे समय तक बनाए रखने में सफलता मिलती है।

2. अधिगम प्रक्रिया- हरबर्ट के अनुसार स्थायी ज्ञान,बोध या अनुभव कोश का अंग बनने के लिए किसी प्रत्यय को ज्ञानेन्द्रियों और मस्तिष्क के चार चरणों से गुजरना होता हैं। इनका परिचय इस प्रकार है-

क. अवलोकन- इस चरण में हम आँख,कान,नासिका इत्यादि ज्ञानेन्द्रियों या हाथ पाँव आदि कर्मेन्द्रियों के माध्यम से प्रस्तुत ज्ञान का सम्पर्क और परिचय प्राप्त करते है।

ख. प्रत्याशा- इस चरण में मस्तिष्क पूर्व प्राप्त ज्ञान और अनुभवों की पृष्ठभूमि में प्राप्त होने वाले ज्ञान और अनुभव के लाभ या उपयोग का आकलन करता है।

ग. माँग- यदि मस्तिष्क के आकलन के अनुसार प्राप्त होने वाले नए और उपयोगी हैं तो वह उनके अधिगम के लिए स्वयं को सन्नद्ध करता हैं। और

घ. क्रिया- इस चरण में मस्तिष्क उपलब्ध प्रत्ययों का अधिगम और संकलन करता हैं। कुछ समय तक ये प्रत्यय मस्तिष्क के जागृत/चेतन भाग में रहते हैं। यदि व्यक्ति इनका सतत उपयोग करता है तो वे वहीं अवस्थित रहते हैं। यदि ऐसा न हो तो धीरे धीरे वे मस्तिष्क के अवचेतन भाग में अन्तरित हो जाते है। यदि यहाँ भी इनका निरन्तर प्रयोग न हो तो ये मस्तिष्क के अचेतन भाग में चले जाते हैं।

इन चारों प्रक्रियाओं के परिणामस्वरुप कोई प्रत्यय पहले मस्तिष्क के सक्रिय भाग चेतन मस्तिष्क में स्थान पाता हैं। कुछ समय तक प्रयुक्त न होने पर वह अवचेतन का अंग हो जाता हैं। और वहाँ भी निष्प्रयोज्य रहने पर अचेतन मस्तिष्क में चला जाता है। उपरोक्त चरणों के अनुसार प्रत्ययों को सुग्राहय बनाने के लिए विषय वस्तु को व्यवस्थित रुप में प्रस्तुत किया जाता चाहिए । गृहीत प्रत्ययों के अभ्यास और परीक्षण की व्यवस्था से उन्हें स्थायी बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए । इसके लिए चार प्रक्रियाओं का अनुपालन किया जाता हैं। इनका परिचय इस प्रकार हैं-

1. स्पष्टता- विषय- सामग्री को स्पष्ट और सुबोध रुप में विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता चाहिए ताकि वे उन्हें यथारुप ग्रहण कर सकें और उनके लाभ व प्रयोग से परिचित हो सके। तभी उनमें नए प्रत्ययों को जानने समझने की सन्नद्धता उपस्थित होगी ।

2. सम्बन्ध- नए प्रत्ययों की प्रस्तुति से पहले विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का अनुमान व परीक्षण किया जाना चाहिए इस बात की व्यवस्था की जानी चाहिए कि वे नए ज्ञान अनुभव और कौशलादि का मस्तिष्क के पूर्व स्थापित प्रत्ययों से सम्बन्ध स्थापित कर सके।

3. व्यवस्था- नए प्रत्ययों को ज्ञात से अज्ञात या सरल से कठिन के क्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए इससे विद्यार्थी बिना भ्रम और बाधा के नए सन्दर्भो को आत्मसात् कर सकते है।

4. व्यावहारिक प्रयोग- मस्तिष्क के सक्रिय खण्ड में वही प्रत्यय उपस्थित रहते हैं जिनका व्यवहार लगातार होता रहता हैं। इसलिए विद्यार्थियों को अर्जित ज्ञान के प्रयोग के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए इस प्रक्रिया से ज्ञान की प्राप्ति ओर व्यावहारिक उपयोग को सम्भव किया जा सकता है।

3. पंचपदीय प्रणाली- हरवर्ट द्वारा प्रतिपादित शिक्षण पदों केआधार पर उनके शिष्य जिलर ने शिक्षण नियोजन के पाँच पदों को प्रस्तुत किया । ये पाँच चरण इस प्रकार है-

क. प्रस्तावना- इस चरण को पहले तैयारी के नाम से जाना जाता था इसके अन्तर्गत पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतिकरण से पूर्व विद्यार्थियों के अर्जित ज्ञान के पूर्वानुमान उसके परीक्षण और पाठ्यवस्तु से सम्बन्ध स्थापन जैसे चरणों को शामिल किया जाता है।

ख. प्रस्तुतिकरण- इस चरण में शिक्षक पाठ्यवस्तु को विद्यार्थियों के समझ प्रस्तुत करता हैं। प्रस्तुत किया जाता हैं। इस कार्य के लिए उपयुक्त उपकरणों,शिक्षण विधियों और प्रश्नोत्तर की सहायता ली जाती है।

ग. व्याख्या- इस चरण के अन्तर्गत कथा,उदाहरण दृष्टान्त प्रश्नोत्तर और प्रयोगों द्वारा पाठ्यवस्तु को स्पष्ट किया जाता हैं इस पद में अधिगम और प्रस्तूत प्रत्ययों का सह सम्बन्ध प्रस्तुत किया जाता है।

घ. सामान्यीकरण- इस चरण में विद्यार्थियों की मदद से अवगत ज्ञान अनुभव कौशल आदि को दैनन्दिन जीवन के अन्यान्य क्षेत्रों में प्रयोग की सम्भावनों पर विचार किया जाता हैं।इस प्रक्रिया से कक्षागत बतिविधियों से ज्ञान प्राप्त ज्ञान,बोध व अनुभव को व्यावहारिक जीवन में उपयोगी बनाने में मदद मिलती हैं।

ड़. प्रयोग- इस चरण के अन्तर्गत पाठ्यवस्तु को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का स्थायी अंश बनाने के लिए प्रयोग के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं। इससे सीखे गए ज्ञान की वास्तविकता और व्यावहारिक की परीक्षा हो जाती है और विद्यार्थी उसकी प्रयोग विधि से परिचित हो जाते हैं।

4.हरबर्ट उपागम की विशेषता -

हरबर्ट उपागम की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

इसमें छात्रों को सोचने का मौका मिलता है और वे सक्रिय रहते हैं।

इसमें पूर्व ज्ञान के आधार पर नए ज्ञान को प्रस्तुत किया जाता हैं ।

नया अर्जित ज्ञान नई परिस्थितियों में कैसे प्रयोग किया जाए इस उपागम द्वारा छात्रों को सिखाया जाता हैं।

इससे सारा ज्ञान दूसरे विषयों से भी समन्वित करके दिया जाता हैं।

ये उपागम शिक्षण के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित हैं।

यह शिक्षा को एक सुनियोजित सुव्यवस्थित एवं सुव्यवस्थित क्रिया के रुप में सामने लाता है।

इस उपागम द्वारा सभी विषयों एवं उप विषयों की शिक्षा दी जा सकती है।

इससे पाठ योजना का कार्य विधिवत और सरल हो जाता हैं।

5. हरबर्ट उपागम के अनुसार पाठयोजना की रुप रेखा

हरबर्ट उपागम के अनुसार ग्रथित पाठ योजना में निम्नलिखित चरणों को सम्मिलित किया जाता हैं-

1. कक्षा विषय व उप विषय का निर्धारण
2. सामान्य उद्देश्यों का लेखन।
3. विशिष्ट उद्देश्यों का लेखन।
4. सहायक सामग्री का नियोजन।
5. पूर्व ज्ञान का अनुमान व परीक्षण
6. प्रस्तावना
7. व्यावहारिक उद्देश्य कथन।
8. प्रस्तुतिकरण।
9. श्यामपट्ट सार।
10. पुनरावृत्ति
11. गृहकार्य।

6. हरबर्ट उपागम के अवगुण- हरबर्ट उपागम के प्रमुख अवगुण निम्नलिखित हैं-

शिक्षण की क्रियाओं की सार्थकता और व्यावहारिक को ध्यान में नहीं रखा जाता।

शिक्षण क्रियाओं एवं सार्थकता और व्यावहारिकता को ध्यान में नहीं रखा जाता।

पाठ योजना कम लचीली होती हैं।

छात्रों की रुचियों एवं अभिवृत्तियों का ध्यान नहीं दिया जाता।

शिक्षण स्मृति स्तर तक सीमित रहता है।

इसमें प्रस्तुतीकरण पर अधिक बल दिया जाता हैं।

शिक्षण उद्देश्यों और अधिगम परिस्थितियों को ध्यान में नहीं रखा जाना।

पाठ योजना में शिक्षण अधिगम परिस्थितियों को ध्यान में नही रखा जाता।

5.9.2 ब्लूम उपागम

बी.एस. ब्लूम अमेरिका के शिकागों महाविद्यालय में प्रोफेसर थे उनके मतानुसार शिक्षण एक सार्थक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना हैं। इसके लिए शिक्षण से पूर्व उद्देश्य निर्धारण और अन्त में मूल्यांकन द्वारा व्यवहार परिवर्तन को सुनिश्चित और अनुभवगम्य बनाया जाना चाहिए इसके लिए ब्लूम ने तीन चरणों का निर्धारण किया हैं जिन्हें मूल्यांकन उपागम के पद कहा जाता हैं इसी के आधार पर ब्लुम उपागम को मूल्यांकन उपागम के नाम से भी जाना जाता हैं। इनका संक्षिप्त विवरण प्रकार हैं-

1. शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण- शिक्षण एक लक्ष्यबद्ध प्रक्रिया है जिसके सभी चरण उद्देश्य केन्द्रित होते हैं। यदि शिक्षण से पूर्व उद्देश्य निर्धारित न किए जाए तो शिक्षण निरर्थक हो सकता हैं। ये उद्देश्यों व्यवहारत परिवर्तनों के रुप में होते हैं। किसी पाठ्यवस्तु के शिक्षण से पूर्व ज्ञान बोध अनुभव और कौशल विकास के रुप में जिन व्यवहारगत लक्ष्यों का निर्धारण किया जाता हैं कालांश के समापन पर मूल्यांकन द्वाराउनका अधिगम सुनिश्चित किया जाता हैं।

2. अधिगम अनुभव- अधिगम अनुभव उन साधनों ,उपायों या गतिविधियों का सामूहिक नात हैं जिनकी सहायता से शिक्षण उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता हैं। अधिगम अनुभव के अन्तर्गत कक्षा में शिक्षक द्वारा संचालित वे समस्त गतिविधियों शामिल हैं जो पाठ्यवस्तु के ज्ञान बोध अनुभव आदि तत्वों को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अंश बना सके इसके लिए पाठ्यवस्तु के परिचय व्याख्या दृष्टान्त प्रश्नोत्तर और शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता हैं।

3. व्यवहारगत परिवर्तन- इस चरण में अधिगम अनुभव की प्रकिया द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार में आए परिवर्तन का मूल्यांकन किया जाता हैं इस प्रक्रिया द्वारा जाँच की जाती है कि निर्धारित शिक्षण

लक्ष्यों का किस सीमा तक अधिगम किया गया हैं। व्यवहारगत परिवर्तनों का मूल्यांकन तीन शीर्षकों के अन्तर्गत किया जाता हैं ज्ञानात्मक ,भावात्मक, और कौशलात्मक इन तीनों प्रकार के परिवर्तनों के सटीक अधिगम सुनिश्चित करने के लिए मूल्यांकन उपागम में अनेक विधियों की व्यवस्था हैं।

4. मूल्यांकन उपागम के अन्तर्गत पाठ-योजना के घटक-

1. शिक्षण बिन्दु
2. उद्देश्यों का निर्धरणा
3. शिक्षक क्रिया
4. विद्यार्थी क्रिया
5. शिक्षण विधि,प्रक्रिया एवं सामग्री
6. मूल्यांकन

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 7- हरबर्ट उपागम के अनुसार पाठ योजना की रुपरेखा की सूची बनाओ।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

5.10 पाठयोजना की कसौटी

एक अच्छी पाठ योजना की कसौटी निम्न हैं-

पाठ योजना में सामान्य एवं िवशिष्ट उद्देश्य स्पष्ट रुप से लिखे होने चाहिए।

पाठ योजना में लक्ष्यों विधियों तथा सहायक सामग्री के बारे में विस्तृत लिखना चाहिए।

यह सरल भाषा में एवं स्पष्ट रुप से लिखी होनी चाहिए।

पाठ योजना निर्माण में छात्रों की जिज्ञासा को बढ़ाने के लिए पूर्व ज्ञान पर विशेष ध्यान देना चाहिए

तथ्यों को क्रमबद्ध एवं सम्बन्धित शीर्षकों के अन्तरगम लिखना चाहिए।

श्यामपट्ट सारांश को उचित ढ़ग से लिखना चाहिए।

पाठ योजना से शिक्षक एवं छात्रों के बीच अन्तः क्रिया झलकनी चाहिए

पाठ योजना में व्यक्तिगत ध्यान का भी उल्लेख होना चाहिए।

पाठ योजना में प्रश्नोत्तरीय होना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 8- एक अच्छे पाठ योजना की कसौटी संक्षिप्त में वर्णन कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

5.11 पाठयोजना के चरण एवं क्रियाएँ

शिक्षक शिक्षा के अन्तर्गत इकाई नियोजन और पाठ योजना के महत्व को देखते हुए आजकल विभिन्न प्रशिक्षण ,विश्वविद्यार्थियों महाविद्यालयों और संस्थानों में शिक्षण नियोजन की विभिन्न विधियों अपनाई जाती हैं इस प्रक्रिया में किसी एक उपागम के अनुपात के स्थान पर व्यावहारिकता

और उपयोगिता की दृष्टि से मिश्रित विधि को प्रश्रय दिया जाता हैं। भारतवर्ष में पाठ योजना के लिए मुख्यतः हरबर्ट ब्लुम और आर.सी दृई एम.उपागमों के समन्वित रुप को अपनाया जाता है। इस विधि के अन्तर्गत पाठ्यवस्तु के शिक्षण उद्देश्यों की यथार्थ उपलब्धि के लिए जिन चरणों को सम्मिलित किया जाता चाहिए उनकी सूची इस प्रकार हैं-

1. सामान्य उद्देश्यों का लेखन।
2. विशिष्ट उद्देश्यों का लेखन।
3. पूर्व ज्ञान का अनुमान।
4. पूर्व ज्ञान परीक्षण।
5. प्रस्तावना।
6. उपविषय की घोषणा।
7. शिक्षण बिन्दुओं का निर्धारण।
8. व्यावहारिक उद्देश्यों का उल्लेख।
9. शिक्षक शिक्षा
10. विद्यार्थी-क्रिया
11. सहायक सामग्री का नियोजन।
12. श्यामपट्ट सार
13. शिक्षण बिन्दुओं का मूल्यांकन।
14. पुनरावृत्ति
15. पाठ्यवस्तु का मूल्यांकन।
16. गृहकार्य।

इन चरणों के निर्धारण से शिक्षक द्वारा कक्षा में की जाने वाली समस्त गतिविधियों प्रयोग की जाने वाली शिक्षण-प्रविधियों सहायक सामग्री और मूल्यांकन तकनीकों का विवरण अंकित किया जाता हैं। इन चरणों के अन्तर्गत शिक्षण-नियोजन क्रियाओं की प्रकृति और प्रक्रिया का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार हैं-

1. सामान्य उद्देश्यों का निर्धारण- इस चरण के अन्तर्गत पाठ्ॎयवस्तु शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों का उल्लेख किया जाता है। भाषा शिक्षण में गद्य व पद्य की अन्यान्य विधाओं के शिक्षण के पृथक उद्देश्य होते हैं। ये उद्देश्य किसी एक प्रकरण द्वारा अधिगम्य न होकर सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्राप्त किए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर गद्य शिक्षण का एक सामान्य उद्देश्य हैं-पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता। यह उद्देश्य किसी एक कक्षा या किसी प्रकरण विशेष के अध्यापन से प्राप्त नहीं किया जा सकता। फिर भी इसके उल्लेख द्वारा शिक्षक और विद्यार्थियों के सम्मुख शिक्षण की दिशा स्पष्ट की जाती हैं।

2. विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण- किसी प्रकरण विशेष के शिक्षण से प्राप्त होने वाले उद्देश्यों को विशिष्ट उद्देश्य कहा जाता हैं। ये उद्देश्य प्रकरण दर प्रकरण भिन्न होते हैं और उनकी विषय वस्तु पर आधारित होते हैं। उदाहरणः झांसी की रानी के जीवन से सम्बन्धित प्रकरण के शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य झांसी की रानी के वास्तविक नाम,माता पिता के नाम जन्म-स्थान,शिक्षा-प्रशिक्षण ,विवाह-तिथि और पति के नाम इत्यादि के विषयों की तथ्यात्मक जानकारी के रुप में हो सकते हैं।

3. अनुमानित पूर्व ज्ञान- हरबर्ट उपागम के अनुसार- अधिगत ज्ञान नए ज्ञान की अवाप्ति में सहायक होता हैं। इस सिद्धांत के अनुसार किसी नये प्रकरण के शिक्षण से पहले शिक्षक को अनुमान लगाना चाहिए कि विद्यार्थी उसे जानने समझने के लिए कितने समक्ष हैं। इसके लिए शिक्षक विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि बोध और जिज्ञासा के स्तर का अनुमान लगाता हैं। उदाहरण के लिए रानी लक्ष्मीबाई द्वारा 1857 के विद्रोह में झांसी की अगुआई करने सम्बन्धी प्रकरण को पढ़ाने से पहले शिक्षक को यह अवश्य सुनिचिशत करना चाहिए कि विद्यार्थी लक्ष्मीबाई के सैम्य प्रशिक्षण झांसी राज्य की स्थिति और विद्रोह के कारणों से परिचित हों।

4. पूर्व ज्ञान परीक्षण- शिक्षक द्वारा अनुमानित पूर्वज्ञान के विषय में सुनिचिशत होने के लिए उपयुक्त प्रश्नों के माध्यम से उसका परीक्षण किया जाता हैं। शिक्षक पाठ्यवस्तु के शिक्षण से पहले विद्यार्थियों से प्रश्न करता हैं। जिसका उद्देश्य यह जानना हैं ि क वे प्रकरण से सम्बद्ध सामान्य ज्ञान से परिचित है या नहीं इस चरण को पूर्व ज्ञान परीक्षण का नाम दिया गया हैं। यह आकलन उन्हीं शिक्षण बिन्दुओं पर केन्द्रित होता हैं। जिनका समावेश पाठ्यवस्तु में होता हैं। यदि पूर्व ज्ञान सटीक है तो पाठ्यवस्तु को उससे जोड़कर प्रस्तुत करना सरल हो जाता हैं। किन्तु यदि शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों के पक्ष में अनुमानित पूर्व ज्ञान सम्यक् या सटीक नहीं हैं तो शिक्षक को अपने प्रश्नों और शिक्षण प्रक्रिया को सरल बनाना होता है। पूर्व ज्ञान परीक्षण को मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया बनाने की दृष्टि से शिक्षक को चाहिए कि केवल तीन या चार प्रश्न पूछे जाएॅ सभी प्रश्न परस्पर सम्बद्ध हों और अन्तिम प्रश्न अपेक्षाकृत कठिन पूछा जाए जिसका उत्तर विद्यार्थी न दें पाएॅं या गलत दें ऐसा होने पर कक्षा में जिज्ञासा और उत्सकुता का मौहाल पनपेगा। इस मौहाल में पाठ्यवस्तु का परिचय देना सरल होगा। विद्यार्थियों की ग्राहयता बढ़ने के कारण प्रस्तुत विषय का अधिगम कराना सरल होगा।

5. प्रस्तावना- अनुत्तरित या अशुद्व उत्तर से सम्पन्न जिज्ञासा के मौहाल में प्रश्न का सही उत्तर प्रस्तुत करते हुए शिक्षक पाठ्य वस्तु की ओर संकेत करने का उपक्रम करता हैं । यह संकेत एक वाक्य में न होकर पाठ्यवस्तु की भूमिका के रुप में होता हैं। इस चरण में विद्यार्थी कथा प्रसंग उदाहरण घटना सूक्ति या ऐसे ही किसी उपाय द्वारा पाठ्य वस्तु की रुप रेखा से परिचित होते हैं। पाठ्यवस्तु के सामान्य विवरण,शीर्षकों और प्रमुख बिन्दंओं की जानकारी के माध्यम से विद्यार्थियों को उत्सुक और तैयार करने में सहायता मिलती है।

6. उपविषय की घोषणा- पाठ्यवस्तु की बाहरी रुप रेखा या सामान्य जानकारी प्रस्तुत करने के उपरान्त शिक्षक उसके शीर्षकों या नाम के बारे में सटीक घोषणा करता हैं। इसी के साथ पाठ के लेखक पृष्ठभूमि और अन्य ज्ञेय पक्षों का विवरण भी प्रस्तुत किया जा सकता है। उदारहण के लिए उपविषय की घोषणा करते हुए शिक्षक कह सकता हैं- इस प्रकार भारत का स्वतत्रंता आन्दोलन दो दिशाओं में गतिमान हो गया। एक तरफ धरने प्रदर्शन चुनाव और अन्य लोकतात्रिक उपायों से सरकार को प्रभावित करने के शान्तिपूर्ण प्रयास जारी थे तो दूसरी ओर बम धमाकों क्रूर तथा अन्यायी अधिकारियों पर हमले और सरकारी मशीनरी को पंगु करने जैसे उपायों से विदेशी ताकत का प्रतिरोध किया जा रहा था । इनमें से पहले पक्ष को नरमदल और दूसरे को गरमदल के नाम से जाना जाता था । गरमदल के कार्यकर्त्ताओं में भगतसिंह का नाम अग्रणी था। आज हम उनके बचपन शिक्षा विचारों कार्यो इत्यादि के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

7. शिक्षण बिन्दुओं का निर्धारण- शिक्षण बिन्दु का तात्पर्य है पाठ्यवस्तु का वह घटक जो स्वयं में परिपूर्ण हो,सार्थक व लाभप्रद हो और जिसका सम्बन्ध आगामी पाठ्य विन्दुओं से भी हो गद्य पाठों में एक अनुच्छेद या परस्पर सम्बद्ध अनुच्छेदों को एक शिक्षण बिन्दु के रुप में चिह्नित किया जा सकता हैं। पद्य खण्ड में छन्दों या भावबद्ध पंक्तियों के समूह को एक शिक्षण बिन्दु माना जा सकता है। इसी प्रकार व्याकरण के प्रकरण में परिभाषा, प्रकार भेद नियम इत्यादि को एक इकाई का रुप दिया जा सकता हैं। एक पाठ योजना में ऐसी चार से छह इकाईयों का होना साधारण बात है।

8. व्यावहारिक उद्देश्यों का निर्धारण- किसी शिक्षण बिन्दु के प्रस्तुतिकरण के परिणामस्वरुप विद्यार्थियों के व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों को सुनिचिश्चत करने के लिए व्यावहारिक उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है। प्रत्येक शिक्षण बिन्दु का शिक्षण सोद्देश्य होना चाहिए इस उद्देश्य की प्राप्ति मूल्यांकन द्वारा सुनिश्चित की जाती है। व्यावहारिक उद्देश्यों को निश्चयात्मक भाषा और कार्यपरक क्रियाओं द्वारा व्यक्त किया जाना चाहिए। उदाहरण- विद्यार्थी शहीद भगतसिंह के विचारों व कार्यो में सम्बध स्थापित करते है।

9. शिक्षक क्रियाएँ- इस स्तम्भ के अन्तर्गत पाठ्यबिन्दु के व्यावहारिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षक द्वारा किए जाने वाले प्रयासों को अंकित किया जाता हैं। इसके अन्तर्गत शिक्षक द्वारा प्रस्तुत वक्तव्यों पूछे गए प्रश्नों संचालित गतिविधियों ,प्रयुक्त शिक्षण विधियों और सामग्रियों का विवरण

अंकित किया जाता हैं। पाठ-योजना में निर्धारित समस्त शिक्षण बिन्दुओं के प्रस्तुतिकरण के दौरान यदि शिक्षक ही वक्ता नेता ,व्याख्याता और दिशा निर्धारक बना रहे तो ऐसी योजना को सन्तुलित नहीं कहा जाएगा । जिय योजना में कक्षा में उपस्थित विद्यार्थी मात्र श्रोता या दर्शक ही बने रहें, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सक्रिय सहभागी न बनें ऐसी योजना मनोवैज्ञानिक और तार्किक किसी भी दृष्टि से सम्यक् नहीं है। दूसरी ओर यदि विद्यार्थी ही किसी कक्षा के कर्त्ता -धर्त्ता बने रहें तो भी शिक्षण अधिगम सुचारुतया नहीं चल सकता अतः जिस कक्षा में पाठ्य बिन्दु शिक्षण के व्यावहारिक उद्देश्यों के अधिगम की दिशा में,शिक्षक और विद्यार्थियों द्वारा सहायक उपकरणों के माध्यम से समन्वित प्रयास किया जाए ,उसे उत्तम और सन्तुलित शिक्षण कहा जा सकता है।

10. विद्यार्थी क्रियाएँ- शिक्षक कक्षा में होने वाली समस्त गतिविधियों का उत्प्रेरक होता हैं। इसके परिणामस्वरुप विद्यार्थी भी प्रश्नों के उत्तर देने,उदाहरण बतानें क्रियाएं व प्रयोग करने और विचार तथा प्रतिक्रिया प्रस्तुति जैसी गतिविधियों करते है। ये गतिविधियाँ प्रायः शिक्षक क्रियाओं के परिणामस्वरुप होती है। विद्यार्थी क्रिया के स्तम्भ में ऐसी सम्मावित क्रियाओं का उल्लेख किया जाता हैं। जिस कक्षा के विद्यार्थी अधिक सक्रिय और मुखर होते हैं और अध्यापक द्वारा उन्हें अधितकम अन्तर्क्रिया का अवसर प्राप्त होता हैं। उसका अधिगम स्तर बेहतर होता हैं। ऐसी कक्षा को जीवन्त और सफल कहा जा सकता है।

11. सहायक सामग्री का नियोजन- विभिन्न शिक्षण बिन्दुओं के व्यावहारिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षण के दौरान शिक्षक और विद्यार्थियों के द्वारा जिन उपकरणों का प्रयोग किया जाता हैं उनका विवरण इस स्तम्भ के अन्तर्गत किया जाता हैं। श्यामपट्ट चॉक और डस्टर जैसे उपकरणों का प्रयोग आमतौर पर प्रत्येक कक्षा में होता हैं। इसलिए इन्हें सामान्य कक्षापयोगी उपकरण कहा जाता हैं और प्रत्येक चरण में इनका नामतः उल्लेख अनिवार्य नही माना जाता हैं। कक्षा में शिक्षण अधिगम से सम्बद्ध गतिविधियों के दौरान जिन सहायक उपकरणों-चार्ट ,चित्र,मानचित्र,मॉडल इत्यादि का प्रयोग किया जाता हैं, उनके संक्षिप्त प्रतिरुप को निर्धारित स्तम्भ में उपयुक्त शिक्षण बिन्दु के सम्मुख प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

12. श्यामपट्ट सार- शिक्षण कार्य के दौरान वर्तनी बताने उत्तर लिखने शब्दार्थ स्पष्ट करने अशुद्धि संशोधन और अन्य उद्देश्यों के लिए श्यामपट्ट का प्रयोग किया जाता हैं। शिक्षण योजना का प्रारुप तैयार करते हुए शिक्षक को तय कर लेना चाहिए कि श्यामपट्ट का प्रयोग कब किस उद्देश्य के लिए किस प्रकार और कितनी बार किया जाएगा। इस योजनानुसार श्यामपट्ट के लिए निर्धारित कार्य को काले चार्ट पर चाँदी के रंग वाले पैन या पेन्सिल से श्यामपट्ट कार्य के स्तम्भ में अंकित किया जाए। श्यामपट्ट पर लिखे जाने वाले सामान्य निर्देशों व संकेतों जैसे - कक्षा विभाग,कालांश विषय प्रकरणादि को श्यामपट्ट कार्य के स्तम्भ में प्रदर्शित नहीं किया जाता।

13. शिक्षण-बिन्दुओं का मूल्यांकन- प्रत्येक शिक्षण बिन्दु के प्रस्तुतिकरण के उपरान्त उसके लिए निर्धारित व्यावहारिक उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए मूल्यांकन का प्रावधान किया जाता हैं। मूल्यांकन का परिणाम सा्िरात्मक होने पर ही अग्रिम बिन्दु का शिक्षण प्रारम्भ किया जाना चाहिए अन्यथा निदानात्मक और चिकित्यकीय शिक्षण का प्रावधान किया जाना चाहिए । सरल सटीक और स्पष्ट परिणामदायी होने के कारण शिक्षण बिन्दु के मूल्यांकन के लिए प्रश्नोत्तर विधि सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती हैं।

14. पुनरावृत्ति- समस्त शिक्षण बिन्दुओं की प्रस्तुति और मूल्यांकन के उपरान्त उनके प्रमुख तत्वों का पुनरावलोकन या दोहराव किया जाता हैं। इसका उद्देश्य पाठ्यवस्तु को एक सम्पूर्ण इकाई के रुप में प्रस्तुत करना और स्मृति व बोध की दृष्टि से सरल बनाना हैं। यह कार्य सदा शिक्षक की ओर से न होकर समय विषय और सरलता को देखते हुए विद्यार्थियों की सहायता से भी किया जा सकता है।

15. पाठ्यवस्तु का मूल्यांकन- पाठ-योजना के द्वितीय चरण के अन्तर्गत जिन विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण किया गया था । उनकी प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए सम्पूर्ण पाठ्य -वस्तु के मूल्यांकन की व्यवस्था की जानी चाहिए । यह मूल्यांकन स्वच्छन्द न होकर विशिष्ट उद्देश्यों के अनुसार होना चाहिए । इस मूल्यांकन का परिणाम यदि सकारात्मक हो तो शिक्षण को सफल और सार्थक कहा जा सकता है।

16 गृहकार्य- पाठ्यवस्तु को विद्यार्थियों के लिए स्मृतिगम्य और चिरस्थायी बनाने के लिए उसके अभ्यास और आवृति की आवश्यकता होती हैं। विद्यार्थियों को गम्भीर और उत्तरदायी बनाने और पाठ्यवस्तु के अन्याय पहलुओं की खोज का अवसर देने के लिए भी आवृति व अभ्यास उपयोगी क्रियाएँहैं। इन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को गृहकार्य दिया जाना चाहिए । गृहकार्य पाठ्यवस्तु से सम्बद्ध उपयोगी और रचनात्मक होना चाहिए । उसकी मात्रा भी सीमित व सन्तुलित चाहिए । यदि सम्भव हो तो कक्षा के समस्त विद्यार्थियों को एक समान गृहकार्य देने की अपेक्षा उन्हें कुछ वर्गो या समूहों में विभक्त कर अलग अलग गृहकार्य भी दिया जा सकता है। गृहकार्य विद्यार्थियों के लिए दण्ड स्वरुप न होकर उपयोगी और सोद्देश्य हो तो विशिष्ट व व्यावहारिक उद्देश्यों की प्राप्ति के फलस्वरुप उत्पन्न व्यवहार परिवर्तन को स्थायित्व प्रदान किया जा सकता हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 9- पाठ योजना के चरणों की सूची बनाओं।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

5.12 पाठ योजना के उपयोग

पाठ योजना बनाना अत्यन्त उपयोगी हैं। बिना योजना के कक्षा में जाना ठीक उसी प्रकार हैं।जैसे किसी सेनापति का बिना यह रचना के रणक्षेत्र में जाना।

विद्यार्थियों को जानना और उन्हें कक्षा में सहज वातावरण उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण हैं पाठ योजना के उपयोग के उपयोग द्वारा योजना बनाना आवश्यक है,विद्यार्थी वह सब ग्रहण करने को तैयार नहीं होते जो आप पढ़ते हैं। उनमें रुचि पैदा करना जरुरी है,उनका ध्यान आकर्षित किया जाय। उनमें पुर्वज्ञान का अनुमान लगाये। पाठ योजना का प्रारम्भ ऐसी वस्तुओं तस्वीरों से कर सकते है। जो उन्हें विषय पर सोपने और उनके बारे में बात करने की और ले जाये।

5.13 पाठ योजना संबंन्धित ध्यान देने योग्य बातें

अध्यापक को पाठ योजना बनाने से पहले निम्नलिखित बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान देना चाहिए-

पाठयोजना को मार्गदर्शक समझना चाहिए इसमें इसका अक्षरशः पालन नहीं करना चाहिए।

शिक्षक को विद्यार्थियों को रुचि प्रकृति एवं मानसिक क्षमताओं का ध्यान रखते हुए पाठ योजना का निर्माण करना चाहिए।

शिक्षक को विषय सम्बन्धी सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों का ज्ञान होना चाहिए।

शिक्षकों को छात्रों के पूर्व ज्ञान के बारे में पूर्णरुप से जानकारी होनी चाहिए।

पाठयोजना का ज्यों ज्यों अनुकरण नहीं करना चाहिए अपनी दक्षतानुसार प्रस्तुत समस्याओं का त्वरित निराकरण करना चाहिए।

पाठयोजना निर्माण के समय शिक्षक को उचित विधियों का ज्ञान अवश्य होना चाहिए।

गद्य-पद्य रचना, कहानी निबन्ध नाटक तथा पत्र व्याकरण की पाठयोजनाएँ अलग अलग होती हैं। विषय अथवा पाठ के अनुरुप सामग्री योजना को आयोजित किया जाना चाहिए।

सहायक उपकरण सामान्य तथा विशिष्ट दोनों ही स्पष्ट रुप से अंकित होने चाहिए।

विचार विश्लेषणात्मक ,बोधात्मक,पुनरावृत्यात्मक आदि प्रश्नों का वर्गीकरण विविधत् किया जाना चाहिए।

पाठयोजना में विद्यार्थियों के आर्थिक ज्ञान शिक्षण में किस प्रकार सहयोगी हो सकते हैं। इसका ध्यान देना चाहिए।

पाठयोजना में विद्यार्थियों का अधिगम विकास महत्वपूर्ण होना चाहिए।

पाठयोजना में सहयोगी ग्रन्थों का उल्लेख भी आवश्यकता के अनुसार किया जाता चाहिए।

पाठयोजना में प्रत्येक खण्ड के लिए समय निश्चित किया जाना चाहिए।

पाठयोजना में विषय के पूर्ण विकास की संभावना होनी चाहिए।

पाठयोजना में कक्षा कार्य तथा अभ्यास कार्य की विधिवत् व्यवस्था की जानी चाहिए।

विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान एवं नवीन ज्ञान में परस्पर सम्बन्ध होना चाहिए।

पाठयोजना में पाठ की पूरी रुपरेखा होनी चाहिए।

पाठयोजना लिखित तथा व्यावस्थित होनी चाहिए।

पाठयोजना में व्याख्या का स्वरुप व्यवस्थित होना चाहिए।

पाठयोजना में प्रस्तावना प्रभावशाली तथा पूर्व ज्ञान पर आधारित होनी चाहिए।

पाठयोजना में समय तथा उपकरण का प्रयोग किया जाना चाहिए।

पाठयोजना की विधियाँ विधिवत् व्यवस्थित तथा मनोवैज्ञानिक होनी चाहिए।

पाठयोजना के उद्देश्यों को वर्गीकरण करके बिल्कुल स्पष्ट किया जाना चाहिए।

पाठयोजना में विषय को संगठन की दृष्टि से सुदृढ़ रखना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 10- पाठयोजना बनाते समय ध्यान देने योग्य बातों का वर्णन कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

5.14 पाठयोजना के लाभ

यह शिक्षक को उद्देश्य प्राप्ति हेतु वांछित परिवर्तन प्राप्त करने में सहायक हैं।

यह शिक्षक को क्या ?और कैसे ?पढ़ाये का उत्तर करने में सहायक है।

यह छात्रों में पाठ के प्रति रुचि उत्पन्न करने में सहायक हैं।

शिक्षक के स्वयं के शिक्षण कार्य के मूल्यांकन में सहायक हैं।

यह शिक्षक के शिक्षण के लिए उचित विधि तथा तकनीकि के चयन में सहायक है।

ठससे विषय वस्तु का संगठन क्रमित होता हैं।

यह शिक्षक तथा छात्र दोनों में उचित दृष्टिकोण उत्पन्न करने में सहायक हैं।

यह शिक्षक में आत्मविश्वास उत्पन्न करता हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 11- पाठ योजना के लाभ लिखिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

5.15 पाठयोजना की सीमाऐं

इससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक कठिन हो जाती हैं।

शिक्षक स्वतंत्रतापूर्वक कार्य नहीं कर पाता हैं।

कभी कभी आसान तथ्य भी कठिन प्रतीत होने लगते हैं।

शिक्षण के समय नया वातावरण उत्पन्न होने पर शिक्षक असहाय महसूस करने लगता है।

पाठयोजना में परिस्थिति के अनुसार अनुकूलन नहीं किया जा सकता है।

पाठयोजना बनाने में एक बिन्दुओं पर अधिक समय लगने से समय की बर्बादी होती हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 12- पाठयोजना की सीमाओं पर प्रकाश डालिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

5.16 पाठ योजना का प्रारुप

पाठ योजना लिखने के कई प्रारुप हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों में अलग अलग प्रारुपों का उपयोग किया जाता हैं। छात्राध्यापक अपने तथा विषय वस्तु को सुविधानुसार किसी भी प्रारुप का अनुसरण कर सकते है।

प्रथम प्रारुप

पाठ योजना संख्या

दिनांक...................... विषय...................................... कक्षा...

विद्यालय... उप विषय................. कालाश..

प्रकरण... अवधि..

सामान्य उद्देश्य.. ....

विशिष्ट उद्देश्य ....

सहायक सामग्री.. ....

शिक्षण विधि.. ....

पूर्वज्ञान... ....

प्रस्तावना...

उद्देश्य
कथन..

प्रस्तुतीकरण

अधिगम बिन्दु	अपेक्षित अधिगम परिणाम	अधिगम अनुभव		वास्तविक अधिगम परिणाम	श्यामपट्ट कार्य
		शिक्षक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ		

मूल्यांकन...

गृहकार्य...

द्वितीय प्रारुप

पाठ योजना संख्या

दिनांक........................ विषय.....................................
कक्षा..

विद्यालय.. उप विषय.................
कालाश..

प्रकरण.. अवधि..

सामान्य
उद्देश्य..
....

विशिष्ट उद्देश्य
....
..

सहायक
सामग्री...
....

शिक्षण
विधि...
....

पूर्वज्ञान...
....

प्रस्तावना...
....

उद्देश्य

कथन...
....

प्रस्तुतीकरण

अधिगम बिन्दु	अधिगम अनुभव		श्यामपट्ट कार्य
	शिक्षक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ	

मूल्यांकन...
....

गृहकार्य..
....

तृतीय प्रारुप

पाठ योजना संख्या

दिनांक............................. विषय.......................................
कक्षा..................................विद्यालय..............................उप
विषय..................................कालाश...............................

प्रकरण... अवधि...

सामान्य उद्देश्य...

विशिष्ट उद्देश्य...

सहायक सामग्री...

शिक्षण विधि...

पूर्वज्ञान...

प्रस्तावना...

छात्राध्यापक प्रश्न	सम्भावित छात्र उत्तर

उद्देश्य कथन...

प्रस्ततीकरण...

शिक्षण बिन्दु	छात्राध्यापक क्रियाएँ	छात्र क्रियाएँ

श्यामपट्ट

सारांश...
....

मूल्यांकन..
....

गृहकार्य..
....

भाषा शिक्षण हेतु पाठ योजना

विद्यालय-

दिनांक

कक्षा- 6 ब

अवधि- 30 मिनट

विषय - हिन्दी

प्रकरण- संज्ञा

विधि- आगमन -निगमन

आगमन विधि- छात्राध्यापक सर्वप्रथम कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं उसके गुणों के सम्बन्ध में छात्र बताता है उदाहरणों की व्याख्या के आधार पर विषय या सिद्धांन्त निकलवाये जाते हैं-

1. ज्ञात से अज्ञात की ओर

2. विशिष्ट से सामान्य की ओर

3. स्थूल से सूक्ष्म की ओर

निगमन विधि- निगमन विधि में छात्राध्यापक सर्वप्रथम निगम या सिद्धांन्त छात्रों के सामने सर्वप्रथम प्रस्तुत करते है और उसकी पुष्टि के लिए विभिन्न उदाहरण प्रस्तुत करते हैं इसमें-

1.सामान्य से विशिष्ट की ओर

2. सूक्ष्म से स्थूल की ओर

सामान्य उद्देश्य-

छात्रों को वर्णो ,शब्दों और वाक्यों के शुद्ध और सही रुप की जानकारी देना ताकि भाषा को विकृति से बचाया जा सके।

भाषा में नियमितता और स्वामित्व ताकर उसके सर्वमान्य रुप को सुरक्षित रखना।

छात्रों में शुद्ध अभिव्यक्ति और सृजनात्मक का विकास करना।

छात्रों में भाषा के गुण को परखने की क्षमता का विकास करना जिससे वे साहित्य की समालोचना कर सकें और साहित्य कर विकास करने में अपना योगदान दे सके।

व्याकरण के व्यावहारिक पद्य पर सैद्धान्दिक पक्ष में अधिक बल देना जिससे व्याकरण का शिक्षण नीरस न हो।

छात्रों में ध्वनि विचार शुद्ध एवं अर्थ विचार एवं वाक्य विचार का ज्ञान कराना।

विशिष्ट उद्देश्य-

व्याकरण के अंश पढ़ने के पश्चात् छात्र संज्ञा की परिभाषा से अवगत हो सकेगें।

विभिन्न वाक्यों से संज्ञा छाँट सकेगे।

संज्ञा की परिभाषा अपने शब्दों में लिख सकेंगे।

सहायक सामग्री- कक्षोपयोगी उपकरण लपेट श्यामपट्ट पर लिखी प्रस्तावना पाठोस्थापना तथा अभ्यास कार्य के वाक्य।

पूर्वज्ञान- छात्र संज्ञा के विषय में सामान्य जानकारी रखते हैं।

प्रस्तावना- 1. राम आम खाता हैं।

प्रश्न- प्रथम वाक्य में गम क्या हो?

2. श्याम पर जाता हैं?

प्रश्न- द्वितीय वाक्य में श्याम क्या हैं?

3. गीता घर जा रही है।

प्रश्न- तृतीय वाक्य में गीता क्या हैं?

4. सोनी पढ़ रही हैं।

प्रश्न- चतुर्थ वाक्य में सोनी क्या हैं

5. वाराणसी दर्शननीय स्थल हैं।

प्रश्न- पंचम वाक्य में वाराणसी क्या हैं?

उद्देश्य कथन- आज हम लोग संज्ञा के विषय में अध्ययन करेंगे।

पाठोस्थापना- 1. सोहन घर जायेगा।

प्रश्न- प्रथम वाक्य में सोहन क्या हैं?

2. रमेश पढ़ता हैं।

प्रश्न- द्वितीय वाक्य में रमेश क्या है ?

3. संदीप पढ़ता हैं।

प्रश्न- तृतीय वाक्य में संदीप क्या हैं

4. गौतम पर जाता हैं।

प्रश्न- चतुर्थ वाक्य में गौतम क्या हैं?

5. सुधीर सुन्दर हैं।

प्रश्न- पंचम वाक्य में सुधीर क्या है?

6. इलाहाबाद एक शहर हैं।

प्रश्न- पष्ठम वाक्य में इलाहाबाद क्या हैं?

7. सुरेश स्नान नहीं करेगा

प्रश्न- सप्तम वाक्य में सुरेश क्या हैं।

8. राजेश फल खा रहा हैं।

प्रश्न- अष्टम् वाक्य में राजेश क्या हैं?

9. प्रदीप सो रहा हैं।

प्रश्न- नवम् वाक्य में प्रदीप क्या हैं?

10. घोड़ा दौड़ रहा हैं।

प्रश्न- दशम् वाक्य में घोड़ा क्या हैं ?

सिद्धांन्त निरुपण- छात्राध्यापक छात्रों की सहायता से सिद्धांन्त निरुपण करेंगे।

परिभाषा- किसी प्राणी, वस्तु गुण भाव या स्थिति ,सामान आदि के नाम को संज्ञा कहते है। जैसे - घोड़ा ,वाराणसी,स्त्री, कुर्सी ,बचपन, कंजूसी आदि।

अभ्यास कार्य- 1. गीता अच्छा गाती हैं।

2. श्याम पढ़ता हैं।

3. रमेश खाना खायेगा।

4. इलाहाबाद में संगम हैं।

5. गाय एक पालूत जानवर हैं।

निरीक्षण कार्य- छात्राध्यापक कक्षा में घूम घूम कर निरीक्षण करेंगें

1. गीता अच्छा गाती हैं।

प्रश्न- प्रथम प्रश्न में गीता क्या है?

2. श्याम पढ़ता है।

प्रश्न- द्वितीय प्रश्न में श्याम क्या हैं।

3. रमेश खाना खायेगा।

प्रश्न- तृतीय प्रश्न में रमेश क्या हैं?

4. इलाहाबाद में संगम हैं।

प्रश्न- चतुर्थ प्रश्न में इलाहाबाद क्या है?

5. गाय एक पालूत जानवर हैं।

प्रश्न- पंचम प्रश्न में गाय क्या हैं?

गृहकार्य- 1. संज्ञा की परिभाषा याद करके आना हैं।

2. संज्ञा के कुछ उदाहरण लिखकर लाना हैं।

5.17 सारांश

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते है कि पाठ योजना पाठ के उन मुख्य बिन्दुओं की रुपरेखा होती हैं जिन्हें अध्यापक को निर्धारित अनुदेशनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये विशिष्ट कालांश में पढ़ाना होता हैं। इसमें स्पष्ट रुप से बताया जाता है कि पहले क्या किया जा चुका हैं,अर्थात पाठ योजना की पूर्व योजना तैयारी करना, अब विद्यार्थियों ने क्या करना हैं। अर्थात विद्यार्थी की क्रिया का संभावित अनुमान किन क्रियाओं का संचालन करना हैं और विद्यार्थियों को उन क्रियाओं में किस प्रकार व्यक्त रखना हैं। इसमें पाठ के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों तथा अध्यापक द्वारा प्रयोग की जाने वाली विधियों एवं प्रविधियों का स्पष्ट उल्लेख होता हैं। इसमें कक्षा में की जाने वाली क्रियाओं का भी उल्लेख होता हैं। वास्तव में , पाठ योजना शिक्षक के कक्षीय अनुभवों का मानसिक चित्र हैं जिसे वह लिखित रुप में व्यक्त करता हैं। यह प्रभावशाली शिक्षक का दृश्य हैं।

5.18 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1-पाठ योजना शिक्षण प्रक्रिया की व्यवस्था का व्यावहारिक रुप होती हैं। यह शिक्षण की व्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अध्यापक के कक्षा में प्रवेश करने से पहले पाठ योजना का निर्माण कर लिया जाता हैं। पाठ योजना में अध्यापक अपनी समस्त शिक्षण क्रियाओं का एक ािचा तैयार करता हैं। जिससे शिक्षण कार्य को निश्चित दिशा मिल सके । अध्यापक अनुदेशात्मक उद्देश्यों को अर्जित करने के लिए जो क्रियाए कक्षा में करेगा,उन्हें एक विशेष ,नियोजित ढ़ग से लिखना ही पाठ योजना कहलाता हैं।

उत्तर 2- पाठ योजना की निम्नलिखित विशेषताओं का वर्णन किया गया हैं-

1. पाठ योजना भली भांति नियोजित हो- एक अच्छी पाठ योजना अच्छी तरह से नियोजित होती हैं,जिसमें विशिष्ट विषय के उपविषय या इकाई शिक्षण के उद्देश्यों के प्रातः करने के लिए विशिष्ट सामग्री का विवरण सशिक्षण विभिन्न प्रविधियों एवं युक्तियों अच्छी तरह से सोच कर चुनी होती हैं। कोई शिक्षक प्रतिदिन एक ही विधि का चयन नहीं कर सकता।

2. पाठ योजना के क्रियान्वयन में विचलन नहीं- अच्छी पाठ योजना की एक विशेषता यह भी होती हैं। कि शिक्षक पाठ योजना के अनुसार ही चले। नियोजित पाठ योजना लागू करते समय वास्तविक पाठ योजना विचलित नहीं होना चाहिए अच्छी पाठ योजना के क्रियान्वयन से विचलित नहीं होने देती।

3. अच्छी पाठ योजना कक्षा- एक अच्छी पाठ योजना इन बातों का पहले ही संकेत दे देती हैं कि कक्षा में क्या कुछ होने वाला हैं जैसे -किस पक्ष पर प्रश्न पूछे जाने हैं ब्लैक बोर्ड पर स्कैच कब बनाया जायेगा। शिक्षक किस समय एवं कैसे कथन करेगा सहायक सामग्री का प्रयोग किस समय एवं किस प्रकार किया जायेगा और पाठ के विकास के लिए विद्यार्थियों की सहभागिता किस स्तर पर ली जाएगी

4. अच्छी पाठ योजना सहायक सामग्री की आवश्यकता की संकेतक हैं- एक अच्छी पाठ योजना हमें यह भी स्पष्ट संकेत देती हैं कि कक्षा में शिक्षण कार्य के लिए कौन कौन सी सहायक सामग्री तथा शाब्दिक सामग्री की आवश्यकता हैं।

5. विद्यार्थियों की निरन्तर रुचि बनाये रखना- एक अच्छी पाठ-योजना पूरी शिक्षण प्रक्रिया में विभिन्न विधियों और प्रविधियों का प्रयोग आवश्यक है जिनमें विद्यार्थी सक्रियता से भाग लें।

उत्तर 3- पाठ योजना की आवश्यकताओं के संबंन्ध में निम्नलिखित बिन्दु हैं-

पाठयांजना शिक्षक के कार्यो को स्पष्ट दिशा निर्देश देता हैं।

पाठयांजना के द्वारा पाठ वस्तु का अच्छी तरह संगठन होता हैं।

पाठयांजना शिक्षक के कार्य को सुसंगठित कर देता हैं।

इससे छात्रों को उनके स्तर के अनुसार गृह कार्य देने में सहायता मिलती है।

पाठयांजना से शिक्षण कार्य में क्रमबद्धता उत्पन्न होती है।

पाठयांजना कक्षा में उचित वातावरण बनाने के लिए लाभ दायक है।

पाठयांजना के विकास से शिक्षण कार्य में उत्पन्न होने वाले कठिनाईयों का अनुमान लग जाता है।

पाठयांजना के निर्माण से शिक्षण कार्य में उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों का अनुमान लग जाता है।

उत्तर 4- पाठ योजना के लक्ष्यों को निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत जाना जा सकता है।

1.शिक्षण अधिगम लक्ष्यों का निर्धारण- किसी भी पाठ योजना का प्रभाव चरण पाठ्य वस्तु शिक्षण के साधारण ,विशिष्ट एवं व्यवहारगत लक्ष्यों का निर्धारण होता है।साधारण लक्ष्य व्यापक होते है जबकि विशिष्ट लक्ष्यों का अधिगम किसी एक पाठ्यवस्तु के अध्ययन के समापन पर सुनिश्चित किया जा सकता है।

2.शिक्षण बिन्दुओं का विभाजन- किसी कलांश के लिए निश्चित पाठ्य वस्तु को कभी भी एक इकाई के रुप में एक साथ नहीं पढ़ाया जाता अपितु प्रथक पदों अनुच्छदों या चरणों में विभाजित करके प्रस्तुत किया जाता है।

3. संसाधनों का सदुपयोग- पाठ्यवस्तु शिक्षण बिन्दु शिक्षण प्रविधि और लक्ष्यों के पूर्व निर्धारित होने के कारण शिक्षक और विद्यार्थियों को सार्थक अन्तक्रिया तार्किक क्रम और सन्तुलित गति बनाये रखने में मदद मिलती है।

4. उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करना- पाठयोजना के आरम्भ में जिन लक्ष्यों का निर्धारण किया जाता है। कालाशं के दौरान शिक्षक शिक्षार्थी के माध्यम से उनके अधिगम का प्रयास किया जाता है। उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक शिक्षण बिन्दू का मूल्यांकन होता है।

उत्तर 5-पाठ योजना के उद्देश्य,प्रक्रिया तत्वों और प्रविधियों से परिचित हो तो उत्तम व्यवहार्थ और फलप्रद पाठ योजना का निर्माण कर सकता है।

1. पाठवस्तु- पाठयोजना का निर्माण पाठ्य वस्तु पर निर्धारित होता हैं। पाठ्य वस्तु की प्रकृति और विधा को भली प्रकार समझे बिना विद्यार्थियों तक उसके ज्ञान,बोध,प्रयोग आदि पक्षों का अत्तरण सम्भव नहीं हैं। पाठ्य वस्तु के ज्ञान का तात्पर्य केवल उसके शाब्दिक पक्ष का परिचय न होकर उसमें चिहिन्त क्रियात्मक और व्यवहारिक पक्षों के ज्ञान से भी है।

2. शिक्षण लक्ष्य- पाठ्यवस्तु से भली प्रकार परचित होने पर शिक्षक उसके शिक्षण -उद्देश्यों का आकलन कर सकता है। शिक्षण लक्ष्यों के आकलन हेतु अनेक प्रणालियों और विधियां प्रचलित हैं। इनमें से कुछ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ज्यादा उपयोगी और व्यवहार्य और व्यवहार्थ है।

3. शिक्षण विधियाँ- भाषा शिक्षण के विविध पक्षों (गद्य,पद्य व व्याकरण)और विधाओं (पद्य के छन्दों व गद्य की विधियों) के शिक्षण के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यवस्तु के सफल शिक्षण की दृष्टि से कब किसी विधि का प्रयोग उपयोगी और फलप्रद होगा ,यह निर्णय बहुत महत्वपूर्ण हैं यह निर्णय पाठ्यवस्तु और शिक्षण लक्ष्यों के साथ साथ विद्याथियों की श्रेणी और स्तर पर भी निर्भर होता हैं।

4. विद्यार्थी- पाठ्यक्रम शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया शिक्षण उपकरण और प्रविधि इन सबका एक मात्र लक्ष्य विद्यार्थियों में अनुभवजन्य और स्थायी परिवर्तन लाना हैं। इस प्रकार विद्यार्थी सम्पूर्ण शिक्षण गतिविधियों व संसाधनों का केन्द्रीय तत्व हैं। समस्त शिक्षण गतिविधियों संसाधन और प्रणालियों उन्हीं को लक्ष्य करके निर्धारित और सृजित होती है।

5. संसाधन- शिक्षण को निर्धारित लक्ष्य तक पहँुचाने में शिक्षण उपकरणों -जेैसे पुस्तक अभ्यास पुस्तिका लेखन,सामग्री,श्यामपट्ट और विद्यार्थियों की जिज्ञास ,समय, इच्छा रुचि,व शिक्षक की योग्यता क्षमता ज्ञान जैसे-अनुभवगम्य संसाधनों का बहुमूल्य योगदान है। पाठ-योजना बनाते हुए इनके आकलन व उपयोग विधियों का परिचय उपयोगी होता है।

उत्तर 7- हरबर्ट उपागम के अनुसार ग्रथित पाठ योजना में निम्नलिखित चरणों को सम्मिलित किया जाता हैं-

1. कक्षा विषय व उप विषय का निर्धारण
2. सामान्य उद्देश्यों का लेखन।
3. विशिष्ट उद्देश्यों का लेखन।
4. सहायक सामग्री का नियोजन।
5. पूर्व ज्ञान का अनुमान व परीक्षण
6. प्रस्तावना
7. व्यावहारिक उद्देश्य कथन।
8. प्रस्तुतिकरण।
9. श्यामपट्ट सार।

10. पुनरावृत्ति

11. गृहकार्य।

उत्तर 8- एक अच्छी पाठ योजना की कसौटी निम्न हैं-

पाठ योजना में सामान्य एवं ि‍वशिष्ट उद्देश्य स्पष्ट रुप से लिखे होने चाहिए।

पाठ योजना में लक्ष्यों विधियों तथा सहायक सामग्री के बारे में विस्तृत लिखना चाहिए।

यह सरल भाषा में एवं स्पष्ट रुप से लिखी होनी चाहिए।

पाठ योजना निर्माण में छात्रों की जिज्ञासा को बढ़ाने के लिए पूर्व ज्ञान पर विशेष ध्यान देना चाहिए

तथ्यों को क्रमबद्ध एवं सम्बन्धित शीर्षकों के अन्तरगम लिखना चाहिए।

श्यामपट्ट सारांश को उचित ढ़ग से लिखना चाहिए।

पाठ योजना से शिक्षक एवं छात्रों के बीच अन्तः क्रिया झलकनी चाहिए

पाठ योजना में व्यक्तिगत ध्यान का भी उल्लेख होना चाहिए।

उत्तर 9- पाठ्यवस्तु के शिक्षण उद्देश्यों की यथार्थ उपलब्धि के लिए जिन चरणों को सम्मिलित किया जाता चाहिए उनकी सूची इस प्रकार हैं-

1. सामान्य उद्देश्यों का लेखन।
2. विशिष्ट उद्देश्यों का लेखन।
3. पूर्व ज्ञान का अनुमान।
4. पूर्व ज्ञान परीक्षण।
5. प्रस्तावना।
6. उपविषय की घोषणा।
7. शिक्षण बिन्दुओं का निर्धारण।

8. व्यावहारिक उद्देश्यों का उल्लेख।

9. शिक्षक शिक्षा

10. विद्यार्थी-क्रिया

11. सहायक सामग्री का नियोजन।

12. श्यामपट्ट सार

13. शिक्षण बिन्दुओं का मूल्यांकन।

14. पुनरावृत्ति

15. पाठ्यवस्तु का मूल्यांकन।

16. गृहकार्य।

उत्तर 10- अध्यापक को पाठ योजना बनाने से पहले निम्नलिखित बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान देना चाहिए-

पाठयोजना को मार्गदर्शक समझना चाहिए इसमें इसका पालन नहीं करना चाहिए।

शिक्षक को विद्यार्थियों को रुचि प्रकृति एवं मानसिक क्षमताओं का ध्यान रखते हुए पाठ योजना का निर्माण करना चाहिए।

शिक्षक को विषय सम्बन्धी सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों का ज्ञान होना चाहिए।

शिक्षकों को छात्रों के पूर्व ज्ञान के बारे में पूर्णरुप से जानकारी होनी चाहिए।

पाठयोजना का ज्यों ज्यों अनुकरण नहीं करना चाहिए अपनी दक्षतानुसार प्रस्तुत समस्याओं का त्वरित निराकरण करना चाहिए।

पाठयोजना निर्माण के समय शिक्षक को उचित विधियों का ज्ञान अवश्य होना चाहिए।

गद्य-पद्य रचना, कहानी निबन्ध नाटक तथा पत्र व्याकरण की पाठयोजनाएँ अलग अलग होती हैं। विषय अथवा पाठ के अनुरुप सामग्री योजना को आयोजित किया जाना चाहिए।

सहायक उपकरण सामान्य तथा विशिष्ट दोनों ही स्पष्ट रुप से अंकित होने चाहिए।

विचार विश्लेषणात्मक ,बोधात्मक,पुनरावृत्यात्मक आदि प्रश्नों का वर्गीकरण विविधत् किया जाना चाहिए।

उत्तर 11- पाठ योजना के लाभ

यह शिक्षक को उद्देश्य प्राप्ति हेतु वांछित परिवर्तन प्राप्त करने में सहायक हैं।

यह शिक्षक को क्या ?और कैसे ?पढ़ाये का उत्तर करने में सहायक है।

यह छात्रों में पाठ के प्रति रुचि उत्पन्न करने में सहायक हैं।

शिक्षक के स्वयं के शिक्षण कार्य के मूल्यांकन में सहायक हैं।

यह शिक्षक के शिक्षण के लिए उचित विधि तथा तकनीकि के चयन में सहायक है।

ठससे विषय वस्तु का संगठन क्रमित होता हैं।

यह शिक्षक तथा छात्र दोनों में उचित दृष्टिकोण उत्पन्न करने में सहायक हैं।

यह शिक्षक में आत्मविश्वास उत्पन्न करता हैं।

उत्तर 12- पाठयोजना की सीमाएं

इससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक कठिन हो जाती हैं।

शिक्षक स्वतंत्रतापूर्वक कार्य नहीं कर पाता हैं।

कभी कभी आसान तथ्य भी कठिन प्रतीत होने लगते हैं।

शिक्षण के समय नया वातावरण उत्पन्न होने पर शिक्षक असहाय महसूस करने लगता है।

पाठयोजना में परिस्थिति के अनुसार अनुकूलन नहीं किया जा सकता है।

पाठयोजना बनाने में एक बिन्दुओं पर अधिक समय लगने से समय की बर्बादी होती हैं।

5.19 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1- पाठ-योजना का क्या तात्पर्य हैं? इसकी आवश्यकता ओर उपयोगति का विवेचन कीजिए।

प्रश्न 2-पाठ-योजना का लक्ष्यों और तत्वों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

प्रश्न 3- पाठ-योजना के चरणों का परिचय और महत्व लिखिए।

प्रश्न 4-. हरबर्ट द्वारा उपस्थिति शिक्षण प्रक्रिया के सिद्धांतों और चरणों का उल्लेख कीजिए।

प्रश्न 5- ब्लूम के त्रिपदीय मूल्यांकन उपागम का परिचय दीजिए।

प्रश्न 6- हरबर्ट द्वारा प्रतिपादित शिक्षण पदों के आधार पर शिक्षण नियोजन के पाँच पदों का परिचय दीजिए।

इकाई 6- हिन्दी शिक्षण के ज्ञानात्मक बोधात्मक कौशलात्मक और रुचिगत उद्देश्यों का निर्धारण

इकाई की रुप रेखा

6.1 प्रस्तावना
6.2 उददेश्य
6.3 हिन्दी भाषा शिक्षण के उददेश्यों के निर्धारण का आधार
6.4 भाषा शिक्षण के उददेश्य की दृष्टि से वर्गीकरण
6.5 हिन्दी भाषा शिक्षण के मूल उददेश्य
6.5.1 ज्ञानात्मक पक्ष
6.5.2 बोधात्मक उददेश्य
6.5.3 रूचिगत उददेश्य
6.5.4 रसात्मक एंव समीक्षात्मक उददेश्य
6.6 उददेश्यों को व्यावहारिक शदावली में लिखने की निम्नलिखित विधियाँः

6.7 ब्लूम द्वारा ज्ञानात्मक उददेश्यों के वर्गीकरण
6.8 सारांश
6.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.10 निबन्धात्मक प्रश्न
6.11 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

6.1 प्रस्तावना

किसी विषय को पढ़ाने के पूर्व उस विषय के पढ़ाने के उददेश्यों का ज्ञान होना अति आवश्यक हैं। यदि ऐसा नहीं होता है तो विद्यार्थी तथा शिक्षक दोनों ही अपने मार्ग से विचलित हो जाते हैं। किसी विषय को पढ़ाने का अर्थ होता है कि हम विधार्थी में किसी निश्चित प्रकार का व्यवहार परिवर्तन चाहते हैं। विद्यार्थी के व्यवहार में प्रत्याक्षित परिवर्तन करने के लिए षिक्षण उददेश्य आवश्यक हैं। पढ़ाने से पहले हमें कुछ उदेश्यों का निर्धारण करना चाहिए और उन्हीं उददेश्यों के आधार पर विधार्थियों को ज्ञान प्रदान करें।

6.2 उददेश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप योग्य हो सकेगें कि-

हिन्दी भाषा शिक्षण के ज्ञानात्मक उद्देश्यों को जान सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशलात्मक उद्देश्यों को जान सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण के बोधात्मक उद्देश्यों को जान सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण के रुचिगत उद्देश्यों को जान सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण के रचात्मक एवं समीक्षात्मक उद्देश्य

हिन्दी भाषा शिक्षण में व्यवहारिक शब्दावली लेखन की विधियों का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

हिन्दी भाषा शिक्षण में भाषिक तत्वों का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

6.3 हिन्दी भाषा शिक्षण के उददेश्यों के निर्धारण का आधार

भाषा शिक्षण के उ्ददेश्यों पर चर्चा से पूर्व भाषा-शिक्षण की कुछ विषेशताओं को भी ध्यान में रखना चाहिए। इनसे भाषा शिक्षण की प्रकृति, शिक्षण उ्ददेश्यों के निर्धारण और भाषा अधिगम के मूल्यांकन में मदद मिलेगी। भाषा शिक्षण के दो पहलू हैं- पहला अनायास और दूसरा सायास।

अनायासः जहाँ भाषा को बिना किसी प्रयास के मात्र लोक-व्यवहार द्वारा सीखा जाता हैं और

सायासः जहाँ विद्यालय शिक्षक और पाठ्यक्रम के माध्यम से भाषा के विभिन्न कौशलों का अधिग्रहण किया जाता हैं। इन दोनों के बीच जो स्वाभविक सम्बन्ध हैं, उसे समझना शिक्षक के लिए अनिवार्य हैं; ताकि भाषा शिक्षण यथा सम्भव सहज और व्यावहारिक हो सके। यदि मातृभाषा शिक्षण को भी अन्य पाठ्यवस्तु प्रधान विषयों की भाँति नियम और प्रक्रियाओं में बाँध दिया जाए तो उसकी स्वाभाविकता खो जाती हैं।

6.4 भाषा शिक्षण के उददेश्य की दृष्टि से वर्गीकरण

भाषा अध्ययन में ज्ञान के परिणाम स्वरूप भाषा कौशलों-श्रवण, कथन, पठन और लेखन का विकास होता हैं। ये कौशल विधार्थी की अभिव्यक्ति को उत्प्रेरित कर सृजनात्मक वृत्तियों का विकास करते हैं जिनका अन्तिम परिणाम अध्ययन व सृजन की वृत्तियों के विकास के रूप में होता हैं। इस स्तर पर विधार्थी भाषा के माध्यम से अपने व्यक्तित्व का वांछित दिशा में विकास करता हैं और भाषा उसके भावात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति में साधिका हो जाती हैं।

भाषा शिक्षण के दो पहलू हैं- एक भाषा के अर्न्तभूत तत्त्वों जिनमें पद, पदबन्ध, शब्दचयन, मुहावरे, कहावतें, वाक्य शैली, व्याकरण इत्यादि शमिल हैं। का ज्ञान और दूसरा- भाषायी तत्त्वों के माध्यम से प्रस्तुत किए जाने वाले विषय-गध-पधात्मक साहित्यिक विधाएँ और अन्य पाठ्य वस्तु प्रधान विषय। इन दोनों के साथ ही भाषा व्यक्तिगत, परिपालक होती हैं।

इन बातों को सामने रखकर भाषा के बहु पक्षीय स्वरूप का क्रमशः प्रस्तुतिकरण किया जाना चाहिए। तीसरी और अन्तिम बात भाषा ज्ञान के साथ-साथ व्यवहार की भी विषय हैं। भाषा का व्यवहार जितना विविध और व्यापक होगा। भाषा पर पकड़ उतनी ही मजबूत होगी। साथ ही अभिव्यक्ति भी ज्यादा स्पष्ट और रूचिकर हो पाएगी। इसलिए भाषा शिक्षण मंे भाषा के व्यावहारिक पक्ष पर पर्याप्त बल दिया जाना चाहिए।

हिन्दी भाषा का व्यावहारिक विकास परिवार में किन्तु मानक विकास विद्यालय में होता हैं। विधालय में हिन्दी भाषा शिक्षण के माध्यम से विधार्थी अपने पारिवारिक और परिवेशगत भाषा-दोषों की पहचान करके उनका निराकरण करते हैं। भाषा अध्ययन; अनुभूति और अभिव्यक्ति के दायरे का विकास करता हैं। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे प्राथमिक से विश्व-विधालयी शिक्षा तक जारी रहती हैं। इसके लिए शिक्षण के सभी स्तरों पर पृथक लक्ष्यों और उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता हैं। इनका उल्लेख यहाँ किया जा रहा हैं

6.5 हिन्दी भाषा शिक्षण के मूल उददेश्य

6.5.1 ज्ञानात्मक पक्ष

मनुष्य प्रेक्षण, निर्देश ग्रहण करने और दूसरों के आचार की नकल करने से कहीं ज्यादा प्रभावी तरीके से सीखता हैं। ''ज्ञानात्मक पक्ष सुनने, देखने, स्पर्श करने या अनुभव करने का परिणाम हैं।''

ज्ञानात्मक शिक्षण एक प्रभावी प्रणाली है जो ज्ञान के साधन उपलब्ध करवाती हैं और सिर्फ दूसरों की नकल करने तक सीमित नहीं रहती। ज्ञानात्मक शिक्षण ज्ञान और कौशल का मानसिक या ज्ञानात्मक प्रक्रिया द्वारा अधिग्रहण हैं, जो प्रक्रिया हमारे मस्तिष्क के भीतर सूचनाओं के प्रसंस्करण के लिए बनी होती हैं। ज्ञानात्मक प्रक्रिया के तहत भौतिक वस्तुओं और घटनाओं के मानसिक प्रतिबिंब रचे जाते हैं और सूचना प्रसंस्करण के अन्य रूप इसमें शामिल होते हैं।

1.ज्ञानात्मक तरीके से सीखने की प्रक्रिया

ज्ञानात्मक शिक्षण में व्यक्ति सुनने, देखने, स्पर्श करने, पढ़ने या अनुभव से सीखते है और उसके बाद सूचनाओं का प्रसंस्करण करते है और उन्हें याद रखते हैं। ऐसा प्रतीत हो सकता है कि ज्ञानात्मक शिक्षण अप्रत्यक्ष शिक्षण है क्योंकि इसमें मोटर गतिविधि नहीं होती है। हालांकि इस प्रक्रिया में सीखने वाला काफी सक्रिय रहता हैं क्योंकि ज्ञानात्मक शिक्षण में नई सूचनाओं का वह प्रसंस्करण करता हैं और उन्हें याद रखता हैं।

ज्ञानात्मक शिक्षण हमें एक जटिल संरचना पैदा करने और उसका प्रसार करने की अनुमति देता हैं जिसमें प्रतीक, बिंब, मूल्य, मान्यताएँ और नियम होते हैं। चूँकि ज्ञानात्मक शिक्षण इंसानी व्यवहार के कई पहलुओं से जुड़ा होता हैं, इसलिए ऐसा हो सकता है कि यह प्रक्रिया सिर्फ इंसानों में ही होती हैं। हालांकि, इस किस्म के शिक्षण में कई पशुओं की प्रजातियां सक्षम हैं। उदाहरण के तौर पर एक चिड़िया घर में एक बंदर आगंतुकों या अन्य बंदरों की नकल करता हैं।

2. ज्ञानात्मक उददेश्य-

भाषिक तत्वों का समुचित ज्ञान प्राप्त करना।

साहित्य की विभिन्न विधाओं का ज्ञान करना।

विषय-वस्तु का ज्ञान करना।

रचना कार्य के विभिन्न रूपों का ज्ञान करना।

ध्वनि, शब्द एंव वाक्य रचना का ज्ञान कराना।

साहित्य की विभिन्न विधाओं का ज्ञान कराना।

मुहावरों, लोकोक्तियों और कहावतों का ज्ञान कराना।

भाषा के दैनन्दिनी उपयोग में आने वाले मौखिक एंव लिखित रूपों का ज्ञान कराना।

हिन्दी साहित्य के इतिहास की रूपरेखा से परिचित कराना।

स्वाध्याय के महत्व से अवगत कराना तथा उसके प्रति रूचि उत्पन्न ाकरना।

भाषिक तत्वों का ज्ञान

भाषिक तत्व	अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन
1. उच्चारण 2. शब्द भेद शब्द रचना-उपसर्ग, प्रत्यय सन्धि आदि 3. वर्तनी 4. वाक्य रचना	1. छात्र इनको पहचान सकेगा। 2. छात्र इनका श्ुद्ध उच्चारण कर सकेंगें। 3. छात्र इनके अशुद्ध रूपों की त्रुटियाँ समझ सकेगा। 12. छात्र इनके उपयुक्त उदारहण दे सकेगा। 5. छात्र इनका विश्लेषण कर सकेगा। 6. वह इनका संश्लेषण कर सकेगा। 7. वह इनका वर्गीकरण कर सकेगा। 8. इनमें परस्पर सम्बन्ध बता सकेगा। 9. वह इनकी तुलना कर सकेगा। 10. छात्र इनका प्रत्यास्मरण कर सकेगा।

साहित्य की विभिन्न विधाओं का ज्ञान

साहित्यिक विधाएँ	अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन

निबन्ध, कहानी, उपन्यास, नाटक, काव्यगीत आदि।	प्रथम उददेश्य से सम्बन्धित सभी अपेक्षित परिवर्तन।

विषय वस्तु का ज्ञान

विषय वस्तु	अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन
1. सदाचार 2. सांस्कृतिक मूल्य 3. जीवनगत अनुभूतियाँ 4. लेखक परिचय 5. तथ्य व घटनाएँ 6. रचनागत विशेषताएँ 7. छंद, अलंकार, रस 8. चरित्र-चित्रण	1. प्रथम उददेश्य से सम्बन्धित सभी अपेक्षित परिवर्तन

रचना के विभिन्न रूपों का ज्ञान

रचना के विभिन्न रूप मौखिक	अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन
1. वाद-विवाद 2. अन्त्याक्षरी 3. भेंट वार्ता या साक्षात्कार 4. वार्तालाप 5. सस्वर वाचन -	1. प्रथम उददेश्य से सम्बन्धित सभी अपेक्षित परिवर्तन। 2. इसके अतिरिक्त- छात्र इनके उदाहरण प्रस्तुत कर सकेगा। 3. छात्र रचना के विभिन्न रूपों में अन्तर समझ सकेगा।

6. भाषण	

लिखित

1. पत्र और तार

2. निबन्ध

3. कहानी

4. आत्मकथा

5. सारांश लेखन

6.5.2 बोधात्मक उददेश्य

इस उददेश्य के अर्न्तगत छात्रों के संज्ञान एंव अभिवृत्तियें के विकास करने के लिए प्रयास किया जाता हैं। इस उददेष्य हेतु छात्रों में निम्नलिखित योग्यतायें विकसित करनी चाहिए-

छात्रों की स्वाध्याय में रूचि जागृत करना।

विद्यालय के साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना।

उन्हें पुस्तकालय का उपयोग करने तथा निजी पुस्तकालय की स्थापना करने हेतु प्रोत्साहित करना।

वे साहित्यिक चित्रों एंव तथ्यों को एकत्रित करने में पर्याप्त रूचि ले।

वे अपने साथियों तथा अन्य व्यक्तियों की रूचि को यथेष्ट मात्रा में साहित्यिक बनाने में रूचि लें।

उन्हें अपनी संस्कृति एंव सभ्यता के अध्ययन हेतु प्रेरित करना।

विभिन्न समितियों के सदस्य बनने तथा उनका योग्यतापूर्ण संचालन करने के लिए प्रेरित करना।

उन्हें विद्यालय के अतिरिक्त समाज के साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना।

पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों के अध्ययन हेतु प्रेरित करना।

उन्हें विद्यालय पत्रिका में सहयोग देने के लिए प्रेरित करना।

साहित्यिक पत्रिकाओं के अध्ययन एंव उनके संकलन करने के लिए प्रोत्साहन देना।

अपेक्षित परिवर्तन

1) वह विभिन्न आदर्शो के प्रति श्रद्धा रखेगा।

2) वह सामाजिक मान्यताओं में आस्था रखेगा।

3) वह वातावरण के प्रति संवेदनशील एंव सह्दय होगा।

12) वह सद्वृत्तियों का पोषण और उनका संवर्धन करेगा।

5) वह स्वतन्त्र अध्ययन की दिशा में प्रवृत्त होगा।

6) विधार्थी साहित्य प्रेम, देश प्रेम एंव मानव प्रेम की और प्रेरित होगा।

6.5.3 कौशलात्मक उददेश्य

शुद्ध व स्पष्टवाचन की योग्यता उत्पन्न करना।

बोलकर भावों की उचित अभिव्यक्ति करना।

गद्य तथा पद्य पढ़कर अर्थ ग्रहण करना।

लिखकर भावों की उचित अभिव्यक्ति करना।

मातृभाषा और मानक भाषा के बीच भेद करना और उनका यथा स्थान उपयोग करना।

दूसरों द्वारा वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करने की योग्यता विकसित करना।

क. कौशल से सम्बन्धित उददेश्यों पर आधारित व्यवहार परिवर्तन इस प्रकार हैं-

1. छात्र धैर्यपूर्वक सुनेगा।

2. छात्र सुनने के शिष्टाचार का पालन करेगा।

3. वह शब्दों, मुहावरों आदि का प्रसंगानुसार अर्थ समझ सकेगा।
4. छात्र महत्वपूर्ण विचारों, भावों, तथ्यों आदि का चयन कर सकेगा।
5. वह साराशं ग्रहण कर सकेगा।
6. छात्र भावानुभूति कर सकेगा।
7. छात्र धैर्यपूर्वक पढ़ सकेगा।
8. छात्र विषयानुसार गतिपूर्वक पढ़ सकेगा।
9. वह भवानुरूप सस्वर वाचन कर सकेगा।
10. वह शुद्ध उच्चारण व उचित स्वराघात बलाघात व स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ सकेगा।
11. छात्र लयपूर्वक पाठ का वाचन कर सकेगा।
12. छात्र उचित आरोह-अवरोह के साथ बोल सकेगा।
13. छात्र उपयुक्त वाणी में बोल सकेगा।
14. वह प्रवाह के साथ बोल सकेगा।
15. वह सरल मुहावरेदार भाषा का प्रयोग कर सकेगा।
16. छात्र विभिन्न रचना वाले वाक्यों का गठन कर सकेगा।

6.5.12 रूचिगत उददेश्य

इस उददेश्य से आशय विद्यार्थियों में सृजन करने एंव रूचिगत क्षमता उत्पन्न करना हैं।

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित उददेश्य आते हैं-

भावानुकूल भाषा का प्रयोग करने की क्षमता विकसित करना।

विभिन्न जीवन समस्याओं एंव स्थितियों में उपयुक्त भाषा का उपयोग करना।

उपयुक्त भाषा शैली का आवश्यकतानुसार उपयोग करना।

छात्रों को लेखन कला के लिए प्रोत्साहित करना।

छात्रों में मौलिकता की सृष्टि करना।

छात्रो को स्वाध्याय के लिए प्रोत्साहित करना।

स्वानुभूति का भावना जागृत करना।

भावों की अभिव्यंजना एंव विचारों के प्रगटीकरण के लिए प्रेरित करना।

उन्हें निबन्ध कविता, कहानी उपन्यास आदि की संरचना हेतु निरन्तर प्रोत्साहित करना।

विषय एंव प्रसंग के अनुसार रूचिपूण शैली का ज्ञान कराना।

1. व्यवहार परिवर्तन

छात्र स्व-अनुभूति भावों एंव विचारों को अपने आप व्यक्त कर सकेगा।

छात्र अपने विचारों एंव भावनाओं को कल्पना के आधार पर नवीन रूप दे सकेगा।

छात्र अपने विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकेगा।

6.5.5 रसात्मक एंव समीक्षात्मक उददेश्य

यह हिन्दी भाषा शिक्षण एंव साहित्य का अत्यन्त महत्वपूर्ण उददेश्य है। इस उददेश्य के अन्तर्गत निम्न बाते सम्मिलित की गई हैं-

रसात्मक अनुभूति एंव साहित्य का रसास्वादन करना।

साहित्य के विविध पक्षों की समालोचना का अध्ययन करना तथा स्वंय समालोचना करने में कुशल होना।

1. व्यवहार परिवर्तन

1. वह रूचिपूर्ण कवितायें कंठस्थ करेगा।

2. वह कक्षा एंव विद्यालय की पत्रिका में योगदान देगा।

3. कक्ष, विद्यालय एंव विद्यालय से बाहर के साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लेगा।

4. छात्र पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य पुस्तकें पढ़ेगा।

5 वह साहित्यिक महत्व की पात्रिकायें तथा चित्र संकलित करेगा।

6. वह अपने मित्रों तथा अपने संसर्ग में आने वाले व्यक्तियों में भाषा और साहित्य के प्रति रूचि जागृत करने का प्रयास करेगा।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1- हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशलात्मक उद्देश्यों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....

6.6 विशिष्ट उददेश्यों का व्यवहारिक शब्दावली में लेखन

किसी इकाई के अनुदेशन से सीखने वाले में विषय-वस्तु (Content) से सम्बन्धित जिन विशिष्ट (Specific) व्यवहार-परिवर्तन को बताया जाता है उसे विषिष्ट उददेश्य कहते हैं।

आई.के डेविस (I.K. Davice) के अनुसार-

‘‘सीखने का उददेश्य अपेक्षित परिवर्तन का वर्णन हैं।’’

Learning objective is a Statement of proposed change”

मूल्यांकन एंव परीक्षा अंक के अनुसार (Evaluation and Examination, NCERT)

‘‘उददेश्य वह बिन्दु अथवा अभीष्ट हैं, जिसकी दिशा में कार्य किया जाता है, वह व्यवस्थित परिवर्तन हैं, जिसे किसी क्रिया द्वारा प्राप्त किया जाता हैं, जिसके लिए हम कार्य करते हैं।

An objective is a point or an end-view of something towards which action is directed a planned change ought through any activity, what we set out to do”

उददेश्यों को वांछित लक्ष्यों के रूप में स्वीकार किया गया किन्तु इनकी अस्पष्टता ने शिक्षकों में इनके उपयोग में सहायता नहीं की। इन दोशों को दूर करने के लिए मनोवैज्ञानिकों के समूह ने 19128 में मानव व्यवहार के समान तत्वों को वर्गीकृत करने के प्रयास किये। इन उददेश्यों को निम्नतम ष्श् से उच्चतम स्तर में तीन संवर्गो (Categoreis)में रखा गया हैं। प्रत्येक संवर्ग में उददेश्यों को व्यवहार-परिवर्तन के पदों में निम्नतम से उच्चतम में वर्गीकृत किया गया हैं।

6.6.1 उददेश्यों को व्यावहारिक शब्दावली में लिखने की निम्नलिखित विधियाँः-

1.मेगर योजना (Mager’s Scheme)

2..क्षेत्रीय षिक्षा महाविधालय मैसूर की विधि ;(R.C.E.M System)

1.मेगर योजना (Mager’s Scheme)

रॉबर्ट मेगर (Robert Mager)ने उददेश्यों को व्यावहारिक शब्दावली में लिखने के लिये ब्लूम के शैक्षिक उददेश्यों के वर्गीकरण (Bloom’s Taxomony of Education Objectives)को भी आधार माना हैं। इस कार्य के लिए कार्य-सूचक क्रियाओं की सूची (List of Action Verbs)की सहायता ली जाती हैं। ब्लूम के प्रत्येक उददेश्य के लिये कार्य-सूचक क्रियाओं की सूची तैयार की गई हैं। इस सूची में से कार्य-सूचक क्रियाओं का चयन किया जाता हैं। कार्य सूचक-क्रियाओं की सूची निम्नलिखित हैं-

1. ज्ञानात्मक उददेश्य

उददेश्य कार्य-सूचक क्रियायें

	उददेश्य	कार्य-सूचक क्रियायें
1.	ज्ञान (Knowledge)	परिभाषा देना, चयन करना, कथन करना, मापन, प्रत्यास्मरण सूची देना, पहचानना लिखना।
2.	बोध (Comprehension)	व्याख्या करना, उदाहरण देना, संकेत करना, प्रस्तुत करना, प्रतिपादन करना, वर्गीकरण करना, निर्णय लेना, चयन करना, अर्थापन, अनुवाद।
3.	प्रयोग (Application)	पूर्व कथन, जाँच करना, गणना करना, बनाना, प्रयोग करना, पाना, प्रर्दन करना, उल्लेख करना।

12.	विश्लेषण (Analysis)	विश्लेषण करना, विभाजन करना, निष्कर्ष निकालना, तुलना करना, भेद करना, आलोचना करना, अलग करना, पुष्टि करना।
5.	संश्लेषण(Synthesis)	तर्क करना, चयन करना, वाद-विवाद करना, निष्कर्ष देना, व्यवस्थित करना, पूर्व कथन करना, सामान्यीकरण करना, संक्षिप्त करना।
6.	मूल्यांकन (Evaluation)	निर्णय लेना, पहचानना, मूल्यांकन करना, दूर करना, आलोचना करना, बचाव करना।

2. भाववाचक उददेश्य

कार्य-सूचक क्रियाओं की सूची

	उददेश्य	कार्य-सूचक क्रियायें
1.	अनुक्रिया (Responding)	सुनना, अधिग्रहण करना, स्वीकार करना, प्रत्यक्षीकरण करना, पसंद करना, चयन करना।
2.	प्रतिक्रिया (Receving)	उत्तर देना विकास करना, कथन करना, आलेखन बनाना, सूची बनाना, चयन करना लिखना।
3.	अनुमूल्य (Valuing)	स्वीकार करना, प्रभावित करना, भाग लेना, पहिचानना, संकेत लेना, वृद्धि करना, निर्धारण करना।
12.	प्रत्ययीकरण(Conceptualization)	भेद करना, सम्बन्ध स्थापित करना, विश्लषेण करना, प्रदर्शित करना, संकेत करना, तुलना करना।

5.	व्यवस्थापन (Organization)	व्यवस्था करना, सह-सम्बन्ध स्थापित करना, निर्णय करना, चयन करना, सम्बन्ध स्थापित करना, निश्चित करना, बनाना।
6.	चरित्रीकरण(Characterization)	दोहराना, स्थापित करना, बदलना, स्वीकार करना, पहिचानना

1. ज्ञानात्मक उददेष्य (Cognitive Objectives)

1. ज्ञान (Knowledge) (i) विधार्थी 'अभिप्रेरणा' शब्द को परिभाषित कर सकते हैं। इस उददेश्य में कार्य-सूचक शब्द ' परिभाषित' करना प्रयुक्त हैं।

(ii) विधार्थी अभिप्रेरणा- प्रविधियों की सूची दे सकते हैं। इसमें कार्य-सूचक शब्द का प्रयोग किया गया हैं।

2. बोध (**Comprehension**) (i) विधार्थी 'अधिगम' की व्याख्या कर सकते है। इसमे व्याख्या शब्द कार्य-सूचक शब्द हैं।

(ii) विधार्थी शिक्षण- प्रतिमानो का वर्गीकरण कर सकते हैं। इसमें वर्गीकरण कार्य-सूचक शब्द हैं।

3.प्रयोग (**Application**) विधार्थी हाइड्रोजन गैस को बनाने की प्रक्रिया का प्रदर्शन कर सकते है। इसमे 'प्रदर्शन' कार्य-सूचक शब्द हैं।

2. भावात्मक उददेश्य (**Affective Objectives**)

1. विधार्थी प्रस्तुत पाठ में विशेषणांे का चयन कर सकते है। इसमे 'चयन' शब्द कार्य-सूचक शब्द हैं।

2. विधार्थी क्रियाओं की सूची बना सकते है। इसमे सूची क्रिया-सूचक शब्द हैं।

3. विधार्थी अभिप्रेरणा और अधिगम में सम्बन्ध स्थापित कर सकते है। इसमें सम्बन्ध शब्द कार्य-सूचक हैं।

3. मेगर योजनाओं की सीमाऐं (**Limitation of Mager's Scheme**)

इस योजना में क्रियाओं पर अधिक बल दिया जाता हैं। मानसिक प्रतिक्रियाओं पर विचार नही किया गया।

इस योजना का प्रयोग मुख्यतः अधिक्रमित-अधिगम में ही उपयुक्त रहता हैं।

इसमें कई क्रिया-सूचक शब्द विभिन्न वर्गो के उददेश्यों में प्रयुक्त होते है जो भ्रम में □लते हैं।

इस विधि द्वारा क्रियात्मक पद के उददेश्यों को व्यवहारिक रूप में लिखने के लिए कोई व्यवस्था नही हैं।

2. क्षेत्रीय शिक्षा महाविधालय मैसूर की विधि (**The R.C.E.M. System**)

क्षेत्रीय शिक्षा महाविधालय मैसूर ने मेगर औस मिलर की योजनाओं को ध्यान में रखते हुऐ अपनी एक योजना का विकास किया जिसे आर.सी.ई.एम. योजना या प्रणाली (R.C.E.M System) के नाम से जाना जाता हैं। इस योजना के प्रक्रिया को अधिक महत्त्व दिया जाता है। इस विधि में मानसिक योग्यताओं को भी महत्त्व दिया जाता है। इस योजना में ब्लूम की टेक्सोनॉमी का ही आधार माना हैं। ब्लूम ने ज्ञानात्मक उददेश्यों को व उददेश्यों में बाँटा है। आर.सी.ई.एम. प्रणाली में ज्ञानात्मक उददेश्यों को छः की बजाय चार उददेश्यों में परिवर्तित किया हैं। ब्लूम के अन्तिम तीन उददेश्य अर्थात 'विश्लेषण' संश्लेषण, तथा मूल्यांकन को इस विधि में सृजनात्मक का नाम दिया हैं। इस चारों उददेश्यों में संक्षिप्त मानसिक क्रियाओं को 17 भागो में बाँटा गया हैं।

आर. सी. ई. एम. के अनुसार उददेश्यों का वर्गीकरण (Classification of objectives According to R.C.E.M System)

	उददेश्य (ब्लूम		उददेश्य (आर.सी.ई.एम.		मनसिक योग्यतायें

	द्वारा)		के अनुसार)		
1.	ज्ञान	1.	ज्ञान	1.	प्रत्यास्मरण
2.	बोध	2.	बोध	1.	सम्बन्ध देखना
				2.	वर्गीकरण करना
				3.	सामान्यीकरण
				4.	व्याख्या करना
				5.	भेद करना
				6.	उदाहरण देना
				7.	पुष्टि करना
3.	प्रयोग	3.	प्रयोग	1.	परिकल्पना करना
					पूर्व कथन करना
					निश्कर्ष निकालना
					तर्क करना
					परिकल्पना करनो
4.	विश्लेषण	4.	सृजनात्मकता	1.	विश्लेषण करना
					संश्लेषण करना
					मूल्यांकन
5.	संश्लेषण				
6.	मूल्यांकन				

1) ज्ञानात्मक उददेश्य- विधार्थी में ‘शिक्षण’ शब्द की परिभाश के प्रत्यास्मरण की योग्यता हैं।

2) बोध उददेश्य - विधार्थी में ‘शिक्षण’ और ‘प्रशिक्षण’ में भेद करने की योग्यता हैं।

3) प्रयोग उददेश्य -विधार्थी में प्रस्तुत आँकड़ो के आधार पर परिणाम निकालने की क्षमता हैं।

12) सृजनात्मक उददेश्य - विधार्थी में 'अधिगम' की विशेषताओं का विश्लेषण करने की योग्यता हैं।

2. आर. सी. ई. एम. विधि की विशेषतायें (**Characteristics of R.C.E.M System**)

इसमें उददेश्यों को व्यवहारिक रूप से परिवर्तित करना अथवा लिखना सरल होता हैं।

इसमें शिक्षा के सभी उददेश्यों को व्यावहारिक रूप से लिखा जा सकता हैं।

इसमें मानसिक क्रियाओं को अधिक महत्त्व दिया गया हैं।

परीक्षा के लिए प्रश्नों की रचना करने में आसानी रहती हैं।

इस विधि का विकास शुद्ध भारतीय परिस्थितयों में तथा इनके अनुसार हुआ हैं। वह भारत के सन्दर्भ में यह विधि अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

उददेश्यों का व्यावहारिक रूप अधिक विशिष्ट तथा सुनिश्चित होता हैं।

3. आर. सी. ई. एम. विधि की सीमाऐं (**Limitations of R.C.E.M System**)

गिलफोर्ड की 120 की मानसिक योग्यताओं की तुलना में इस विधि में भाग 37 मानसिक योग्यताओ की ही चर्चा हुई हैं।

यह विधि केवल ज्ञानात्मक उददेश्यों के लिए अधिक उपयोगी हैं।

पाठ्य-वस्तु के विभिन्न तत्वों को किन-किन मानसिक क्रियाओं के साथ जोड़ा जाए। इसे एक करना बहुत ही मुश्किल कार्य होता हैं।

इसमें विभिन्न उददेश्यों के लिये मानसिक क्रियाओं का कोई सन्तुलन नही हैं। जैसे- बोध में सात, प्रयोग में पाँच तथा सृजनात्मकता में तीन मानसिक क्रियाओं को शामिल किया जाता हैं।

6.7 ब्लूम द्वारा ज्ञानात्मक उददेश्यों के वर्गीकरण

किसी प्रकार के परिवर्तन को प्रस्तावित करने वाले चयन को ही उददेश्य के रूप में जाना जाता हैं। इसी प्रकार शैक्षिक उददेश्यों से तात्पर्य विधार्थियों में होने वाले उस परिवर्तन से है जो शैक्षिक क्रियाओ द्वारा नियोजित रूप में लाया जाता हैं। इन उददेश्यों को निम्नलिखित विशेषताऐं होती हैं-

1 शैक्षिक उददेश्यों की प्रकृति मनोवैज्ञानिक होती हैं।

2. शिक्षण की युक्तियों और व्यूह-रचनाओं के चयन के लिये वे शैक्षिक उददेश्य महत्त्वपूर्ण होते हैं।

3. शैक्षिक उददेश्यों द्वारा मूल्यांकन की प्रविधियों के विशिष्टीकरण में भी सहायता मिलती हैं।

1. उद्देश्यों का वर्गीकरण बी. एस. ब्लूम

उद्देश्यों का निर्धारण किसी भी विषय के अध्यापन हेतु अनेक आयामों को सामने रखकर किया जाता हैं। ऐसा करने से अध्ययन के तात्कालिक और दीर्घकालिक तथा सैद्धा ान्तिक और व्यावहारिक सभी लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सकती हैं। इस दिशा में किए गए प्रयासों मे ें सर्वाधिक मान्यता बी. एस. ब्लूम को मिली हैं।

उन्होंने शैक्षिक लक्ष्यों के निर्धारण तथा मूल्यांकन की एक अत्यन्त सन्तुलित शैली विकसित की है जिसे ब्लूम की टैक्सोनॉमी अर्थात् पारिभाषिक शब्दावली कहा गया हैं। ब्लूम का मत है कि

''शैक्षिक उद्देश्य वे लक्ष्य हैं जिनकी मदद से न केवल पाठ्यक्रम की रचना और अनुदेशन के लिए निर्देशन किया जाता है अपितु साथ ही मूल्यांकन प्रविधियों की रचना एंव प्रयोग के लिए विस्तृत विशिष्टताओं की प्राप्ति भी होती हैं।''

"Educational objectives are not only the goals towards which the Curriculum is shaped, towards which instruction is guided but they are also the goals that provide the detailed specification for a behaviour". – B.S. Bloom.

शिक्षा के लक्ष्य देश, समाज और समय के अनुसार बदलते रहते हैं। फिर भी उनका मौलिक ाँचा एक समान रहता है। इस ाँचे को परिभाषित करने के प्रयास अनेक विद्वानों द्वारा किए गए हैं। किन्तु सबसे उत्तम प्रयास; जिसे कालान्तर में व्यापक स्वीकार्य और मान्यता मिली; बेजामिन ब्लूम द्वारा किया गया। उनके द्वारा विहित उद्देश्यों के वर्गीकरण को टैक्सोनॉमी ऑफ एजुकेशनल ऑब्जेक्टिव्स का नाम दिया गया हैं। इस टेक्सोनॉमी में अधिगम उद्देश्यों को तीन पक्षों के अन्तर्गत रखा गया हैं।

ब्लूम के मत में किसी भी शिक्षण गतिविधि के उद्देश्यों को 1) ज्ञानात्मक, 2) भावात्मक और 3) क्रियात्मक इन तीन पक्षों में वर्गीकृत किया जा सकता है इसका अर्थ है कि जब हम किसी विषय का ज्ञान पाते हैं तो वह हमारी अनुभूति व भाव ग्रहण का विषय बनता हैं। यही भाव गहन होने पर हमारे विचार और व्यवहार में परिणत होता हैं।

अध्ययन-अध्यापन के समस्त व्यवहारों के विषय में सटीकतः लागू होने के बावजूद भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में इन पक्षों में कुछ संशोधनों की अपेक्षा हैं।

इस वर्गीकरण का आधार 'सरल से कठिन की ओर (from simple to complex) तथा स्थूल से सूक्ष्म की ओर (from concrete to abstract) था।

पहली बार इसका प्रस्तुतीकरण शिकागो विश्वविद्यालय के डॉ. बैन्जामिन ब्लूम एंव सहयोगियों ने किया इसलिए इसका नाम ब्लूम वर्गीकरण (Bloom taxomony) पड़ा जिसके आधार पर समस्त मानवीय क्रियाओं की तीन पक्षों में विभाजित किया जा सकता हैं।

बी. एस. ब्लूम ने भी श्ैक्षिक उददेश्यों को परिभाषित किया हैं। वह उददेश्य निम्नलिखित हैं-

''श्ैक्षिक उददेश्यों की सहायता से केवल पाठ्क्रम की ही रचना और अनुदेश के लिये ही नहीं दिया जाता अपितु ये मूल्यांकन की प्रविधियों के विशिष्टीकरण में भी सहायक होते हैं।''

ब्लूम ने सीखने के उददेश्यों को तीन पक्षों में विभाजित किया हैं -

1) ज्ञानात्मक उददेश्य

2) भावात्मक उददेश्य

3) क्रियात्मक उददेश्य

1. ज्ञानात्मक उददेश्य (**Cognitive Obective**)

ज्ञानात्मक उददेश्य का सम्बन्ध सूचनाओ, ज्ञान तथा तथ्यों की जानकारी से होता हैं शैक्षिक क्रियाओं द्वारा इसी उददेश्य की प्रप्ति की जाती हैं।

1) ज्ञान

2) बोध

3) प्रयोग

4) विश्लेषण

5) संश्लेषण

6) मूल्यांकन

ब्लूम ने प्रत्येक वर्ग से सम्बन्धित उन सीखने की क्रियाओं को पहिचनने का चयन किया जिनका व्यावहारिक रूप में अवलोकन तथा मूल्यांकन संभव हैं। ये सीखने की क्रियाये निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत की गई हैं-

	वर्ग (**Category)**		सीखने की उपलब्धियाँ
1.	ज्ञान	i	1.विशिष्ट वस्तुओ का ज्ञान 2. साधनों का ज्ञान होना 3. सार्वभौम वस्तुओ का ज्ञान करना
2.	बोध	ii	1. अनुवाद करना 2. व्याख्या देना 3. उल्लेख करना
3.	प्रयोग	iii	1. सामान्यीकरण करना
4.	विश्लेषण	iv	1.तत्व का विश्लेषण करना 2. सम्बन्ध स्थापित करना 3. सिद्धान्त का विश्लेषण करना
5.	संश्लेषण	v	1. योजना का निर्माण करना
6.	मूल्यांकन	vi	1. बहरी तथा आन्तरिक निर्णय लेने।

1. ज्ञान (**Knowledge**) शैक्षिक उददेश्यों के इस वर्ग में छात्रों के प्रत्यास्मरण तथा अभिज्ञान की क्रियाओं को तथ्यों, शब्दों, नियमों तथ सिद्धान्तों की सहायता से विकसित किया जाता हैं। छात्र हेतु परम्पराओं, वर्गीकरण, मानदण्ंडों, नियमों तथा सिद्धांतो के प्रत्यास्मरण तथा अभिज्ञान के लिये परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती हैं। ज्ञान वर्ग के भी पाठ्यवस्तु की दृष्टि में तीन बात होती हैं-

1)विशिष्ट बातो का ज्ञान देना तथ्य, शब्द आदि

2)उपायों तथा साधनों का ज्ञान देना।

3)सामान्यीकरण, नियमों तथा सिद्धान्तों का ज्ञान देना।

2. बोध (**Comprehension**)‘बोध वर्ग में प्रवेश के लिये ज्ञान का होना अति आवश्यक हैं। जिन पाठ्य-वस्तु तथ्य, शब्द, उपाय, साधन, नियम तथा सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त किया जाता हैं। अर्थात् प्रत्यास्मरण और अभिज्ञान की क्षमताओं का विकास हो चुका हैं, उन्ही का अपने शब्दों में अनुकूल करना, तथा उल्लेख करना आदि क्रियाये बोध उददेश्य के स्तर पर की जाती हैं। इस वर्ग के भी तीन स्तर होते हैंः-

1) तथ्यों, शब्दों, नियमों, सिद्धान्तों को अनुवाद करके अपने शब्दों में व्यक्त करना।

2) इस पाठ्य-वस्तु की व्याख्या करना।

3) इसी पाठ्य-वस्तु का उल्लेख करना।

3. प्रयोग (**Application**) प्रयोग के लिये ज्ञान और बोध का होना आवश्यक होता हैं। तथा विधार्थी प्रयोग स्तर की क्रियाये करने में समर्थ हो सकता हैं। इसके भी तीन स्तर होते हैं-

1) नियमों, साधनों और सिद्धान्तों में सामान्यीकरण करना।

2) उनकी कमजोरियो के जानने के लिये निदान करना।

3) छात्र द्वारा पाठ्य-वस्तु का प्रयोग करना।

4. विश्लेषण (**Analysis**) इस उददेश्य की पूर्ति के लिये ज्ञान, बोध और प्रयोग के उददेश्यों की नींव का होना आवश्यक हैं। इसमें पाठ्य-वस्तु के नियमों, सिद्धान्तों, बच्चों तथा स्थलों की तीन भागों में प्रस्तुत किया जाता हैंः-

1) उनके तत्वों का विश्लेषण करना।

2) उनके सम्बन्धों का विश्लेषण करना।

3) उनका व्यवस्थित सिद्धान्तों के रूप में विश्लेषण करना।

5. संश्लेषण (**Synthesis**) संश्लेषण का सृजनात्मकता भी कहते हैं यह वर्ग के विभिन्न तत्वों को एक नये रूप में व्यवस्थित किया जाता है। इस उददेश्य के भी तीन स्तर होते हैं-

1) विभिन्न तत्वों के संश्लेषण में सम्प्रेक्षण करना।

2) तत्वों के संश्लेषण से नवीन योजना प्रस्तावित करना।

3) तत्वों के अमूर्त सम्बन्धों का अवलोकन करना।

इस प्रकार इस वर्ग के उददेश्यों के अन्र्तगत विभिन्न स्रोतो में हाथों को मिलाकर होता हैं। इन विभिन्न तत्वों को जोड़कर एक नया ाँचा तैयार करना होता हैं। ऐसा करने से विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमताओं को विकसित करने के अवसर मिलता हैं।

6. मूल्यांकन (**Evaluation**). शैक्षिक उददेश्यों में ज्ञानात्मक उददेश्यों का यह दायित्व वर्ग हैं। इसे विषय-वस्तु के नियमों, सिद्धान्तों तथा तथ्यों के सम्बन्ध मं सृजनात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाता हैं। जिसके सम्बन्ध में निर्णय लेने में बाहरी तथा आन्तरिक मापदण्डों को प्रयुक्त किया जाता हैं।

ऐसा देखा गया है कि इतिहास के विषय में तथ्य शामिल होते हैं। विज्ञान की पाठ्यवस्तु में नियम, विधियाँ तथा सिद्धान्त होते हैं। भाषा की पाठ्यवस्तु में शब्दावली, साधन, हैं। विभिन्न शिक्षण विधियों की सहायता से ज्ञान उददेश्य के विभिन्न वर्गो को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता हैं।

इस उददेश्य की प्राप्ति निम्नलिखित उपलब्धियों को मानदण्ड मानकर देखा जा सकता हैंः-

1. तथ्यों की सूचना
2. प्रत्ययों की अनुभूति
3. सामान्यीकरण
4. समस्या समाधान
5. सृजनात्मक चिन्तन
6. सिद्धान्तों तथा व्यवस्थित ज्ञान

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 2- ब्लूम के अनुसार शिक्षण के विशिष्ट उददेशयों का व्यवहारिक शब्दावली में वर्गीकरण कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....

....
....

प्रश्न 3- मेगर योजनाओं की सीमाओं की सूची बनाओं।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

6.8 सारांश

प्रस्तुत सूची में हिन्दी शिक्षण के लक्ष्यों और उद्देश्यों का कथन किया गया है। इनमें से अधिकांश मूलतः तो हिन्दी शिक्षण के लक्ष्य हैं क्योंकि इनका अधिगम किसी एक कक्षा या प्रकरण के अध्ययन से नहीं किया जा सकता। लेकिन इतना ज़रूर है कि हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों का चयन भी इन्हीं लक्ष्यों की सूची से होता हैं। लक्ष्यों का निर्धारण किए बिना उद्देश्यों का निर्धारण नहीं हो सकता। लक्ष्य व्यापक दिशा-निर्देश हैं जिनके अधिगम के लिए अनुकूल पाठ्य सामग्री, सहायक सामग्री और शिक्षण उपकरणों की व्यवस्था की जाती हैं। इस प्रक्रिया से सीधे तौर पर तो श्ैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति होती हैं लेकिन परोक्ष रूप से लक्ष्यों का अधिगम भी होता रहता हैं।

6.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1- कौशलात्मक उददेश्य

शुद्ध व स्पष्टवाचन की योग्यता उत्पन्न करना।

बोलकर भावों की उचित अभिव्यक्ति करना।

गद्य तथा पद्य पढ़कर अर्थ ग्रहण करना।

लिखकर भावों की उचित अभिव्यक्ति करना।

मातृभाषा और मानक भाषा के बीच भेद करना और उनका यथा स्थान उपयोग करना।

दूसरों द्वारा वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करने की योग्यता विकसित करना।

कौशल से सम्बन्धित उददेश्यों पर आधारित व्यवहार परिवर्तन इस प्रकार हैं-

छात्र धैर्यपूर्वक सुनेगा।

छात्र सुनने के शिष्टाचार का पालन करेगा।

वह शब्दों, मुहावरों आदि का प्रसंगानुसार अर्थ समझ सकेगा।

छात्र महत्वपूर्ण विचारों, भावों, तथ्यों आदि का चयन कर सकेगा।

वह साराशं ग्रहण कर सकेगा।

छात्र भावानुभूति कर सकेगा।

छात्र धैर्यपूर्वक पढ़ सकेगा।

छात्र विषयानुसार गतिपूर्वक पढ़ सकेगा।

वह भवानुरूप सस्वर वाचन कर सकेगा।

वह शुद्ध उच्चारण व उचित स्वराघात बलाघात व स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ सकेगा।

छात्र लयपूर्वक पाठ का वाचन कर सकेगा।

छात्र उचित आरोह-अवरोह के साथ बोल सकेगा।

छात्र उपयुक्त वाणी में बोल सकेगा।

वह प्रवाह के साथ बोल सकेगा।

वह सरल मुहावरेदार भाषा का प्रयोग कर सकेगा।

छात्र विभिन्न रचना वाले वाक्यों का गठन कर सकेगा।

उत्तर 2- ‘‘श्ैक्षिक उददेश्यों की सहायता से केवल पाठ्क्रम की ही रचना और अनुदेश के लिये ही नहीं दिया जाता अपितु ये मूल्यांकन की प्रविधियों के विशिष्टीकरण में भी सहायक होते हैं।’’

ब्लूम ने सीखने के उददेश्यों को तीन पक्षों में विभाजित किया हैं -

1) ज्ञानात्मक उददेश्य

2) भावात्मक उददेश्य

3) क्रियात्मक उददेश्य

1. ज्ञानात्मक उददेश्य

ज्ञानात्मक उददेश्य का सम्बन्ध सूचनाओ, ज्ञान तथा तथ्यों की जानकारी से होता हैं शैक्षिक क्रियाओं द्वारा इसी उददेश्य की प्रप्ति की जाती हैं।

1) ज्ञान

2) बोध

3) प्रयोग

12) विश्लेषण

5) संश्लेषण

6) मूल्यांकन

ब्लूम ने प्रत्येक वर्ग से सम्बन्धित उन सीखने क्ी क्रियाओं को पहिचनने का चयन किया जिनका व्यावहारिक रूप में अवलोकन तथा मूल्यांकन संभव हैं।

उत्तर 3- मेगर योजनाओं की सीमाऐं

इस योजना में क्रियाओं पर अधिक बल दिया जाता हैं। मानसिक प्रतिक्रियाओं पर विचार नही किया गया।

इस योजना का प्रयोग मुख्यतः अधिक्रमित-अधिगम में ही उपयुक्त रहता हैं।

इसमें कई क्रिया-सूचक शब्द विभिन्न वर्गो के उददेश्यों में प्रयुक्त होते है जो भ्रम में □लते हैं।

इस विधि द्वारा क्रियात्मक पद के उददेश्यों को व्यवहारिक रूप में लिखने के लिए कोई व्यवस्था नही हैं।

6.10 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1-हिन्दी शिक्षण के ज्ञानात्मक, बोधात्मक कौशलात्मक एंव रूचिगत उददेश्यों की व्याख्या कीजिए।

प्रश्न 2 शैक्षणिक उददेश्यों को व्यवहारिक शब्दावली में लेखन की विधियों का विस्तार से वर्णन करों।

इकाई 7- शिक्षण उपकरणों का सन्दर्भ, महत्व और लाभ

इकाई की रुप रेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 उददेश्य

7.3 शिक्षण उपकरण के मनोवैज्ञानिक आधार

7.4 शिक्षण उपकरण का अर्थ

7.5 शिक्षण उपकरण की परिभाषा

7.6 विषय प्रवेश

7.7 शिक्षण उपकरण का वर्गीकरण

7.7.1 दृश्य-श्रव्य के आधार पर उपकरण का वर्गीकरण
7.7.2 प्रक्षेपण के आधार पर उपकरण का वर्गीकरण
7.7.3 क्रियात्मक उपकरण का वर्गीकरण
7.8 शिक्षण उपकरण के महत्व और लाभ
7.9 श्रव्य-दृश्य सामग्री का उपयुक्त चयन तथा प्रयोग
7.10 शिक्षण उपकरण के चयन के सिद्धान्त
7.10.1 चयन का सिद्धान्त
7.10.2 तैयारी का सिद्धान्त
7.10.3 उपपुक्त प्रस्तुति का सिद्धान्त
7.10.4 अनुक्रिया का सिद्धान्त
7.10.5 नियन्त्रण का सिद्धान्त
7.11 अच्छे शिक्षण उपकरण के गुण
7.12 शिक्षण उपकरण के उपयोग में सावधानियाँ
7.13 सारांश
7.14 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.15 निबन्धात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

बालको को शिक्षण प्रदान करते समय सीखने की ऐसी परिस्थिति को उत्पन्न करना आवश्यक होता हैं। जिनमें बालक आसानी से सीख सके। बालक पाठ को रुचि पूर्वक पढ़े। तथा पढ़ते समय कठिनाई का अनुभव न करें। इसके लिए कुछ इस प्रकार के शिक्षण उपकरणों का उपयोग किया जाता हैं जिनके प्रति बालक आकर्षित होकर सीखनें के लिए अभिप्रेरित होता हैं। इन शिक्षण उपकरणों के रुप में हम दृश्य श्रव्य सामग्रियों का प्रयोग करते है। इनके द्वारा बालक की ज्ञानेन्द्रियाँ क्रियाशील रहती हैं अतः बालक नीरस न होकर पाठ को रुचिपूर्ण ढ़ग से सीखता है। यह उपकरण तीन रुपों में होती हैं -

पहली वह जिसके द्वारा सुनकर ज्ञान प्राप्त करता हैं, दूसरी वह जिसमें बालक देखकर सीखता हैं तथा

तीसरी वह जिसके अन्तर्गत सुनने तथा देखने दोनों का लाभ मिलता है। इस प्रकारं के शिक्षण उपकरणों के द्वारा पाठ के सूक्ष्म से सूक्ष्म तथा कठिन से कठिन भागों को भी सरलतापूर्वक समझा जा सकता है।

7.2 उददेश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगें कि -

शिक्षण उपकरणों के प्रयोग का हिन्दी शिक्षण में महत्व जान सकें।

शिक्षण उपकरणों का चयन किस प्रकार किया जाय।

हिन्दी शिक्षण में शिक्षण उपकरणों का प्रयोग किस प्रकार किया जाए।

शिक्षण उपकरण के द्वारा हिन्दी शिक्षण का ज्ञान प्राप्त कर सकें ।

सहायक शिक्षण सामग्री द्वारा हिन्दी शिक्षण का ज्ञान प्राप्त कर सके।

हिन्दी शिक्षण में उपकरणों के प्रयोग को जान सके।

हिन्दी शिक्षण में उपकरणों का प्रयोग कर सकें।

हिन्दी शिक्षण में उपकरणों की उपयोगिता को जान सके।

7.3 शिक्षण अधिगम सामग्री के मनोवैज्ञानिक आधार

शिक्षण का अभिप्राय उसके लक्ष्य तथा उददेश्य से हैं जो कि व्यक्ति में वांछित परिवर्तन के लिए उपयोगी होती हैं। शिक्षण का अर्थ उस अधिगम अनुभवों से हैं जो शिक्षक से शिक्षार्थी में स्थानान्तरित होता हैं। इन शिक्षण अनुभवों का स्थानान्तरण शिक्षार्थी के ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से होता हैं। हम अपने विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से भिन्न-भिन्न प्रतिशत में सीखते है।

ज्ञानेन्द्री	अधिगम रुपान्तरण
स्वाद	1-0 %
स्पर्श	1-5%
गन्ध	3-5%

श्रवण 11-0%

दृश्य 83-0%

शिक्षार्थी क्रिया	अधिगम स्थायी
सुनना	20-0%
देखना	30-0%
बोलना	50-0%
सुनना एवं देखना	80-0%
बोलना एवं करना	90-0%

दृश्य-श्रव्य सामग्री के लिए अंग्रेजी में बहु चर्चित कविता हैं -

"The Thing Which I Hear,I May Forget

The Thing Which I See,I May Remember

The Thing Which I Do,I Cannot Forget".

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1- शिक्षण प्रक्रिया के आधार पर शिक्षण अधिगम सामग्री के मनोवैज्ञानिक आधार से आप क्या समझते है?

....
....
....

....
....
....
....

....
....

7.4 शिक्षण उपकरण का अर्थ

शिक्षण को अधिक स्पष्ट रोचक, सरल तथा अर्थपूर्ण बनाने के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री की अति आवश्यकता पड़ती हैं किसी भी शिक्षण को अधिक सरल बनाने के लिए व ज्ञात करने के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री एक माध्यम है। हमारा पढ़ना-लिखना तभी महत्वपूर्ण हो सकता है। जब हम पढ़ते व लिखते समय अधिक शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करें।

शिक्षण विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त किया जाता हैं जिसमें दृष्य सामग्री, श्रव्य सामग्री और दृष्य-श्रव्य सामग्री में आँख और कान साथ-साथ कार्य करते है। शिक्षण अधिगम सामग्री की आवश्यकता सामान्य नियमित और दिव्यांग दोनों को ही सिखाने में अति आवश्यक या अत्यधिक भूमिका निभाती हैं।

सामान्य शिक्षण में स्लेट, चॉक, श्यामपट्ट आदि आते है लेकिन दिव्यांग्र बच्चों में इसकी उपयोगिता ज्यादा आवश्यक हो जाती है। शिक्षण सामग्री दिव्यांग बच्चों को शिक्षण प्रशिक्षण देने के लिए pathyapustak pathyayojana srot samagri textbook,lessonnots, refinances और स्त्रोत सामग्री होते है। शिक्षण यत्रं इन सभी को शामिल किया जाता है। जिसके द्वारा दिव्यांग बच्चों को शिक्षण प्रशिक्षण देने व पढ़ने लिखने में सहायक हैं जैसे- चार्ट पेपर, प्रतिरुप, चित्र, ऑडियों सामग्री, ग्राफ, विडियों सामग्री स्लाइड, मूर्त पदार्थ और प्लास्टिक प्रतिरुप आदि,

अगर हम लोग शिक्षण सामग्री और शिक्षण यत्रं की बात करें तो इन सब सामग्रियों को शिक्षक विषय विशेषज्ञ ,और कामर्शियल एजेंसी तैयार करती है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 2- शिक्षण उपकरण से आप क्या समझते हैं, संक्षेप में लिखों।

....
....
....

....
....
....
....

....

....

7.5 शिक्षण उपकरण की परिभाषा

बच्चों में सूक्ष्म तथ्यों को सुनकर समझने की क्षमता कम होती हैं इसलिए विषय कौशल का ज्ञान पाठ्य पुस्तको के अतिरिक्त स्थूल वस्तुओं की सहायता से दिया जाना आवश्यक शिक्षण हैं इस प्रकार प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं शिक्षण अधिगम सामग्री कहलाती हैं।

बर्नर ने शिक्षण अधिगम सामग्री के तीन माध्यम बताए ॅ हैं जो कि क्रिया आधारित अधिगम प्रतिरुप रेखा चित्रों को प्रयोग तथा भाषा एवं संकेतों पर निर्भर करता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 3- शिक्षण उपकरण की परिभाषा लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

7.6 विषय प्रवेश

आदि काल से आज तक के शिक्षण में अनेक ा प्रचलित रहें हैं जिनमें उद्देश्यों की समानता के होते हुए भी विधि एवं प्रविधियों तथा साधनों की विविधता देखने को मिलती है। एक समय था जब विद्यालय एक ऐसी संस्था थी जिनमें शिक्षण कार्य स्वयं शिक्षक द्वारा मैजिक रुप से किया जाता था। उनको किसी भी अव्य साधन से इस कार्य में सहायता नहीं मिलती थी। और बालक निष्क्रिय श्रेता बना रहता है। आधुनिक शिक्षा बाल केन्द्रित हैं। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए बालक की योग्यता रुचि मनोहन्तियों आवश्यकता आदि को आधार बनाया जाता है। अतः शिक्षक क्रिया को सरल, सजीव, तथा प्रभावी बनाने के लिए यह आवश्यक हैं कि नवीन सामग्री को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाय कि उसका स्वरुप छात्र को

अधिकाधिक सरल एवं स्पष्ट हो जाए। ऐसा करने के लिए शैक्षिक उपकरणों की आवश्यकता पड़ती हैं इन शैक्षिक उपकरणों को शिक्षण सामग्री के नाम से पुकारा जाता है।

शिक्षण- सामग्री के दो प्रमुख तत्व है- माध्यम, तथा विथा। विथा उद्देश्पक का वह रुप हैं जिसे छात्रों के सम्पर्क में लाया जाता है। इस प्रकार रेखाचित्र, छायाचित्र, आदि अनेक प्रकार की विधाओं का निर्माण करते है। इन छाया चित्रोंें रेखाचित्रों प्रतिमूर्तियों आदि को प्रदर्शित करने लिए अनेक प्रकार के माध्यम प्रयोग में लाये जा सकते है। जैसे- पुस्तक, प्रोजेक्टर, चलचित्र आदि। इस प्रकार एक सम्पूर्ण शिक्षण सामग्री में ये दोनों माध्यम एवं विधा निहित हैं। दूसरे शब्दों में एक सम्पूर्ण शिक्षण सामग्री इन दोनों के संयोग से निर्मित होती है। बिना माध्यम के विधा का उपयोग सीमित हैं और बिना विधा का उपयोग सीमित है और बिना विधा के माध्यम अपर्याप्त एवं निरर्थक है।

उक्त सन्दर्भ में आज कल हार्डवेयर तथा सोफ्टवेयर शब्दों का प्रचलन बहुत हो रहा है। शिक्षण - सामग्री में प्रयुक्त की जाने वाली मशीने सम्बन्धी वस्तुएँ जैसे- फिल्म, खण्ड प्रोजेक्टर ओवर हेड प्रोजेक्टर जिन्हें हम उपर माध्यम कह आये हैं हार्डवेयर कहलाते है। और इनमें उपयोग आने वाली वस्तुएँ, जैसे- फिल्म, खण्ड प्रोजेक्टर ओवर हेड प्रोजेक्टर अवधारणा आदि का निर्माण करते हैं। इस प्रकार हार्डवेयर और साफ्टवेयर को और अधिक स्पष्ट करने के लिए नीचे इसका संक्षिप्त विवेचन किया जा रहा है।

हार्डवेयर का अविर्भाव विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी से हुआ है। हार्डवेयर उपागम शिक्षण प्रकिया का नशीनी करण करता हैं, जिससे शिक्षक अधिक छात्रों को कम व्यय एवं समय में शिक्षिप्त कर सके। हार्डवेयर उपागमों के अन्तर्गत चलचित्र, टेपरिकार्डर, दूरदर्शन, शिक्षण मशीन तथा कम्प्यूटर आते है।

सोफ्टवेयर उपागम को अनुदेशन तकनीकि, शिक्षण तकनीकी भी कहते है। इसमें शिक्षण मशीनों का प्रयोग न करके शिक्षण तथा सीखने के सिद्धान्त का प्रयोग बालकों में आपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाने के लिए किया जाता है। इसका सम्बन्ध शिक्षा के सिद्धान्तों उद्देश्यों को व्यवहारिक रुप में लिखने शिक्षण प्रविधियों अनुदेशन प्रणाली के पुनर्बलन तथा मूल्यांकन से होता है। समाचार पत्र, पाठ्य पुस्तक मैगनीज शैक्षिक खेल फ्लैश कार्ड आदि साफ्टवेयर के अंग हो सकते है।

श्रव्य-दृश्य सामग्री के कार्य-श्रव्य-दृश्य सामग्री के कार्य एवं महत्व पर नीचे की पंक्तियों में प्रकाश डाला जा सकता हैं-

सर्वोत्तम प्रेरक- श्रव्य-दृश्य सामग्री बालको का ध्यान आकर्षित एवं केद्रित करने में सहायक हैं। साथ ही उनमें रुचि एवं उत्साह उत्पन्न करते हैं। वे उनके ध्यान को आकर्षित करके ज्ञान को स्थूल रुप प्रदान करते है।

1. मौखिक शिक्षण के आधार- ये साधन स्पष्ट अवधारणाएँ प्रदान करते है और अधिगम में शुद्धता लाते है। साथ ही उसे अर्थ प्रदान करते है जो शब्दों द्वारा प्रदान किया जाता है। ये साधन छात्रों की शब्दावली में भी वृद्धि करते है।

2. स्पष्टीकरण- इसके द्वारा बालकों को कठिन से कठिन सामग्री का स्पष्टीकरण प्रदान किया जाता है। इनके प्रयोग से संकल्पनाओं के स्पष्टीकरण में सहायता मिलती है।

3. सार्थक अनुभव- इसके द्वारा छात्रों को प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान किये जाते है। प्रत्यक्ष अनुभव सबसे शिक्षाप्रद होते है। इनके माध्यम से संसार की जटिल एवं विशाल वस्तुओं को साकार किया जाता है। साथ ही जटिल अनुभवों को सार्थक एवं सरल बनाया जाता है।

4. रटने को कम करना- इनके प्रयोग से छात्रों में पाठ के लिए रुचि विकसित की जाती है तथा ज्ञान को स्वयं करके सीखने के लिए प्ररित किसा जाता है। इसलिए उन्हें किसी चीज को रटने के लिए बाध्य नहीं होना पड़ता है।

5. विविध अनुभव- इसके प्रयोग से छात्रों को विभिन्न प्रकार के अनुभव प्रदान किये जाते है। वे मात्र बात करके तथा चॉक द्वारा लिखकर ज्ञान प्राप्त करने के स्थान पर विभिन्न ढ़गों से विभिन्न अनुभवों को प्राप्त करते है। इन साधनों के महत्व के विषय में निम्नलिखित बातों को भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

श्रव्य-दृश्य सामग्री बच्चों के लिए नवीन वस्तु होते है। विद्यालय के सामान्य कार्यकलाप पढ़ना लिखना सुनना आदि से हटाकर उन्हें परिवर्तन की सुखद अनुभूति देते हैं। कार्य में परिवर्तन छात्रों की रुचि उनको एकाग्र होकर कार्य करने के लिए प्रेरित कर देती है।

श्रव्य-दृश्य सामग्री कक्षा के वातावरण में परिवर्तन कर देते है। उन्हें जब कोई फिल्मपट्टी या फिल्म दिखाई जाती है। तब छात्र उसी प्रकार मुक्त होकर हँसतें, बाते करते तथा प्रश्न पूछते है, जिस प्रकार वे कक्षा के बाहर पूछते हैं, इस वातावरण में अध्यापक का दृष्टिकोण अत्यधिक मैत्रीपूर्ण होता है। यह सुखद और स्वाभाविक वातावरण ज्ञानार्जन में बहुत सहायक होता है।

श्रव्य-दृश्य सामग्री सरलता से समझ में आ जाते है। भाषण द्वारा किसी वस्तु ु का विवरण या वर्णन समझने के बदले छात्रों को इन साधनों में अधिक रुचि होती है। भाषण में रुचि तभी होती है जब उनमें समझने की क्षमता विकसित हो चुकी हो, भाषा का ज्ञान हो और सम्बन्धित विषय में वे पहले भी कुछ ज्ञान अर्जित कर चुके हों। अधिकाश श्रव्य-दृश्य सामग्री छात्रों को कुछ न कुछ करने का अवसर प्रदान करते है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि इसके द्वारा छात्रों को कार्य करके सीखने के अवसर प्रदान किये जाते है।

7.7 शिक्षण उपकरण का वर्गीकरण

शिक्षण उपकरण को मुख्यतः तीन भागों में वर्गीकृत किया गया हैं-

पहला - दृश्य-श्रव्य के आधार पर

दूसरा - प्रक्षेपण के आधार पर तथा

तीसरा - क्रियात्मकता के आधार पर।

7.7.1 दृश्य-श्रव्य के □धार पर उपकरण का वर्गीकरण

इसके अन्तर्गत शिक्षण उपकरण को तीन रुपों में विभाजित किया गया हैं-

1. दृश्य सामग्री-

दृश्य सामग्री में ऐसी शिक्षण उपकरण का उपयोग किया जाता हैं जिसको छात्र आँखो से देखकर उपयोग कर सके ऐसी आँखो से देखकर उपयोग कर सके। ऐसी शिक्षण सामग्री दृश्य सामग्री कहलाती है।

2. श्रव्य-सामग्री-

श्रव्य सामग्री में ऐसी शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग किया जाता हैं जिन्हें कानों से सुना जा सके ऐसी सामग्री श्रव्य शिक्षण सामग्री कहलाती है।

3. दृश्य -श्रव्य सामग्री -

दृश्य-श्रव्य सामग्री में ऐसी शिक्षण सामग्रियों को रखा या शामिल किया जाता हैं जिससे बच्चा आँखों से देखकर व कानों से सुन कर या बालक सामग्री को देख व सुन कर या बालक उसे उपयोग कर सके ऐसी सामग्री दृश्य-श्रव्य शिक्षण अधिगम सामग्री कहलाती हैं।

दृश्य सामग्री श्रव्य सामग्री दृश्य-श्रव्य सामग्री

श्यामपट्टटेप रिकॉर्डर चलचित्र

चार्टग्रामोफोनटेलीविजन

चुम्बकीय पटलभाषा प्रयोगशालासंगणक

प्रतिरुपरेडियोवीडियों टेप

प्रदर्शन पटलध्वनि चलचित्र

चित्रध्वनि युक्त मुद्रित वस्तु

स्लाइड

ग्राफ

फ्लीप

फ्लैस कार्ड

वास्तविक वस्तु

नमूना

मानचित्र

चलचित्र खण्ड

7.7.2 प्रक्षेपण के □धार पर उपकरण का वर्गीकरण

प्रक्षेपित शिक्षण उपकरण अप्रक्षित शिक्षण उपकरण

1.चलचित्रप्रदर्शन पटल

2.चलचित्र खण्ड प्रक्षेपण श्याम पट्ट

3.रंगीन स्लाइडविज्ञाप्ति पट्ट

4.चित्र विस्तारक चुम्बकीय पटल

5.स्लाइड प्रक्षेपण चित्र सामग्री

6.ओवर हेड प्रोजेक्टर चार्ट फ्लैश कार्ड

ग्राफ

रेखाचित्र

पोस्टर

त्रिविम सामग्री

प्रतिरुप

नमूना

वास्तविक वस्तु

श्रवण सामग्री

रेडियों

विडियों

टेपरिकार्डर

संगणक

टेलीविजन

7.7.3 क्रियात्मक उपकरण का वर्गीकरण

ये ऐसे सामग्री होते हैं जिनके क्रियात्मकता के फलस्वरुप छात्र सीखते हैं तथा स्वयं छात्र भी उस क्रिया में भाग लेते हैं इस प्रकार के उपकरण सबसे अधिक प्रभावशाली एवं रोचक होते हैं। इसके द्वारा सीखा ज्ञान अधिक स्पष्ट एवं स्थायी होता है। इसके अन्तर्गत कुछ प्रमुख उपकरण हैं-

1.कम्प्यूटर असिस्टेड इन्सट्रक्शन

2.प्रोग्राम इन्सट्रक्शन

3.क्रिया प्रदर्शन

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 4- दृश्य-श्रव्य के आधार पर शिक्षण उपकरण को संक्षेप में वर्णन कीजिए।

....
....
....

....
....

....

....

....

....

7.8 शिक्षण उपकरण के महत्व और लाभ

बच्चों के शिक्षण प्रशिक्षण में शिक्षण अधिगम सामग्री का निम्नलिखित तरह-तरह से महत्व देखने को मिलता हैं-

1. शिक्षण अधिगम सामग्री, शिक्षण प्रक्रिया को सरल बनाने में मदद् करती है।

2. शिक्षण अधिगम सामग्री के द्वारा छात्रों को प्ररित करने में सहायता करती हैं।

3. शिक्षण अधिगम सामग्री के द्वारा शिक्षण के उद्देश्यों को हासिल करने में मद्द करती हैं।

4. शिक्षण अधिगम सामग्री से दिव्यांग बच्चों को किसी कार्य को सीखने में रुचि को बढ़ावा देता हैं।

5. शिक्षण अधिगम सामग्री के द्वारा बच्चा किसी कार्य को करने के लिए तैयार होता हैं।

6. शिक्षण अधिगम सामग्री छात्रों में रुचि और जिज्ञासा उत्पन्न करती है।

7. शिक्षण अधिगम सामग्री से बच्चों को अवधान केन्द्रित करने में लाभदायक है।

8. शिक्षण अधिगम सामग्री से बच्चों में अधिक अवबोधन विकसित होता हैं।

9. शिक्षण अधिगम सामग्री से कक्षा-कक्ष के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में फुर्ती से भाग लेता है।

10. शिक्षण अधिगम सामग्री के माध्यम से शिक्षक किसी भी क्रिया कलाप को ज्यादा प्रभावपूर्ण तरीके से होल्ड कर लेता है।

11. शिक्षण अधिगम सामग्री के द्वारा बड़े समूह को शिक्षक आसानी से संभाल लेता हेेेैं।

12. शिक्षण अधिगम सामग्री के द्वारा किसी कार्य कौशल को लम्बे समय तक याद रखता हैं।

13. शिक्षण अधिगम सामग्री से बच्चा इच्छानुसार कौशलों को सीखने के लिए शामिल होता हैं, जिससे बच्चे का गामक कौशल, सम्प्रेषण कौशल, संज्ञानात्मक कौशल और पूर्व-व्यवसायिक कौशलों का विकास होता है।

14. पिक्चर, प्रतिरुप और अन्य शिक्षण अधिगम सामग्री के माध्यम से बच्चे को अमूर्त विचार और अवधारणा सीखते है।

15. शिक्षण अधिगम सामग्री के माध्यम से बच्चों क्री प्रतिपुष्टि अच्छी मिलती हैं।

16. शिक्षण अधिगम सामग्री के माध्यम से बच्चा किसी भी क्रियाकलाप में फुर्ती के साथ प्रतिभागिता दिखाता हैं।

17. शिक्षण अधिगम सामग्री से बच्चा अर्थपूर्ण तरीके से सीखता है।

18. शिक्षण अधिगम सामग्री से बच्चा व्यक्तिगत और समूह और बहुसंवेदीय सीखने के लिए प्रोत्साहित होता हैं।

19. शिक्षण अधिगम सामग्री से शिक्षक की समय और उजामदमतहल दोनों की बचत होती है।

20. शिक्षण अधिगम सामग्री से बच्चा किसी भी क्रिया कौशल या आवधारणा को याद रखता हैं।

21. शिक्षण अधिगम सामग्री से बच्चा आसानी से सिखाये जा रहे कौशलों को समझ लेता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 5- हिन्दी भाषा शिक्षण में प्रयोग होने वाले उपकरणों के महत्व एवं लाभ स्पष्ट कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

7.9 श्रव्य-दृश्य सामग्री का उपयुक्त चयन तथा प्रयोग

श्रव्य-दृश्य सामग्री की प्रभाव उनके उपयुक्त चयन एवं प्रयोग पर निर्भर है। इन साधनों का चयन करते समय हमें निम्नलिखित महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

सामग्री अध्ययन के प्रकरण से सम्बन्धित होना चाहिए।

सामग्री द्वारा प्रकरण का शुद्ध स्वरुप प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

सामग्री छात्रों के अनुभवों और उनकी समझ के उपयुक्त होने चाहिए।

प्रयुक्त सामग्री छात्र के परिवेश के लिए अपरिचित न होने चाहिए।

सामग्री अच्छी हालत में होने चाहिए।

शिक्षणात्मक टिप्पणी से शुद्ध साधन को प्राथमिकता प्रदान की जानी चाहिए।

अत्यधिक सामग्री का अनावश्यक प्रयोग न किया जाना चाहिए।

सहज सामग्री को प्राथमिकता दी जानी चाहिए जबकि वैज्ञानिक सामग्री हमारे देश में सहज उपलब्ध नहीं है।

सामग्री ऐसी होनी चाहिए जिससे छात्र में रुचि विकसित हो।

साधनों का चयन हो जाने के बाद शिक्षक को अपनी तैयारी कर लेनी चाहिए उसे यह जान लेनी चाहिए कि साधनों में क्या क्या दिखाया गया हैं। और उसकी शिक्षण योजना गया हैं। किस तरह उपयोगी होगें। किसी फिल्म या फिल्म पट्टी के सम्बन्ध में उपलब्ध शिक्षण सामग्री को जब तक न पढ़ लिया हो अथवा स्वयं उसे देख न लिया गया हो तब तक कोई भी फिल्म या फिल्म पट्टी बच्चों को नहीं दिखानी चाहिए। फिल्म या फिल्म पट्टीयों की सूचियों में सार संक्षेप दिया रहता है, केवल उसी पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। श्रव्य-दृश्य सामग्री के प्रयोग के लिए छात्रों द्वारा दी जाने वाले तैसारी का महत्व शिक्षक द्वारा दी जाने वाली तैयारी से कम नहीं है। किसी फिल्म या फिल्म पट्टी का प्रदर्शन करने से पूर्व उसके प्रति छात्रों में उत्सकुता जागृत की जानी चाहिए जो फिल्म या फिल्मपट्टी में ध्यान से देखनी हो श्रव्य-दृश्य सामग्री को सर्वोत्तम स्थिति में तथा सर्वोत्तम ढ़ग से प्रयुक्त किया जाना चाहिए। जिससे कमरे में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति उन साधनों को आराम और सुविधा के देख और सुन सकें।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 7- श्रव्य-दृश्य सामग्री का उपयुक्त चयन तथा प्रयोग की चर्चा करें।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

7.10 शिक्षण उपकरण के चयन के सिद्धान्त

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण सामग्री का उपयोग बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, यह सामग्री विषय वस्तु के अनुरुप होना चाहिए, अनुउपयुक्त शिक्षण सामग्री से लाभ के स्थान पर हानि हो सकती हैं क्योकि ये छात्रों में भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर सकती हैं। उपयुक्त शिक्षण सामग्री के चयन में निम्न सिद्धान्तों का अवश्य ध्यान देना चाहिए।

7.10.1 चयन का सिद्धान्त

चयन की गई सहायक सामग्री शिक्षण उद्देश्य के अनुरुप होनी चाहिए वह पूर्णतः शैक्षिक महत्व की होनी चाहिए। निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से इसे समझा जा सकता हैं-

यह छात्रों के समूह, आयु तथा बौद्धिक स्तर की होनी चाहिए।

यह अधिगम उद्दयों को वास्तविक रुप में प्रदर्शित करती हो।

यह छात्रों में विशेष शैक्षणिक उद्देश्यों के प्रति रुचि तथा प्रेरणा उत्पन्न करने वाली हो ।

7.10.2 तैयारी का सिद्धान्त

इसके अन्तर्गत निम्न बिन्दु आते हैं-

शिक्षक को अपने छात्रों को मानसिक रुप से शिक्षण सामग्री के प्रति तत्पर कर देना चाहिए।

शिक्षण सामग्री बनाने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली वस्तुओं की प्रकृति का शिक्षक को आवश्यक ज्ञान हो ।

स्थानीय संसाधनों से शिक्षण सामग्री का निर्माण होना चाहिए।

शिक्षक ने पूर्व मे शिक्षण सामग्री तैयार करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया हो ।

7.10.3 उपयुक्त प्रस्तुति का सिद्धान्त

इस सन्दर्भ में निम्नलिखित बिन्दु हैं-

1. सहायक सामग्री को इस प्रकार से प्रस्तुत करना चाहिए कि प्रत्येक छात्र उसे आसानी से देख व सुन पाये।

2. सहायक सामग्री इस प्रकार प्रस्तुत करनी चाहिए कि उस सामग्री में किसी प्रकार का व्यवधान न उत्पन्न हो अथवा न टूटे ।

3. शिक्षक को सामग्री के प्रस्तुतीकरण से पहले उचित तरीके से प्रस्तुतीकरण के चरण का अनुमान लगा लेना चाहिए।

7.10.4 अनुक्रिया का सिद्धान्त

शिक्षक को इस प्रकार अनुदेशित करना चाहिए कि छात्र उस सामग्री के प्रति अधिकतम अनुक्रिया कर सके जिससे अधितम अधिगम हो।

7.10.5 नियत्रण का सिद्धान्त

शिक्षक को उस सहायक सामग्री के उपर पूरा नियंत्रण रखना चाहिए ऐसी स्थिति उत्पन्न न हो जिससे कि शिक्षक सहायक सामग्री पर नियंत्रण नही कर पा रहा हैं इससे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में व्यवधान उत्पन्न होता हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 6- शिक्षण उपकरण के तैयारी का सिद्धान्त को संक्षेप में लिखिए।

....
....
....

....
....
....
....

....
....

7.11 अच्छे शिक्षण उपकरण के गुण

अच्छी शिक्षण सामग्री के निम्न गुण होने चाहिए-

अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री आकर्षक व रुचिकर होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों का अवधान आसानी से केन्द्रित हो सके।

अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री विद्यार्थियों में वांछित परिवर्तन लाने वाला तथा उद्देश्यों की पूति करने वाला होना चाहिए।

अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री प्रकरण की आवश्यकता के अनुरुप होना चाहिए और उसका उपयोग तभी करना चाहिए जब उसकी आवश्यकता हो।

अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री बालक के बौद्धिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिए।

यह बहुत महँगी नहीं होनी चाहिए।

अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री इतनी स्पष्ट हो कि प्रत्येक विद्यार्थी अपने स्थान से सही अवलोकन कर सकें।

अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री में केवल उन्हीं बिन्दुओं को इंगित करना चाहिए। जिसकी आवश्यकता प्रकरण में हो।

यह सस्ता एवं आसानी से उपलब्ध होने वाला हो।

यह छात्रों को प्रेरणा एवं नवाचार की भावना उत्पन्न करने वाला होना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 8- शिक्षण उपकरण के किन्हीं चार प्रमुख गुणों की चर्चा करें।

....
....
....

....
....

....
....
....
....

7.12 शिक्षण उपकरण के उपयोग में सावधानियाँ

शिक्षण के दौरान शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करते समय शिक्षकों को निम्नलिखित तरह-तरह की सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए-

अच्छे शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग शिक्षण अधिगम प्रकिया के उचित चरण पर करना चाहिए।

अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री दिखाने एवं उपयोग में लाने में अधिक समय नहीं लगाना चाहिए। ऐसा न होने पर मूल पाठ पढ़ाने के लिए समय का अभाव हो जाता है।

एक ही पाठ में अत्याधिक अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री नहीं उपयोग करनी चाहिए अन्यथा कक्षा में छात्र दर्शक बन जाते हैं।

शिक्षक को यह प्रयास करना चाहिए कि सामग्री स्वनिर्मित हो।

अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री केवल उतनी ही देर दिखानी अथवा उपयोग करनी चाहिए जितनी देर आवश्यक हो नही तो छात्र का ध्यान उस सामग्री से हटकर शिक्षक की तरफ नहीं आ पाता हैं।

छोटे बालकों को पढ़ाने हेतु अधिक अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करना चाहिए तथा बड़ी कक्षाओं में कम।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 9- हिन्दी भाषा शिक्षण में उपकरण के प्रयोग को समय किन सावधानियों के ध्यान में रखना चाहिए चर्चा करें।

....
....
....

....

....

....

....

....

....

7.13 सारांश

भाषा शिक्षण एक प्रक्रिया है। इसके लिए विविध प्रकार की सामग्री का उपयोग किया जाता है। भाषा प्रयोग के सभी पक्षों का ज्ञान और अभ्यास समय और प्रयास साध्य गतिविधि है। इसके लिए विद्यार्थी जीवन सर्वाधिक उपयुक्त अवधि है इस दौरान विद्यार्थियों को प्रतयेक अवसर, प्रकार, समय और स्थान के अनुरुप भाषा के अधिगम पर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए। सहित्य के अनेक रुप, जनसंचार माध्यम, चलचित्र और कम्प्यूटर जैसे उपकरण इस दिशा में उपयोगी हो सकते है। अन्य साधन जिनमें पाठ्य पूरक और सहायक पुस्तके भी सम्मिलित है जिनमें भाषा के विविध पक्षों के शिक्षण और अधिगम में उपयोगी भूमिका निभाते है। इन्हीं के साथ यदि विद्यार्थी पुस्तकालय, समाचार, पत्र पत्रिकाओं साहित्यिक पुस्तकों इत्यादि का भी अध्ययन करें तो भाषा अधिगम अधिकाधिक सक्षम और व्यवहारिक हो सकता है। इन उपायों के आश्रय से भाषा शिक्षण को सरस, सहज, ज्ञानप्रद, सक्रिय और उपयोगी बनाया जा सकता है।

7.14 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1- शिक्षण का अभिप्राय उसके लक्ष्य तथा उद्देश्य से हैं जो कि व्यक्ति में वांछित परिवर्तन के लिए उपयोगी होती हैं। शिक्षण का अर्थ उस अधिगम अनुभवों से हैं जो शिक्षक से शिक्षार्थी में स्थानान्तरित होता हैं। इन शिक्षण अनुभवों का स्थानान्तरण शिक्षार्थी के ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से होता हैं।

उत्तर 2- शिक्षण को अधिक स्पष्ट रोचक, सरल तथा अर्थपूर्ण बनाने के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री की अति आवश्यकता पड़ती हैं किसी भी शिक्षण को अधिक सरल बनाने के लिए व ज्ञात करने के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री एक माध्यम है। हमारा पढ़ना-लिखना तभी महत्वपूर्ण हो सकता है। जब हम पढ़ते व लिखते समय अधिक शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करें। शिक्षण विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त किया जाता हैं जिसमें दृष्य सामग्री, श्रव्य सामग्री और दृष्य-श्रव्य सामग्री में आँख और कान साथ-साथ कार्य करते है। शिक्षण अधिगम सामग्री की आवश्यकता सामान्य नियमित और दिव्यांग दोनों को ही सिखाने में अति आवश्यक या अत्यधिक भूमिका निभाती हैं। सामान्य शिक्षण में स्लेट, चॉक, श्यामपट्ट आदि आते है अगर हम लोग शिक्षण सामग्री

और शिक्षण यत्रं की बात करें तो इन सब सामग्रियों को शिक्षक विषय विशेषज्ञ ,और कामर्शियल एजेंसी तैयार करती है।

उत्तर 3- बच्चों में सूक्ष्म तथ्यों को सुनकर समझने की क्षमता कम होती हैं इसलिए विषय कौशल का ज्ञान पाठ्य पुस्तको के अतिरिक्त स्थूल वस्तुओं की सहायता से दिया जाना आवश्यक शिक्षण हैं इस प्रकार प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं शिक्षण अधिगम सामग्री कहलाती हैं।

उत्तर 4- 1.दृश्य सामग्री- दृश्य सामग्री में ऐसी शिक्षण उपकरण का उपयोग किया जाता हैं जिसको छात्र आँखो से देखकर उपयोग कर सके ऐसी आँखो से देखकर उपयोग कर सके। ऐसी शिक्षण सामग्री दृश्य सामग्री कहलाती है। जैसे-, श्यामपट्ट, चाट, चुम्बकीय पटल, प्रतिरुप, प्रदर्शन, पटल चित्र, स्लाइड, ग्राफ, फ्लीप, फ्लैस काडर्, वास्तविक वस्त,ु नमूना, मानचित्र और चलचित्र खण्ड आदि

2. श्रव्य-सामग्री- श्रव्य सामग्री में ऐसी शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग किया जाता हैं जिन्हें कानों से सुना जा सके ऐसी सामग्री श्रव्य शिक्षण सामग्री कहलाती है। जैसे- टेप रिकॉर्डर, ग्रामोफोन, भाषा प्रयोगशाला और रेडियो आदि

3. दृश्य -श्रव्य सामग्री - दृश्य-श्रव्य सामग्री में ऐसी शिक्षण सामग्रियों को रखा या शामिल किया जाता हैं जिससे बच्चा आँखों से देखकर व कानों से सुन कर या बालक सामग्री को देख व सुन कर या बालक उसे उपयोग कर सके ऐसी सामग्री दृश्य-श्रव्य शिक्षण अधिगम सामग्री कहलाती हैं। जैसे- चलचित्र, टेलीविजन, संगणक,

वीडियों टेप, ध्वनि चलचित्र और ध्वनि युक्त मुद्रित वस्तु आदि

उत्तर 5- बच्चों के शिक्षण प्रशिक्षण में शिक्षण अधिगम सामग्री का निम्नलिखित तरह-तरह से महत्व देखने को मिलता हैं शिक्षण अधिगम सामग्री, शिक्षण प्रक्रिया को सरल बनाने में मदद् करती है और ये छात्रों को प्रेरित करने में सहायता करती हैं। शिक्षण अधिगम सामग्री के द्वारा शिक्षण के उद्देश्यों को हासिल करने में मद्द करती हैं। इसके द्वारा बच्चा किसी कार्य को करने के लिए तैयार होता हैं। यह छात्रों में रुचि और जिज्ञासा उत्पन्न करती है। शिक्षण अधिगम सामग्री से बच्चों को अवधान केन्द्रित करने में लाभदायक है। शिक्षण अधिगम सामग्री से बच्चा इच्छानुसार कौशलों को सीखने के लिए शामिल होता हैं, जिससे बच्चे का गामक कौशल, सम्प्रेषण कौशल, संज्ञानात्मक कौशल और पूर्व-व्यवसायिक कौशलों और अमूर्त विचार और अवधारणा का विकास होता है।

उत्तर 6-शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण सामग्री का उपयोग बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, यह सामग्री विषय वस्तु के अनुरुप होना चाहिए, अनुउपयुक्त शिक्षण सामग्री से लाभ के स्थान पर हानि हो सकती हैं क्योकि

ये छात्रों में भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर सकती हैं। तैयारी का सिद्धान्त के अन्तर्गत निम्न बिन्दु आते हैं-

शिक्षक को अपने छात्रों को मानसिक रुप से शिक्षण सामग्री के प्रति तत्पर कर देना चाहिए।

शिक्षण सामग्री बनाने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली वस्तुओं की प्रकृति का शिक्षक को आवश्यक ज्ञान हो।

स्थानीय संसाधनों से शिक्षण सामग्री का निर्माण होना चाहिए।

शिक्षक ने पूर्व मे शिक्षण सामग्री तैयार करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया हो।

उत्तर 7- श्रव्य-दृश्य सामग्री की प्रभाव उनके उपयुक्त चयन एवं प्रयोग पर निर्भर है। इन साधनों का चयन करते समय हमें निम्नलिखित महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

सामग्री अध्ययन के प्रकरण से सम्बन्धित होना चाहिए।

सामग्री द्वारा प्रकरण का शुद्ध स्वरुप प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

सामग्री छात्रों के अनुभवों और उनकी समझ के उपयुक्त होने चाहिए।

प्रयुक्त सामग्री छात्र के परिवेश के लिए अपरिचित न होने चाहिए।

अत्यधिक सामग्री का अनावश्यक प्रयोग न किया जाना चाहिए।

सामग्री ऐसी होनी चाहिए जिससे छात्र में रुचि विकसित हो।

साधनों का चयन हो जाने के बाद शिक्षक को अपनी तैयारी कर लेनी चाहिए उसे यह जान लेनी चाहिए कि साधनों में क्या क्या दिखाया गया हैं। और उसकी शिक्षण योजना गया हैं। किस तरह उपयोगी होगें। श्रव्य-दृश्य सामग्री के प्रयोग के लिए छात्रों द्वारा दी जाने वाले तैसारी का महत्व शिक्षक द्वारा दी जाने वाली तैयारी से कम नहीं है।

उत्तर 8- अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री आकर्षक व रुचिकर होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों का अवधान आसानी से केन्द्रित हो सके और छात्रों को प्रेरणा एवं नवाचार की भावना उत्पन्न करने वाला होना चाहिए।

अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री विद्यार्थियों में वांछित परिवर्तन लाने वाला तथा उद्देश्यों की पूति करने वाला होना चाहिए।

अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री प्रकरण की आवश्यकता के अनुरुप होना चाहिए और उसका उपयोग तभी करना चाहिए जब उसकी आवश्यकता हो।

अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री इतनी स्पष्ट हो कि प्रत्येक विद्यार्थी अपने स्थान से सही अवलोकन कर सकें।

उत्तर 9- शिक्षण के दौरान शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करते समय शिक्षकों को निम्नलिखित तरह-तरह की सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए-

अच्छे शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग शिक्षण अधिगम प्रकिया के उचित चरण पर करना चाहिए।

शिक्षक को यह प्रयास करना चाहिए कि सामग्री स्वनिर्मित हो ।

अच्छी शिक्षण अधिगम सामग्री केवल उतनी ही देर दिखानी अथवा उपयोग करनी चाहिए जितनी देर आवश्यक हो नही तो छात्र का ध्यान उस सामग्री से हटकर शिक्षक की तरफ नहीं आ पाता हैं।

7.15 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1- सहायक उपकरणों के प्रयोग से भाषा शिक्षण को सरल और स्थायी बनाया जा सकता है। व्याख्या कीजिए ।

प्रश्न 2- हिन्दी शिक्षण में प्रयुक्त हाने वाले उपकरणों का तार्किक वर्गीकरण कीजिए ।

7.16 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दू

चर्चा और स्पष्टीकरण के बिन्दुः-

इस इकाई के अध्ययन के बाद हो सकता है कि आप कुछ बिन्दुओं पर चर्चा करना चाहें व कुछ अन्य के बारे में कुछ स्पष्टीकरण चाहें, ऐसी स्थिति में कृपया उन्हें नीचे नोट कीजिए।

चर्चा के बिन्दु

....
....
....
....
....

....
....

....
....
....

स्पष्टीकरण के बिन्दुः-

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

इकाई 8- अधिगम-शिक्षण के दृश्य उपकरणों के प्रकार

इकाई की रुप रेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 उददेश्य

8.3 दृश्य उपकरणों के प्रकार

8.4 श्यामपट्ट

8.4.1 परिचय व अर्थ

8.4.2 श्यामपट्ट का महत्व

8.4.3 श्यामपट्ट का उपयोग

8.4.4 श्यामपट्ट के उपयोग से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें

8.4.5 श्यामपट्ट लेखन कौशल

8.4.6 श्यामपट्ट सामग्री के उद्देश्य

8.4.7 श्यामपट्ट सामग्री मूल्यांकन पपत्र

8.5 चार्ट

8.5.1 परिचय व अर्थ

8.5.2 चार्ट के प्रकार

8.6 मानचित्र और नक्शा

8.6.1 मानचित्र का स्वरुप

8.6.2 मानचित्र का अर्थ

8.6.3 मानचित्र की उपयोगिता

8.6.4 मानचित्र व रेखाचित्र

8.6.5 हिन्दी भाषा शिक्षण में मानचित्र की उपयोगिता

8.6.6 हिन्दी भाषा शिक्षण में मानचित्र की प्रयोग विधि

8.6.7 मानचित्र के प्रकार

8.7 प्रतिरुप

8.7.2 परिचय

8.7.2 प्रतिरुप मॉडल की अवधारणा

8.7.3 शिक्षण में प्रतिरुप की विशिष्टताऐं

8.7.4 आधुनिक शिक्षण में प्रतिरुप के प्रकार

8.7.5 प्रतिरुप द्वारा शिक्षण कराते समय ध्यान रखने योग्य बातें

8.7.6 हिन्दी शिक्षण में प्रतिरुप के उपयोग

8.7.7 हिन्दी शिक्षण में प्रतिरुप से लाभ

8.8 कार्यशील प्रतिरुप

8.8.1 कार्यशील प्रतिरुप

8.8.2 हिन्दी शिक्षण में उपयोगी अनौपचारिक उपकरण

8.9 फ्लैश कार्ड

8.9.1 फ्लैश कार्ड प्रस्तावना एवं अवधारणा
8.9.2 फ्लैश कार्ड की परिभाषा
8.9.3 फ्लैश कार्ड लाभ
8.9.4. फ्लैश कार्ड के महत्व
8.9.5 हिन्दी भाषा शिक्षण में फ्लैश कार्ड का उपयुक्त चयन और उपयोग
8.9.6 फ्लैश कार्ड प्रयोग विधि
8.10 सारांश
8.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.12 निबन्धात्मक प्रश्न
8.13 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

8.1 प्रस्तावना

शिक्षण प्रक्रिया को सरल, सहज, स्पष्ट एवं रोचक बनाने हेतु अध्यापन के दौरान पाठ्य सामग्री को समझाते समय शिक्षक जिन जिन सामग्रियो का प्रयोग करता हैं, वह सहायक शिक्षण सामग्री कहलाती हैं। किन्तु आधुनिक शिक्षण प्रणाली मे सहायक सामग्री के संबंध में कई नवाचार हुए है जिनकी सहायता से अध्ययन को रोचक व प्रभावपूर्ण बनाया जा सकता है। जैसे दृश्य सामग्री इन सामग्रियों द्वारा सीखा ज्ञान न केवल छात्रो मे उत्साह जागृत करता है वरन् सीखे हुए ज्ञान को लंबे समय मक अपने स्मृति पटल में संजोए रख सकता हैं। दूसरी और शिक्षा कभी अपने अध्यापन के प्रति उत्साहित रहता है। परिणाम स्वरुप कक्षा का वातावरण हमेशा सकारात्मक बना रहता है। आज वही शिक्षक छात्रों के लिए आदर्श होता है, और उसी शिक्षक का शिक्षण आदर्श शिक्षण कहलाता है जो अपनी पाठ्य सामग्री को इन रोचक सहायक सामग्री के माध्यम से प्रस्तुत करता है। क्योंकि ये न केवल छात्रो का ध्यान केन्द्रित करती है। बल्कि उन्हे उचित प्रेरणा भी देती है चाहे वह वास्तविक वस्तु हो, चित्र, चार्ट तथा कोई तकनीकि उपकरण सभी से छात्रों के मस्तिष्क में एक बिंब निर्माण करता है। अतः वर्तमान शिक्षण के अन्तर्गत अध्यापन मे नवीनता लाने के लिए सहायक सामग्री का प्रयोग शिक्षक के लिए वांछनीय ही नहीं अनिवार्य भी है। यहाँ कुछ प्रमुख दृश्य उपकरणों का विस्तार से वर्णन निम्नलिखित है।

8.2 उददेश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे कि -

दृश्य उपकरण क्या है? इसे बता सकेंगे।

दृश्य उपकरणों के प्रयोग का भाषा शिक्षण मे महत्व जान सकेंगे।

दृश्य उपकरणो का चयन किस प्रकार किया जाय बता सकेंगे।

भाषा शिक्षण में दृश्य उपकरणो का प्रयोग किस प्रकार किया जाए।

दृश्य उपकरण के द्वारा भाषा शिक्षण का ज्ञान प्राप्त कर सके।

श्यामपट्ट के द्वारा भाषा शिक्षण का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

चार्ट के द्वारा भाषा शिक्षण का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

नक्शा और मानचित्र के द्वारा भाषा शिक्षण का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

प्रतिरुप और कार्य शील प्रतिरुप के द्वारा भाषा शिक्षण का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

भाषा शिक्षण में फ्लैश कार्ड का उपयोग कर सकें।

8.3 दृश्य उपकरणों के प्रकार

दृश्य उपकरण का प्रयोग छात्र और विषय उपकरण के मध्य अन्तः क्रिया को तीव्रतम कर छात्रों को शिक्षोन्मुखी तथा जिज्ञासु बनाती है। यह एक अच्छे शिक्षक के लिए विषय पर आधिपत्य अध्यापन का बहुपयोगी माध्यम है।

हिन्दी भाषा शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली दृश्य उपकरण को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है-

क- परम्परागत सहायक उपकरण- परम्परागत सहायक उपकरण में श्यामपट्ट, पुस्तक तथा पत्र-पत्रिकायें आदि का समावेश होता है।

ख- दृश्य सहायक उपकरण- दृश्य सहायक उपकरण में वे सामग्री आती हैं जिन्हें देखा जा सकता है जैसे वास्तविक पदार्थ चित्र मानचित्र रेखचित्र चार्ट, पोस्टर्स, प्रतिमान, बुलेटिन बोर्ड, फ्लैनल बोर्ड ग्लोब तथा ग्राफ ।

ग- यांत्रिक सहायक उपकरण- यांत्रिक सहायक उपकरण में निम्न सामग्री का समावेश होता है। प्रोजेक्टर, एपिडायस्कोप फिल्म स्ट्रिप्स चलचित्र दूरदर्शन और विडियों टेपरिकार्डर व कैसेट।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1- किसी एक दृश्य उपकरण के प्रकार को लिखिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

8.4 श्यामपट्ट

8.4.1 परिचय व अर्थ

यह शिक्षा का एक महत्वपूर्ण सामग्री हैं। दुर्भाग्यवश भारत में यह उपेक्षित विद्यालय उपकरण हैं। विद्यालय भवनों का निर्माण करते समय कक्षाओं में श्यामपट्ट न तो उपयुक्त स्थान पर रखे जाते हैं और न ही उनकी हालत ठीक रहती हैं। जहाँ ये उपकरण है भी वहाँ या तो वांछनीय ढ़ग के नहीं है या बहुत ही उपेक्षित हालत में है।

शिक्षा आयोग ने भारत में श्यामपट्ट नामक साधन की स्थिति का विवरण देते हुए लिखा है, हमारे अधिकांश विद्यालय में विशेष कर प्राथमिक स्तर पर आज भी एक अच्छे श्यामपट्ट एक छोटे पुस्तकालय, आवश्यक नक्शे, चार्ट साधारण वैज्ञानिक उपकरण और आवश्यक प्रदर्शन सामग्री जैसे- बुनियादी साज-समाज और शिक्षण साधनों का पूर्ण आभाव सा रही हैं। शिक्षण की गुणता में सुधार लाने के लिए प्रत्येक विद्यालय को इस प्रकार के बुनियादी साज-समान और शिक्षण-साधनों का दिया जाता आवश्यक हैं। हमारी सिफारिश है कि प्रत्येक श्रेणी के विद्यालयों के लिए न्यूनतम आवश्यक शिक्षण साधनों एवं साज-समान की सूचियाँ तैयार की जायें। हम यह भी सिफारिश करते है कि प्रत्येक विद्यालय को तुरन्त एक अच्छा श्यामपट्ट दिया जाय।

वस्तुतः यह खेद जनक स्थिति है कि आज भारत में श्यामपट्ट का उतना प्रयोग नहीं किया जाता जितना तीस-चालीस वर्ष पूर्व अध्यापक करते थे ।जब तक हमारे देश में प्रशिक्षण महाविद्यालय इस सम्बन्ध में अधिक ध्यान नहीं देते, तब तक इस महत्वपूर्ण साधन ठीक-ठीक उपयोग नहीं किया जायेगा। दिल्ली स्थित दृश्य-श्रव्य शिक्षा के राष्ट्रीय संस्थान द्वारा श्यामपट्ट के उपयोग के सम्बन्ध में समय-समय पर विशिष्ट अल्पविधि पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जाये तो अच्छा होगा।

श्यामपट्ट का अर्थ- हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए श्यामपट्ट सबसे प्रभावी सामग्री हैं इसकी सहायता से छात्रों को प्रत्यय, तथ्य, सिद्धान्त आदि की व्याख्या को बड़े आसानी से समझायी जा सकती है। जब शिक्षक शिक्षण कार्य के समय श्यापट्ट पर लिखता हैं तब छात्र अपनी चक्षु एवं कर्ण दोनों ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग का आसानी से शिक्षा ग्रहण कर लेता हैं हिन्दी भाषा शिक्षण में श्यामपट्ट उपकरण का करना बहुत ही उपयोगी है जो बच्चे के शिक्षण कौशल के दौरान अपने अधिगम को मजबूत बनाने के लिए उपयोग करते हैं। जिससे बालक के हिन्दी अधिगम को बढ़ावा मिला और साथ ही साथ श्यामपट्ट के उपयोग का हिन्दी शिक्षण में इसके महत्व को स्पष्ट कर सके।

8.4.2 श्यामपट्ट का महत्व

श्यामपट्ट या चॉकबोर्ड कोई आकर्षक वस्तु नहीं हैं, परन्तु यह एक आकर्षणहीन काले रंग की वस्तु हैं परन्तु जब उसका ठीक-ठीक उपयोग किया जाता है तब वह बहुत ही प्रेरणादायक हो जाता हैं। स्वच्छता शुद्धता तथा तीव्रत   के मानक स्थापित करने में इसका महत्व बहुत अधिक हैं। बर्तनी को समझने में वह छात्रों की बहुत सहायता करता हैं। किसी पाठ के दौरान श्यामपट्ट पर बनाया गया कोई चित्र, निदर्श चित्र समुची कक्षा का ध्यान पाठ की ओर आकृष्ट कर सकता हैं। श्यामपट्ट पर लिखकर तथा रेखचित्र बनाकर शिक्षक पाठ की तात्विक बातों पर बल दे सकता हैं। कुछ रेखाओं के सहारे वह कोई नक्शा या चित्र छात्रों के समक्ष प्रस्तुत कर सकता हैं। श्यामपट्ट एक ऐसा साधन है जो कक्षा में सदैव उपलब्ध रहता है उसके उपयोग के लिए न किसी तकनीकि ज्ञान की आवश्यकता हैं और न उच्चकोटि के कलात्मक कौशल की। इसके उपयोग के लिए कोई अतिरिक्त उपकरण पास रखना भी जरुरी नहीं। साथ ही इसके उपयोग के लिए कमरें में अंधेरा करने की प्रकिया में समय की बर्बादी भी नहीं करनी पड़ती किसी फिल्म या रेडियों प्रसारण जैसे- साधनों के प्रयोग में भी श्यामपट्ट एक अनिवार्य साधन होता हैं।

8.4.3 श्यामपट्ट का उपयोग

हिन्दी भाषा शिक्षण का शिक्षक श्यामपट्ट का उपयोग निम्नलिखित बातों के लिए कर सकता हैं-

किसी नाम या शब्द या सम्बन्ध को स्पष्ट बनाने एवं महत्ता प्रदान करने के लिए।

सारांश देने के लिए।

योजना की रुप रेखा लिखने के लिए।

किसी वस्तु के क्रम को स्पष्ट करने के लिए।

चार्ट, रेखाचित्र, ग्राफ, लाक्षणिक उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए।

नियम, परिभाषा, अर्थ, शब्द, विलोम, पर्यायवाची शब्द, मुहावरा आदि लिखने के लिए।

मुख्य निर्देश देने के लिए।

सूचना अंकन तिथि ज्ञान देने तालिका लिखने आदि के लिए।

8.4.4 श्यामपट्ट के उपयोग से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें-

हिन्दी भाषा शिक्षण के शिक्षक को श्यामपट्ट का प्रयोग करते समय अधोलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

कक्षा का कार्य प्रारम्भ होने से पहले ही श्यामपट्ट के लिए आवश्यक सब वस्तुएं एकत्र कर लें सफाई उपकरण या झाड़न, चॉक या खड़िया पटरी नरकार फर्में, स्टेन्सिल अथवा अन्य आदि।

श्यामपट्ट के उधार के बायें कोने से लिखना प्रारम्भ करें।

श्यामपट्ट पर केवल महत्वपूर्ण बातें ही लिए स्मरण रहे कि श्यामपट्ट विस्तार पूर्ण कार्य के लिए उपयुक्त नहीं होता।

सामान्यतः प्रयोग में आने वाले शब्द संपेक्षों के अलावा अन्य शब्द संक्षेपों का प्रयोग न करे।

पहले से योजना बना ले कि श्यामपट्ट पर क्या लिखना हैं? कभी भी कोई पिक्चर/चित्र पहले से श्यामपट्ट पर बनाकर न रखें न किसी पुस्तक का लगातार सहारा लेकर बनायें।

श्यामपट्ट बच्चे के दृष्टि स्तर से बहुत ऊँचा न हो और सामने वाली डेस्कों की प्रथम पंक्ति श्यामपट्ट से कम से कम आठ फुट दूर हो।

श्यामपट्ट को झाड़न या कपड़े से साफ करें, हाथ से या अॅगुलियों से नही।

श्यामपट्ट की स्थिति ऐसे स्थान पर हो जहॉ से सभी छात्र उसको सुविधापूर्वक देख सके। उस पर प्रकाश या प्रतिबिम्ब न हो।

श्यामपट्ट पर सुन्दर तथा एक सा लिखना चाहिए इसके अतिरिक्त जो बात श्यामपट्ट पर लिखी जाये वह क्रम में होनी चाहिए जिससे छात्रों में भी क्रम में लिखने की आदत बन जाये।

श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों का आधार ऐसा होना चाहिए जिनको समस्त छात्र आसानी से देख सके। उस पर छोटे छोटे शब्द नहीं लिखने चाहिए।

श्यामपट्ट पर जो कुछ भी लिखा जाय वह सीधी पंक्ति में हो।

शिक्षक को लिखते समय श्यामपट्ट को ढ़क नहीं लेना चाहिए बल्कि उसे 450 के कोण पर ऐसा नहीं करेगा तो कक्षा में अनुशासन हीनता आने के अवसर उत्पन्न हो जायेगें।

शिक्षक को श्यामपट्ट पर लिखने के पश्चात एक ओर खड़ा होना चाहिए, कक्षा का निरीक्षण करना चाहिए और उनकी व्यक्तिगत कठिनाईयों को सुलझाना चाहिए। उसको ऐसा इसलिए करना चाहिए जिससे प्रत्येक छात्र लिखी हुई बात को ठीक प्रकार से देख सके।

शिक्षक श्यामपट्ट पर जो लिखे उसे अपने मुख से साथ साथ बोलता जायें।

शिक्षक को श्यामपट्ट पर लिखने समय कभी कभी छात्रों पर दृष्टि डाल लेनी चाहिए।

प्रतिवर्ष कम से कम एक बार श्यामपट्ट को अवश्य सुधारा सँवारा जाना चाहिए।

चाँक को दवा कर लिखना चाहिए जिससे अक्षर सुन्दर एवं आकर्षक बने।

श्यामपट्ट उचित आकार का होना चाहिए।

श्यामपट्ट पर लिखा जाने वाला अक्षर उचित आकार का होना चाहिए जिसे प्रत्येक विद्यार्थी अपनी जगह से स्पष्टता से देख एवं पढ़ सके।

8.4.5 श्यामपट्ट लेखन कौशल

हिन्दी भाषा के कक्षा शिक्षण में श्यामपट्ट एक प्रभावी अंग माना जाता हैं, इसकी सहायता से शिक्षक किसी भी तथ्य सिद्धान्त को आसानी से समझ सकता हैं। बालकों में अवधान केन्द्रित करने में भी श्यामपट्ट बहुत उपयोगी हैं। विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण में स्पष्ट एवं नुपुणता लाने में भी श्यामपट्ट एवं सहायक हैं, श्यामपट्ट के लेखन से बालक और शिक्षक दर एक विशेष तरह से प्रभाव दिखता हैं हिन्दी शिक्षण में श्यामपट्ट बहुत ही बड़ा भूमिका अदा करती हैं। जिसके माध्यम से बालक का सर्वागीण विकास होता है अतः श्यामपट्ट लेखन कौशल के निम्नलिखित घटक हैं-

लेखन की स्पष्टता- श्यामपट्ट लेखन कौशल का इस लेखन कौशल का प्रथम एवं सबसे आवश्यक घटक हैं, इसके अक्षरों के आकार में अन्तर अनुउपयुक्त पंक्ति से पढ़ा जा सकते वालों आता हैं इस प्रकार से जो लंेखन श्यामपट्ट पर लिखा जा रहा हैं। उस लेखन का स्पष्ट होना आति श्यामपट्ट होता हैं जिससे हिन्दी शिक्षण में कक्षा के सभी बालकों को सावधानी पूर्वक स्पष्ट रुप से समझने में सक्षम होते है।

स्वच्छता- हिन्दी शिक्षण के अन्तर्गत श्यामपट्ट का प्रयोग या श्यामपट्ट पर लेखन करते समय सबसे ज्यादा श्यामपट्ट स्वच्छता का विशेष ध्यान देना चाहिए जिससे दिखने में सुन्दर और लिखे हुए

शब्द और अक्षर स्पष्ट रुप से दिखाई पड़े। और बालक पढ़ने और लिखने में ध्यान आकर्षित करें। इसी हिन्दी शिक्षण में श्यामपट्ट के स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

उपयुक्तता- हिन्दी शिक्षण के श्यामपट्ट लेखन कौशल के अन्तर्गत शिक्षण बिन्दुओं शब्दों का रेखाकंन उपयुक्त रेखाचित्र तथा आवश्यक तथ्यों की उपयुक्तता को दर्शाना आदि आता हैं। जिससे बच्चा स्पष्ट रुप से समझकर अपनी दृष्टिगत भाषा को प्रयोग लाता है।

8.4.6 श्यामपट्ट सामग्री के उद्देश्य

बालको को हिन्दी शिक्षण के कौशलों में निपुणता प्राप्त करने के श्यामपट्ट दृश्य सामग्री का हिन्दी भाषा शिक्षण के दौरान प्रयोग करते हैं जिसके निम्न उद्देश्य होते हैं-

बालकों के अवधान को हिन्दी भाषा शिक्षण के प्रति केन्द्रित करना तथा उसे निरन्तर बनाये रखना।

हिन्दी भाषा शिक्षण को कक्षा में पढ़ाये गये प्रत्ययों में स्पष्ट करना।

हिन्दी भाषा शिक्षण के प्रति बालकों में लेखन प्रवृत्ति उत्पन्न करना।

हिन्दी शिक्षण में बालकों को उपयुक्त लेखन सामग्री उपलब्ध कराने में सहायक।

हिन्दी भाषा शिक्षण में पढ़ने और लिखने के दृष्टिगत समस्याओं को खत्म करना।

8.4.7 श्यामपट्ट सामग्री मूल्यांकन प्रपत्र-

श्यामपट्ट सामग्री का मूल्यांकन हम बालकों हिन्दी भाषा शिक्षण में निम्नलिखित तरह से करते है।

क्र.स.	कौशल तत्व	अच्छा	सामान्य	निम्न
1.	***लेखन में स्पष्टता*** शब्दों में पर्याप्त दूरी शब्दों का आकार रेखाओं की मोटाई			
2.	***लेखन की स्वच्छता*** रेखाओं में सीधा लिखना रेखाओं के मध्य अन्तर			

3. 4.	रेखाओं में एक सामान लिखना महत्वपूर्ण पाठ्यवस्तु पर केन्द्रीकरण ***लेखन में उपयुक्तता*** लेखन बिन्दुओं में निरन्तरता सरलता अवधान केन्द्रीयकरण ***अन्य*** रंगीन चॉक का उपयुक्त उपयोग लिखते समय बोलते रहना लेखन करते समय टेडे खड़ा होना व पीठ को कक्षा की ओर न करना। उपयोग के पश्चात श्यामपट्ट साफ करना।			

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 2- श्यामपट्ट से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 3- श्यामपट्ट के उपयोग और महत्व समझाइए।

प्रश्न 4- श्यामपट्ट के प्रयोग के दौरान व्यवहार्य सावधानियों का उल्लेख कीजिए।

8.5 चार्ट

8.5.1 परिचय व अर्थ

हिन्दी भाषा शिक्षण से सम्बन्धित विषय पढ़ाते समय चार्ट बहुत ही महत्वपूर्ण सामग्री बनते है। चार्ट से अभिप्राय है एक सीधी साधी और सपात चित्रात्मक प्रदर्शन वस्तु यदि इसका उपयोग ठीक तरह से किया जाय तो प्रदर्शित सूचना बहुत ही प्रभावी ◌ा से दर्शकों तक पहॅुचाई जा सकती है। चार्ट किसी घटना या क्रान्ति का क्रमिक विकास दिखाने के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं वास्तव में चार्ट वह माध्यम है जिसके द्वारा किसी वस्तु के अन्तसम्बन्ध तथा संगठन, भवों, विचारों तथा विशेष स्थलों को दृश्यात्मक रुप में प्रदर्शित किया जा सके। चार्ट के द्वारा महत्वपूर्ण सूचनाओं को वर्गीकृत करने के उत्तम साधन के रुप में चार्टों का प्रयोग होता हैं। पुस्तकें पढ़ते समय कई ऐसे जटिल विचार छात्रों को परेशान करते हैं। जिन्हें संक्षिप्त और सार रुप में चार्टों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। यरोलिमेक 1967 ने चार्ट के दो बुनियादी प्रकार बतायें हैं- औपचारिक और अनौपचारिक वस्तुतः चार्ट शब्द का प्रयोग विभिन्न प्रकार के लाक्षणिक प्रदर्शनों के लिए किया जाता है।

8.5.2 चार्ट के प्रकार

चार्ट के निम्नलिखित प्रकार होते है-

1. अनुवांशिक चार्ट- इस प्रकार के चार्ट मुख्यतः विकास तथा अभिवृद्धि को प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग में लाये जाते है।

2. धारावाहिक चार्ट- इस प्रकार के चार्टों द्वारा संगठनात्मक तत्वों तथा उसके क्रियात्मक सम्बन्धों को प्रदर्शित किया जाता है।

3. तालिका चार्ट- इनमें जानकारी सामान्य अनुक्रम से प्रस्तुत की जाती हैं। उदाहरणार्थ- अस्पताओं में रखे जाने वाले मरीजों के चार्ट जिसमें निश्चित समय पर दिये जाने वाले भोजन और औषधियों का विवरण रहता है। ऐतिहासिक चार्ट जिनमें कवियों की रचना सूची कालक्रमानुसार दी जाती हैं। तथा अन्य सम्बन्धित जानकारी रहती है।

4. वृक्ष की आकृति वाले चार्ट- विकास को प्रस्तुत करने के लिए ऐसे चार्ट उपयुक्त होते है। रेखा या तने को व्यक्त करने वाली अन्य किसी विधि से उद्भव को व्यक्त किया जाता है और बहुविधि विकास को शाखाओं द्वारा दिखाया जाता है।

5. आइसो टाइप चार्ट (मुद्रण चित्र शिक्षा की अन्तराष्ट्रीय पद्धति)- ये चार्ट आँकडों का चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण होते है। जिन छात्रों या व्यक्तियों को वांछित जानकारी ग्राफ से नहीं मिल पाती है उनके समकक्ष आँकडों का अर्थ ऐसे चार्ट की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है। इसलिए यह साधन

विद्यालयों तथा वयस्क शिक्षा केन्द्रों के लिए उपयोगी है। चित्रात्मक चार्ट यथा सम्भव सरल होना चाहिए साथ ही उसमें प्रयुक्त प्रतीत स्वतः स्पष्ट होने चाहिए।

6. विवरणात्मक चार्ट- इन चार्टों में ऐतिहासिक विकास या किसी प्रकिया विशेष के सभी चरणों का उल्लेख किया जाता है। जैसे- कवियों के द्वारा या लेखकों के द्वारा रचित और लिखित रचना आदि ।

7. सारणी चार्ट- इस प्रकार के चार्टोंमें आधार सामग्री को सारणी के रुप में प्रस्तुत किया जाता हैं ताकि तुलना करने में सुविधा हो।

8. सम्बन्धसूचक चार्ट- इस प्रकार के चार्ट में कार्य कारण सम्बन्ध दिखाया जाता है। जैसे- पर्यावरण प्रदूषण सम्बन्धी कारकों का उल्लेख।

9. वंशावली वंशानुक्रम सूचक चार्ट- इस प्रकार के चार्टो में एक ही भूल से विकसित विभिन्न अवस्थाओं का विवरण दिया जाता हैं जैसे- राजा महाराजाओं की या किसी परिवार की वंशावली।

10. वर्गीकरण सूचक चार्ट- ये चार्ट विभिन्न प्रकार के सम्बन्धो को दशार्ते है जैसे बुनियादी योजना चार्ट

में दिखाया जाता है।

चार्ट शिक्षक या छात्र में से कोई भी बना सकता हैं किसी इकाई विशेष के अध्यापन अध्ययन के दौरान मानकों का विकास करने या अध्ययन सम्बन्धी सामग्री का सार संक्षेप प्रस्तुत करने के साधन के रुप में ऐसे चार्ट तैयार किये जाते हैं।

शाब्दिक और आरेखीय दोनों प्रकार के संदेश प्रेषित करने के लिए चार्टो का उपयोग किया जाता है। आँकडो, रेखाचित्र, आरेखों, मानचित्र, छवि चित्रों आदि को चार्टों के माध्यम से भली प्रकार दिखाया जा सकता है। आप चाहें तो छपे छपाये चार्ट खरीद सकते हैं या अपनी आवश्यकताओं के अनुसार खुप ही चार्ट तैयार कर सकते है। हिन्दी भाषा शिक्षण इनका उपयोग अपने शिक्षण में पर्याप्त भाषा में कर सकता हैं। हिन्दी भाषा शिक्षण एक एक ऐसा विषय हैं जिसके द्वारा मानवीय सम्बन्धों का वर्णन किया जाता है। इसका शिक्षक चार्टो की सहायता से इन सम्बन्धों को स्पष्ट कर सकता हैं। परन्तु खेद की बात यह हैं कि भारत में हिन्दी शिक्षण में बने बनाये चार्ट अभी उपलब्ध नहीं है, क्योंकि इसका पाठ्यक्रम में समावेग अभी हुआ है। अतः हिन्दी भाषा शिक्षण के शिक्षकों को चार्टों के निर्माण में स्वय परिश्रम करना चाहिए तथा छात्रों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त करना चाहिए। और इस प्रकार चार्टों का निर्माण करके हिन्दी भाषा शिक्षण के प्रयोगशाला को सुसज्जित रखना चाहिए । जिससे उसके अध्ययन कार्य में समय समय पर ये प्रयोगशाला सहायक बन सके।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 5- हिन्दी भाषा के शिक्षण में चार्ट उपकरणों के प्रयोग की क्या आवश्यकता हैं?

प्रश्न 6- चार्ट के प्रयोग और प्रकारों का व्याख्या कीजिए।

8.6 मानचित्र और नक्शा

8.6.1 मानचित्र और नक्शा का स्वरुप

प्रायः मानचित्र किसी बड़े क्षेत्र का छोटा प्रतिनिधि रुप चित्रण है, जिसमें अंकित प्रत्येक बिन्दु मानचित्र क्षेत्र पर स्थित बिन्दु का संगत बिन्दु होता है। इस प्रकार मानचित्र और नक्शा तथा मानचित्रित क्षेत्र में स्थैतिक या स्थानिक सम्यकता स्थापित हो जाती है प्रचलन एवम् उपयोग में रहने के कारण इन रुढ़ चिन्हों का एक सर्वमान्य अन्तर राष्ट्रीय विधान सा बन गया है। इस प्रकार के चिन्हों के उपयोग से ज्ञान के भी ग्राह्य एवम् पठनीय हो जाते है। उद्देश्य विशेष की दृष्टि से विभिन्न विधियों द्वारा रेखाओं, शब्दों, चिन्हों, आदि का उपयोग किया जाता है, जिससे मानचित्र और नक्शा की ग्राहाता एवम् उपादेयता बढ़ जाती है। मानचित्र और नक्शा निर्माण के कला में पिछले कुछ दशकों में विशेषकर द्वितीय महायुद्ध काल में तथा परवर्ती काल में प्रचुर प्रगति हुई है और संप्रति कम से कम शब्दालेख के साथ मानचित्र और नक्शा में विभिन्न प्रकार के तक्ष्यों का सम्यक् परिलेखन संभव हो गया हैं किसी मानचित्र में कितने तथ्यों का ग्राहा समावेश समुचित रुप से किया जा सकता है, यह मानचित्र के पैमाने प्रक्षेप तथा मान चित्रकार की वैधानिक क्षमता एवम् कलात्मक बोध आदि पर निर्भर करता है।

मानचित्र और नक्शा वस्तुतः त्रिविम भूतल का द्विविम चित्र प्रस्तुत करता है। मानचित्र और नक्शा में किसी क्षेत्र के वैसे रुप का प्रदर्शन किया जाता है जैसा वह उपर से देखने में प्रतीत होता है। अतः प्रत्येक मानचित्र और नक्शा में द्विविम स्थिति तथ्य अर्थात् वस्तु की लम्बाई चौड़ाई चित्रित होती है, न कि ऊँचाई या गहराई उदाहरण स्वरुप साधारणतया धरातल पर स्थिति पर्वत मकान, या पड़े पौधों की ऊँचाई मानचित्र पर नहीं देख पाते और न ही समुद्रों आदि की गहराई ही देख पाते है, लेकिन संप्रति भूआकृति का त्रिविम प्रदर्शित करने के लिए ब्लाक चित्र तथा उच्चारण मॉडल आदि अत्यधिक सफलता के साथ निर्मित किए जा रहें है।

8.6.2 मानचित्र और नक्शा का अर्थ

हिन्दी का मानचित्र और नक्शा मान तथा चित्र दो शब्दों का सामाजिक रुप है, जिससे मान या माप के अनुसार चित्र चित्रित करने का स्पष्ट बोध होता है, इस प्रकार यह अंग्रजी के मैप शब्द की अपेक्षा जो स्वयं लैटिन भाषा के मैप शब्द से जिनका अर्थ चादर या तौलिया होता है। बना है, अधिक वैज्ञानिक एवम् अर्धबोधक हैं। मानचित्र और नक्शा के साथ ही चार्ट एवं प्लान शब्दों का उपयोग होता है। चार्ट शब्द फ्रेच भाषा के कोर शब्द से बना होता है, पहले बहुधा चार्ट एवम् मानचित्र शब्दों

का उपयोग एक दूसरे के अर्थ में हुआ करता था, मानचित्र और नक्शा और प्लान में भी व्यावहारिक अंतर हो गया हैं प्लान साधारणया उद्देश्य विशेष के लिए अपेक्षाकृत छोटे भाग को ठीक ठीक मापकर तैयार किए गए चित्र को कहते है।

8.6.3 मानचित्र और नक्शा की उपयोगिता

मानचित्र और नक्शा अनेक प्रकार के होते हैं और अनेक प्रकार से उपयोग है। प्रति इकाई स्थान का मानचित्र और नक्शा किसी अन्य प्रकार के वर्ण या आलंखन की अपेक्षा अधिक तथ्य सूचक एवम् समावेशी होता है। हजारों शब्दों में भी जिस तथ्य को ठीक ठीक वर्णन कर ज्ञा ान नहीं करा सकते हैं। उसका ज्ञान वैज्ञानिक □ से तैयार किया गया एक छोटा मानचित्र और नक्शा सुविधा से करा सकता है। इसलिये आजकल सभी प्रकार के ज्ञान विज्ञान आदि संबंधी वस्तु स्थिति के बोध के लिए मानचित्रों तथा समानता बोधी आकृतियों चित्रों आदि का अधिकाधिक उपयोग हो रहा है।

मानचित्र और नक्शा पूरे विश्व से लेकर छोटे से छोटे स्थान की भौगोलिक जानकारी के लिए एक सन्दर्भ का काम करता हैं।

मानचित्र और नक्शा किसी अज्ञात स्थान के लिए मार्गदर्शक और दिग्दर्शक का काम करता है।

थल, जल या वायु मार्ग से यात्रा करने में यात्रा के मार्ग की योजना बनाने और उस मार्ग पर बने रहने में सहायक।

नगर या ग्राम की भावी विकास की योजना बनाने के लिए।

सेना अपनी कार्यवाही सैनिकों की तैनाती शुत्र की स्थिति का आकलन एवं शस्त्राओं की तैनाती के लिए भी मानचित्र और नक्शा का अत्याधिक उपयोग करती है।

भूमि के स्वामित्व न्यायधिकरण एवम् कर निर्धारण के लिए सरकार मानचित्र और नक्शा पर निर्भर करती है।

पुलिस अपराधों का मानचित्र और नक्शा करके पता करती सकती है कि अपराधों में कोई पैटर्न है।

इसी प्रकार डॉ जान स्नों ने लन्दन में हैजा फैलने पर मानचित्र और नक्शा की सहायता से ही यह अनुमान लगा लिया था कि इसके लिए एक सार्वजनिक जल पम्प जिम्मेदार थी।

8.6.4 मानचित्र व रेखाचित्र

कुछ गतिविधियों को स्पष्ट करने दृश्यों व घटनाओं को संजीव करने या उस विषय में विद्यार्थियों की कल्पना को अपेक्षित स्वरुप प्रदान करने के लिए रेखाचित्र की मदद ली जा सकती है। रेखाचित्र में केवल रेखाओं के माध्यम से व्यक्ति या घटना को प्रदर्शित किया जाता है। यदि शिक्षक अच्छा चित्रकार हो तो इस माध्यम से विद्याथियों की अनेक कठिनाइयों का समाधान कर सकता है। भौगोलिक स्थितियों स्थानों जनसंख्या के घनत्व वनों की स्थिति खनिजों की उपलब्धता और साक्षरता जैसे सन्दर्भों को स्पष्ट करने में मानचित्रों का प्रदर्शन काफी उपयोगी होता है। इसी प्रकार आकड़ों की प्रस्तुति और तुलना के लिए ग्राफ का प्रयोग किया जा सकता है। इन उपायों से शाब्दिक प्रतीकों को मूर्तरुप प्रदान किया जा सकता है।

8.6.5 हिन्दी भाषा शिक्षण में मानचित्र की उपयोगिता -

हिन्दी भाषा शिक्षण में मानचित्र और नक्शा का भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है इसके द्वारा छात्रों के सम्मुख अमूर्त वस्तुओं का ज्ञान मूर्त कर दिया जाता हैं। हिन्दी भाषा शिक्षण का शिक्षक निम्नलिखित बातों का ज्ञान प्रदान करने के लिए का सकता है।

मानचित्र और नक्शा द्वारा राजनीतिक तथा प्राकृतिक दशा का सम्यक ज्ञान करा सकता है।

मानचित्र और नक्शा का प्रयोग स्थानों के निर्धारण के लिए प्रयोग स्थानों के निर्धारण के लिए प्रयोग स्थानों के निर्धारण के लिए प्रयोग किया जा सकता हैं यदि हिन्दी भाषा का शिक्षक स्थानीय कवियों लेखकों के विषय में अध्यापन कर रहा हैं तो उसके स्थानों को निर्धारित करने में इसके द्वारा सफल होगा तथा उसकी भौगोलिक स्थिति को समझ सकेगा।

मानचित्र और नक्शा द्वारा बच्चों को तुलनात्मक ज्ञान दिया जा सकता हैं।

मानचित्र और नक्शा द्वारा किसी स्थान या व्यक्ति के सम्बन्धों को प्रदर्शित करने में सहायता मिलती है।

मानचित्र और नक्शा का उपयोग हिन्दी भाषा का शिक्षक काल युग तथा राज्यों और देशों की बोली भाषा के परिवर्तनों को दिखाने के लिए भी किया जा सकता है।

8.6.6 हिन्दी भाषा शिक्षण में मानचित्र की प्रयोग विधि

चार्ट पेपर पर सूचना तथ्य चित्र आरेख,शब्दार्थ इत्यादि के अंकन और प्रस्तुति से भाषा के लिए पक्षों का व्यापक ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। व्याकरण के नियम व उदाहरण कठिन व नए शब्दों के अर्थ महत्वपूर्ण व्यक्तियों के चित्र व उनके विषय में सूचनाएँ काल-विभाजन आकड़े परिभाषाएँ शब्दार्थ इत्यादि के परिचय व प्रस्तुतिकरण के लिए चार्ट अत्यन्त उपयोगी है।

इसके उपयोग द्वारा विद्यार्थियों को कम समय व प्रयास से भाषा के मौलिक तत्वों का परिचय व अभ्यास कराया जा सकता है। जीवनियाँ व आत्मकथाएँ पढ़ाते हुए सम्बद्ध महापुरुषों के जीवन से जुड़े चित्र व आंकडा़ेें का प्रदर्शन इस प्रकार के अध्ययन को ज्यादा जीवन्त और अनुभवगम्य बना सकता है।

अतं में हम कह सकते हैं कि मानचित्र और नक्शा का उपयोग बिभिन्न प्रदेशों की जातियाँ, उपज तथा भाषाओं आदि का ज्ञान कराने के लिए भी किया जाता है।

यदि हिन्दी भाषा का शिक्षक मानचित्र और नक्शा के उपयोग का वास्तविक लाभ उठाना चाहता हैं तों उसको बाजार के बने मानचित्र का उपयोग कम करना चाहिए क्योंकि छात्र द्वारा बनाये हुए मानचित्र अधिक लाभ दायक सिद्व होगें। यदि छात्र मानचित्र स्वयं बनायेगें तो उनकी अभिव्यंजना शक्ति कल्पना शक्ति तथा निर्णयाक शक्ति का विकास होगा जब त कवे उनकों पढ़ने में भी सफल नहीं हो सकेगें इनके बनाने में सीखने की प्रक्रिया के प्रमुख सिद्धान्त करके सीखने का उपयोग होता है। करके सीखने का उपयोग होता है। करके सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होता है। इसीलिए हिन्दी भाषा शिक्षण में भाषा शिक्षक को अपने छात्रों से मानचित्र बनवाने और पढ़ने को कहना चाहिए जिससे बालक में चहुमुखी विकास होगा और बालक पहले की सारी पुरातत्व विदो को जान सकेगा।

8.6.7 मानचित्र के प्रकार -

मानचित्र बधोलिखित प्रकार के प्रयोग में लाये जाते है।

1. पाठ्य पुस्तकों के मानचित्र और नक्शा

2. चित्रात्मक मानचित्र और नक्शा- इस प्रकार के म मानचित्र और नक्शा में विभिन्न वस्तुओं इमारतों स्मारको तथा स्थितियों के चित्र प्रस्तुत किये जाते है।

3. दीवार मानचित्र- ये कक्षा की दीवारों पर अंकित किये जाते है ये छात्र तथा शिक्षक दोनों की दृष्टि से लाभदायक हैं शिक्षक किसी बात को समझाते समय पूर्ण कक्षा के ध्यान को इनकी सहायता से अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 7- हिन्दी भाषा के शिक्षण में मानचित्र और नक्शा की उपयोेगिता लिखिए।

.

8.7 प्रतिरुप

8.7.1 परिचय

हिन्दी शिक्षण में प्रतिरुप का विकास अभी नया है। प्रतिरुप अध्यापक को विभिन्न क्रियाकलाप को आकर्षित और रुचि शीलता बनाने में सहायता देता है। अध्यापक बालकों की आवश्यकता के अनुरुप प्रतिरुप तैयार करता है। विभिन्न शिक्षा और मनोविज्ञान ने प्रतिरुप उपागम को शिक्षण के लिए प्रस्ताव दिया है। सिमदकमत 1970 ने अंतक्रिया विश्लेषण को शिक्षण प्रतिरुप के रुप में रखा है। इस उपागम के लिए वह अध्यापक और विद्यार्थियों के ृजंजमउमदज को 10 श्रेणी में रखा हैं। भारत में प्रथम भारतीय प्रोजेक्ट प्रतिरुप शिक्षण की संरचना 1985 से 1986 के दौरान प्लान की गई थी।

8.7.2 प्रतिरुप मॉडल की अवधारणा

जब शिक्षक को वास्तविक पदार्थ उपलब्ध नहीं हो पाता हैं तब वह वास्तविक पदार्थो के मॉडल या नमूने प्रयोग में लाता है। इनके द्वार हिन्दी भाषा शिक्षण का ज्ञान शिक्षक सुगमता पूर्वक करा सकता है। यदि बने बनाये मॉडल न उपलब्ध हो तो शिक्षक अपने छात्रों से बनवा सकता है। बालक द्वारा बनवाने से उनकी बहुत सी मूल प्रवृतियों की संन्तुष्टि की जा सकती है। मॉडल द्वारा किसी वस्तु का भीतरी भाग जो सामान्यतः हमारी ऑखों से छिपा रहता है। दर्शनीय बनाया जा सकता हैं इनके द्वारा छात्र की दृश्यनीय काल्पनिकता को निश्चित प्रदान की जाती है। इसके द्वारा छात्र में निरीक्षण प्रवृत्ति को भी विकसित किया जा सकता है।

प्रमिरुप मॉडल त्रिविग दृश्य साधनों का काम करते है। आकार प्रकार या शक्ल सूरत को छोड़कर ये प्रतिरुप हर प्रकार से वास्तविक वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करते है। वास्तविक जीवन में बड़े आकार करते है। वस्तुओं को इसमें छोटा करके दिखाया जाता है। ताकि छात्र उनका बारीकी से निरीक्षण कर सके। प्रतिरुप सीधे काटदार या कार्यकारी थानी काग करते हुए दिखाये गये हो। उदाहरण के लिए सिन्धु घाटी सभ्यता के दौरान लोगों द्वारा पूजे जाने वाले देवी देवताओं के सीधे प्रतिरुप बनाकर छात्रों को दिखाये जा सकते हैं। इसी तरह से हिन्दी भाषा शिक्षण से सम्बन्धित कई विषयों के कई प्रकार के प्रतिरुप बनाए जा सकते है। तैयार किये जा सकने वाले प्रतिरुपों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे है-

ऐतिहासिक स्थापत्य कला और भूर्तिकला के प्रतिरुप

विभिन्न युगों में पूजे जाने वाले देवी-देवताओं के प्रतिरुप तैयार करने में सामान्यतः गत्ते लकडी बॉस थर्माकोल मोम प्लास्तर और पेरिस प्लास्तर धातुओं चिकनी मिट्टी डोरी तार आदि का प्रयोग होता है।

8.7.3 शिक्षण में प्रतिरुप की विशिष्टताऐं-

सीखने के परिणामों का विवरण- शिक्षा का एक मॉडल निर्दिष्ट करता हैं कि छात्रों का एक अनुदेशात्मक अनुक्रम द्वारा करने के बाद क्या करना चाहिए।

वातावरण पर विनिर्देशन- शिक्षण के एक मॉडल निश्चित शर्तों में निर्दिष्ट करता है कि पर्यावरण की स्थिति जिसके तहत छात्रों की प्रतिक्रिया को देखा जाना चाहिए।

प्रदर्शन के मापदण्ड का विवरण - इस मानदण्ड में बालक के प्रदर्शन ब उम्मीद की जाती है।

संचालन का विवरण -शिक्षण के मॉडल में उस तंत्र को निर्दिष्ट किया गया हैं जो पर्यावरण के साथ छात्र की प्रतिक्रिया और बातचीत की प्रतिक्रिया प्रदान करता है।

वैज्ञानिक प्रक्रिया- शिक्षा का मॉडल शिक्षार्थी के व्यवहार को संशोधित करने के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया पर आधारित है। यह तथ्यों का बेहतरीन संयोजन नहीं है।

8.7.4 □ धुनिक शिक्षण में प्रतिरुप के प्रकार-

1. सूचना प्रक्रियात्मक प्रतिरुप
2. सामाजिक अतः क्रिया प्रतिरुप
3. व्यक्तिगत प्रतिरुप
4. व्यवहार परिर्माजन प्रतिरुप

1. सूचना प्रक्रियात्मक मॉडल- सूचना प्रक्रियात्मक प्रतिरुप लोगों को पर्यावरण से उत्तेजनाओं को संभाल के रखने का उल्लेख करता है। यह डाटा ऑरगनाइज करता है, ज्ञानेन्द्रियों की समस्याओं को दूर करता हैं। सूचना प्रक्रियात्मक मॉडल अवधारणा को उत्पन्न करता हैं। समस्याओं का समाधान करता हैं।

2. सामाजिक अतःक्रिया प्रतिरुप- सामाजिक अतंक्रिया प्रतिरुप समाज और व्यक्ति के संबंधों पर जोर देता है।

3. व्यक्तिगत प्रतिरुप- यह प्रतिरुप व्यक्तिगत विकास में सहायता करता है। यह प्रतिरुप व्यक्तिगत रुप से भावनात्मक जीवन पर केन्द्रित होता है।

4. व्यवहार परिमार्जन प्रतिरुप- यह मॉडल बालक के बाहरी व्यवहार को बदलने में सहायता करता है।

8.7.5 प्रतिरुप द्वारा शिक्षण कराते समय ध्यान रखने योग्य बातें-

शिक्षण मॉडल के 6 मूलभूत प्रतिरुप हैं-

1. केंन्द्रित

2. वाक्य रचना

3. शिक्षण का सिद्धान्त

4. सामाजिक व्यवस्था

5. सामाजिक व्यवस्था

6. आवेदन संदर्भ

1.केंन्द्रित- यह शिक्षण प्रतिरुप का एक केन्द्रीय पहलू हैं। केन्द्र का सामान्य उद्देश्य शिक्षण और वातावरण का स्वरुप तैयार करना है।

2.वाक्य रचना- वाक्य रचना शिक्षण के संपूर्ण कार्यक्रम या संगठन के चरणों को क्रमबद्ध रुपद से सम्मिलित करता है।

3.शिक्षण का सिद्धान्त- यह तत्व शिक्षकों के मार्ग संबंध को स्वीकृत करता है और विद्यार्थियों की गतिविधियों के पहलूओं पर प्रतिक्रिया करता है।

4.सामाजिक व्यवस्था- यह आकर्षित भूमिका और शिक्षकों व छात्रों के बीच के संबंधों को बताता है। इसमें इस प्रकार के मानदण्ड देखे गए है उसमें छात्र व्यवहार को पुरस्कृत किया गया है।

5.सामाजिक व्यवस्था- आमतौर पर उपलब्ध सुविधाओं सहायक प्रणाली सामान्य मावन कौशल या शिक्षक की क्षमता और साधारण कक्षा के अलावा अतिरिक्त आवश्यकताओं से संबधित है।

6.आवेदन संदर्भ- शिक्षण विधियों के कई प्रकार उपलब्ध हैं । प्रत्येक मॉडल लक्ष्य संदर्भ में इसकी उपलब्धि में अलग अलग उपयोग में व्यवहार को वाछनीय बनाने का प्रयास करता हैं।

8.7.6 हिन्दी शिक्षण में प्रतिरुप के उपयोग-

यह अध्यापक को उचित शिक्षण तकनीकें, चयन करने में मदद करता हैं। साथ ही साथ शिक्षण स्थिति के लिए प्रभावपूर्ण विधि का उपयोग करने में मदद करता हैं।

प्रतिरुप सीखने वाले के व्यवहार में ऐच्छिक बदलाव लाने में मददगार होता है।

प्रतिरुप के द्वारा अध्यापक और विद्यार्थियों के बीच में अंतक्रिया को बढ़ावा मिलता है।

यह पाठयक्रम से संबंधित निर्देशात्मक सामग्री के चयन के लिए लाभदायी है।

यह उचित शैक्षणिक क्रियाकलाप की संरचना, तैयार करने में मदद करता है।

प्रतिरुप को रुचिपूर्वक और प्रभावशाली सामग्री बनाकर कक्षा के वातावरण में बदलाव लाया जा सकता है।

8.7.7 हिन्दी शिक्षण में प्रतिरुप से लाभ-

यह एक सीखने और सीखने का प्राकृतिक रुप है।

प्रतिरुप बच्चों में कल्पनाशीलता की शक्ति को बढ़ाने में मददगार है।

यह विद्यार्थियों में तार्किक शक्ति को बढ़ाने में मदद करता है।

यह वस्तुओं को सुव्यवस्थित तरीके से विश्लेषण करने में बालकों की मदद करता है।

प्रतिरुप बालकों को कक्षा में कौशल करना है।

यह बालकों को अच्छा अवलोकन में मदद करता है।

यह बालको को कक्षा कार्य में व्यस्त रखता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 8- हिन्दी भाषा के शिक्षण में प्रतिरुप की विशिष्टताऐं लिखिए।

....
....
....

....
....
....
....
....

.... प्रश्न
9- हिन्दी भाषा शिक्षण के आधुनिक शिक्षण में किसी एक प्रकार को समझाइये।

....
....
....

....
....
....
....
....

प्रश्न 10- हिन्दी भाषा शिक्षण में प्रतिरुप से क्या लाभ होता है।

....
....
....

....
....
....
....
....

8.8 कार्यशील प्रतिरुप

8.8.1 कार्यशील प्रतिरुप

हिन्दी शिक्षण के लक्ष्यभूत कौशलों पर प्रभावी अधिकार और निपुणता के लिए अनेक विषयों जैसे खेल मनोरंजन, समाज, विज्ञान, साहित्य, दर्शन, कला, इत्यादि को माध्यम बनाया जाता है। इस विधि को भाषा के विविध पक्षों पर अधिकार की दृष्टि से उपयोगी पाया जाता हैं। इस सन्दर्भ को समझने के लिए हिन्दी के शिक्षक को भी विज्ञान और समाज शास्त्र जैसे- विषयों के अध्यापकों की भॉति विविध उपकरणों का सहयोग लेना होता है। लेकिन जरुरी नहीं हैं कि भाषा शिक्षक भी इन उपकरणों के निर्माण पर अलग से समय और श्रम खर्च करें। इन उपकरणों को विज्ञान अथवा समाजशास्त्र की प्रयोगशालाओं में जाकर दिखाया जा सकता हैं और इस हेतु उन विषयों के शिक्षकों का सहयोग प्राप्त किया जा सकता हैं इस विधि में भाषा शिक्षण के लिए सदा सम्बन्ध विधि का

प्रयोग होता हैं। इस प्रकार के उपायों से शिक्षण अधिगम में विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाई जा सकती है।

8.8.2 हिन्दी शिक्षण में उपयोगी अनौपचारिक उपकरण-

उपर्युक्त प्रकरण में जिन सहायक उपकरणों की चर्चा की गई है, वे सभी कक्षा में औपचारिक शिक्षण के दौरान प्रयोग किये जाते है और उनका सीधा सम्बन्ध पाठ्य वस्तु से होता हैं। किन्तु शिक्षाशास्त्रियों के मतानुसार विद्यार्थियों के सामान्य बोध और विषय ग्रहयता के विस्तार के लिए कुछ अन्य उपायों अथवा संसाधनों का आश्रय भी लिया जा सकता है। ऐसे संसाधन पाठ्यवस्तु के ज्ञान पक्ष के साथ ही बोध पक्ष के अधिगम में उपयोगी हो सकते हैं। इनमें से कुछ का परिचय यहाँ प्रस्तुत है-

1. संग्रहालय- संग्रहालय वह स्थान या संस्था है जहाँ किसी विषय से संबन्धित दस्तावेज, उपकरण, साक्ष्य, चित्र, वस्प्रभूषण, फर्नीचर मूर्तिया, व अन्य साजो समान का संगह और प्रदर्शन किया जाता है। संग्रहालय के भ्रमण द्वारा विद्यार्थियों के सम्बन्ध पक्ष के अतीत से वर्तमान तक के सभी पक्षों का ज्ञान कराया जा सकता है। कुछ संग्रहालयों में से फिल्म डॉक्यूमेन्टरी और इसी किस्म के कार्यक्रमों की व्यवस्था भी होती है। जिससे उस स्थान के भ्रमण का लाभ कई गुणा बढ़ जाता है। पराम्परागत रुप से संग्रहालय इतिहास से सम्बद्ध रहें है, किन्तु आज कल विज्ञान, कला, विभजन, निर्माण, जैेसे अनेक विषयों के संग्रहालय स्थापित और प्रचलित हो रहे है।

2. टेशाटन- शैक्षिक या मंनोरंजन भ्रमण विद्यार्थियों को मनोरंजन के साथ ज्ञान व अनुभव भी प्रदान करता है। प्रत्येक शहर और राज्य में अनेक ऐतिहासिक सामाजिक और सांस्कृतिक स्थल होते है। विद्यार्थियों को दैनिक या अनेक दिवसीय भ्रमण या शिविर के लिए इन स्थानों पर ले जाया जा सकता है। भाषा के अनेक उपयोगी व व्यवहारिक पक्षों के प्रथम दृष्टया अनुभव और अन्तक्रिया के लिए इन भ्रमणो की पर्याप्त महत्वता हैै।

3. प्रतिस्पर्धा अथवा सम्मेलनों में सहभागिता- भाषा और सम्बद्ध पक्षों के मद्देनजर शिक्षक कक्षा, विद्यालय या अन्तविद्यालय स्तर पर स्पर्धा या सम्मेलन का आयोजन कर सकता है। सुलेख ,काव्य,-पाठ, भाषण वाद, विवाद और परिचर्या जैसे आयोजनों में सहभागी होकर विद्याथियों के ज्ञान, उत्साह, आनन्द और कौशल में पर्याप्त विकास होता है। प्रतिभागी और श्रोता दोनों ही पक्ष इस प्रकार के आयोजनों से लाभान्वित होते है।

4. परियोजना निर्माण- भाषा के अधिगम अभ्यास व सशक्तिकरण में विद्याथियों के व्यक्तिगत प्रयास और सामूहिक सहयोग को बढ़ाने के लिए परियोजना विधि एक सक्षम और सशक्त उपकरण हो सकती है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थी के छोटे समूहों को निश्चित दायित्व सौपा जाता है। पर्याप्त समय और संसाधन उपलब्ध कराये जाते है। शिक्षक का मार्गदर्शन व सहयोग उपलब्ध होता है। इन

परिस्थितियों में स्वयं प्रयास करके विद्यार्थी अनेक भाषा कौशलों का अर्जन व अभ्यास कर सकते हैं। हिन्दी भाषा के उद्भव व विकास, काल विभाजन, प्रत्येक काल की यात्रा, काव्य परिक्रम और मुहावरेदार नाटक तैयार करने जैली परियोजनाओं से विद्याथियों को स्वयं शिक्षण और सहपाठियों के साथ अध्ययन के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इन उपायों के आश्रय से भाषा शिक्षण को सरस सहज ज्ञानप्रद सक्रिय और उपयोगी बनाया जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 11- हिन्दी भाषा शिक्षण में कार्यशील प्रतिरुप के उपयोग का संक्षेप वर्णन कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

8.9 फ्लैश कार्ड

8.9.1 फ्लैश कार्ड प्रस्तावना एवं अवधारणा

फ्लैश कार्ड अध्यापन के अमूल्य साधन हैं इनके द्वारा प्रकरण को अधिक स्पष्ट और रोचक बनाया जाता हैं। जिन बातों का प्रत्यक्ष अनुभव छात्रों को नहीं होता वे फ्लैश कार्ड की सहायता से पर्याप्त सीमा तक स्पष्ट एवं सार्थक हो जाती है। अध्ययन अध्यापन की किसी ऐसी स्थिति की कल्पना नहीं की जा सकती हैं। जिसमें फ्लैश कार्ड की सहायता न ली जा सके ।

फ्लैश कार्ड के माध्यम से प्रस्तुत करने पर जीवनी एक मार्मिक जीवन्त अध्ययन बन जाती है। महापुरुषों के सम्बन्ध में छात्रों के समक्ष फ्लैश कार्ड प्रस्तुत किये बिना कोई चर्चा नहीं करनी चाहिए फ्लैश कार्ड चाहे अच्छे हो या बुरे, यथार्थ का आभास तो देते ही हैं। फिर भी यथासम्भव सर्वोत्तम उपलब्ध फ्लैश कार्ड को ही चुनना चाहिए। फ्लैश कार्ड सहायता से समझाने पर हिन्दी भाषा के सूक्ष्म अर्थ वाले शब्द और प्रतीक सार्थक बन जाते हैं। अभिभावकों और अध्यापकों के धारा समाचार पत्रों और पत्र पत्रिकाओं में निकलने वाले चित्रों को जब उपयुक्त शीर्षक देकर सूचना पट्ट पर प्रदर्शित किया जाता है। तो छोटे छोटे बच्चे विश्व की दैनिक घटनाओं में रुचि लेने लगते है।

दुर्भाग्य की बात हैं कि समाचार पत्र एवं पत्र पत्रिकाएँ जिनमें बहुमूल्य शिक्षण साधन भरे रहते है। सामान्यतः पुराने रद्दी बेकार कागज समझकर भेज दिये जाते है।

विश्व की विभिन्न जातियों की बीच सांस्कृतिक मानदण्डों तथा जीवन पद्धतियों के पारस्परिक आदान प्रदान और विवेचन को प्रोत्साहित करने में भी फ्लैश कार्ड का महत्वपूर्ण स्थान हैं। पूर्व और पाश्चात्य जगत के विद्धान बहुत समय से एक-दूसरे की संस्कृतियों का अध्ययन करते आ रहे हैं। लेकिन जिस बोध और सद्भावना पर विश्व शान्ति निर्भर हैं उसकी उपलब्धि के लिए तब तक कोई यथार्थ प्रगति नहीं हो सकती जब तक जीवन की सर्वाधिक निर्माणात्मक अवधि में बालकों को इन सांस्कृतिक विभेदों का ज्ञान नहीं कराया जाता हैं। फ्लैश कार्ड चित्रों द्वारा इस ज्ञान को सार्थकता से सहानुभूति को जाग्रत करने के लिए भी चित्रों का उपयोग किया जा सकता है।

8.9.2 फ्लैश कार्ड की परिभाषा

वह प्रक्रिया जिसमें शब्द, चित्र या संख्या जिसे संक्षिप्त रुप से प्रदर्शित किया जाता है, जिसमें शिक्षण अधिगम को रोचक एवं सरल बनाया जा सके। वह प्रक्रिया जिसमें शिक्षण के अन्तर्गत शब्द, चित्र, नाम, के माध्यम से किसी विषय के बारे में जानने के लिए सहायता मिलती हैं फ्लैश कार्ड कहलाता है।

8.9.3 फ्लैश कार्ड लाभ -

फ्लैश कार्ड के माध्यम से विद्यार्थियों निम्नलिखित लाभ होते हैं।

फ्लैश कार्ड सामग्री का अध्ययन करने के लिए कम से कम महँँगी तरीको में से एक दो हो सकता जो आसानी से सस्ते तरीकों से बनाया जा सकता है।

फ्लैश कार्ड एक शिक्षण उपकरण है जो छात्रों को हिन्दी शिक्षण में अवधारणों की समझ विकसित करने में सहायक होता है।

फ्लैश कार्ड बच्चे के शिक्षण प्रशिक्षण में अत्यधिक उपयोगी होता है अधिगम सरल एवं रुचिपूर्ण बनाता है।

फ्लैश कार्ड के द्वारा बच्चों का बहुमुखी विकास होता है। जैसे भाषाओं अंग्रेजी शब्दावली गणित तिथियों आदि चीजों को याद रखने के लिए भी प्रयोग किया जाता हैं।

किसी चित्र को दिखाकर उसका वर्णन कर सकते है।

फ्लैश कार्ड को अध्ययन के रुप में फेरबदल कर सकते हैं ताकि बच्चे को रुचि पूर्ण बनाया जा सके और बच्चा सीखने के लिए लम्बे समय तक ध्यान रख सके।

फ्लैश कार्ड के माध्यम से हिन्दी के अक्षर, शब्द, वाक्य संरचना आदि गतिविधियों को रोचक पूर्ण ि से सीखाया जा सकता है।

8.9.4.फ्लैश कार्ड के महत्व

फ्लैश कार्ड प्रभावी स्मृति सहायता उपकरण हैं जो विद्यार्थियों को नई सामग्री को जल्दी से सीखने में मदद कर सकते े हैं। यद्यपि यह छोटे के साथ फ्लैश कार्ड सीखने का जोड़ने का तरीका हो सकता हैं। जो हिन्दी की मूल बातें सीखे रहे हैं या उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों की परीक्षाओं के लिए प्रयोग कर रहे है। उच्च शिक्षा नए और अधिक परिकृत डिजिटल आधारित फ्लैश कार्ड से प ़ई में सहायता करने के लिए एक से अत्यधिक प्रभावी सहायता हो सकता है।

8.9.5 हिन्दी भाषा शिक्षण में फ्लैश कार्ड का उपयुक्त चयन और उपयोग

फ्लैश कार्ड का प्रभाव उनमें उपयुक्त चयन और उपयोग पर निर्भर है। अपने अनुभव के कारण बालक प्रायः गलत धारणायें बना लेते है उपयुक्त फ्लैश कार्ड द्वारा इन गलत धारणायें को दूर किया जा सकता हैं। विषयों के अनुयुक्त चयन एवं उपयोग में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।

किसी भी अध्यापन सामग्री के चयन की भाँति कक्षा के लिए फ्लैश कार्ड के चयन की प्रथम कसौटी यह हैं कि किस सीमा तक यह सामग्री था फ्लैश कार्ड छात्रों की आवश्यकता पूरी कर सकेंगे।

जिन वस्तुओं का कक्षा के छात्रों को स्पष्ट ज्ञान हैं उनके फ्लैश कार्ड दिखाना व्यर्थ हैं।

अन्य दृश्य श्रव्य साधनों के समान चयन किये जाने वाले फ्लैश कार्ड भी छात्र के औसत स्तर के अनुकूल होने चाहिए।

छोटे बच्चों के लिए चुने गये फ्लैश कार्ड तेज रंगों वाले होने चाहिए और उनमें विवरण अधिक नहीं होना चाहिए।

शिक्षण के लिए उन फ्लैश कार्ड का चयन किया जाना चाहिए जो बच्चे के समक्ष वस्तुओं का यथार्थ रुप प्रस्तुत करें।

फ्लैश कार्ड का चयन करत समय चित्रगत वस्तुओं के आकार की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

कक्षा में दिखाये जाने वाले फ्लैश कार्ड का आकार इतना बड़ा और स्पष्ट होना चाहिए कि वे सभी छात्र को साफ साफ दिखाई दें।

फ्लैश कार्ड का उपयोग करते समय उसे उचित स्थान पर रखना चाहिए।

फ्लैश कार्ड उपयोग के सम्बन्ध में एक और महत्वपूर्ण बात है। जो सदैव ध्यान में रखनी चाहिए आवश्यकता से फ्लैश कार्ड को एक साथ प्रयोग नहीं करना चाहिए।

फ्लैश कार्ड दिखाने से पूर्व बालकों की जिज्ञासा और उत्सुकता जगाने के लिए शिक्षक को उन्हें यह बता देना चाहिए कि फ्लैश कार्ड में उन्हें क्या देखना है।

8.9.6 फ्लैश कार्ड प्रयोग विधि

गत्ते के छोटेटुकडों पर चित्र सूचना शब्दार्थ इत्यादि लिखकर या अंकित करके कक्षा में प्रस्तुत करना आधुनिक भाषा शिक्षण प्रचालित होता जा रहा है। यह अपेक्षाकृत कम समय श्रम और मूल्य के व्यय से तैयार होने वाला किन्तु काफी रोचक व उपयोगी सहायक उपकरण है। इनके माध्यम से कक्षा में शैक्षिणक क्रियाएँ स्पर्श और मूल्यांकन जैसी गतिविधियों मनोरंजन विधि से आयोजित की जा सकती हैं। उदाहरण शब्दार्थों के जोडे बनाने का अभ्यास कराने के लिए विद्यार्थियों को फ्लैश कार्ड बाँटे जा सकते है। एक एक करके विद्यार्थी अपने फ्लैश कार्ड पर लिखे शब्द को ऊँची आवाज में पढ़े और जिसके पास उसका अर्थ हो वह चुपचाप शब्द बोलने वाले विद्यार्थी के पास जाकर खड़ा हो जाए इस प्रकार कक्षा में अनेक जोड़े खड़े हो जायेंगें इसी दौरान शिक्षक उनके पास जाकर शब्दार्थाें की जाँच करके ठीक अथवा गलत कर निर्णय का सकता है।

फ्लैश कार्ड पाठ्यक्रम वस्तु के अन्तर्गत कठिन व परिभाषिक शब्दों के अर्थ या व्याख्या बताने व्यक्तियों वस्तुओं व स्थानों के चित्रों व अन्य जानकारियों की आवश्यकता की पूर्ति करते है। इनके प्रयोग से जिज्ञासा उदबुद्ध होती है। भ्रमों का शमन होता है। और शिक्षक की गति में अवरोध भी नहीं होता इन तथ्यों को ध्यान में रखकर ही फ्लैश कार्ड का नियोजन और निर्माण किया जाना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 12- हिन्दी भाषा शिक्षण में फ्लैश कार्ड के महत्व और लाभ बतायें।

....
....
....

....
....
....
....
....

.... प्रश्न 13- हिन्दी भाषा शिक्षण में फ्लैश कार्ड की प्रयोग विधि का वर्णन कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....

8.10 सारांश

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा शिक्षण में निहित दृश्य उपकरण का उपयोग बहुतायत से होता है। हिन्दी भाषा के व्यापकता, बहुरुपता, क्षमता और प्रसार को देखते हुए विविध सहायक उपकरणों का प्रयोग अत्यावश्यक है। भाषा शिक्षण में दृश्य उपकरणों के अन्तर्गत श्यामपट्ट, चार्ट, मानचित्र, प्रतिरुप, कार्यशील की प्रयोगविधि एवं शिक्षण में उपयोगिता की अवधारणा प्रदर्शित की गई है। भाषा शिक्षण में सहायक उपकरणों की उपयोगिता पर चर्चा करते हुए इस तथ्य को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि भाषा का शिक्षण किसी विषय से सम्बद्ध सूचनाओं तथ्यों आंकडों परीक्षणों शोध और विकास का लेखा जोखा नहीं है। वह विशुद्धतः एक सम्प्रेषण माध्यम है। इन तथ्यों को सामने रखकर हम भाषा के अध्ययन और अभ्यास का उपक्रम करें तो बिना सहायक उपकरणों के भाषा पर अधिकार का लक्ष्य अकल्पनीय रहेगा।

8.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1- दृश्य उपकरण का प्रयोग छात्र और विषय उपकरण के मध्य अन्तः क्रिया को तीव्रतम कर छात्रों को शिक्षोन्मुखी तथा जिज्ञासु बनाती है। यह एक अच्छे शिक्षक के लिए विषय पर आधिपत्य अध्यापन का बहुपयोगी माध्यम है। हिन्दी भाषा शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली परम्परागत सहायक उपकरण-परम्परागत सहायक उपकरण में श्यामपट्ट, पुस्तक तथा पत्र-पत्रिकायें आदि का समावेश होता है।

उत्तर 2- यह शिक्षा का एक महत्वपूर्ण सामग्री हैं। दुर्भाग्यवश भारत में यह उपेक्षित विद्यालय उपकरण हैं। विद्यालय भवनों का निर्माण करते समय कक्षाओं में श्यामपट्ट न तो उपयुक्त स्थान पर रखे जाते हैं

और न ही उनकी हालत ठीक रहती हैं। जहाँ ये उपकरण है भी वहाँ या तो वांछनीय ढ़ग के नहीं है या बहुत ही उपेक्षित हालत में है।

हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए श्यामपट्ट सबसे प्रभावी सामग्री हैं इसकी सहायता से छात्रों को प्रव्यय, तथ्य, सिद्धान्त आदि की व्याख्या को बड़े आसानी से समझायी जा सकती है। जब शिक्षक शिक्षण कार्य के समय श्यापट्ट पर लिखता हैं तब छात्र अपनी चक्षु एवं कर्ण दोनों ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग का आसानी से शिक्षा ग्रहण कर लेता हैं हिन्दी भाषा शिक्षण में श्यामपट्ट उपकरण का करना बहुत ही उपयोगी है जो बच्चे के शिक्षण कौशल के दौरान अपने अधिगम को मजबूत बनाने के लिए उपयोग करते हैं। जिससे बालक के हिन्दी अधिगम को बढ़ावा मिला और साथ ही साथ श्यामपट्ट के उपयोग का हिन्दी शिक्षण में इसके महत्व को स्पष्ट कर सके।

उत्तर 3- हिन्दी भाषा शिक्षण का शिक्षक श्यामपट्ट का उपयोग निम्नलिखित बातों के लिए कर सकता हैं-

किसी नाम या शब्द या सम्बन्ध को स्पष्ट बनाने एवं महत्ता प्रदान करने के लिए।

सारांश देने के लिए।

योजना की रुप रेखा लिखने के लिए।

किसी वस्तु के क्रम को स्पष्ट करने के लिए।

चार्ट, रेखाचित्र, ग्राफ, लाक्षणिक उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए।

नियम, परिभाषा, अर्थ, शब्द, विलोम, पर्यायवाची शब्द, मुहावरा आदि लिखने के लिए।

श्यामपट्ट या चॉकबोर्ड कोई आकर्षक वस्तुु नहीं हैं, परन्तु यह एक आकर्षण हीन काले रंग की वस्तु हैं परन्तु जब उसका ठीक-ठीक उपयोग किया जाता है तब वह बहुत ही प्रेरणादायक हो जाता हैं। स्वच्छता शुद्धता तथा तीव्रता के मानक स्थापित करने में इसका महत्व बहुत अधिक हैं। बर्तनी को समझने में वह छात्रों की बहुत सहायता करता हैं। किसी पाठ के दौरान श्यामपट्ट पर बनाया गया कोई चित्र, निदर्श चित्र समुची कक्षा का ध्यान पाठ की ओर आकृष्ट कर सकता हैं। श्यामपट्ट पर लिखकर तथा रेखचित्र बनाकर शिक्षक पाठ की तात्विक बातों पर बल दे सकता हैं। कुछ रेखाओं के सहारे वह कोई नक्शा या चित्र छात्रों के समक्ष प्रस्तुत कर सकता हैं। श्यामपट्ट एक ऐसा साधन है जो कक्षा में सदैव उपलब्ध रहता है उसके उपयोग के लिए न किसी तकनीकि ज्ञान की आवश्यकता हैं और न उच्चकोटि के कलात्मक कौशल की।

उत्तर 4- हिन्दी भाषा शिक्षण के शिक्षक को श्यामपट्ट का प्रयोग करते समय अधोलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

कक्षा का कार्य प्रारम्भ होने से पहले ही श्यामपट्ट के लिए आवश्यक सब वस्तुएॅं एकत्र कर लें सफाई उपकरण या झाड़न, चॉक या खड़िया पटरी नरकार फर्में, स्टेन्सिल अथवा अन्य आदि ।

श्यामपट्ट के उधार के बायें कोने से लिखना प्रारम्भ करें।

श्यामपट्ट पर केवल महत्वपूर्ण बातें ही लिए स्मरण रहे कि श्यामपट्ट विस्तार पूर्ण कार्य के लिए उपयुक्त नहीं होता ।

पहले से योजना बना ले कि श्यामपट्ट पर क्या लिखना हैं? कभी भी कोई पिक्चर/चित्र पहले से श्यामपट्ट पर बनाकर न रखें न किसी पुस्तक का लगातार सहारा लेकर बनायें।

श्यामपट्ट बच्चे के दृष्टि स्तर से बहुत ऊँचा न हो और सामने वाली डेस्कों की प्रथम पंक्ति श्यामपट्ट से कम से कम आठ फुट दूर हो ।

श्यामपट्ट को झाड़न या कपड़े से साफ करें, हाथ से या अॅंगुलियों से नही।

श्यामपट्ट की स्थिति ऐसे स्थान पर हो जहॉं से सभी छात्र उसको सुविधापूर्वक देख सके। उस पर प्रकाश या प्रतिबिम्ब न हो ।

श्यामपट्ट पर सुन्दर तथा एक सा लिखना चाहिए इसके अतिरिक्त जो बात श्यामपट्ट पर लिखी जाये वह क्रम में होनी चाहिए जिससे छात्रों में भी क्रम में लिखने की आदत बन जाये।

श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों का आधार ऐसा होना चाहिए जिनको समस्त छात्र आसानी से देख सके। उस पर छोटे छोटे शब्द नहीं लिखने चाहिए।

श्यामपट्ट पर जो कुछ भी लिखा जाय वह सीधी पंक्ति में हो ।

शिक्षक को लिखते समय श्यामपट्ट को ढ़क नहीं लेना चाहिए बल्कि उसे 450 के कोण पर ऐसा नहीं करेगा तो कक्षा में अनुशासन हीनता आने के अवसर उत्पन्न हो जायेगें।

शिक्षक को श्यामपट्ट पर लिखने समय कभी कभी छात्रों पर दृष्टि डाल लेनी चाहिए।

चाँक को दवा कर लिखना चाहिए जिससे अक्षर सुन्दर एवं आकर्षक बने।

श्यामपट्ट पर लिखा जाने वाला अक्षर उचित आकार का होना चाहिए जिसे प्रत्येक विद्यार्थी अपनी जगह से स्पष्टता से देख एवं पढ़ सके।

उत्तर 5- हिन्दी भाषा शिक्षण से सम्बन्धित विषय पढ़ाते समय चार्ट बहुत ही महत्वपूर्ण सामग्री बनते है। चार्ट से अभिप्राय है एक सीधी साधी और सपात चित्रात्मक प्रदर्शन वस्तु यदि इसका उपयोग ठीक तरह से किया जाय तो प्रदर्शित सूचना बहुत ही प्रभावी ग से दर्शकों तक पहॅुचाई जा सकती है। चार्ट किसी घटना या क्रान्ति का क्रमिक विकास दिखाने के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं वास्तव में चार्ट वह माध्यम है जिसके द्वारा किसी वस्तु के अन्तसम्बन्ध तथा संगठन, भवों, विचारों तथा विशेष स्थलों को दृश्यात्मक रुप में प्रदर्शित किया जा सके। चार्ट के द्वारा महत्वपूर्ण सूचनाओं को वर्गीकृत करने के उत्तम साधन के रुप में चार्टों का प्रयोग होता हैं।

उत्तर 6- चार्ट प्रयोग के निम्नलिखित प्रकार होते है-

अनुवांशिक चार्ट- इस प्रकार के चार्ट मुख्यतः विकास तथा अभिवृद्धि को प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग में लाये जाते है।

धारावाहिक चार्ट- इस प्रकार के चार्टों द्वारा संगठनात्मक तत्वों तथा उसके क्रियात्मक सम्बन्धों को प्रदर्शित किया जाता है।

तालिका चार्ट- इनमें जानकारी सामान्य अनुक्रम से प्रस्तुत की जाती हैं। उदाहरणार्थ- अस्पताओं में रखे जाने वाले मरीओं के चार्ट जिसमें निश्चित समय पर दिये जाने वाले भोजन और औषधियों का विवरण रहता है। ऐतिहासिक चार्ट जिनमें कवियों की रचना सूची कालक्रमानुसार दी जाती हैं। तथा अन्य सम्बन्धित जानकारी रहती है।

वृक्ष की आकृति वाले चार्ट- विकास को प्रस्तुत करने के लिए ऐसे चार्ट उपयुक्त होते है। रेखा या तने को व्यक्त करने वाली अन्य किसी विधि से उद्भव को व्यक्त किया जाता है और बहुविधि विकास को शाखाओं द्वारा दिखाया जाता है।

विवरणात्मक चार्ट- इन चार्टों में ऐतिहासिक विकास या किसी प्रकिया विशेष के सभी चरणों का उल्लेख किया जाता है। जैसे- कवियों के द्वारा या लेखकों के द्वारा रचित और लिखित रचना आदि।

सारणी चार्ट- इस प्रकार के चार्टोंं में आधार सामग्री को सारणी के रुप में प्रस्तुत किया जाता हैं ताकि तुलना करने में सुविधा हो।

उत्तर 7- हिन्दी भाषा शिक्षण में मानचित्र का भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है इसके द्वारा छात्रों के सम्मुख अमूर्त वस्तुओं का ज्ञान मूर्त कर दिया जाता हैं। हिन्दी भाषा शिक्षण का शिक्षक निम्नलिखित बातों का ज्ञान प्रदान करने के लिए का सकता है।

मानचित्र द्वारा राजनीतिक तथा प्राकृतिक दशा का सम्यक ज्ञान करा सकता है।

मानचित्र का प्रयोग स्थानों के निर्धारण के लिए प्रयोग स्थानों के निर्धारण के लिए प्रयोग स्थानों के निर्धारण के लिए प्रयोग किया जा सकता हैं यदि हिन्दी भाषा का शिक्षक स्थानीय कवियों लेखकों के विषय में अध्यापन कर रहा हैं तो उसके स्थानों को निर्धारित करने में इसके द्वारा सफल होगा तथा उसकी भौगोलिक स्थिति को समझ सकेगा।

मानचित्र द्वारा बच्चों को तुलनात्मक ज्ञान दिया जा सकता हैं।

मानचित्र द्वारा किसी स्थान या व्यक्ति के सम्बन्धों को प्रदर्शित करने में सहायता मिलती है।

मानचित्र का उपयोग हिन्दी भाषा का शिक्षक काल युग तथा राज्यों और देशों की बोली भाषा के परिवर्तनों को दिखाने के लिए भी किया जा सकता है।

उत्तर 8- हिन्दी भाषा के शिक्षण में प्रतिरुप की विशिष्टताऐं-

सीखने के परिणामों का विवरण- शिक्षा का एक मॉडल निर्दिष्ट करता हैं कि छात्रों का एक अनुदेशात्मक अनुक्रम द्वारा करने के बाद क्या करना चाहिए।

वातावरण पर विनिर्देशन- शिक्षण के एक मॉडल निश्चित शर्तों में निर्दिष्ट करता है कि पर्यावरण की स्थिति जिसके तहत छात्रों की प्रतिक्रिया को देखा जाना चाहिए।

प्रदर्शन के मापदण्ड का विवरण - इस मानदण्ड में बालक के प्रदर्शन ब उम्मीद की जाती है।

संचालन का विवरण -शिक्षण के मॉडल में उस तंत्र को निर्दिष्ट किया गया हैं जो पर्यावरण के साथ छात्र की प्रतिक्रिया और बातचीत की प्रतिक्रिया प्रदान करता है।

उत्तर 9- सूचना प्रक्रियात्मक मॉडल- सूचना प्रक्रियात्मक प्रतिरुप लोगों को पर्यावरण से उत्तेजनाओं को संभाल के रखने का उल्लेख करता है। यह डाटा ऑरगनाइज करता है, ज्ञानेन्द्रियों की समस्याओं को दूर करता हैं। सूचना प्रक्रियात्मक मॉडल अवधारणा को उत्पन्न करता हैं। समस्याओं का समाधान करता हैं।

उत्तर 10- हिन्दी भाषा शिक्षण में प्रतिरुप से निम्नलिखित लाभ होता ह-

यह एक सीखने और सीखने का प्राकृतिक रुप है।

प्रतिरुप बच्चों में कल्पनाशीलता की शक्ति को बढ़ाने में मददगार है।

यह विद्यार्थियों में तार्किक शक्ति को बढ़ाने में मदद करता है।

यह वस्तुओं को सुव्यवस्थित तरीके से विश्लेषण करने में बालकों की मदद करता है।

प्रतिरुप बालकों को कक्षा में कौशल करना है।

उत्तर 11- हिन्दी शिक्षण के लक्ष्यभूत कौशलों पर प्रभावी अधिकार और निपुणता के लिए अनेक विषयों जैसे खेल मनोरंजन, समाज, विज्ञान, साहित्य, दर्शन, कला, इत्यादि को माध्यम बनाया जाता है। इस विधि को भाषा के विविध पक्षों पर अधिकार की दृष्टि से उपयोगी पाया जाता हैं। इस सन्दर्भ को समझने के लिए हिन्दी के शिक्षक को भी विज्ञान और समाज शास्त्र जैसे- विषयों के अध्यापकों की भॉति विविध उपकरणों का सहयोग लेना होता है। लेकिन जरुरी नहीं हैं कि भाषा शिक्षक भी इन उपकरणों के निर्माण पर अलग से समय और श्रम खर्च करें।

उत्तर 12- फ्लैश कार्ड प्रभावी स्मृति सहायता उपकरण हैं जो विद्यार्थियों को नई सामग्री को जल्दी से सीखने में मदद कर सकते ़ हैं। यद्यपि यह छोटे के साथ फ्लैश कार्ड सीखने का जोड़ने का तरीका हो सकता हैं। जो हिन्दी की मूल बातें सीखे रहे हैं या उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों की परीक्षाओं के लिए प्रयोग कर रहे है।

फ्लैश कार्ड सामग्री का अध्ययन करने के लिए कम से कम महगी तरीको में से एक दो हो सकता जो आसानी से सस्ते तरीकों से बनाया जा सकता है। ये हिन्दी शिक्षण में अवधारणों की समझ विकसित करने में सहायक होता है। फ्लैश कार्ड बच्चे के शिक्षण प्रशिक्षण में अत्यधिक उपयोगी होता है अधिगम सरल एवं रुचिपूर्ण बनाता है। फ्लैश कार्ड के द्वारा बच्चों का बहुमुखी विकास होता है। जैसे भाषाओं अंग्रेजी शब्दावली गणित तिथियों आदि चीजों को याद रखने के लिए भी प्रयोग किया जाता हैं।

उत्तर 13- गत्ते के छोटे टुकडों पर चित्र सूचना शब्दार्थ इत्यादि लिखकर या अंकित करके कक्षा में प्रस्तुत करना आधुनिक भाषा शिक्षण प्रचालित होता जा रहा है। यह अपेक्षाकृत कम समय श्रम और मूल्य के व्यय से तैयार होने वाला किन्तु काफी रोचक व उपयोगी सहायक उपकरण है। इनके माध्यम से कक्षा में शैक्षिणक क्रियाएँ स्पर्श और मूल्यांकन जैसी गतिविधियों मनोरंजन विधि से आयोजित की जा सकती हैं। उदाहरण शब्दार्थो के जोडे बनाने का अभ्यास कराने के लिए विद्यार्थियों को फ्लैश कार्ड बाँटे जा सकते है। एक एक करके विद्यार्थी अपने फ्लैश कार्ड पर लिखे शब्द को ऊँची आवाज में पढ़े और जिसके पास उसका अर्थ हो वह चुपचाप शब्द बोलने वाले विद्यार्थी के पास जाकर खड़ा हो जाए इस प्रकार कक्षा में अनेक जोड़े खड़े हो जायेंगें इसी दौरान शिक्षक उनके पास जाकर शब्दार्था ़ ़ की जाँच करके ठीक अथवा गलत कर निर्णय का सकता है।

8.12 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1- हिन्दी भाषा के शिक्षण में दृश्य उपकरणों के प्रयोग की क्या आवश्यकता हैं?

प्रश्न 2- हिन्दी शिक्षण में दृश्य उपकरणों की सूची बनाइए और उनकी प्रयोगविधि का उल्लेख करते हुए समझाइए।

प्रश्न 3- फ्लैश कार्ड क्या हैं? भाषा शिक्षण में इसका उपयोग किस प्रकार होता है वर्णन कीजिए।

इकाई -9श्रव्य उपकरण

इकाई की रुप रेखा

9.1 प्रस्तावना
9.2 उददेश्य
9.3 कॉम्पैक्ट डिक्स व कैसेट
9.3.1 कॉम्पैक्ट डिक्स का परिचय
9.3.1 कॉम्पैक्ट डिक्स व कैसेट की प्रयोग विधि परिचय
9.4 मुद्रित श्रव्य उपकरण का परिचय और उनका उपयोग
9.5 अखबार
9.5.1 अखबार का परिचय
9.5.2 अखबार का परिभाषा-
9.5.3 अखबार की उपयोगिता-
9.6 पत्रिका
9.6.1 पत्रिका का परिचय
9.6.2 हिन्दी भाषा शिक्षण में पत्रिकाओं का सहायक उपकरण के रूप मंे प्रयोग
9.6.3 हिन्दी शिक्षण में पत्रिका का उपयोग
9.7 पाठ्य पुस्तक
9.7.1 पाठ्यपुस्तक का अर्थ
9.7.2 पाठ्यपुस्तक की परिभाषा
9.7.3 पाठयपुस्तको के गुण या विशेषताएॅं
9.7.4 . पाठ्य पुस्तको के प्रकार
9.7.5 पाठ पुस्तक का हिन्दी शिक्षण में महत्व
9.7.6 पाठ पुस्तक का हिन्दी शिक्षण में भूमिका
9.7.7 पाठयपुस्तक का हिन्दी शिक्षण के लाभ
9.7.8 पाठ्यपुस्तक का हिन्दी शिक्षण में मूल्यांकन
9.7.9 पाठ्यपुस्तक का हिन्दी शिक्षण में उपयोग
9.8 सारांश
9.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.10 निबन्धात्मक प्रश्न
9.11 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

9.1 प्रस्तावना

ज्ञान जितने अधिक इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है उतना ही सार्थक और स्थायी होता है इसलिए इन्द्रियों को ज्ञान का द्वारा कहते हैं। प्रकरण को अधिक स्पष्ट, रोचक तथा अर्थ पूर्ण बनाने के लिए सहायक सामग्री की अति आवश्यकता पड़ती हैं। हमारा शिक्षण तभी महत्वपूर्ण हो सकता है जबकि हम अपनी पुस्तकों में सहायक सामग्रियों को अधिक स्थान दें। ज्ञान विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। दृश्य श्रव्य सामग्री में आँख और कान साथ-साथ कार्य करते है। बालको में सूक्ष्म तथ्यों को सुनकर समझने की क्षमता पर्याप्त होती हैं इसलिए विषय का ज्ञान पाठ्य-पुस्तको के अतिरिक्त स्थूल वस्तुओं की सहायता से दिया जाना आवश्यक है। इस प्रकार प्रयुक्त होने वाली वस्तुएँ सहायक सामग्री कहलाती हैं। शिक्षण को प्रभावी बनाने की दृष्टि से श्रव्य सहायक सामग्री वे सामग्री हैं, जिनका उपयोग शिक्षक पाठ की मूल प्रकृति और छात्रों के शैक्षिक स्तर तथा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपनी सूझ-बूझ से प्रयोग में लाता हैं, यथा मुद्रित श्रव्य उपकरण ,कौम्पैक्ट डिक्स पाठ्य पुस्तक आदि। इन्हीं का ध्यान अधिगम के लिए सहायक एवं उपयोगी समझते है। इसी आधार पर हिन्दी शिक्षण में सहायक सामग्रियों के महत्व उपयोगिता आवश्यकता भूमिका एवं मूल्यांकन आदि को सरलता से देखा जा सकता है।

9.2 उददेश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप इस योग्य हो सकेंगे कि-

श्रव्य उपकरण क्या है इसे बता सकेगें।

श्रव्य उपकरणों के प्रयोग का भाषा शिक्षण के अधिगम के महत्व जान सकेंगे।

श्रव्य उपकरणों का चयन किस प्रकार किया जाय बता सकेंगे।

भाषा शिक्षण के अधिगम में श्रव्य उपकरणों का प्रयोग किस प्रकार किया जाए ज्ञान सकेंगे।

श्रव्य उपकरणों के प्रकारों को बता सकेगें।

भाषा शिक्षण के अधिगम में का फ्लैश कार्ड व कैसेट के द्वारा ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

भाषा शिक्षण के अधिगम में मुद्रित श्रव्य उपकरण क्या है जान सकेंगे।

भाषा शिक्षण के अधिगम में मुद्रित श्रव्य उपकरण के महत्व जान सकेंगे।

अखवार के द्वारा भाषा शिक्षण अधिगम का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

पत्रिकाओं के द्वारा भाषा शिक्षण अधिगम का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

पुस्तकों में द्वारा भाषा शिक्षण अधिगम ज्ञान प्राप्त कर सके।

श्रव्य उपकरण के बारे में बता सकेंगे।

मुद्रित श्रव्य उपकरण के बारे में बता सकेंगे।

भाषा शिक्षण अधिगम में मुद्रित श्रव्य उपकरण के प्रयोग को जान सकेंगे

9.3 कॉम्पैक्ट डिक्स व कैसेट

9.3.1 कॉम्पैक्ट डिक्स व कैसेट का परिचय

कॉम्पैक्ट डिस्क (सी0डी0) एक डिजिटल डिस्कडेटा स्टोरेज प्रारूप है। जिसे 1982 में जारी किया गया था और फिलिप्स और सोनी द्वारा सहविकसित किया गया था। इसको मूल रूप से केवल ध्वनि रिकार्डिग को स्टोर करने और चलाने के विकसित किया गया था लेकिन बाद में (सी0डी0-आर0ओ0एम0) के संग्रहण के लिए अनुकूलित किया गया था इनमें से कई अन्य स्वरूपों को भी शामिल किया गया जिसमें एक बार ऑडियों और डाटा स्टोरेज (सी0डी0आर), रीराइटेबल मीडिया (सी0डी0 आर0डब्ल्यूव) वीडियो कॉम्पैक्ट डिस्क (वी0सी0डी0), सुपर वीडियों काम्पैक्ट डिस्क (एस0वी0सी0डी0), फोटो सी0डी0 पिक्चर सी0डी.0 शामिल है, सी0डी0 आई और बढ़ी हुई संगीत सी0डी0 पहला व्यवसायिक रूप से उपलब्ध ऑडियों सी0डी0 प्लेयर, सोनी सी0डी0पी0-101, जापान में अक्टूबर 1982 को जारी किया गया था।

काम्पैक्ट डिस्क (सी0डी0) एक छोटे, पोर्टेबल, गोल माध्यम का उपकरण है। जो इलेक्ट्रानिक रिकाडिंग, भण्डारण, आडियों-विडियों, पाठ और अन्य जानकारी वापस चलाने के लिए बना है। डिजीटल रूप में टैप कैसेट और सी0डी0 आम तौर पर वापस संगीत सुनने के लिए बना है यह घर में सी0डी0,टेप, कैसेट की जगह ले जाती है हालांकि बाद में कारो और पोर्टवेल प्लेबैक उपकरणों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

9.3.2 कॉम्पैक्ट डिक्स व कैसेट की प्रयोग विधि

ज्ञान, सूचना, घटना इत्यादि के संग्रह और संरक्षण का जो काम ध्वनि के स्तर पर टेप-रिकॉर्डर करता है, चलचित्र के क्षेत्र में वही भूमिका विडियों कैसेट, कॉम्पैक्ट डिस्क केमरा और कॉम्पैक्ट डिस्क प्लेयर निभाता है। जैसा अन्तर रेडियों और टेलीविजन में है वैसा ही टेपरिकॉर्डर-प्लेयर और वी0सी0आर0 , वी0सी0पी0 में है। इन उपकरणों का प्रयोग भाषा के व्यवहारिक पक्षों के परिचय के लिए प्रभावी रूप में किया जा सकता है।

हाल के वर्षो में अनेक ऐसी टेलीविजन धारावाहिकों का निर्माण और प्रसारण हुआ है। जो इतिहास, संस्कृति और विशुद्ध तथा उच्च स्तरीय भाषा- प्रयोग की दष्टि से पर्याप्त उपयोगी है। इन

धारावाहिकों में चन्द्रप्रकाश द्विवेदी का ‘चाणक्य’ रामानन्द सागर कृत ‘रामायण’ और वी0आर0 चौपड़ा का ‘महाभारत’ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। श्याम वेनेगल के ‘भारत एक खोज’ और ‘मालगुडी डेज’ जैसे धारावाहिकों के साथ ‘डिस्कवरी’ और नेशनल ज्योग्राफिक चैनल’ के अनेक कार्यक्रम भी विद्यार्थियों के मनोंरजन ज्ञानवर्धन और भाषा प्रवीणता के विकास के लिए रिकार्ड किये जा सकते है। इनके प्रदर्शन कें लिए गांधी सप्ताह संस्कृति उत्सव या इतिहास की झलक जैसी सप्ताहिक आयोजनों का प्रावधान किया जा सकता है।

9.4 मुद्रित श्रव्य उपकरण

9.4.1 मुद्रित श्रव्य उपकरण का परिचय और उनका उपयोग

इस कोटि के सहायक उपकरणों में समाचार-पत्र पत्रिकाओं व साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं को शामिल किया जाता है। इनमें से समाचार पत्र प्रचलित भाषा में लोक-व्यवहार, राजनीति, समाज, विज्ञान, व्यापार-वाणिज्य, फैशन, कला, साहित्य और खेल जैसे-विविध विषयों का ज्ञान उपलब्ध कराते है। माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए समाचार-पत्र पढ़ना भाषा के व्यवहारिक पक्ष के साथ ही सम-सामयिक मुद्दो की जानकारी और इस माध्यम से समाज के स्वरूप को समझने का सरल और सुलभ माध्यम है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1- हिन्दी भाषा शिक्षण म कॉम्पैक्ट डिस्कं की उपयोगिता पर चर्चा कीजिए।

....
....

....
....
....
....
....

....
....
....
....

प्रश्न 2- मुद्रित श्रव्य उपकरण का समान्य लिखिए।

....
....
....

....
....

....
....
....
....

9.5 अखबार

9.5.1 अखबार का परिचय

अखबार समाचारों पर आधारित एक प्रकाशन है, जिसमें मुख्यतः सामयिक घटनायें, राजनीति, खेल-कूद, व्यक्तित्व, विज्ञापन आदि जानकारियॉ सस्ते कागज पर छपी होती है। अखबार संचार के साधनों में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। अखबार प्रायः दैनिक होते है लेकिन कुछ अखबार साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक एवं छमाही भी होते है। अधिकतर अखबार स्थानीय भाषाओं में और स्थानीय विषयों पर केन्द्रित होते है।

9.5.2 अखबार की परिभाषा

सामयिक ज्ञान के व्यवसाय को पत्रकारिता कहते है। इस व्यवसाय में आवश्यक तथ्यों की प्राप्ति सजगतापूर्वक उनका मूल्यांकन तथा सम्यक प्रस्तुति होती है।

(जी0जी0भूलर)

प्रकाशन, सम्पादन, लेखन अथवा प्रसारण सहित समाचार माध्यम के संचालन के व्यवसाय को पत्रकारिता कहते है।

(न्यू वेवस्तर शब्दकोश)

9.5.3 अखबार की उपयोगिता

मनुष्य शुरूआत से ही सामाजिक प्राणाी रहा है, उसे अपने आस-पास घटने वाली घटनाओं के बारे मं जानने की उत्सुकता सदा से ही रही है। यही कारण है अखबार का आविष्कार हुआ, ताकि

समाज को अपने आस-पास एवं विश्व में हो रही घटनाओं एवं सूचनाओं की जानकारी मिल सकें। न्यूयार्क टाइम्स, द टाइम्स ऑफ इण्डिया आदि प्रमुख अखबार के उदाहरण है।

अखबार वह माध्यम है जिसके द्वारा सभी प्रकार की जैसे- सामाजिक, आर्थिक एवं मनोरंजन की जानकारियां प्राप्त होती है। अखबार कई प्रकार के होते है जैसे- दैैनिक, मासिक, साप्ताहिक आदि। सामान्यता अखबार स्थानीय भाषा में प्रकाशित होता है। अखबार के द्वारा हमें कई विशेष जानकारियां जैसे- रोजगार, समाचार, स्वास्थ्य सम्बन्धी, लेख, मनोंरजन जगत, खेल जगत के समाचार आदि मिलती है। रोजगार के अवसर अखबार मे प्रकाशित होते है जिससे शिक्षित लोगों को रोजगार [illegible]ने में सहायता मिलती है। व्यवसायी अपने प्रॉडक्ट की जानकारियॉ लोगों तक पहुचाने हेतु अखबार में विज्ञापन देते है। अखबार समाज के हिन्दी भाषा शिक्षण का प्रसार करते है जिससे देश में हिन्दी शिक्षा का महत्व बढ़ता है तथा अखबार समाज में समाजिक बुराईयों के प्रति जागरूकता पैदा करता है जैसे कि दहेज प्रथा, अपराध, चोरी आदि।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 3- शिक्षण में अखबार की विशिष्टताओं प्रकाश डालिए।

....
....
....

....
....
....
....
....

....
....

9.6 पत्रिका

9.6.1 पत्रिका का परिचय

इस माध्यम का सदुपयोग करने के लिए विद्यार्थियों को पुस्तकालय के माध्यम से विभिन्न समाचार पत्र व पत्रिकाएँ उपलब्ध कराकर नये शब्दों, पारिभाषिक शब्दों और वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली के संकलन व अभ्यास के लिए प्रेरित किया जा सकता है। कभी सम-सामयिक विषयों पर

टिप्पणी लिखने, संक्षेपण , या विस्तारण करने और विचार गोष्ठी जैसे आयोजनों के लिए भी समाचार पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है।

आकार, अलंवर, संस्करण और मूल्य में भिन्न होने पर भी समाचार, साहित्य व ज्ञान-विज्ञान जैसे विषयो की पत्रिकाए कुछ मामलों में समाचार पत्र जैसी ही होती है। इस विषय में शिक्षक को पुस्तकालय के सहयोग से कक्षोपयोगी सामग्री के चयन का प्रयास करना चाहिए। इससे विद्यार्थियों के भाषाज्ञान व भाषाकौशलों के अभ्यास में पत्रिकाओं का उपयोग सुनिश्चित किया जा सकेगा।

भाषा ज्ञान व साहित्यिक आवश्यकताओं की पूर्ति की दृष्टि से साहित्यिक पत्रिकाए विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयेगी है। इनमें हिन्दी प्रचार निदेशालय द्वारा प्रसारित पत्रिकाएँ, हिमाचल ज्ञान-विज्ञान समिति की बाल पत्रिकाए, हिमाचल ज्ञान- विज्ञान समिति की बाल पत्रिका इन्द्रधनुष, प्रकाशन विभाग- भारत सरकार की सरस- सलिल जैसी पत्रिकाए शामिल है। ये पत्रिकाए विद्यार्थियों की अवस्था, स्तर रूचि और आवश्यकताओं को केन्द्र में रखकर प्रकाशित की जाती है, इसीलिए इनकी उपयोगिता असंदिग्ध है।

9.6.2 हिन्दी भाषा शिक्षण में पत्रिकाओं का सहायक उपकरण के रूप में प्रयोग

शिक्षक का नैतिक दायित्व है कि विद्यार्थियों के लिए उपयोगी पत्र- पत्रिकाओं का चयन करके पुस्तकालय के माध्यम से उन्हें उपलब्ध कराए। यदि सम्भव हो तो उन्हें घर पर निजी सदस्यता के लिए भी प्रेरित किया जा सकता है। ये पत्रिकाएं न केवल विद्यार्थियों को साहित्यिक रचनाओं के आस्वादन का आनन्द प्रदान करती है अपितु उनकी कल्पनाशीलता, भावुकता और सौन्दर्यानुभूति को भी द्रवित और विकसित करती है। साथ ही ज्ञान-विज्ञान, समाज, जीवन और इससे सम्बधित विषयों का ज्ञान तो होता ही है। इनमें से कुछ में चित्र’वपहलेजी, कहानी को पूरा करो और मूल्यांकन जैसी स्थायी स्तम्भ होते है, जो भाषा ज्ञान और सृजनात्मकता की दृष्टि से विशेष उपयोगी होते है। इन पत्रिकाओं का उपयोग सहायक उपकरणों के रूप में करके शिक्षण को अधिक रूचिकर व्यापक, क्रियाशील, मनोरंजक, और अनौपचारिक बनाया जा सकता है।

9.6.3 हिन्दी शिक्षण में पत्रिका का उपयोग

पत्रिकायें मल्टी मीडिया के जनसंचार माध्यम का अभिन्न अंग है। यह हिन्दी शिक्षण की उपयोगिता के लिए शैक्षणिक उपक्रम में सारगार्भिता प्रदान करता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विचारों एवं अभिव्यक्ति के माध्यम के अतिरिक्त यह छात्रों में सम्प्रेषण एवं आत्मविश्वास की अभिव्यक्ति प्रदान करता है। शैक्षणिक गतिविधियों में सूचनाओं,प्रसंगों,घटनाक्रम एवं क्रियाकलापों की सिलसिलेवार रिर्पोट जानकारी छात्रों में कल्पनाशीलता एवं वैचारिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। पत्रकारिता की संरचना एवं रुपरेखा छात्रों में मानसिक प्रक्रियाओं का प्रस्फुटन करती है। इसके अतिरिक्त छात्रों की

गतिविधियों में अधिगम को नवीन दृष्टिकोण प्रदान करती है। वर्तमान समय में शैक्षिक जगत में हिन्दी पत्रिकाओं का स्वरुप निरन्तर वृद्धि करते हुए अग्रसर है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 4- पत्रिका के प्रयोग विधि का संक्षप्ति वर्णन कीजिए ।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

9.7 पाठ्य पुस्तक

9.7.1 पाठ्य पुस्तक का अर्थ

पाठ्यपुस्तक और विशेष रुप से हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक भाषा शिक्षण का महत्वपूर्ण उपकरण है, जिसका संयोजन भाषा पाठ्यचर्या और भाषा पाठ्क्रम के अन्तरगर्त निर्धारित क्षमताओं के आधार पर किया जाता है, इस प्रकार भाषा शिक्षण पर किया जाता है इस प्रकार भाषा शिक्षण के लिए निर्धारित पुस्तक या पुस्तकें ही पाठ्यपुस्तक कही जाती है।

9.7.2 पाठ्य पुस्तक की परिभाषा

‘एक निश्चित पाठ्यक्रम के अध्ययन के प्रमुख साधन के रूप में एक निश्चित शैक्षिक स्तर पर प्रयुक्त करने के लिए एक निश्चित विषय पर व्यवस्थित □ग से लिखी हुई पुस्तक पाठ्य-पुस्तक है।’

क्रानबैक के विचारानुसार- ‘पाठयपुस्तक प्रायः अप्रौढ़ छात्रों के लिए पुस्तक लिखी जाती है।

क्रोन बैंक ने पाठ्यपुस्तक को इन शब्दों में परिभाषित किया है

पाठ्यपुस्तक आमतौर से अपरिक्व छात्र के लिए लिखी जाती हैं यह पाठ्यपुस्तक का संकलित रुप हैं इसमें अध्याय होते हैं। जिनका अध्ययन क्रमानुसार किया जाता हैं परवर्ती अध्यायों के अध्ययन से पहले इस बात की अपेक्षा की जाती हैं। कि छात्र पूर्ववर्ती अध्यायों से परिचित हैं।

कार्टरगुड ने पाठ्यपुस्तक का तात्पर्य इस प्रकार बताया है

एक सुनिश्चित पाठ्यक्रमों के अध्ययन के प्रधान उपकरण के रुप में एक सुनिश्चित शिक्षा के स्तर पर प्रयोग करने के लिए एक सुनिश्चित विषय पर सुव्यवस्थित रुप से लिखी गई पुस्तक को पाठ्यपुस्तक कहते है।

9.7.3 पाठयपुस्तको के गुण या विशेषताए

पाठ्य पुस्तको को हम मुख्यतःदो विशेषताओं के आधार पर विभाजित किया जाता है।

1. आन्तरिक विशेषताएं

2. वाह्य विशेषताएं

1. आन्तरिक विशेषताएं

आन्तरिक विशेषताओं को हम तीन भागों में विभाजित करते है-

सामान्य विशेषताएं

भाषा सम्बन्धी विशेषताएं

शैली सम्बन्धी विशेषताएं

9.7.4 पाठ्य पुस्तको के प्रकार

वर्तमान में भाषा विविध पक्षों के शिक्षण को सरल और सम्भव बनाने के लिए पाठ्य पुस्तको का प्रयोग अनेक प्रकार से किया जाता है। चूँकि पाठ्य पुस्तकें विधार्थियों को पाठ्यक्रमानुसार और उद्देश्यपूर्ण भाषा ज्ञान उपलब्ध कराने का माध्यम है। इसलिए वे शिक्षक के लिए भी उपयोगी मार्गदर्शिका होती है। पाठ्यपुस्तक के लक्ष्य, पाठ्य सामग्री के प्रकार और उपयोग विधि के अनुसार पाठ्यपुस्तको को चार श्रेणियों के अन्तर्गत रखा जा सकता है-

1. पाठ्य पुस्तक- हिन्दी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अनुदेशनात्मक सामग्री के रुप में पाठ्य पुस्तक का महत्वपूर्ण योगदान होना है,हिन्दी शिक्षण में भाषा और साहित्य दोनों के शिक्षण में पाठ्य पुस्तक केन्द्रीय सामग्री की भूमिका निर्वाहकरती है। वैसे तो सभी विष्यों के शिक्षण में पाठ्यपुस्तक वैचारिक तथा भासिक दोनों पक्षों के ज्ञानवर्धन के लिए आधारशीला का कार्यकरती है।वैसं े तो सभी विषयों के शिक्षण में पाठ्यपुस्तक वैचारिक तथा भाषिक दोनों पक्षों के ज्ञानवर्धन के लिए आधारशिला का कार्य करती हैं। हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं तथा रुपों का ज्ञान देने के लिए पाठ्यपुस्तक मुख्य अनुदेशनात्मक सामग्री का कार्य करती हैं श्रवण कौशल,पठन कौशल,मौखिक अभिव्यक्ति

कौशल,लेखन कौशल आदि हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति पाठ्य पुस्तक की सहायता एवं प्रयोग के द्वारा ही की जा सकती हैं प्रस्तुत अध्ययन कक्षा 9 सी.बी.एस.ई. के छात्रों को न्यादर्श के रुप में चयनित किया गया है।

इसके लिए कक्षा-9 की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक पक्षीतिज को शिक्षण हेतु प्रयुक्त किया जाता गया हैं यह पुस्तक राष्टीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा कक्षा 9 के छात्रों के लिए हिन्दी भाषा की निर्धारित पुस्तक हैं ।पाठ्यपुस्तक क्षितिज के संकलन की रचनाएँ जहाँ एक ओर विद्यार्थियों में साहित्यिक संवेदना पैदा करने वाली हैं तो दूसरी ओर उन्हें जतिन के विभिन्न संदर्भों से जोड़ती हैं। इस बात का विशेष रुप से ध्यान रखा गया हैं कि विद्यार्थी साहित्य की विविध विधाओं से परिचित हो सके। वे एक ओर साहित्य की समृद परम्परा की पहचान के लिए मध्यकालीन कविता का आस्वाद ले और आज के लिए मध्यकालीन कविता का आस्वाद ले और आज के जीवन को जानने के लिए आधुनिक किवता का भी बोध प्राप्त करें । पुस्तक में प्रश्न अभ्यास इस ग से बनाये गये हैं। कि वे विद्यार्थियों को अपनी मौलिक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करे और उन्हें परिवेश और प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाएं। पुस्तक को रुचिकर और पठनीय बनाने में चित्रों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए लेखकों के परिचय के साथ उनके फोटों भी दिये गये है।

किसी कक्षा के लिए अनुमोदित भाषा पाठ्यपुस्तक उस स्तर के विद्यार्थियों की भाषायी, ज्ञानात्मक और व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति का उपकरण होती है। उदाहरण सातवी कक्षा की हिन्दी पाठ्यपुस्तक में 12-14 वर्ष के विद्यार्थियों की भाषा सम्बन्धी आवश्यकता के अनुसार सामग्री का संकलन होता है। जिससे नये शब्द व्याकरण सम्बन्धी संदर्भ व्यावहारिक भाषाओं विविध सामग्री का संकलन होता है। ज्ञानात्मक, भावनात्मक विचारात्मक, संरचनात्मक और अभ्यासपरक सामग्री के माध्यम से विद्यार्थियों का मूल्यांकन योग्य भाषा दक्षता की अवाप्ति सुनिश्चित की जाती है।

2. पूरक पुस्तक- हिन्दी शिक्षण के अन्तर्गत बालकों को दो प्रकार से अध्ययन करवाया जाता है। सूक्ष्म अध्ययन तथ स्थूल अध्ययन । सूक्ष्म अध्ययन कराने के लिए पाठ्य पुस्तकों की सहायता ली जाती है। तो स्थूल अध्ययन के लिए पूरक पुस्तकों की सहायता ली जाती हैं। पाठ्य पुस्तक के द्वारा बच्चों की सहायता ली जाती है। पाठ्य पुस्तक के द्वारा बच्चों में जिन भाषागत योग्यताओं तथा कौशलों का विकास करने के लिए शिक्षण कार्य किया जाता है,उन्हों योग्यताओं तथा कौशलों का अभ्यास करवाने तथा उन पर पूर्ण अध्किार करवाने के लिए पाठ्य पुस्तकों को अतिरिक्त कुछ ऐसी पुस्तकों की व्यवस्था की जाती हैं। जिनमें रुचिकर कहानियाँ ,प्रसंग,एकांकी ,पौराणिक कथा प्रसंग, यात्रा वर्णन आदि संकलित होते है। ऐसी पुस्तकों को ही पूरक पुस्तक कहा जाता है। ऐसी पुस्तकों को ही पूरक पुस्तक कहा जाता है। कक्षा 9 के लिए एन.सी.ई.आर. टी. द्वारा निर्धारित पूरक पुस्तक

कृतिका हैं। इस पुस्तक की सहायता से छात्रों में निम्नलिखित भाषागत योग्यताओं को विकसित करने में सहायता प्राप्त हुई।

क-स्वाध्याय की योग्यता विकसित करने में

ख- पठन रुचि विकसित करने में

ग- दूतगति से मौन पाठ करने की योग्यता विकसित करने में।

घ- परिचित शब्दावली को सक्रिय शब्दावली में परिर्तित करने में।

च- मनोरंजन करने में

छ-मानवजीवन से संबघित विविध पक्षों की जानकारी कराने में

ज- सद्प्रवृत्तियों को विकसित करने में।

पूरक पस्तक का स्वरूप पाठ्य पुस्तक की अपेक्षाकृति मय औपचारिक होता है। इसके निर्माण का उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वाध्याय मौन पाठ और साहित्यालोचन की प्रवृत्ति का विकास करना है। इसके घटको का निर्णय इस प्रकार किया जाता है कि विद्यार्थी भाषा -ज्ञान के साथ ही देश के इतिहास, संस्कृति, परम्परा और विविधता के बीच व्याप्त एकता से परिचित हो सके।

3. अभ्यास पुस्तिका- बच्चों को हिन्दी भाषा में पाठ्य पुस्तक की सहायता से सिखाये गये शब्द-भंडार वाक्य रचना वर्तनी उच्चारण व्याकरण संबंधी कार्य लघु नियन्त्रित रचना पत्र आदि का अभ्यास कराने के लिए अळयास पुस्तिका की सहायता ली गयी है। इसका उपयोग अनुदेशनात्मक सामग्री के रुप में तो किया ही गया है।साथ बच्चों के भाषायी ज्ञान और कौशल के परीक्षण के सहायक साधन के रुप में भी किया गया है। अभ्यास पुस्तिका के रुप में कक्षा 9 की हिन्दी व्याकरण पुस्तक का प्रयोग किया गया।

अभ्यास पुस्तिका का प्रकार मुख्य पाठ्य पुस्तक के भाषा तत्वो की पुनरावृत्ति व अभ्यास के उद्देश्य से किया जाता है। इसका प्रकाशन भी प्राय पाठ्यपुस्तक के स्चयिता अथवा प्रकाशक द्वारा किया जाता है। यह पुस्तिका मुख्यतः पाठ्य पुस्तक में संकलित सामग्री पर आधारित होती है।

4. संदर्भ ग्रन्थ- कक्षा में हिन्दी शिक्षण करते समय गद्य आदि के पाठ को पढ़ान के उपरान्त उसका पद्य विस्तृत अध्ययन करने के लिए शोधकर्त्ता ने संदर्भ ग्रन्थों की सहायता ली जिससे छात्रोंद को उन कविताओं के अथवा गद्यांश के भवार्थ को विस्तार से समझा सके।

संदर्भ पुस्तको का उपयोग वरिष्ठ कक्षाओं में पाठ्य तथा पुरक पुस्तको द्वारा प्रदत्त ज्ञान के विस्तार के लिए किया जाता है। विद्यालय के पुस्तकालय में भाषा का इतिहास, साहित्य का इतिहास, विख्यात

कवियों व लेखकों की जीवननियों व रचनावलियों कोश और संग्रहो की उपलब्धता सुनिश्चित की जाती है ताकि सहसम्बन्ध विधि द्वारा विषयगत जिज्ञासा की शान्ति के लिए विद्यार्थी उपयोगी ज्ञान, सूचना, आकडो, विस्तृत विवरणों इत्यादि का संग्रह व उपयोग कर सकें।

5. शब्द कोष- शब्द कोष से अभिप्राय हैं शब्दों का खजाना । शब्दकोष के अन्तर्गत भाषा के सभी शब्द उनकी व्युपत्ति रचना एवं व्यावहाणिक विशेषता स्पष्ट की जाती है। इसमें वर्णमाला के क्रमानुसार वर्णक्रम के विस्तार को ध्यान में रखते हुए शब्दों को व्यवस्थित रुप दिया जाता है। छात्रों के शब्द भंडार को विकसित करने के लिए शब्द भंडार को विकसित करने लिए शब्द कोष की सहासता ली गयी । हिन्दी शिक्षण के समय किसी पाठ में आए नवीन शब्दों के अर्थ एवं व्युत्पत्ति का ज्ञान कराने के लिए अध्यापक द्वारा मार्गदर्शन दिया गया । इस प्रकार शब्द भंडार में वृद्धि करने हेतु शब्दकोष एक उपयोगी अनुदेशनात्मक सामग्री के रुप में उपयोग में लाया गया है।

9.7.5 पाठय पुस्तक का हिन्दी शिक्षण में महत्व

शिक्षण एवं अध्ययन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें बहुत से कारक शामिल होते है। सिखने वाला जिस तरीके से अपने लक्ष्यो की ओर बढ़ते हुए नया ज्ञान, आचार और कौशल को समाहित करता है ताकि पुस्तक में लिखे हुए सभी कारक हिन्दी शिक्षण में शामिल किया जाता है। उसके सीखने के अनुभवों में विस्तार हो सके, वैसे ही ये सारे कारक आपस में संवाद की स्थिति में आते रहते है।

पिछली सदी के दौरान पुस्तक में हिन्दी शिक्षण पर विभिन्न किस्म के दृष्टिकोण से उभरे है पहले गुरूकुलों में बच्चे पेड-पौधो की पत्तियों पर लिखते थे। इनमें एक है ज्ञानात्मक शिक्षण जो शिक्षण को मस्तिष्क की एक क्रिया के रूप में देखता है। दूसरा है, रचनात्मक शिक्षण जो ज्ञान को सिखने की प्रक्रिया में की गई रचना के रूप में देखता है। इन सिद्धान्तो को अलग-अलग देखने के बजाय इन्हें सम्भावनाओं की एक ऐसी श्रृंखला के रूप में देखा जाना चाहिए जिन्हें पुस्तक का हिन्दी शिक्षण में अनुभवों में पिरोया जा सकता है। एकीकरण को इस प्रक्रिया के अन्य कारको को भी संज्ञान में लेना जरूरी हो जाता है। ज्ञानात्मक शैली, शिक्षण की शैली, हमारी मेधा एक समाधिक स्वरूप और ऐसा शिक्षण जो उन लोगों के काम आ सकते है जिन्हें विशेष जरूरत है। उन्हें विशेष बच्चो के अनुसार हिन्दी शिक्षण का महत्वता को बदलकर उनके अनुरूप किया जाता है और जो विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते है।

पुस्तक में हिन्दी शिक्षण की एक ऐसी रणनीति है जिसमें विद्यार्थी के पूर्वज्ञान आस्थाओं और कौशल का इस्तेमाल किया जाता है हिन्दी शिक्षण रणनीति के माध्यम से विद्यार्थी अपने पूर्व ज्ञान और सूचना के आधार पर नई किस्म की समझ को विकसित करता है।

इस शैली पर काम करने वाला शिक्षण प्रश्न को हिन्दी शिक्षण के माध्यम से प्रश्न पूछता है और विद्यार्थियों के जवाब तलाशने की प्रक्रिया पाठ्यपुस्तक के द्वारा जवाब तलाशने की प्रक्रिया का निरीक्षण करता है उन्हें निर्देश करता है तथा सोचने समझने के नए तरीकों का सूत्रपात करता है। कच्चे आकडो, प्राथमिक श्रोतो और संवादात्मक सामग्री के साथ काम करते हुए रचनात्मक शैली का शिक्षक, छात्रों को कहता है वे अपने जुटाव आकडो पर काम करे और खुद भी तलाश को निर्देशित करने का काम करें। धीरे-धीरे छात्र यह समझने लगता है कि हिन्दी शिक्षण के लिए पाठ्य-पुस्तक दरअसल एक ज्ञानात्मक प्रक्रिया है। इस किस्म की शैली हर उम्र के छात्रों के लिए कारगर है । यह व्यस्को के लिए भी बहुत उपयोगी होती है। पाठ्यपुस्तक में हिन्दी शिक्षण का बहुत महत्वपूर्ण योगदान देती है। हिन्दी शिक्षण में पुस्तक एक ऐसी प्रणाली है जिसमें बच्चो को याद रखने हेतु अध्ययन करता है जो उसे जरूरत के अनुसार वह शिक्षण सामग्री का उपयोग करते है।

9.7.6 पाठय पुस्तक का हिन्दी शिक्षण में भूमिका

शिक्षण में पाठ्यचर्या की योजना बनाने की प्रक्रिया एक बृहत कार्य है। एक प्रचलित विश्वास यह है कि अच्छी पुस्तकें पाठयचर्या निर्माण का मुख्य क्षेत्र है यही कारण है कि हम अक्सर देखते है कि बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा में जरूरी परिवर्तन हेतु मात्र पाठ्य पुस्तको को बदलकर सरकारी विकास की गति को तेज करने का प्रयास करती है।

पाठ्य पुस्तको में यह सुधार करते समय दावा यह भी किया है कि ये एन0सी0एफ0-2005 और आ0टी0ई0-2009 के अनुसार बालक को केन्द्र में रखकर लिखी गई है जबकि पाठ्यपुस्तको को बेहतर मानने के पीछे हमारे आधार यह हो सकते है कि उन्हें सावधानी पूर्वक लिखा गया है। पैशेवर सम्पादन द्वारा जॉचा गया हो, साथ ही वह बच्चो को ना सिर्फ तथ्यात्मक जानकारी देती हो बल्कि उन्हें संवाद के पर्याप्त मौके देती हो। यह बेहतर जरूरी है कि पाठ्य पुस्तक को हिन्दी शिक्षण की तकनीकी शब्दावली और उनकी परिभाषाओं से भरा विश्वकोष जैसा बनाने से बचा जाये और इसके बजाय शिक्षक को अवधारणाओं की समझ पर केन्द्रीत पाठ्य पुस्तक का हिन्दी शिक्षण में महत्व दिया जाए।

तेज गति से चलने वाले कक्षा शिक्षण गृह कार्य के बोझ और प्राईवेट टयूशन रूपी त्रिआयामी तनाव से बच्चो को मुक्त करने कें लिए जरूरी है कि पाठ्य पुस्तको का हिन्दी शिक्षण के लिए अवधारणाओं का विस्तार किया जाता है तथा विधि चिंतन ओर अभ्यास के ऐसे मौके हो जो सोचने को ब□ावा दे जिससे शिक्षण शाब्दिक अर्थ तक ही समिति ना रहे ताकि बच्चे पाठ्य पुस्तक को हिन्दी शिक्षण के आधार पर अपने क्रिया कलाप को करने के लिए सक्षम हो जाते है और वह अपने जीवन को आनन्द पूर्ण व्यतीत करने और प□ने में सक्षम हो सकते है।

पाठ्यपुस्तक में हिन्दी शिक्षण का प्रसिद्ध सुत्र वह है जो मूर्त से अमूर्त की ओर वास्तव में हमें वाहय संसार का ज्ञान अपनी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा होता है जिसमें नेत्र प्रमुख है। जब बच्चे की किसी वस्तु पर

दृष्टि पडती है तो हमें उसका सामान्य परिचय मिल जाता है। अतः पाठय पुस्तक का हिन्दी शिक्षण का निर्माण करने के लिए वस्तुविधि का सहारा लिया जाता है अर्थात् वस्तुओं को प□नि के लिए वस्तुओं का प्रदर्शन करके उनके विषय में ज्ञान प्रदान किया जाता है जिससे बच्चे आसानी से समझ सके।

यह तकि की अमूर्त को भी मूर्त बनाने का प्रयास किया जाता है जैसे तीन ओर दो पॉच को समझाने के लिए पहले छात्रों के सम्मुख तीन गोलियॉ रखी जाती है या बच्चे को बोल कर बताया जाता है फिर उनमें दो गोलियॉ और मिलाकर सबको एक साथ गिनाते है तब तीन और पॉच स्पष्ट होता है। वेसे ही बच्चे को जब हिन्दी शिक्षण का ज्ञान दिया जाता है तब बच्चे को अक्षर को मिलाकर पढ़ने का उपयोग सिखाते है जिससे बच्चे पुस्तक के द्वारा हिन्दी शिक्षण का ज्ञान ग्रहण कर सके।

9.7.7 पाठय पुस्तक का हिन्दी शिक्षण के लाभ

पाठयपुस्तक में हिन्दी शिक्षण के अनेक लाभ होते है उनमें से कुछ पाठ्य पुस्तक द्वारा हिन्दी शिक्षण का लाभ होता वह निम्न है।

अपनी चित-परिचित भाषा के विषय में जिज्ञासा की तृप्ति या शंकाओं का निर्मुलन किया जाता है।

ऐतीहासिक तथा प्रागैतिहासिक संस्कृत का परिचय होता है।

किसी जाति या सम्पूर्ण मानवता के मानसिक विकास का परिचय होता है।

पुस्तक में हिन्दी शिक्षण का महत्व उच्चारण एवं प्रयोग सम्बन्धी अनेक समस्याओं का समाधान किया जाता है।

विश्व के लिए हिन्दी शिक्षण के अन्तर्गत एक भाषा का विकास होता है।

पाठ्यपुस्तक के द्वारा हिन्दी भाषा या शिक्षण सिखने के साथ-साथ विदेशी भाषा शिक्षण का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होती है।

अनुवाद करने वाली तथा स्वयं टाईप करने वाली एवं इसी प्रकार की मशीनों के विकास और निर्माण में सहायक

भाषा लिपिक आदि में सरलता, शुद्धता आदि की दृष्टि से परिवर्तन में सहायक है।

ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोडना जिससे बच्चे पुस्तको का हिन्दी शिक्षण में अपने दैनिक जीवन की क्रिया कलाप को आसानी से सिखने में सक्षम होते है।

प□ई को रटन्त प्रणाली से मुक्त कर वह हिन्दी शिक्षण के द्वारा आसानी से समझ कर व आसानी से क्रिया को करने में उसका उत्तर देने में सक्षम हो जाते है।

पाठ्यचर्या पाठ्य पुस्तक हिन्दी शिक्षण को बच्चे के अन्दर उनके चहुमुखी विकास के अवसर मुहैया कराती है।

परिक्षा को लचीला बनाया जा सकता है तथा कक्षा की गतिविधियों से जोडने में सफलता मिलती है।

इसके द्वारा एक ऐसी पहचान का विकास होता हैं जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय चिंताएं समाहित हो रू□वादी विश्वास की ओर ले जाती है।

9.7.8 पाठ्य पुस्तक का हिन्दी शिक्षण में मूल्यांकन

क्रियात्मक अनुसंधान विद्यालय की कार्यविधि का अनिवार्य अंग है इसके प्रयोग से विद्यालय के संचालन और कक्षा शिक्षण में अनुभव की जाने वाली सभी प्रकार की समस्या का निराकरण किया जा सकता है। इससे विद्यालय में प्रयोग की जा रही प्रक्रियाओं और शिक्षण विधियों की उपयोगिता या व्यर्थता का मूल्यांकन भी किया जाता है। पुस्तक का हिन्दी शिक्षण में ऐसा होता है कि परम्परा संस्थापित प्रशासन या शिक्षण विधियॉ आज की बदलती हुई या तेजी से बदलती हुई परिस्थितियों में अपेक्षित परिणाम नही ला पाती। शिक्षक या विद्यालय प्रशासक उन्हें समयसिद्ध बनाकर प्रयोग करते है किन्तु अपेक्षित परिणाम सामने न आने पर उंल्घित होते है क्रियात्मक अनुसंन्धान इन परिस्थितियों में निर्णायक भूमिका निभाता है और विद्यालय व कक्षा में सहज व हिन्दी शिक्षण का संचालन को संभव करता है। पाठ्य पुस्तक के द्वारा बच्चो को हिन्दी शिक्षण में मूल्यांकन किया जा सकता है।

9.7.9 पाठ्य पुस्तक का हिन्दी शिक्षण में उपयोग

हिन्दी शिक्षण में पुस्तक एक ऐसा माध्यम है जिससे बच्चा किसी भी क्रिया कलाप को सिखने व उस कार्य को पूर्ण करने में मद्द देती है। यह पाठ्य पुस्तके राज्य के सभी सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों को मुफ्त उपलब्ध कराई जाती है। राज्य के अधिकांश विद्यालयों में विद्यार्थियों और यहॉ तक की शिक्षकों के लिए भी यह पाठयक्रम से जुडा एक मात्र संसाधन होता है। इन पाठ्यपुस्तक में जो पाठ दिये गये है वे शिक्षक शिक्षार्थियों को सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत कर सकें। शिक्षक द्वारा विषय के घटक को प□ने की योजना बनाते समय पाठ के अनुसार विषय वस्तु तैयार मिल जाती है।

इसके साथ ही पाठ्यपुस्तको में शिक्षण प्रक्रिया की भी विस्तृत रूपरेखा दी गई होती है जो शिक्षक सुझाती है कि क्या कब किया जाना चाहिए। प्रत्येक चरण स्पष्ट रूप से दिया जाता है।

पाठ्यपुस्तकें एक संपूर्ण कार्यक्रम का प्रस्तुत करती है जिसका शिक्षक और विद्यार्थी ना सिर्फ अक्षरशः पालन करते है बल्कि देखने में यह आता है कि वे इस पर आवश्यकता से अधिक निर्भर हो जाते है तथा किसी अन्य सामग्री का कक्षा में इस्तेमाल भी किया जा सकता है।

विद्यालय में इस पाठयपुस्तको को निर्देशिका की बजाय कोई शिक्षक पाठ्यपुस्तको से इतर कुछ आलेखों का इस्तेमाल करते है। राज्य में शिक्षको के पास अपनी जानकारी भी अपडेट करने के लिए चर्चा के अन्य या पेशेवर लोगों से बातचीत के मौके भी उपलब्ध है। इस परिस्थितियों में पाठ्यपुस्तको का महत्व बहुत ही ब□जाता है। राज्य के मध्यम एवं निम्न आय वर्ग के अधिकांश बच्चे जो सभी प्रकार के समुदाय से आते है इन पाठ्य पुस्तको के माध्यम से सरकारी विद्यालयों में प□रहे है और उन्हें मुफ्त पुस्तक भी दी जा रही है। इन बच्चो के अभिभावक अपेक्षा रखते है कि विद्यालयों में शिक्षको के द्वारा बच्चे के आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक रूप से स्वतंत्र निर्णय ले सके और आधुनिक प्रतिस्पर्धा के युग में मजबूती से अपनी जगह बना सके इसके लिए जरूरी है कि बच्चो में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो और सत्ता व न्याय के प्रति सरोकार हो तथा संविधान के आदर्श मूल्यों में विश्वास हो।

हिन्दी शिक्षण में पाठ्य पुस्तक का प्रयोग अर्वाचीन शिक्षा पाठ्य पुस्तको पर आधारित है। प्राचीन काल में जब मुद्रणकाल का विकास नही हुआ था तब समस्त विषय को शिक्षा मौखिक रूप से हुआ करती थी। आधुनिक युग ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी के अत्याधिक विकास के कारण मौखिक शिक्षा देने असम्भव ही नही दुष्कर कार्य है। यदि यह कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ती न होगी कि भाषा की पुस्तकें तो साधन साध्य दोनों रूपों में प्रयोग की जाती है। बच्चो को उनके उच्चारण को सुव्यवस्थित करने, पठन कला में निपुण करने , उनकी बोध एवं कल्पना को विकसित करने, उनकी रचनात्मक वृत्ति को सचेष्ट करने और उन्हें विविध विषयों का ज्ञान करा कर उनका चरित्र निर्माण करने के हेतु प्रयोग करते है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 5- पाठ्य पुस्तक आप क्या समझते है पाठ्य पुस्तक की विशिष्टता को रेखांकित करते हुए इसके प्रकार का वर्णन कीजिए।

....
....
....

....
....
....

....
....
.... प्रश्न
6- पाठ्य पुस्तक ंका हिन्दी भाषा शिक्षण में लाभ बताते हुए इसकी उपयोेगिता पर प्रकाश डालिए।

....
....
....

....
....
....
....
....

9.8 सारांश

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर शिक्षण मे ंप्रभावकारिता बढ़ाने छात्रों की सीखने की प्रक्रिया में वृद्धि करने एवं प्राप्त ज्ञान में स्थायित्व प्रदान करने के लिए शिक्षण अधिक प्रक्रिया में सहायक उपकरणो ंका समावेशन किया जाता है। अतः शिक्षण के गुणवत्ता स्तर को ऊँचा उठाने के लिए विद्यालय में शिक्षण अधिगम सामग्री का होना अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत विवेचन में श्रव्य उपकरणों के मुद्रित प्रकार एवं कॉम्पैक्ट डिक्स कैसट तथा अखवार एवं पाठ्यपुस्तक की हिन्दी शिक्षण मे उपयोगिता एवं पाठ्यपुस्तक की हिन्दी शिक्षण मे उपयोगिता एवं प्रयोग विधि का स्पष्टीकरण किया जाता है। वस्तुत शिक्षण अधिगम सामग्री दृश्य श्रव्य साध नही है। इनमें से कुछ तो एवं निर्मित कुछ प्रकृति प्रदत्त तथा कुछ तो एवं निर्मित कुछ प्रकृति प्रदत्त तथा कुछ बाजार से खरीदे हुए हो सकते है। इस प्रकार ऐसे उपकरण साधन या सामग्री जो उन्हें शिक्षा विद् शिक्षण अधिगम सामग्री का नाम देते है। शिक्षण अधिगम सामग्री वह सामग्री है जो शिक्षण अधिगम को गति देती है।

9.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1- काम्पैक्ट डिस्क (सी0डी0) एक छोटे, पोर्टेबल, गोल माध्यम का उपकरण है। जो इलेक्ट्रानिक रिकाडिंग, भण्डारण, आडियों-विडियों, पाठ और अन्य जानकारी वापस चलाने के लिए बना है। ज्ञान, सूचना, घटना इत्यादि के संग्रह और संरक्षण का जो काम ध्वनि के स्तर पर टेप-रिकॉर्डर करता है, चलचित्र के क्षेत्र में वही भूमिका विडियों कैसेट, कॉम्पैक्ट डिस्क केमरा और कॉम्पैक्ट डिस्क प्लेयर निभाता है। जैसा अन्तर रेडियों और टेलीविजन में है वैसा ही टेपरिकॉर्डर-

प्लेयर और वी0सी0आर0 , वी0सी0पी0 में है। इन उपकरणों का प्रयोग भाषा के व्यवहारिक पक्षों के परिचय के लिए प्रभावी रूप में किया जा सकता है।

हाल के वर्षो में अनेक ऐसी टेलीविजन धारावाहिकों का निर्माण और प्रसारण हुआ है। जो इतिहास, संस्कृति और विशुद्ध तथा उच्च स्तरीय भाषा- प्रयोग की दष्टि से पर्याप्त उपयोगी है।

उत्तर 2- सहायक उपकरणों में समाचार-पत्र पत्रिकाओं व साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं को शामिल किया जाता है। इनमें से समाचार पत्र प्रचलित भाषा में लोक-व्यवहार, राजनीति, समाज, विज्ञान, व्यापार-वाणिज्य, फैशन, कला, साहित्य और खेल जैसे-विविध विषयों का ज्ञान उपलब्ध कराते है। माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए समाचार-पत्र पढ़ना भाषा के व्यवहारिक पक्ष के साथ ही सम-सामयिक मुद्दो की जानकारी और इस माध्यम से समाज के स्वरूप को समझने का सरल और सुलभ माध्यम है। इस माध्यम का सदुपयोग करने के लिए विद्याथियों को पुस्तकालय के माध्यम से विभिन्न समाचार पत्र व पत्रिकाएँ उपलब्ध कराकर नये शब्दों, पारिभाषिक शब्दों और वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली के संकलन व अभ्यास के लिए प्रेरित किया जा सकता है। कभी सम-सामयिक विषयों पर टिप्पणी लिखने, संक्षेपण , या विस्तारण करने और विचार गोष्ठी जैसे आयोजनों के लिए भी समाचार पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग सुनिश्चित किया जा सकेगा। भाषा ज्ञान व साहित्यिक आवश्यकताओं की पूर्ति की दृष्टि से साहित्यिक पत्रिकाएॅं विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है।

इस विषय में शिक्षक को पुस्तकालय के सहयोग से कक्षोपयोगी सामग्री के चयन का प्रयास करना चाहिए। इससे विद्यार्थियों के भाषाज्ञान व भाषाकौशलों के अभ्यास में पत्रिकाओं का उपयोग सुनिश्चित किया जा सकेगा।

उत्तर 3- अखबार संचार के साघनों में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। अखबार प्रायः दैनिक होते है लेकिन कुछ अखबार साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक एवं छमाही भी होते है। अधिकतर अखबार स्थानीय भाषाओं में और स्थानीय विषयों पर केन्द्रित होते है।

मनुष्य शुरूआत से ही सामाजिक प्राणाी रहा है, उसे अपने आस-पास घटने वाली घटनाओं के बारे मं जानने की उत्सुकता सदा से ही रही है। यही कारण है अखबार का आविष्कार हुआ, ताकि समाज को अपने आस-पास एवं विश्व में हो रही घटनाओं एवं सूचनाओं की जानकारी मिल सकें। न्यू यार्क टाइम्स, द टाइम्स ऑफ इण्डिया आदि प्रमुख अखबार के उदाहरण है।

अखबार वह जरिया है जिसके द्वारा सभी प्रकार की जैसे- सामाजिक, आर्थिक एवं मनोरंजन की जानकारियां प्राप्त होती है। अखबार के द्वारा हमें कई विशेष जानकारियां जैसे- रोजगार, समाचार, स्वास्थ्य सम्बन्धी, लेख, मनोंरजन जगत, खेल जगत के समाचार आदि मिलती है। रोजगार के अवसर अखबार मेंं प्रकाशित होते है जिससे शिक्षित लोगों को रोजगार [illegible] में सहायता

मिलती है। व्यवसायी अपने प्रॉडक्ट की जानकारियॉ लोगों तक पहु ॅचाने हेतु अखबार में विज्ञापन देते है। अखबार समाज के हिन्दी भाषा शिक्षण का प्रसार करते है जिससे देश में हिन्दी शिक्षा का महत्व बढ़ता है तथा अखबार समाज में समाजिक बुराईयों के प्रति जागरूकता पैदा करता है जैसे कि दहेज प्रथा, अपराध, चोरी आदि।

उत्तर 4- पत्रिका सदुपयोग करने के लिए विद्याथियों को पुस्तकालय के माध्यम से विभिन्न समाचार पत्र व पत्रिकाएँ उपलब्ध कराकर नये शब्दों, पारिभाषिक शब्दों और वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली के संकलन व अभ्यास के लिए प्रेरित किया जा सकता है। कभी सम-सामयिक विषयों पर टिप्पणी लिखने, संक्षेपण , या विस्तारण करने और विचार गोष्ठी जैसे आयोजनों के लिए भी समाचार पत्र-पत्रिकाओं का उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है। आकार, अलं ेवर, संस्करण और मूल्य में भिन्न होने पर भी समाचार, साहित्य व ज्ञान-विज्ञान जैसे विषयो की पत्रिकाए ॅं कुछ मामलों में समाचार पत्र जैसी ही होती है। इस विषय में शिक्षक को पुस्तकालय के सहयोग से कक्षोपयोगी सामग्री के चयन का प्रयास करना चाहिए। इससे विद्यार्थियों के भाषाज्ञान व भाषाकौशलों के अभ्यास में पत्रिकाओं का उपयोग सुनिश्चित किया जा सकेगा।

उत्तर 5-‘एक निश्चित पाठ्यक्रम के अध्ययन के प्रमुख साधन के रूप में एक निश्चित शैक्षिक स्तर पर प्रयुक्त करने के लिए एक निश्चित विषय पर व्यवस्थित ा से लिखी हुई पुस्तक पाठ्य-पुस्तक है।’

क्रानबैक के विचारानुसार- ‘पाठयपुस्तक प्रायः अप्रौढ़ छात्रों के लिए पुस्तक लिखी जाती है।

पाठ्य पुस्तको को हम मुख्यतःदो विशेषताओं के आधार पर विभाजित किया जाता है।

1. आन्तरिक विशेषताएं
2. वाह्य विशेषताएं

1. आन्तरिक विशेषताएं

आन्तरिक विशेषताओं को हम तीन भागों में विभाजित करते है-

सामान्य विशेषताएं

भाषा सम्बन्धी विशेषताएं

शैली सम्बन्धी विशेषताएं

उत्तर 6- पाठयपुस्तक में हिन्दी शिक्षण के अनेक लाभ होते है उनमें से कुछ पाठ्य पुस्तक द्वारा हिन्दी शिक्षण का लाभ होता वह निम्न है।

ऐतीहासिक तथा प्रागैतिहासिक संस्कृत का परिचय होता है।

किसी जाति या सम्पूर्ण मानवता के मानसिक विकास का परिचय होता है।

पुस्तक में हिन्दी शिक्षण का महत्व उच्चारण एवं प्रयोग सम्बन्धी अनेक समस्याओं का समाधान किया जाता है।

पाठ्यपुस्तक के द्वारा हिन्दी भाषा या शिक्षण सिखने के साथ-साथ विदेशी भाषा शिक्षण का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होती है।

भाषा लिपिक आदि में सरलता, शुद्धता आदि की दृष्टि से परिवर्तन में सहायक है।

ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोडना जिससे बच्चे पुस्तको का हिन्दी शिक्षण में अपने दैनिक जीवन की क्रिया कलाप को आसानी से सिखने में सक्षम होते है।

प□ाई को रटन्त प्रणाली से मुक्त कर वह हिन्दी शिक्षण के द्वारा आसानी से समझ कर व आसानी से क्रिया को करने में उसका उत्तर देने में सक्षम हो जाते है।

पाठ्यचर्या पाठ्य पुस्तक हिन्दी शिक्षण को बच्चे के अन्दर उनके चहुमुखी विकास के अवसर मुहैया कराती है।

राज्य के अधिकांश विद्यालयों में विद्यार्थियों और यहॉ तक की शिक्षकों के लिए भी यह पाठयक्रम से जुडा एक मात्र संसाधन होता है। इन पाठ्यपुस्तक में जो पाठ दिये गये है वे शिक्षक शिक्षार्थियों को सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत कर सकें। शिक्षक द्वारा विषय के घटक को प□ाने की योजना बनाते समय पाठ के अनुसार विषय वस्तु तैयार मिल जाती है।

इसके साथ ही पाठ्यपुस्तको में शिक्षण प्रक्रिया की भी विस्तृत रूपरेखा दी गई होती है जो शिक्षक सुझाती है कि क्या कब किया जाना चाहिए। प्रत्येक चरण स्पष्ट रूप से दिया जाता है।

पाठ्यपुस्तकें एक संपूर्ण कार्यक्रम का प्रस्तुत करती है जिसका शिक्षक और विद्यार्थी ना सिर्फ अक्षरशः पालन करते है बल्कि देखने में यह आता है कि वे इस पर आवश्यकता से अधिक निर्भर हो जाते है तथा किसी अन्य सामग्री का कक्षा में इस्तेमाल भी किया जा सकता है। हिन्दी शिक्षण में पाठ्य पुस्तक का प्रयोग अर्वाचीन शिक्षा पाठ्य पुस्तको पर आधारित है। भाषा की पुस्तकें तो साधन साध्य दोनों रूपों में प्रयोग की जाती है। बच्चो को उनके उच्चारण को सुव्यवस्थित करने, पठन कला में निपुण करने , उनकी बोध एवं कल्पना को विकसित करने, उनकी रचनात्मक वृत्ति को

सचेष्ट करने और उन्हें विविध विषयों का ज्ञान करा कर उनका चरित्र निर्माण करने के हेतु प्रयोग करते है।

9.10 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1- श्रवण उपकरण से आप क्या समझते है। श्रवण उपकरण प्रकारांे का विस्तार से वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2- पाठ्य पुस्तक आप क्या समझते है हिन्दी भाषा शिक्षण में इसके लाभ बताते हुए इसकी उपयोेगिता पर प्रकाश डालिए।

9.11 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

चर्चा और स्पष्टीकरण के बिन्दुः-

इस इकाई के अध्ययन के बाद हो सकता है कि आप कुछ बिन्दुओं पर चर्चा करना चाहें व कुछ अन्य के बारे में कुछ स्पष्टीकरण चाहें, ऐसी स्थिति में कृपया उन्हें नीचे नोट कीजिए।

चर्चा के बिन्दु

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

स्पष्टीकरण के बिन्दुः-

....

....

....

....

....
....
....
....
....
....

इकाई 10- वैद्युदण्विक उपकरण

इकाई की रुप रेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 उददेश्य

9.3 टेलीविजन
9.3.1 टेलीविजन अवधारण
9.3.2 टेलीविजन का अर्थ
9.3.3 भारत में शैक्षिक टेलीविजन प्रसारण
9.3.4 टेलीविजन की हिन्दी भाषा में शैक्षिक उपयोगिता
9.3.5 टेलीविजन प्रयोग विधि
9.3.5 टेलीविजन के लिए प्रतिलिपि लेखन में हिन्दी भाषा
9.3.6 शैक्षिक टेलीविजन के लाभ
9.3.7 शैक्षिक टेलीविजन की सीमाएँ
9.4 कम्प्यूटर
9.4.1 कम्प्यूटर का अर्थ व परिभाषा
9.4.2 कम्प्यूटर का प्रयोग
9.4.3 शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर का उपयोग
9.4.4 कम्प्यूटर के उपयोग के क्षेत्रः-
9.4.5 हिन्दी शिक्षा में कम्प्यूटर्स की भूमिकाः-
9.4.6 शिक्षा में कप्यूंटर
9.4.7 कम्प्यूटर आधारित शिक्षण
9.4.8 भारतवर्ष में कम्प्यूटर का प्रयोग
9.4.9 कप्यूटर के लाभ
9.4.10 कम्प्यूटर कमी सीमाएँ
9.5 विश्वजाल (इन्टरनेट)
9.5.1 इन्टरनेट की सुविधाऐं
9.5.2 इण्टरनेट की विशेषताएँ तथा लाभ
9.5.3 हिन्दी भाषा शिक्षण के क्षेत्र में (विश्वजाल) इन्टरनेट का प्रयोगः-
9.6 सारांश
9.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.8 निबन्धात्मक प्रश्न
9.9 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

9.1 प्रस्तावना

शिक्षण में प्रयुक्त वैद्यद्ण्कि उपकरण का चयन शिक्षक की योग्यताओं एवं प्रयत्नों पर निर्भर करता है। शिक्षक की शिक्षण के प्रति रुचियों उसके प्रयत्नों को प्रभावित करती है। आधुनिक युग में विद्युतीय उपकरणों का शिक्षा में अत्याधिक महत्व है। यह एक प्रभावशाली दृश्य-श्रव्य माध्यम है। वैद्यद्ण्कि उपकरणों की सहायता से शैक्षिक पाठों के प्रसारण से दूर-दराज के छात्रों को अत्याधिक लाभ पहँ ुचता हैं। प्रसिद्ध विद्वानों तथा शिक्षाशास्त्रियों के प्रसारण टेलीविजन पर प्रसारित किए जाते है। जिसका लाभ सभी छात्र उठाते है। कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट का उपयोग आधुनिक समाज की पहचान बन गया है। शिक्षक प्रत्येक शिक्षार्थी के साथ अथवा शिक्षार्थियों के प्रत्येक समूह से विचार विमर्श करते हुए वैद्यद्ण्कि सामग्री के उपयोग द्वारा पाठ-योजना को दोहरा सकता है। शिक्षण केवल एक स्रोत अथवा माध्यम द्वारा न होकर बहुमाध्यम द्वारा होता है। विद्युतीय उपकरणों के माध्यम से शिक्षण एवं जनसंचार इलेक्ट्रानिक मीडिया की रुपरेखा है।

9.2 उददेश्य

वैद्युदण्विक उपकरण से सम्बन्धित इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

वैद्युदण्विक उपकरण के भाषा शिक्षण अधिगम मे ं महत्व जान सकेंगे।

वैद्युदण्विक उपकरण क्या है, इसे बता सकेंगे।

वैद्युदण्विक उपकरण का भाषा शिक्षण अधिगम मे ंचयन किस प्रकार किया जाय जान सकेंगे।

वैद्युदण्विक उपकरण का भाषा शिक्षण अधिगम मे ंचयन किस प्रकार किया जाय जान सकेंगे।

वैद्युदण्विक उपकरणो ंके द्वारा भाषा शिक्षण अधिगम के नये तरीके जान सकेंगे।

टेलीविजन द्वारा भाषा शिक्षण अधिगम ज्ञान प्राप्त कर सकें।

कम्प्यूटर द्वारा भाषा शिक्षण अधिगम का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

विश्वजाल के द्वारा भाषा शिक्षण अधिगम का ज्ञान प्राप्त कर सके।

इसके उपयोग से देश विदेश की जानकारियों को जान सकेंगे।

वैद्युदण्विक उपकरणों के रुपों को बता सकेंगे।

9.3 टेलीविजन

9.3.1 टेलीविजन अवधारणा

टेलीविजन नवीनतम श्रव्य-दृश्य उपकरण है। शिक्षा देने के लिए इसका प्रयोग प्रारम्भ हो गया है पर इसके ँ ऊॅंचे मूल्य से इसका प्रयोग अभी तक सीमित है। टेलीविजन में इन्द्रियों का प्रयोग करने के कारण किसी भी तथ्य को शीघ्रता से सीख जाता है। टेलीविजन का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि वह जीवन्त होता है अर्थात् वह किसी भी बात को सदैव विकारमुक्त रूप से उसी क्षण पर्दे पर प्रस्तुत कर देता है, जीवन्त होने के कारण यह अत्यधिक वास्तविक होता है। छात्रों को इसके प्रति विम्बों की यथार्भता पर सहज विश्वास हो जाता है और यह विश्वास शिक्षण को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त यह उपकरण योग्यतम शिक्षको को देश की शिक्षा संस्थाओं तक पहुॅंचा देता है। और शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने में सहायक होता है, इसका सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि इसके मानचित्र, मॉडल, फोटोचित्र, फिल्म आदि विविध प्रकार की श्रव्य दृश्य सामग्री का उपयोग किया जा सकता है ताकि शिक्षण प्रभावशाली बन सके। इस उपकरण के महत्व का उल्लेख करते हुए यह व गेरबेरिच ने कहा है, यह सबसे अधिक आशापूर्ण श्रव्य-दृश्य उपकरण है, क्योंकि सन्देशवाहन के इस एक यंत्र में रेडियों तथा चलचित्र के गुणों का सम्मिश्रण है।

9.3.2 टेलीविजन का अर्थ

टेलीविजन का अर्थ है दूर से देखना। टेलीविजन के आविष्कार ने हिन्दी भाषा के शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला दिया है। वास्तव में टेलीविजन रेडियों का ही विकसित रूप है। एक ओर रेडियों से हम देश-विदेश में होने वाली घटनायें सुनते है तो दूसरी और टेलीविजन हमें घटनायें स्वयं अपनी ऑखों से देखने में सहायता करता है। टेलीविजन विकसित देशों में प्रचार तथा मनोंरजन के माध्यम के रूप में अपनाया गया है। भारत में टेलीविजन का प्रारम्भ नियमित रूप से 15 सितम्बर 1959 में हुआ जब राष्ट्रपति आकाशवाणी द्वारा दिल्ली में स्थापित प्रथम प्रयोगिक टेलीविजन केन्द्र का उद्घाटन किया। शिक्षा के क्षेत्र में टेलीविजन का प्रयोग 1961 में प्रारम्भ हुआ। कक्षा की प□ई और टेलीविजन पाठों के बीच उपयुक्त समन्वय स्थापित करने के लिए आकाशवाणी ने पहले शिक्षकों और प्रधानार्य के लिए अनेक कर्मशालयें लगायीं। प्रारम्भ में कुछ विषयो विशेषकर भौतिक तथा रसायनशास्त्र, हिन्दी तथा अंग्रेजी के पाठ होते थे परन्तु धीरे-धीरे सभी विषयों पर और अधिक समय के लिए शैक्षिक कार्यक्रम दिये जाने लगें। आजकल विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की योजनाओं के अन्तर्गत विद्यालयों तथा महाविद्यालयों के स्तर के अनेको कार्यक्रम टेलीविजन की सहायता से प्रसारित किये जाते है। उपग्रह दूरदर्शन के माध्यम में पूरे भारत में टेलीविजन के विशेष कार्यक्रम दिखाये जाते है। रेडियों की भांति टेलीविजन द्वारा भी दो प्रकार के पाठ दिये जाते है-

1. ज्ञानवर्धक पाठ- ऐसे पाठ जिनका सम्बन्ध पाठ्यक्रम से नही होता परन्तु विषय सम्बन्धी जानकारी प्राप्त हो जाती है।

2. प्रत्यक्ष पाठ- इनका सम्बन्ध सीधा पाठ्यक्रम से होता है तथा इस प्रकार के पाठ विषय विशेषज्ञो द्वारा तैयार किये जाते है।

आधुनिक युग में दूरदर्शन सम्प्रेक्षण संचार क्रिया का एक शक्तिशाली माध्यम है। इसमें श्रवण एवं दृष्टि सम्न्धी इन्द्रियों का प्रयोग होता है इसके द्वारा प्रत्येक बात सुनी जा सकती है। इसमें प्रत्येक घटना को रिकार्ड करने की व्यवस्था और उसे फिर से प्रस्तुत करने की व्यवस्था होती है। भारत में सैटलाइटस की सहायता से राष्ट्रीय कार्यक्रम दूरदर्शन पर दिखाये जाने लगे है। ये कार्यक्रम सम्पूर्ण देश के दूरदर्शन पर देखे जा सकते है। दूसरे देशों के कार्यक्रम भी भारत में देखे जा सकते है।

9.3.3 भारत में शैक्षिक टेलीविजन प्रसारण

1. रेडियों तथा टेलीविजन लगभग पिछले पॉच दशकों से हमारे देश में शिक्षा प्रणाली के विकास के लिए काम में लाया जा रहा है।

2. पहली बार 1961 में नई दिल्ली के स्कूलों में टेलीविजन का प्रयोग किया गया था बाद में इस योजना का मुम्बई चेन्नई और श्रीनगर के दूरदर्शन केन्द्र ने अनुकरण किया। ये केन्द्र प्रायः मध्य स्तर और उसके ऊपर के बच्चो के लिए ही प्रसारण करते है। लेकिन उनमें से कुछ प्राथमिक स्कूलों के लिए भी काम करते है।

3. सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्तर के अधिकतम छात्रों तक इन कार्यक्रमों को पहुचाने के पहली बार 1975-76 में टेलीविजन का बडे पैमाने पर प्रयोग किया गया। उसके लिए सैटेलाइट प्रशिक्षण टेलीविजन परीक्षण (एस0आई0टी0ई0) के समय एक अमेरिकी सैटेलाइट- ए0टीर0सी0-6 की सहायता ली गई थी। यह परीक्षण एक वर्ष तक चलता रहा। इससे छः राज्यों- आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, विहार, कनार्टक, उडीसा और रासजस्थान के बीस जिलों के 1730 गॉवों के छात्रों को लाभ हुआ। स्कूल मे उन बच्चो द्वारा प्रतिदिन बीस मिनट का कार्यक्रम टेलीविजन पर देखा गया। 1975 में दशहरे की छुट्टियों में बारह दिन तक सैटेलाइट का प्राथमिक स्कूलों के शिक्षको को विज्ञान में प्रशिक्षत करने के लिए प्रयोग किया या। उसमें चौबीस हजार से भी अधिक शिक्षको ने भाग लिया। 1975 की गर्मी की छुटिटयों में वही प्रशिक्षण अन्य शिक्षकों को भी प्रदान किया गया।

4. उक्त परीक्षण के बाद जयपरु, रामपुर और मुजफ्फपुर में स्थित ग्राउण्ड ट्रांसमीटरों की सहायता से कुछ एक स्कूलों के लिए ये कार्यक्रम प्रसारित किये जाते रहे है।

5. 4अप्रैल 1982 में भारतीय राष्ट्रीय सैटेलाइट (इन्सेट) की स्थापना की गई। उसकी सहायता से प्राथमिक शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए टेलीविजन का बडे पैमाने पर प्रयोग किया

जा रहा है। शेक्षिक टेलीविजन सेवा आन्ध्र प्रदेश और उडीसा से आरम्भ की गई थी। बाद में उसका महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश और बिहार में विस्तार किया गया। इन राज्यों के कुछ चुने हुए जिलों के स्कूलों के लिए भारत सरकार ने छ हजार से अधिक टेलीविजन उपलब्ध करायें है।

6. अक्टूबर 1984 के मध्य से शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रम अधिक शक्तिशाी तथा कम शक्तिशाली प्रेषित्रो की सहायता से उक्त छ राज्यों तथा हिन्दी-भाषी राज्यस्थान और मध्यप्रदेश में भी प्रसारित किये जा रहे है। इन प्रसारण क्षेत्रों में आने वाले अन्य स्कूलों के लिए राज्य सरकारें अतिरिक्त समुदायिक टेलीविजन का प्रबन्धन कर रही है। अब देश में लगभग 200 टेलीविजन प्रेषित है। उनसे सत्तर प्रतिशत जनता इन प्रसारणों को देख सकती है।

7. केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली तथा राज्य प्रौद्योगिकी संस्थान अनेक प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रम तथा सामग्री का निर्माण कर रहे है, जिन्हें विभिन्न भाषाओं में प्रयोग किया जा रहा है।

8. शैक्षिक टेलीविजन योजना के अन्तर्गत प्राथमिक स्कूलों में रंगीन टी0बी0 सेट रेडियों तथा कैसेट प्लेयर बडे पैमाने पर वितरित किये जा रहे है। शेक्षिक टी0वी0 कार्यक्रम प्रतिदिन प्रायः 3 घन्टे 45 मिनट लगभग 160 स्कूल दिवसों में प्रसारित किये जाते है। जिससे हिन्दी और चार क्षेत्रीय भाषाओं -गुजराती, मराठी उडिया तथा तेलगु में (45 मिनट प्रत्येक भाषा) समय के आधार पर प्रसारण किया जाता है।

9. कार्यक्रम 6-8 व 9-11 वर्ष के आयु वर्गो के छात्रों के लिए सोमवार से शुक्रवार तक निर्मित व प्रसारित किये जाते है। प्रत्येक शनिवार को प्राथमिक स्तर के स्कूल शिक्षको के लिए कार्यक्रम प्रसारित किये जाते है। शै0टी0बी0 कार्यक्रम सभी उच्च शक्ति ट्रासंमीटरों द्वारा 6 इनसेट राज्यों व अन्य हिन्दी-भाषी राज्यों से प्रसारित किये जाते है।

10. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा इन्दिरा गॉंधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय अनेक प्रकार के दूरदर्शन टेलीविजन शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित कर रहे है।

19.3.4 टेलीविजन की हिन्दी भाषा में शैक्षिक उपयोगिता

टेलीविजन के प्रयोग ने शिक्षा जगत में एक महत्वपूर्ण क्रान्ति ला दी है। इसके प्रयोग से कठिन से कठिन विषय को भी सुगमतापूर्वक प□ाया जा सकता है। टेलीविजन ने शिक्षा के क्षेत्र को निम्नलिखित रूप से प्रभावित किया है-

1. टेलीविजन द्वारा विभिन्न विषयों के कठिन प्रकरणों को सरलतापूर्वक बालको को समझाया जा सकता है। संगीत कला, कृषि, विज्ञान, भाषा, स्वास्यि शिक्षा सभी विषयों के बारे में इसके माध्यम से जानकारी प्रदान की जा सकती है।

2. विभिन्न प्रदेशों तथा देशों की भाषा संस्कृति, नृत्य कला, संगीत आदि के विषय में भी टेलीविजन की सहायता से जानकारी प्रदान की जा सकती है।

3. दूरदर्शन पर विशेषज्ञो द्वारा नये-नये अनुसंसाधनों सम्बन्धी वार्ताएँ प्रसारित की जा सकती है और शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों के ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है।

4. दूरदर्शन द्वारा समय-समय पर विभिन्न राष्ट्रीय दिवस धार्मिक उत्सव, दीपावली, होली इत्यादि के कार्यक्रम दिखाकर बालको में राष्ट्रीय एकता, देश प्रेम इत्यादि की भावना का विकास किया जा सकता है।

5. प्रत्येक विषय में कई ऐसे पाठ होते है जो न तो विद्यार्थी सरलता से समझ सकते है और न ही शिक्षक उन्हें पढ़ा सकता है। ऐसे पाठों को भी अभिनय तथा नाटक द्वारा टेलीविजन पर दिखाकर सरलता पूर्वक समझाया जा सकता है।

6. इसकी सहायता से विद्यार्थी को खेलकूद एवं पाठ्यक्रम में सम्मिलित अन्य पाठ्य क्रियाओं की जानकारी प्रदान की जा सकती है। विद्यालयों में दूरदर्शन की सहायता से सप्ताह में कई बार अनेको कार्यक्रम दिखाये जा सकते है। जिससे विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि हो सके और खेलों तथा अन्य कार्यक्रमो में रूचि उत्पन्न हो सके।

7. टेलीविजन की सहायता से विद्यार्थियों को राजनीतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक घटनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की जा सकती है। एक ही समय में कम खर्च करके अधिक से अधिक विद्यार्थियों को प्रभावित किया जाता है।

8. टेलीविजन की सहायता से विद्यार्थियों की देश, विदेश में होने वाली घटनाओं, उन्नति आदि के प्रति जागरूक रखा जा सकता है। विद्यार्थी स्कूल में बैठे ही विदेशां में होने वाली घटनाओं की विस्तृत जानकारी प्रापत कर सकते है।

9.3.5 टेलीविजन प्रयोग विधि

अपने उदभव के बाद से ही टेलीविजन का जनशिक्षा में जनशिक्षा में प्राभावी योगदान रहा है। विगत शताब्दी के छठे दशक में डा0 एस0एम0 स्वामीनाथन द्वारा प्रणीत 'हरित क्रान्ति' की सफलता में टेलीविजन भी भूमिका को अनदेखा नही किया जा सकता। इसके माध्यम से पाठों को श्रव्द्धय और दृश्य दोनों पक्षों को ग्रहण किया जा सकता है। सजीवता और व्यापकता की दृष्टि से भी टेलीविजन

का कोई मुकाबला नही है। इसके माध्यम से प्रस्तुत पाठ, परिचर्चाख् नाटक, ओपन एअर, रिकार्डिग , साक्षात्कार यात्रा-विवरण इत्यादि सजीव और यर्थाथ होने कारण प्रभावकारी होते है।

टेलीविजन द्वारा प्रसारित स्कूल पाठो का पूरा लाभ उठाने के लिए भी शिक्षक की ओर से कतिपय प्रयास और तैयारी अपेक्षित होती है। ये लगभग वैसी ही है, जैसी रेडियो प्रसारण के लिए करणीय होती है। रेडियों और टेलीविजन प्रसारणों का पूरा लाभ उठाने के लिए और सुविधानुसार उनका पुनः उपयोग करने के लिए टेप रिकार्डर या बी0सी0आर0 उपयोग कार्यक्रमों को रिकार्ड किया जाना चाहिए। इस विधि से शिक्षकगण आकाशवाणी, दूरदर्शन व अन्य टेलीविजन चैनलो द्वारा प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों को बेहतर उपयोग कर सकते है।

9.3.6 टेलीविजन के लिए प्रतिलिपि लेखन में हिन्दी भाषा

प्रतिलिपि को तैयार करना दूरदर्शन कार्यक्रम के नियोजन की अन्तिम आवस्था है। प्रतिलिपि में चरित्रों साधनों , विषय वस्तुओं एवं दृश्य- श्रव्य के बारे में आवश्यक जानकारी होती है, इसको तैयार करने वाले या होने वाले टेलीविजन कार्यक्रमों के नियोजन की पूर्ण होती है। पॉच मुख्य प्रकार की प्रतिलिपि पायी जाती है, जो निम्नलिखित है-

(क). पूर्ण प्रतिलिपि- एक विस्तृत प्रतिलिपि में सभी प्रकार की सम्बन्धित सूचनाये रहती है, अपने प्रस्तुतीकरण के सम्बन्ध में दृश्य एवं श्रव्य के घटकों का उचित समन्वय होता है।

(ख). अर्थपूर्ण प्रतिलिपि- एक अर्थपूर्ण प्रतिलिपि में शीर्षक, पाठ्यवस्तु एवं उचित निर्देशन को क्रमगद्ध किया जाता है। इस प्रकार इसके द्वारा चरित्रों, साधनों एवं विषय वस्तुओं को विभिन्न स्वरूप में प्रदान किया जाता है। इसमें सम्पूर्ण रूप से सूचना नहीं होती है। साधारणतः विशेषज्ञ ऐसे होते है जिनके द्वारा अपूर्ण प्रतिलिपि को दूरदर्शन टेलीविजन पर क्रियान्वयन किया जाता है। यह एक प्रचलित प्रकार का शैक्षिक कार्यक्रम है।

(ग) कार्य/समय प्रारूप प्रतिलिपि- इस प्रकार के प्रारूप में प्रतिलिपि को विभिन्न भागों रखा जाता है, फिर उनके क्रमानुसार टेलीविजन कार्यक्रमों के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। इस प्रकार का प्रारूप देनिक कार्यक्रमों में बहुत ही उपयोगी होता है। इनका प्रयोग विभिनन प्रकार के स्वरूपों द्वारा प्रदान किया जाता है। जैसे- समाचार, विशेषज्ञो द्वारा वार्तालाप, वाद-विवाद आदि

(घ) यर्थाथ सूची- इस प्रकार के प्रारूपो में शीर्षक, सार, विभिनन पदों को क्रमबद्ध किया जाता है, जिनको कि कैमरे के सामने दिखाया जाता है। इसके द्वारा कैमरे के सामने विभिन्न स्वरूपों में क्या किया जाता है,? इसको विस्तृत रूप से दिया जाता है, इसमें श्रव्य के विभिन्न स्तरों पर बल दिया जाता है। दृश्य के विभिन्न स्वरूपों के द्वारा क्रियान्वयन होने क लिए विशेष सूचना प्रदान की जाती है। इस प्रकार की प्रतिलिपि का प्रयोग व्यवसायिक दृष्टि से अधिक उपयोगी होता है।

(ड) मुक्त प्रतिलिपि- एक मुक्त प्रतिलिपि पूर्ण रूप से शब्दो सहित विषय विशेषज्ञो को प्रस्तुत नही करता है अपितु शीर्षक एवं उपशीर्षक की रूपरेखा दी रहती है। इसको रूपरेखा की प्रतिलिपि के नाम से भी सम्बोधित करते है।

9.3.6 शैक्षिक टेलीविजन के लाभ

सैद्वान्तिक दृष्टिकोण से यह कह कहते है कि अधिगम की परिस्थितियाँ शैक्षिक टेलीविजन से पर्याप्त रूपस में प्रस्तत की जा सकती है, जब शिक्षा- टेलीविजन एक शक्तिशाली एवं सशक्त माध्यम के रूप से प्रचलित हो जायेगा, इसका मूल्यांकन पूर्ण रूप से विषय-वस्तु पर आधारित होगा। इसका मूल्यांकन प्रसारण की विषय वस्तु एवं दक्षता पर निर्भर करेगा।

इस अनुसंधान परियोजना का निष्कर्ष यह है कि शैक्षिक टेलीविजन एक प्रभावशाली यंत्र हो सकता है। इसका प्रयोग शिक्षक- प्रशिक्षको द्वारा किया जा सकता है। इसने अपनी प्रभावशीलता शिक्षण के कुछ विषयों कृषि, गणित, भूगोल आदि सिद्ध कर दिया है, यहाँ पर कुछ महत्वपूर्ण शिक्षा दूरदर्शन के विषयों पर व्यक्त करेगें।

(1) शिक्षा में सामाजिक समानता- शिक्षा संगठन में शिक्षा टेलीविजन सामाजिक समानता प्रापत करने के लिए उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होता है। नगरीय क्षेत्रों में जो लोग निम्न जीवन स्तर बिताने के लिए बाध्य है, उनके लिए यह प्रभावशाली साधन के रूप में प्रयुक्त होता है। टेलीविजन अनुदेशनात्मक सामग्री के प्रस्तुतीकरण के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

(2) अनुदेशन की गुणात्मकता- टेलीविजन के कार्यक्रमों को सुव्यवस्थित एवं कक्षागत अनुदेशन की तुलना में समुचित □ा से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसके द्वारा शिक्षा की पारम्परिक व्यवस्था से प्रभावशाली प्रदर्शन किया जा सकता है।

(3) छात्रों की शिक्षक पर निर्भरता को कम करना- छात्र अपने व्यक्तिगत प्रयासों से टेलीविजन द्वारा अच्छा सीख सकता है। यदि टेलीविजन की उपयोगिता को बढ़ा दिया जाये तो शिक्षक की आवश्यकता को कम किया जा सकता है।

(4) लचीलापन- टेलीविजन द्वारा पाठ्यक्रम एवं नवीन अनुदेशनात्मक प्रविधियों को विकसित किया जा सकता है। सामाजिक आवश्यकता एवं शिक्षा के विस्तार के पाठ्यक्रम में निरन्तर संशोधन को कम किया जा सकता है। यह अन्य विधियों के लाभ भी विकसित किया जा सकता है।

(5) प्रभावशाली- शिक्षा टेलीविजन के द्वारा शिक्षा की समानता एवं समान अवसर को अधिक सहयोग मिला है। नगरों में जिस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था है, उसे देश के दूरवर्ती में फैले हुए छात्रों को शिक्षा टेलीविजन द्वारा अध्ययन में प्रदान की जा सकती है। एक प्रभावशाली शिक्षक का

सभी छात्रों को अध्ययन में लाभ मिल सकता है। शिक्षा टेलीविजन के द्वारा अमीर एवं गरीब छात्रों के मध्य समानता लाई जा सकता है। सभी को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किये जा सकते है।

(6) व्यय की प्रभावशीलता- टेलीविजन को लम्बे पैमाने पर लिया जाता है तो इससे व्यय की कमी की जा सकती है। इसके द्वारा देश के प्रत्येक भाग में कम व्यय पर शिक्षा प्रदान की जाती है। इसके द्वारा अययन के स्तर तथा अनुदेश की गुणवक्ता को यथावत रखा जा सकता है।

(7) सेवारत प्रशिक्षण- टेलीविजन का प्रयोग सेवारत अध्यापको के प्रशिक्षण के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। एन0सी0आर0टी0 ने शिक्षको को अपनी शिक्षण विधियों एवं कौशलो में विकास के लिए प्रत्येक सप्ताह में कुछ कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

(8) तर्कितकता रूप से सरल है- दूरवर्ती शिक्षा के प्रारूप को प्रभावशाली ा से क्रियान्वित करने के लिए टेलीविजन तार्किक रूप से अधिक सरल है। टेलीविजन के शिक्षण द्वारा नियोजन की समस्या, दूरवर्ती अधिगम एवं अन्य प्रकार की कठिनाइयों को कम किया जा सकता है।

(9) श्रव्य एवं दृश्य घटकों का समायोजन- टेलीविजन के द्वारा शिक्षक के अन्य रूपो में गुणात्मक सुधार ला सकते है। टेलीविजन के कार्यक्रमो में छात्र अधिक रूचि लेते है, अध्ययन हेतु प्रेरणा मिलती है।

9.3.7 शैक्षिक टेलीविजन की सीमाएँ -

जैसा पहले ही बता चुके है कि टेलीविजन की उपयोगिता इस पर निर्भर करती है कि दसको किस शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयुक्त किया जाता है। शैक्षिक साधन के रूप में इसकी उपयोगिता के विषय में ऊपर कह चुके है, लेकिन इसकी कुछ सीमाएँ भी है।

1. एक मार्गीय-सम्प्रेक्षण की समस्या- टेलीविजन वास्तविक रूप से एक मार्गीय-सम्प्रेक्षण का संचार व्यक्त करता है, इसमें अन्तः प्रक्रिया नहीं होती है। इसके द्वारादूरवर्ती-छात्र के समाधान की व्यवस्था नहीं होती है। इसको शिक्षक-प्रशिक्षक यह कहते है कि इसमें शिक्षार्थी केवल सूचना संग्रहकर्ता का काम करता है। इसके द्वारा छात्र के शैक्षिक स्वरूप में सक्रियता का अभाव होता है और छात्रों को इच्छा शक्ति का दमन होता है।

2. शिक्षार्थी को अपनी गति से सीखने का अवसर नही होता- छात्र अपनी गति से अध्ययन करके सीखता है। टेलीविजन के प्रसारण के समय छात्र को पूर्ण रूप से एकाग्र चित्त होकर ग्रहण करना पड़ता है। टेलीविजन का शिक्षक एक सामान्य छात्र जिस गति से सीख सकता है उसके अनुसार शिक्षक कार्य सम्पादित करता है। इसमें वैयक्तिक विभिन्नता का कोई स्थान नहीं होता है। यदि छात्र कुछ लिखना भी चाहे वह भी सम्भव नही होता है।

3. अपर्याप्त चिन्तन अवस्थाएं- विद्यालय में समुचित □ा से कार्यक्रम की व्यवस्था नहीं होती है।

4. महंगा -कार्य- टेलीविजन के द्वारा शिक्षण एक अत्यन्त ही मंहगा कार्य है। कई प्रकार की मशनरियों से मुक्त दूरदर्शन-कार्यक्रम अत्यन्त ही महंगा पड़ता है।

5. एकीकरण की कठिनाई- टेलीविजन के कार्यक्रमों को तैयार करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडता है। मुख्य कारण ये है कि विभिन्न प्रकार की विषय वस्तुओं का प्रचलन है, विभिन्न प्रकार के शिक्षण की विधियॉं है। इन सभी का किस प्रकार एकीकरण किया जाये यह एक समस्या होती है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1- वैद्यद्ण्कि उपकरण के टेलीविजन माध्यम की हिन्दी शिक्षण में उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
.... प्रश्न 2-
हिन्दी शिक्षण में टेलीविजन के लाभ की चर्चा कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....

9.4 कम्प्यूटर

9.4.1 कम्प्यूटर का अर्थ व परिभाषा

कम्प्यूटर को विद्युत मस्तिष्क की संज्ञा दी जाती है। यह युक्ति अधिक शुद्ध एवं तीव्र है। इससे प्रदत्तो एवं सूचनाओं का भण्डारण किया जाता है, इनका विश्लेषण करएके शुद्ध परिणाम प्राप्त किये जाते है। इसकी परिभाषा इस प्रकार है-

''कम्प्यूटर एक ऐसी विद्युत मुक्ति, जो प्रदत्तो एवं सूचनाओं का भण्डार करती है तथा निर्देशों के अनुसार उनका विशेषण करके अल्प समय में शुद्ध एवं विश्वसनीय परिणाम प्रस्तुत करती है।''

कम्प्यूटर शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द से हुई है, इसका अर्थ गणना करना अथवा गिनती करना। अतः तार्किक दृष्टिको ा से किसी भी गणन युक्ति को कम्प्यूटर कहा जा सकता है। एक सिद्धान्त के कम्प्यूटर शब्द को परिभाषित किया है-

परिभाषा

''एक इलेक्ट्रॅानिक मशीन जो समस्याओं को सुलझाने में मद्द करता है। जल्दी और आसानी से यह प्रोग्राम या सॉफ्टवेयर नामक कम्प्यूटर उपयोकर्ता द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार समस्याओं को हल करता है। यह एक डिजिटल मशीन है। जो बाइनरी अंक का उपयोग करता है। सभी क्षेत्रों में उपयोग किया जाता है।''

''कम्प्यूटर, मशीन जो काम करता है, जैसे गणना या इलेक्टॉनिक संचार, निर्देशों के एक सेट के नियंत्रण के तहत एक कार्यक्रम कहा जाता है।''

C सी - गणना करना,

O ओ - संचालन करना,

M एम - स्मृति में रखना,

P पी - मुद्रण करना,

U यू - आधुनिक बनाना,

T टी - सारिणी बनाना,

E इ्र - सम्पादन करना, तथा

R आर - अनुक्रिया करना।

यह कह सकते है कि कम्प्यूटर एक ऐसी इलेक्ट्रोनिक युक्ति है, जो किसी भी प्रकार से सीधी ऑकड़ो को व्यवस्थित व नियंत्रण तो करता ही है साथ ही युक्त समय में पूर्ण शुद्धता के साथ गणना भी कर सकता है।

9.4.2 कम्प्यूटर का प्रयोग

कम्प्यूटर के साथ काम करते हुए छात्रों के समूह को देखने से यह विदित होता है कि छात्र कितनी उत्सुकता एवं उत्साह के साथ कार्यक्रम को करता है। कम्प्यूटर की चुनौतीपूर्ण कार्यक्रमो के द्वारा छात्रों के मध्य प्रेरणा पैदा की जाती है। कम्प्यूटर कार्यक्रम के द्वारा सीखने में कभी भी किसी भी प्रकार से नीरस नहीं होता है। कुछ उदाहरण के द्वारा इसके गुणों को प्रदर्शित किया जा सकता है।

कोड ब्रेकर एक इस प्रकार का कार्यक्रम है जिसके द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है। सैद्धान्तिक रूप में प्रश्नोंत्तर के क्रम के द्वारा छात्रों को मिल जाता है इसके द्वारा छात्रो को सफलता पूर्वक सीखने का अवसर मिल जाता है।

समस्या समाधान की क्रिया के कार्यक्रम येलोरीवर किंगडम के नाम से जानते है। कम्प्यूटर एक विशाल किंडम को सम्मिलित सहायता करता है जिसमें विभिन्न प्रकार के स्रोत दिये रहते है। बिना कम्प्यूटर की सहायता से क्या कोई इस प्रकार की कठिन परिस्थिति को पैदा कर सकता है, जिसके द्वारा हिन्दी भाषा शिक्षण के कक्षा में अधिगम के उद्देश्यों के प्राप्ति के लिए कम्प्यूटर के द्वारा इस प्रकार की परिस्थिति उत्पन्न किया जा सकता है। इसके द्वारा कठिन परिस्थितियों के द्वारा भी कार्यक्रम को सुगम बनाया जा सकता है।

वेरीटेक्सट नामक एक कार्यक्रम है जिसके द्वारा कार्यक्रम के कुछ रिक्त स्थानों को छात्रों द्वारा पूर्ण कराया जाता है। इन रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए छात्र को चार प्रकार के विकल्प दिये रहते है, जिसके द्वारा छात्रों को रिक्त स्थानों की पूर्ति करनी होती है। यदि आवश्यक हो तो छात्र कम्प्यूटर के द्वारा सही शब्द का पता भी कर सकता है। कम्प्यूटर ही किसी कार्यक्रम को तैयार करने के लिए निश्चित प्रकार की तकनीकि है। इसके विकल्प के रूप में अभी अन्य किसी प्रकार की तकनीकी का विकास नही हो सका है।

इस प्रकार के सैद्वान्तिक कम्प्यूटर के गुणों को एक साथ निम्न प्रकार से दिखा सकते है इसके द्वारा चार क्रियाएँ की जाती है-

अधिकगमकर्ता के लिए प्रेरणात्मक है,

अन्तःप्रक्रिया छात्र के लिए उपयोगी है,

कठिन परिस्थितियो का अनुसरण करता है, और

तत्कालिक पुनर्बलन भी प्रदान करता है।

इस प्रकार की शक्तिशाली उपकरण के लिए दूरवर्ती-शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रकार के प्रयोग हो रहे है, जहॉं पर तकनीकी माध्यम मूलभूत आवश्यकता के रूप में प्रयोग में लाया जा सकता है। विश्व में शायद ही ऐसा कोई देश है जहॉं पर कि रेडियों एवं टेलीविजन (दूरदर्शन) की तकनीकी को दूरवर्ती-शिक्षा के लिए प्रयोग में लाया जाता है। भारतवर्ष में भी रेडियों कार्यक्रमों को दूरवर्ती-शिक्षा के लिएप्रयोग में ला सकते है।

इस तकनीकी के विकास के युग में कम्प्यूटर का प्रयोग अधिकांश रूप में दूर नही रखा जा सकता है। विश्व के अनेक देशों में कम्प्यूटर का प्रयोग दूरवर्ती-शिक्षा संस्थानों में काफी सरलता के साथ प्रयोग में लाया जा सकता है।

दूरवर्ती-शिक्षा में कम्प्यूटर के उपयोग की कुछ परिस्थितियॉं अधोलिकिखत है-

i.कम्प्यूटर के द्वारा अध्ययन की प्रक्रिया में व्यौक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखा जाता है।

ii. दूरवर्ती -छात्र के एकांकी स्वभाव को कम करता है।

iii.कम्प्यूटर पर आधारित अध्ययन सामग्री मितव्यमी होती है जब इसको विशाल स्तर पर तैयार किया जाता है।

iv. कम्प्यूटर के द्वारा छात्र की अध्यश्यन गति का अनुसरण किया जाता है और उनके द्वारा समस्या का समाधान किया जाता है।

विकसित दगों के द्वारा माइक्रो कम्प्यूटर के प्रयोग से दूरवर्ती शिक्षा के क्षेत्र में नई सम्भावनाओं का पता लगाया जाता है। दूरवर्ती अधिगम में कम्प्यटर का बहुत ही अधिक महत्व है। इसको हिन्दी भाषा शिक्षण के कार्यक्रम में उपयोग, सीखने के यंत्र आदि के रूप में प्रयोग करते है, अतः कम्प्यूटर के विविध उपयो है।

9.4.3 शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर का उपयोग

शिक्षा के समान्तर ने इस तरह की तकनीक को शामिल करने से कम्प्यूटर के साथ लाभान्वित किया है। ताकि छात्रों के लिए अध्यापको को प□ने के तरीके में सुधार लाने में मदद करते हुए स्कूल के विद्यार्थियों के लिए सुधार करना आसान हो। विद्यार्थी काम के लिए वर्ड प्रोसेसर का उपयोग करना सीखते है और जब वे गलत तरीके से प्रवेश करते है तो वे व्याकणिक कौशल और वर्तनी को स्वचालित रूप से सीखने में सक्षम हो सकते है।कम्प्यूटर का उपयोग निम्नलिखित तरीको से किया जा सकता है-

शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में कम्प्यूटर- सीखने की प्रक्रिया में सुधार के लिए कम्प्यूटर सक्रिय रूप से शैक्षणिक संस्थानों में उपयोग किए जा रहे है। शिक्षक कप्यूटर के जरिए सबक योजना तैयार करने के लिए वीडिया ऑडियों एडस का उपयोग हिन्दी शिक्षण में कर सकेते है वे माइक्रोसॉफट पावर प्लांइट का उपयोग उनके व्याख्यानों के बारे में इलैक्टॉनिक प्रस्तुतियॉ तैयार करने के लिए कर सकते है। इन इलेक्ट्रोनिक प्रस्तुतियॉ को कक्षा के कमरे मल्टीमीडियॉ प्रोजेक्टर पर प्रदर्शित किया जाएगा। यह दिलचस्प और छात्रों के लिए सीखना आसान होगा।

1. शिक्षण में हिन्दी शब्दावली में पावर पाइट स्लाईड वर्ड दस्तावेज या वेव पेजों का उपयोग करने वाले छात्रों को बेहतर बनाने और बेहतर अवधारणा स्पष्टता के लिए हाइपरलिक्स का इस्तेमाल करना।

2. विशेष रूप से माइक्रोफोन, हैडफोन, स्पीकर का उपयोग करके छात्रों के हिन्दी उच्चारण में सुधार करतने में सहायता करता है।

3. छात्रों को इंटरनेट, सर्फ वेब पेजों का उपयोग करने और प्रासगिक विस्तृत जानकारी इकट्ठा करने के लिए प्रोत्साहित करना।

9.4.4 कम्प्यूटर के उपयोग के क्षेत्र

1. ऑनलाइन शिक्षा- कई वेव साईट ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करती है जिसमें हिन्दी शैक्षिक सामग्री और पुस्तके प□सकते है। आप कम्प्यूटर का इस्तेमाल डाउनलोड करनास, शिक्षा प्रापत करना आदि।

कम्प्यूटर का इस्तेमाल शैक्षणिक संस्थानों में हिन्दी क्षेत्रो में आसानी से और शीघ्रता से करने के लिए किया जा सकता है।

2. हिन्दी में छात्रों के रिकार्ड रखना 1- स्कूल /कालेज के कर्मचारी रिकॉडर््स, हिन्दी में जमा करना। 1- संस्थान के प्रबंध खातो हिन्दी में बनाना। फी-फीस के संग्रह और

2- शिक्षण/सूचना का संचलन और इसे मुद्रित रूप में प्रापत करना।

3- स्कूल/कॉलेज पत्रिका की तैयारी आदि।

3. कम्प्यूटर की साक्षरता एवं विद्यालय में अध्ययन- इस प्रकार की योजना 1983-84 में भारत में मानव संसाधन विकास मत्रांलय द्वारा आरम्भ किया गया। इस प्रकार का मुख्य उद्देश्य छात्रों एंव शिक्षकों को कम्प्यूटर की प्रणाली में परिचित करना तथा इसके माध्यम से अधिकगम की प्रक्रिया को सम्पादित करना।

इस कार्यक्रम को चुने हुए माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रयोग किया गया। प्राथमिक रूप से इसको राजकीय विद्यालयों के लिए प्रयोग किया गया। जिसमें सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से गरी छात्रों को सम्मिलित किया गया। ऐसे संस्थान सीमित साधनों से युक्त थे। इसके बाद 1987-88 के मध्य 500 विद्यालयों को और सम्मिलित करने का प्रस्ताव किया गया।

इस परियोजना के लिए हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर आयामो को व्रिटेन से प्राप्त किया गया है। इस परियोजना के लिए विभिन्न केन्द्रों पर 3180 अध्यापको को प्रशिक्षण दिया गया था।

अहमदाबाद के स्पेस एप्लीकेशन केन्द्र ने 190 विद्यालयों में एक अध्ययन किया जिसके द्वारा इस कार्यक्रम में प्रभावशीलता के लिए नये वातावरण की तैयारी की गई। राष्ट्रीय शिक्षा परिषद ने भी यह पाया कि इस प्रकार कार्यक्रम छात्रों एवं शिक्षको में अधिक उत्सुकता उत्पन्न करता है तथा उन्हें उत्साहित करता है।

9.4.5 हिन्दी शिक्षा में कम्प्यूटर्स की भूमिका

कम्प्यूटर ने जिस तरह से हम काम करते है उसे बदल दिया है, यह किसी पेशे का होना है। इसलिए यह केवल स्वाभाविक है की हाल के वर्षो में शिक्षा में कम्प्यूटर की भूमिका को बहुत महत्व दिया गया है। कम्प्यूटर हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है वे औद्योगिक प्रक्रियाओं की सहायता करते है। वे हिन्दी पुस्तको की उपलब्धता कम्प्यूटर में मिलती है। वे कारण है की साफ्टवेयर उद्याग विकसित और विकसित हुए और वे शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। यही कारण है की शिक्षा प्रणाली ने कम्प्यूटर शिक्षा को स्कूल के हिन्दी पाठ्यक्रम का एक हिस्सा बना दिया है। कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी के उपयोग को ध्यान में रखते हुए जीवन के लगभग हर क्षेत्र है, हर किसी के लिए कम से कम कम्प्यूटर का उपयोग करने का बुनियाद ज्ञान होना महत्वपूर्ण है आए देख की ािक्षा क्षेत्र मं कम्प्यूटर औद्योगिकी किस भूमिका निभाती है

9.4.6 शिक्षा में कम्प्यूटर

कप्यूटर प्रौद्योगिकी का शिक्षा क्षेत्र पर गहरा असर हुआ है। कम्प्यूटर की सहायता से हिन्दी शिक्षा देने से पहले की तुलना में आसान और अधिक दिलचस्प हो गया है। कम्प्यटर की मेमोरी क्षमता के कारण डेटा की बडी मात्रा उन में संग्रहित की जा सकती है। वचे डेटा की त्वरित प्रक्रिया को प्रोसेसिंग में बहुत कम या त्रुटियों की संभावना के साथ सक्षम करते है। नेटवर्क कम्प्यूअर त्वरित संचार की सहायता करते है और वेब एक्सेस सक्षम करते है।

कम्प्यूटर पर हार्ड डिस्क के बजाए सॉफ्ट कापी को रूप में दस्तावेजों को संग्रहित करना, पेपर को बचाने में मदद करता है। हिन्दी की शिक्षा के कम्प्यूटर के लाभों में मुख्य रूप से शामिल है।

सूचना का भंडारण

त्वरित डेटा प्रोसेसिंग

हिन्दी शिक्षण में ऑडिया-दृश् एड्स

जानकारी के बेहतर प्रस्तुति

इंटरनेट का इस्तेमाल

छात्रों, शिक्षको और अभिभावको के बीच त्वरित संचार

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में कप्यूटर शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वसा वाले पुस्तको में सूचनाओं के लिए खोज की तुलना में छात्रोकं को इंटरनेट का संदर्भ देना आसान लगता है। सीखने की प्रक्रिया निर्धारित पाठ्यपुस्तको से सीखने से परे गई है। इंटरनेट सूचना का एक बड़ा और आसान-सुलभ भंडार है। पुर्नप्राप्त की गई जानकारी को संग्रहित करने की बात आती है हाथ-लिखित नोट्स को बनाए रखने से कम्प्यूटर पर यह आसान होता है।

कम्प्यूटर शिक्षण में एक शानदार सहायता है।

कम्प्यूटर्स ने हिन्दी शिक्षा को प्रोत्साहन दिया है।

कप्यूटस सॉफ्टवेयर हिन्दी सूचना की बेहतर प्रस्तुति में सहायता करता है।

कम्प्यूटर इंटरनेट तक पहुच सकते है, जिसमें हिन्दी शाब्दिक रूप से सबकुछ जानकारी है।

कप्यूटर, हार्ड ड्राइव और स्टोरेज डिवाइस डेटा को स्टोर करने का एक शानदार तरीका है।

9.6.7 कम्प्यूटर आधारित शिक्षण

पिछले दो-तीन दशकों से कम्प्यूटर की सामग्री सुलभ हो गये हैं। वर्तमान युग में विश्व कम्प्यूटर जाल के कारण इंटरनेट के माध्यम से सूचनाए भेजने तथा प्राप्त करने दिशा में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। आज कल कई विश्वविद्यालय कम्प्यूटर पर छात्रों को शिक्षण देने की पहल कर रहे है। कम्प्यूटर कई दृष्टियों से भाषा शिक्षण के लिए उपयोगी है। उसमें निम्नलिखित व्यवस्थाऐं उपलब्ध हैं, जो भाषा प्रयोगशाला में संभव नहीं हैः-

1. कम्प्यूटर अध्येता की प्रगति का मूल्यांकन कर सकता है।

2. कम्प्यूटर जीवंत स्थितियो प्रस्तुत कर सकता है और परस्परता की सुविधाएँ देता है। जिससे कुशल कार्यक्रमो में सृजनात्मक [illegible] से अभ्यास की सुविधा मिल जाती है।

3. कम्प्यूटर अध्येता के सही उच्चारण की पहचान कर सकता है।

4. कम्प्यूटर अध्येता को आवश्यतानुसार शब्द कोश व्याकरण आदि सहायक सामग्री उपलब्ध करा सकता है।

5. कम्प्यूटर एक साथ लेखन, वाचन, उच्चारण आदि कौशलों के लिए समन्वित सामग्री प्रस्तुत कर सकता है। जबकि भाषा प्रयोगशाला का सामग्री एकांकी होती है।

इस गुणों के कारण आज कल मल्टी-मीडिया का उपयोग करते हुए कम्प्यूटर साधित भाषा अर्जन के कार्यक्रम बन रहे है। ये कार्यक्रम अधिक प्रभावी और उपयोगी है।

9.4.8 भारतवर्ष में कम्प्यूटर का प्रयोग

शिक्षा के उद्देश्य की दृष्टि से कम्प्यूअर का प्रयोग विकसित देशों के लिए अधिक प्रसार हुआ है। सस्ते माइक्रो कम्प्यूटर के आने से यह और भी विश्व के देशों में इस प्रकार की तकनीकी का प्रयोग शैक्षिक संस्थानों में किया जाने लगेगा। उदाहरण के लिए कम्प्यूटर कनाडा और ग्रेट ब्रिटेन के मुक्त विश्व विद्यालयों में निदानात्मक पृष्टपोषण, उपचारात्मक सहायकता एवं अन्य प्रकार की सहायता में लगाया जाता है। अंग्रेजी के उपचार के लिए कनाडा के विश्व विद्यालय ने दो प्रकार की योजना को तैयार किया है। भारत में दूरदर्शी-भिक्षा के अन्तर्गत कम्प्यूटर द्वारा अनुदेशन एक नवीन प्रत्यय है इसमें कम्प्यूटर का प्रयोग आरम्भ से ही किया जाने लगा है।

9.4.9 कप्यूटर के लाभ

कम्प्यूटर ने समाज पर बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है यह जीवन का मार्ग बदल गया है। कम्प्यूटर प्रौद्योगिक के उपयोग ने जीवन को हर क्षेत्र को प्रभावित किया है लोग विभिन्न कार्यो को जल्दी और आसानी से करने के लिए कम्प्यूटर का उपयोग कर रहे है। कम्प्यूटर का उपयोग अलग-अलग कार्य आसान बनाता है। यह समय और प्रयास भी बचाता है और एक विशेष कार्य को पूरा करने के लिए समग्र लागत को कम करता है।

कई संगठन अपने ग्राहको के रिकॉर्ड रखने क े लिए कम्प्यूटर का उपयोग कर रहे है। बैंक खातो को बनाए रखने और वित्तीय लेनदेन हिन्दी में सम्बन्धित करने के लिए कम्प्यूटर का उपयोग कर रहे है। बैंक ऑनलाइन बैकिंग की सुविधा हिन्दी में भी प्रदान कर रहे है। ग्राहक इंटरनेट का इस्तेमाल करने में अपने अकाउंट बैलेंस की जॉच कर सकते है। वे वित्तीय लेनदेन ऑनलाईन भी बना सकते है। लेन-देन आसानी से और जल्दी से कम्प्यूटीकृत सिस्टम के साथ संभाला जाता है।

यह भी देखेः हर उम्र में बच्चो के लिए सही तकनीक। लोग अपने बिलो का भुगतान हिन्दी में करने, अपने घर के बजट को हिन्दी में प्रबंधित करने या कुछ तोडने और फिल्म देखने गाने सुनने या कम्प्यूटर का उपयोग कर रहे है।

कम्प्यूटर को एक महान शैक्षिक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। छात्रों को इंटरनेट पर सभी तरह की जानकारी हिन्दी में प्रापत हो सकती है। इसके अलावा, कम्प्यूटर का उपयोग चिकित्सा, व्यापार, उद्योग, एयरलाइन और मौसम पूर्वानुमान जैसे जीवन के हर क्षेत्र में किया जा रहा है।

यहॉं पर दिये गये विवरण में कम्प्यूटर के लाभ कुछ उपयोग पारस्परिक मुद्रित अनुदेशनात्मक माध्यम के है। इन लाभों का यहॉं पर उल्लेख किया गया है-

नवीन कम्प्यूटर के साथ काम करने के कुछ उपयोग प्रेरणा प्रदान करते है।

सजीव रंगीन चित्रण छात्रों को अभ्यास करने के लिए वास्तविक प्रेरणा प्रदान करता है।

उच्च कोटि की व्यक्तित्तव की क्रियाऐ छात्रों की प्रतिक्रियाओं को उच्च कोटि का पुनर्बलन प्रदान करती है।

छात्रों की स्मरण शक्ति उनके अतीत के ज्ञान को अभिलेखित करने के लिए परवर्ती पदों को प्रदान करती है।

निम्नकोटि के शिक्षार्थी को व्यक्तिगत प्रकार के अनुदेशनात्मक कार्य क्रम द्वारा धनात्मक एवं प्रभावी वातावरण तैयार किया जाता है । उसके लिए उसको विभिन्न पदो में व्यक्त किया जाता है।

अभिलेखों को सुरक्षित रखने की क्षमता कम्प्यूटर के द्वारा सरल बनाई जा सकती है। इसके द्वारा छात्रों को दिशा निर्देशित किया जा सकता है।

शिक्षक के नियन्त्रण के क्षेत्र को बाया जा सकता है और अधिक सूचनाप्रद बनाया जा सकता है। इससे शिक्षक की व्यवस्था के अनुसार छात्रों के मध्य सीधा सम्पर्क बनाया जा सकता है।

9.4.10 कम्प्यूटर की सीमाएँ

कम्प्यूटर प्रणाली के लाभों एवं निश्चित प्रकार के कार्यक्रमों के साथ-साथ कुछ सीमायें भी है मुख्य सीमायें इस प्रकार हैः-

1. व्यय और मूल्यों की कमी होने पर भी और कम्प्यूटर की कमी होने पर भी इसके द्वारा निर्देशित अनपुदेशन आपेक्षाकृत अधिक महंगा होता है। विचारात्मक प्रकार का संज्ञान कम्प्यूटर का व्यय एवं लाभ पर दिया जाना आवश्यक है।

2. अनुदेशात्मक उद्देश्यों के लिए कम्प्यूटर की रूपरेखा तैयार करना अन्न उद्देश्यों की प्राप्ति में आपेक्षाकृत आभाव रहता है।

3. कम्प्यूटर के प्रयोग के लिए उच्च कोटि के सीधे अनुदेशात्मक सामग्री का आभाव है। ऐसा अनुभव किया गया है कि किसी एक कम्प्यूटर के लिए तैयार किया गसा सॉटवेयर कार्यक्रम दूसरे प्रकार के कार्यक्रम के लिए उपयोग में नही लाया जा सकता है।

4. भारतीय परिस्थितियों में यह नगरों में सुविधा उपलब्ध है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में दूरदर्शन की सुविधा सभी जगह नहीं है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 3- हिन्दी शिक्षण में कम्प्यूटर का उपयोग बताते हुए इसके उपयोग के विभिन्न क्षेत्रों का वर्णन कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....प्रश्न 4-
कम्प्यूटर की सीमाओं का वर्णन कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....

9.5 इन्टरनेट

19.5.1 इन्टरनेट की सुविधाऐं

इन्टरनेट से निम्नलिखित सुविधाएं प्राप्त होती है-

1. ई-मेल

2. साइट माध्यम

3. ई-कामर्स

1. ई-मेल

ई-मेल सूचना सम्प्रेक्षण का एक रूप है। इस प्रणाली में नेट वर्क के द्वारसा एक कम्प्यूटर को दूसरे कम्प्यूटर को जोड़कर तत्काल सूचना को सम्प्रेषित करने की सुविधा प्राप्त की जाती है। एक कम्प्यूटर से भेजी गई सूचना को दूसरे कम्प्यूटर पर प□जा सकता है। ई-मेल प्रणाली में मोडेग का महत्वपूर्ण स्थान होता है। जब एक कम्प्यूटर सुदूरवर्ती भण्डारित डिजीटल सूचना को टींफोन लाईन द्वारा एनलॉग रूप में परिवर्तित कर दूसरे कम्प्यूटर तक भेजता है। दूसरी ओर दूसरे कम्प्यूटर से संलग्न भेडेन इस सूचना को अपने से संलग्न टेलीफोन से प्राप्त कर दूसरे कम्प्यूटर में डिजीटल रूप में बदलकर भण्डारित करता है। इस प्रणाली में एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर में संदेश भेजने के लिए दूसरे कम्प्यूटर तक प्रेषित करना है, तो उनके पते की जानकारी होनी जरूरी है। ई-मेल महत्व व्यवसाय एवं औद्योगिक क्षेत्रों में सर्वाधिक है। इसके प्रयोग से कम व्यय में ही संदेशों का आदान-प्रदान हो जाता है। एक पृ़ृष्ठ ई-मेल का व्यय लगभग 5/-रू आता है, जो फैक्स टेलेक्स, एस0टी0 डी अथवा कोरियर से सस्ता है।

भारत में ई-मेल का सर्वाधिक प्रयोग ओटोमोबाईल, इन्जीनियरिंग के क्षेत्र में होता है। भारत में ई-मेल से अधिक तीव्रगत से संदेश पहुचाने वाली वर्तमान में कोई सेवा नही है। ई-मेल माध्यम से ध्वनि रूप में संदेश भेजने की सुविधा देने वाले टाओटाक नामक सौफ्टवेयर का विकास ब्रिटेन की एशपूल टेलीकॉ द्वारा किया गया है उसे सोफ्टवेयर के साथ एक साउण्ड कार्ड काइक्रोफोन तथा स्पीकर्स की आवश्यकता होती है। भारत में लगभग 8 कम्पनियों से ज्यादा ई-मेल सुविधा उपलब्ध करा रही है। इनमें विप्रो, तवीटीमेल, एक्सरोस, ग्लोबमेल, एक्टा ई-मेल तथा स्पिरिंत मेल प्रमुख है।

2- साइट माध्यम

भारत में उपग्रह टैक्नोलॉजी से सम्बन्धित पहला प्रयोग था-सेटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट, (साइट) जो 1975-76 में किया गया । संयोग से सामाजिक शिक्षा के लिए इस तरह की आधुनिक प्रौद्योगिकी उपयोग करने का विश्व में पहला प्रयास था। वर्ष 1982 मे दिल्ली और अन्य

ट्रांसमीटरों के बीच उपग्रह द्वारा नियमित सम्पर्क के साथ राष्ट्रीय प्रसारण शुरू हुआ तथा दूरदर्शन के रंगीन प्रसारण शुरू किया। इन परिवर्तनों को जल्द लागू करने की मुख्य प्रेरणा उस वर्ष दिल्ली में आयोजित एशियाई खेलों से मिली थी।

3- ई-कामर्स

ई-कामर्स इण्टरनेट आधारित उपभोक्ता बाजार की एक नई कार्य-प्रणाली है। उसके अन्तर्गत इण्टरनेट पर ठीक उसी प्रकार वस्तुिओ का क्रय-विक्रय किया जाता है। भारत में ई-कामर्स बहुत फैल चुका है। ई- कामर्स के माध्यम से सेवाऐं देने वाली भारतीय कम्पनियों में मुख्य है- अमृल, आई0सी0आई तथा राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज भारत में ई- कामर्स से सम्बन्धित विनियमो तथा, कानूनों का अत्यधिक आभाव है जिसके कारण इस माध्यम का विस्त नही हो पा रहा है। केन्द्र सरकार द्वारा ई- कामर्स को विस्तार देने की दिशा में कुछ ठोस पहल की गई है।

ई-कामर्स प्रणाली का मुख्य आधार अलजेक्ट्रॉनिक्स डाटा-अंटरचेंज है, जिसके अन्तर्गत ऑकडो को परिवर्तित करने तथा स्थानान्तरित करने की सुविधा होती है। इस प्रणाली के अन्तर्गत गा्रहक जब बेबसाइट पर उपलब्ध समान को पसन्द करके क्रय करता है तो उसे भुगतान के लिए कम्प्यूअर पर उपलब्ध एक फार्म भरना होता है। इस फार्म में अपना क्रेडिट नम्बर, देय राशि, पनाने वाली फार्म का नाम इत्यादि सूचनाऐं अंकित करनी होती ह। फार्म के भरते ही ग्राहक के खाते से धनराशि निकालकर विक्रेता के खाते में स्थानान्तरित हो जाती ह। इलैक्ट्रोनिक्स डाटा इण्टरचेंज के अन्तर्गत अभी हाल में एक नई प्रणालद का सूत्रपात्र हुआ है। इस प्रणाली के अन्तर्गत क्रेता कम्प्यूटर पर अपने डिजिटल हस्ताक्षर द्वारा चेक काट सकता है। यह प्रणाली उन्ही देशों में लागू है जहाँ डिजिटल हस्ताक्षर को कानूनी मान्यता मिली हुई है।

9.5.2 इण्टरनेट की विशेषताएँ तथा लाभ

इण्टरनेट की प्रमुख विशेषताए निम्नांकित है-

1. इण्टरनेट बडी मात्रा मं ऑकडों की खोज करने में सहायक होता है।

2. इण्टरनेट में एक स्थान से अनेक स्थानों तक प्रसारण संचार की अपेक्षा बिन्दु से बिन्दु तक संचारित होता है।

3. इण्टरनेट के द्वारा अनेक गलतीमीडिया सम्बन्धी कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया जा सकता है- जैसे वीडिया कॉफ्रन्सिब , डाक्यूमेण्ट, रिट्रीवल आदि।

4. एक सर्बर से अन्य बीच हाइपर लिकिंग सुविधा जिसमें एक शब्द क्लिक करके करके उपयोगकर्ता विश्व के किसी भी स्थान तक सीधे ऑकडों के स्त्रोत तक पहु ॅच सकता है।

5. संक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण सामाजिक नोट्स के आदान-प्रदान करने में यह सहायता देता है।

6. विश्व की नवीनतम खबरे प्राप्त करने में यह सहायक है।

7. व्यापारिक समझौते (वार्ता) के काम आता है।

8. वैज्ञानिक शोध पर कालेब्रेशन करने का माध्यम है।

9. समान रूचि बाले लोगों के साथ सूचनाओ का आदान-प्रदान करने में सहायक है।

10. आवश्यकतानुसार कम्प्यूटर फाइल्स का स्थानान्तरण करने में सहायता करता है।

9.5.3 हिन्दी भाषा शिक्षण के क्षेत्र में (विश्वजाल) इन्टरनेट का प्रयोग

इण्टरनेट- विभिन्न तकनीकी के संयुक्त रूप के कार्य का उदाहरण है। इण्टरनेट का आधार राष्ट्रीय सूचना स्वरूप होता है, यहॉं विभिन्न सम्पर्क लाइनें, कम्प्यूटरों को जाडती है जिन्हें गृह कम्प्यूटर कहते है। ये विश्वविद्वालयो या अन्य संस्थाओं से जुडे रहते है और इन्हें इण्टरनेट सर्विस प्रोवाइटर कहा जाता है। ये कम्प्यूटर विशो संचार लाइनों या इन्टरनेट कनेक्सन द्वारा साधारण टेलीफोन या मोडेम के जरिये उपभोक्ता व्यक्ति के गृह कम्प्यूटर (पी0सी0) से जडे रहते है। यह सम्पर्क डापलअप कनेक्शन कहलाता है। एक सामान्य उपेक्षाक्ता निश्चित राशि का भुगतान करके इसटरनेट से जुडा रहा है।

इण्टरनेट द्वारा शिक्षा की गुणवक्ता में सुधार के साथ-साथ कक्षाओं के लिए श्रेष्ठ तथा अत्याधुनिक शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता भी सुनिश्चित हो रही है। यदि कोई छात्र शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ लाभ उठाना चाहता है तो साइबर-कैफे में जाकर इण्टरनेट खोलकर ज्ञान की विविधता प्राप्त करता है और साथ ही साथ भविष्य के बौद्धिक, गत्यात्मक, युगास्तकारी परिवर्तन हो रहे है सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा 21 वी शताब्दी में बौद्धिक, गत्यात्मक युगास्तकारी परिवर्तन हो रहे है। इण्टरनेट प्रत्येक विषय में सम्बन्धित नवीनतम घटना के बारे मं े जानकारी प्राप्त कर सकता है।

अधिगम आने वाले समय एवं स्थान और सामाजिक आर्थिक बाधाओं को इण्टरनेट समाप्त कर देता है। उस पर दुनिया के किसी भी पक्ष से वांछित विषय पर नवीनतम सूचना उपलब्ध रहती है भारत में इग्नू विश्वविद्यालय एवं आई0आई0टी0 जैसे संस्थाओं ने इण्टरनेट आधारित कार्यक्रम शुरू किये है। जिससे सभी लोग शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

प्रश्न 5- शिक्षा के क्षेत्र में इण्टरनेट के प्रयोग को दर्शाइये।

....

....
....

....
....
....

....
....
....

प्रश्न 6- इण्टरनेट की विशेषताए तथा लाभ बताइये।

....
....
....

....
....
....

....
....
....

9.6 सारांश

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैद्यदा्णिक उपकरणों की उपयोगिता भाषा शिक्षण की विशिष्टताओं को उद्घाटित करने में पूर्णतः सक्षम है। हिन्दी शिक्षण में मल्टीमीडिया के साधन से शिक्षण अत्याधिक वास्तविक एवं यर्थाथ पहलुओं पर संभव हुआ है। रेडियों,टेलीविजन,सिनेमा,इंटरनेट व मल्टीमीडिया इलेक्टाॅनिक उपकरण के मुख्य अवयव हैं। केवल सूचनाओं सम्प्रेषित करना इनका एक मात्र उद्देश्य नहीं है। बल्कि मनोरंजन ,विचार,विश्लेषण,समीक्षा,साक्षात्कार,घटना-विश्लेषण और समाज को प्रभावित करना भी इसके शैक्षिक उद्देश्यों में निहित है। जहाँ वैद्यद्णिक उपकरण के टेलीविजन की भाषा में ग्लोबलाइजेन है वहीं रेडियों साहित्यिक शब्द श्रोता की रुचि है। अतः कविता,कहानी,नाटक,रिपोर्ताज,साक्षातकार,विज्ञापन, अनुवाद कमेंटी फीचर यात्रावर्णन पुस्तक

समीक्षा आदि साहित्य के सृजनात्मक पहलू है। जब इनका सम्बन्ध रेडियों व टेलीविजन तथा कम्प्यूटर आदि से जुड़ जाता है तो ये वैद्यद्णिक उपकरण की श्रेणी में आ जाते है।

9.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1- टेलीविजन के प्रयोग ने शिक्षा जगत में एक महत्वपूर्ण क्रान्ति ला दी है। इसके प्रयोग से कठिन से कठिन विषय को भी सुगमतापूर्वक प□या जा सकता है। टेलीविजन ने शिक्षा के क्षेत्र को निम्नलिखित रूप से प्रभावित किया है टेलीविजन द्वारा विभिन्न विषयों के कठिन प्रकरणों को सरलतापूर्वक बालको को समझाया जा सकता है। संगीत कला, कृषि, विज्ञान, भाषा, स्वास्यि शिक्षा सभी विषयों के बारे में इसके माध्यम से जानकारी प्रदान की जा सकती है। विभिन्न प्रदेशों तथा देशों की भाषा संस्कृति, नृत्य कला, संगीत आदि के विषय में भी टेलीविजन की सहायता से जानकारी प्रदान की जा सकती है। दूरदर्शन पर विशेषज्ञो द्वारा नये-नये अनुसंसाधनों सम्बन्धी वार्ताएँ प्रसारित की जा सकती है और शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों के ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। प्रत्येक विषय में कई ऐसे पाठ होते है जो न तो विद्यार्थी सरलता से समझ सकते है और न ही शिक्षक उन्हें पढ़ा सकता है। ऐसे पाठों को भी अभिनय तथा नाटक द्वारा टेलीविजन पर दिखाकर सरलता पूर्वक समझाया जा सकता है। इसकी सहायता से विद्यार्थी को खेलकूद एवं पाठ्यक्रम में सम्मिलित अन्य पाठ्य क्रियाओं की जानकारी प्रदान की जा सकती है। विद्यालयों में दूरदर्शन की सहायता से सप्ताह में कई बार अनेको कार्यक्रम दिखाये जा सकते है। जिससे विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि हो सके और खेलों तथा अन्य कार्यक्रमो में रूचि उत्पन्न हो सके।

उत्तर 2- शैक्षिक टेलीविजन एक प्रभावशाली यंत्र हो सकता है। इसका प्रयोग शिक्षक- प्रशिक्षको द्वारा किया जा सकता है। इसने अपनी प्रभावशीलता शिक्षण के कुछ विषयों कृषि, गणित, भूगोल आदि सिद्ध कर दिया है, शिक्षा संगठन में शिक्षा टेलीविजन सामाजिक समानता प्रापत करने के लिए उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होता है। नगरीय क्षेत्रों में जो लोग निम्न जीवन स्तर बिताने के लिए बाध्य है, उनके लिए यह प्रभावशाली साधन के रूप में प्रयुक्त होता है। टेलीविजन अनुदेशनात्मक सामग्री के प्रस्तुतीकरण के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। टेलीविजन के कार्यक्रमों को सुव्यवस्थित एवं कक्षागत अनुदेशन की तुलना में समुचित □ा से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसके द्वारा शिक्षा की पारम्परिक व्यवस्था से प्रभावशाली प्रदर्शन किया जा सकता है। छात्र अपने व्यक्तिगत प्रयासों से टेलीविजन द्वारा अच्छा सीख सकता है। यदि टेलीविजन की उपयोगिता को बढ़ा दिया जाये तो शिक्षक की आवश्यकता को कम किया जा सकता है। टेलीविजन द्वारा पाठ्यक्रम एवं नवीन अनुदेशनात्मक प्रविधियों को विकसित किया जा सकता है। सामाजिक आवश्यकता एवं शिक्षा के विस्तार के पाठ्यक्रम में निरन्तर संशोधन को कम किया जा सकता है। यह अन्य विधियों के लाभ भी विकसित किया जा सकता है। शिक्षा टेलीविजन के द्वारा शिक्षा की समानता एवं समान अवसर को अधिक सहयोग मिला है। नगरों में जिस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था है, उसे देश के दूरवर्ती में

फैले हुए छात्रों को शिक्षा टेलीविजन द्वारा अध्ययन में प्रदान की जा सकती है। एक प्रभावशाली शिक्षक का सभी छात्रों को अध्ययन में लाभ मिल सकता है। शिक्षा टेलीविजन के द्वारा अमीर एवं गरीब छात्रों के मध्य समानता लाई जा सकता है। सभी को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किये जा सकते है।

उत्तर 3- शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में कम्प्यूटर- सीखने की प्रक्रिया में सुधार के लिए कम्प्यूटर सक्रिय रूप से शैक्षणिक संस्थानों में उपयोग किए जा रहे है। शिक्षक कप्यूटर के जरिए सबक योजना तैयार करने के लिए वीडिया ऑडियों एडस का उपयोग हिन्दी शिक्षण में कर सकेते है वे माइक्रोसॉफट पावर प्लांइट का उपयोग उनके व्याख्यानों के बारे में इलैक्टॉनिक प्रस्तुतियॉ तैयार करने के लिए कर सकते है। इन इलेक्ट्रोनिक प्रस्तुतियॉ को कक्षा के कमरे मल्टीमीडियॉ प्रोजेक्टर पर प्रदर्शित किया जाएगा। यह दिलचस्प और छात्रों के लिए सीखना आसान होगा। शिक्षण में हिन्दी शब्दावली में पावर पाइट स्लाईड वर्ड दस्तावेज या वेव पेजों का उपयोग करने वाले छात्रों को बेहतर बनाने और बेहतर अवधारणा स्पष्टता के लिए हाइपरलिक्स का इस्तेमाल करना। विशेष रूप से माइक्रोफोन, हैडफोन, स्पीकर का उपयोग करके छात्रों के हिन्दी उच्चारण में सुधार करतने में सहायता करता है। छात्रों को इंटरनेट, सर्फ वेब पेजों का उपयोग करने और प्रासगिक विस्तृत जानकारी इकट्ठा करने के लिए प्रोत्साहित करना

1. ऑनलाइन शिक्षा- कई वेव साईट ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करती है जिसमें हिन्दी शैक्षिक सामग्री और पुस्तके प□सकते है। आप कम्प्यूटर का इस्तेमाल डाउनलोड करनास, शिक्षा प्रापत करना आदि।

2. हिन्दी में छात्रों के रिकार्ड रखना 1- स्कूल /कालेज के कर्मचारी रिकॉडर्ूस, हिन्दी में जमा करना। संस्थान के प्रबंध खातो हिन्दी में बनाना। फी-फीस के संग्रह और

3. कम्प्यूटर की साक्षरता एवं विद्यालय में अध्ययन- इस प्रकार की योजना 1983-84 में भारत में मानव संसाधन विकास मत्रांलय द्वारा आरम्भ किया गया। इस प्रकार का मुख्य उद्देश्य छात्रों एंव शिक्षकों को कम्प्यूटर की प्रणाली में परिचित करना तथा इसके माध्यम से अधिकगम की प्रक्रिया को सम्पादित करना।

उत्तर 4- कम्प्यूटर प्रणाली के साथ कुछ सीमायें भी है मुख्य सीमायें इस प्रकार हैः-

व्यय और मूल्यों की कमी होने पर भी और कम्प्यूटर की कमी होने पर भी इसके द्वारा निर्देशित अनपुदेशन आपेक्षाकृत अधिक महंगा होता है। विचारात्मक प्रकार का संज्ञान कम्प्यूटर का व्यय एवं लाभ पर दिया जाना आवश्यक है।

अनुदेशात्मक उद्देश्यों के लिए कम्प्यूटर की रूपरेखा तैयार करना अन्न उद्देश्यों की प्राप्ति में आपेक्षाकृत आभाव रहता है।

कम्प्यूटर के प्रयोग के लिए उच्च कोटि के सीधे अनुदेशात्मक सामग्री का आभाव है। ऐसा अनुभव किया गया है कि किसी एक कम्प्यूटर के लिए तैयार किया गसा सॉटवेयर कार्यक्रम दूसरे प्रकार के कार्यक्रम के लिए उपयोग में नही लाया जा सकता है।

भारतीय परिस्थितियों में यह नगरों में सुविधा उपलब्ध है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में दूरदर्शन की सुविधा सभी जगह नहीं है।

उत्तर 5- इण्टरनेट द्वारा शिक्षा की गुणवक्ता में सुधार के साथ-साथ कक्षाओं के लिए श्रेष्ठ तथा अत्याधुनिक शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता भी सुनिश्चित हो रही है। यदि कोई छात्र शिक्षा की सर्वश्रेष्ठ लाभ उठाना चाहता है तो साइबर-कैफे में जाकर इण्टरनेट खोलकर ज्ञान की विविधता प्राप्त करता है और साथ ही साथ भविष्य के बौद्धिक, गत्यात्मक, युगास्तकारी परिवर्तन हो रहे है सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा 21 वी शताब्दी में बौद्धिक, गत्यात्मक युगास्तकारी परिवर्तन हो रहे है। इण्टरनेट प्रत्येक विषय में सम्बन्धित नवीनतम घटना के बारे मंे जानकारी प्राप्त कर सकता है। अधिगम आने वाले समय एवं स्थान और सामाजिक आर्थिक बाधाओं को इण्टरनेट समाप्त कर देता है। उस पर दुनिया के किसी भी पक्ष से वांछित विषय पर नवीनतम सूचना उपलब्ध रहती है भारत में इग्नू विश्वविद्यालय एवं आई0आई0टी0 जैसे संस्थाओं ने इण्टरनेट आधारित कार्यक्रम शुरू किये है। जिससे सभी लोग शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

उत्तर 6- इण्टरनेट की निम्नलिखित विशेषताए तथा लाभ है-

इण्टरनेट बडी मात्रा मं ऑकडों की खोज करने में सहायक होता है।

इण्टरनेट में एक स्थान से अनेक स्थानों तक प्रसारण संचार की अपेक्षा बिन्दु से बिन्दु तक संचारित होता है।

एक सर्बर से अन्य बीच हाइपर लिकिंग सुविधा जिसमें एक शब्द क्लिक करके करके उपयोगकर्ता विश्व के किसी भी स्थान तक सीधे ऑकडों के स्त्रोत तक पहुॅंच सकता है।

संक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण सामाजिक नोट्स के आदान-प्रदान करने में यह सहायता देता है।

विश्व की नवीनतम खबरे प्राप्त करने में यह सहायक है।

समान रूचि बाले लोगों के साथ सूचनाओ का आदान-प्रदान करने में सहायक है।

आवश्यकतानुसार कम्प्यूटर फाइल्स का स्थानान्तरण करने में सहायता करता है।

9.8 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1- भारत में संचार सम्पर्क माध्यम तकनीकी का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2- हिन्दी शिक्षण में कम्प्यूटर का उपयोग बताते हुए इण्टरनेट के विभिन्न क्षेत्रों का वर्णन कीजिए।

इकाई -10 भाषा अधिगम मे भाषा-प्रयोगशाला

इकाई की रुप रेखा

10.1 प्रस्तावना
10.2 उददेश्य
10.3 भाषा-प्रयोगशाला की संरचना
10.4 भाषा-प्रयोगशाला की अर्थ एंव परिभाषा
10.5 भाषा-प्रयोगशाला
10.6 भाषा-प्रयोगशाला की प्रयोग विधि

10.7 भाषा-प्रयोगशाला में उपकरण तथा प्रक्रिया
10.7.1 श्रवण कोष्ठ
10.7.2 परामर्शदाता का कोष्ठ
10.7.3 नियंत्रण कक्ष कोष्ठ
10.8 भाषा-प्रयोगशाला की उपयोगिता
10.9 भाषा-प्रयोगशाला से लाभ
10.10 भाषा-प्रयोगशाला की सीमाएँ
10.11 सारांश
10.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.13 निबन्धात्मक प्रश्न
10.14 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

10.1 प्रस्तावना

विज्ञान और तकनीकी के विकास ने मानव के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया हैं। शिक्षा-व्यवस्था अै ार शिक्षण-प्रणाली भी इनसे अछूती नहीं हैं। इनके माध्यम से परम्परागत शिक्षण की त्रुटियों और न्यूनताऔ को दूर करने और शिक्षण को सरल और अधिगम को चिर स्थाई बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं। शिक्षण को सरल और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुरूप बनाने में भी विज्ञान और तकनीकी का योगदान अद्धितीय हैं। इस दिशा में भाषा-प्रयोगशाला एक उपयोगी कदम हैं।

भाषा प्रयोगशाला एक नेटवर्क अनुप्रयोग है जो आधुनिक भाषा शिक्षण में एक सहायता के रुप में प्रयोग किया जाता है। यह शिक्षण के पारंपारिक तरीके से और पूरी तरह से अलग भाषा कौशल प्रदान करने में एक तकनीकि स्त्रोत है। भाषा प्रयोगशाला मूल भाषा कौशल की पद्धति को विकसित करता है। यह व्यक्तिगत ध्यान का लाभ उठाने सुनने और विधि सुनने के माध्यम से सीखने और पूरी तरह से कम्प्यूटरीकृत वातावरण में सीखने की पद्धति के माध्यम से भाषा में महारत हासिल करने के लिए एक आसान तरीका प्रदान करता है। यह छात्रों को उनके लेखन और मौखिक क्षमताओं सही करने के लिए अनुमति देता है। यह छात्रों को भाषा पर महारत हासिल करने के लिए मदद करता है।

10.2 उददेश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

भाषा प्रयोगशाला के अर्थ स्पष्ट सकेगें।

भाषा प्रयोगशाला के मूल्यों को बता सकेंगे।

भाषा प्रयोगशाला का भाषा शिक्षण अधिगम में महत्व जान सकेंगे।

भाषा प्रयोगशाला का भाषा शिक्षण अधिगम में प्रयोग को जान सकेंगे।

भाषा शिक्षण अधिगम में उपयुक्त भाषा प्रयोगशाला की विधियों को जान सकेंगे।

भाषा प्रयोगशाला के द्वारा भाषा शिक्षण अधिगम का ज्ञान प्राप्त का सकेंगें।

भाषा प्रयोगशाला के बारे में बता सकेंगे।

विद्यार्थियों को अभ्यास करा सकेंगे।

विद्यार्थियों के अध्ययन का मूल्यांकन कर सकेंगे।

10.3 भाषा-प्रयोगशाला की संरचना

भाषा-प्रयोगशाला की संरचना का उद्भव शिक्षण तकनीकी से सम्बद्ध अमेरिकी संस्था-राष्ट्रीय शैक्षिक तकनीकी परिषद (National Council of Educational Technology – NCET) द्वारा आरम्भ हुआ। भाषा-प्रयोगशाला का लक्ष्य विज्ञान प्रयोगशाला की तरह कक्षा के विधार्थियों को भाषा के सूक्ष्म पक्षों से परिचित कराना है ताकि वे उच्चारण और प्रयोग के क्षेत्र में स्पष्टता और सटीकता ला सके। भाषा-प्रयोगशाला में प्रत्येक विधार्थी के बैठने के लिए ऐसा केबिन बना होता है◌ जहाँ से वह कक्षा के अन्य विधार्थियों को देख-सुन नहीं सकता, लेकिन शिक्षक के निर्देषो को सुन सकता है। इस केबिन में टेपरिकाँर्डर, हैडफोन और भाषा कौषल के विभिन्न पक्षो से सम्बन्ध आँडियों कैसेटस की व्यवस्था होती हैं।

आजकल माइक्रोफोन, टेपरिकॉडर और ऑडियो कैसेट्स के स्थान पर कम्प्यूटर का प्रयोग प्रचलित हो रहा है कम्प्यूटर के माध्यम से ऑडयो रिकॉडिंग □ध्वनयांकन□ और प्रस्तुतीकरण के अलावा ध्वनि और उच्चारण के सूक्ष्म विश्लेषण की सुविधा वाले अनेक कम्प्यूटर साफ्टवेयर बाजार में उपलब्ध हैं। इस प्रकार के सॉफ्टवेयर की मद्द से ध्वनि की सूक्ष्म और सटीक रिकॉर्डिंग और स्पष्ट प्रस्तुति सम्भव हैं। कम्प्यूटर की क्षमता टेप-रिकॉर्डर और ऑडियो कैसेट्स की अपेक्षा काफी अधिक होती हैं इसलिए किसी सामान्य कक्षा के सभी विधार्थियों के उच्चारण, वाचन और शैली के नमूने को भावी सन्दर्भ के लिए सुरक्षित रखा जा सकता हैं।

भाषा-प्रयोगशाला में शिक्षक का स्थान ऐसी स्थिति में होता है कि वह सभी विधार्थियों पर नजर और नियन्त्रण रख सकें। उसकी मेज पर विधार्थियों के पास मौजूद उपकरणों के साथ ही प्रयोगषाला के सभी केबिनों से सम्पर्क की सुविधा होती हैं। वह किसी भी विधार्थी से व्यक्तिगत या सभी विधार्थियों से एक साथ सम्पर्क करके निर्देश दे सकता है यद सम्पर्क द्विपक्षीय होता है अर्थात विधार्थी भी अपने केबिनों में उपलब्ध बटन दबाकर शिक्षक से सम्पर्क कर सकते हैं। इस प्रकार

शिक्षक और विधार्थी अपने स्थान पर बैठे रहकर भी दिशा निर्देशों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। समस्या का समाधान कर सकते हैं और एक के बाद दूसरी के क्रम से अनेक गतिविधियों का संचालन कर सकते हैं।

10.4 भाषा-प्रयोगशाला की अर्थ एंव परिभाषा

भाषा-प्रयोगशाला का अर्थ स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्धानों ने परिभाषाएँ दी हैं जिनका विवरण निम्न प्रकार हैं -

ए. एस. हियास (***A.S. Hayas***) - ने भाषा-प्रयोगशाला की परिभाषा इस प्रकार दी हैं, ‘‘भाषा-प्रयोगशाला एक कक्षा-कक्ष classroom हैं जिसमें विदेशी भाषा के अधिगम को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए विशेष प्रकार के उपकरण जुटाये जाते हैं। सामान्यतया यह कार्य साधारण व्यवस्था में इतना प्रभावशाली नही बन सकता।’’

रॉबर्ट लेडो (***Robert Lado***) के विचार में, भाषा-प्रयोगशाला भाषा शिक्षण का केन्द्र है जिसमें छात्रों को सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने आदि के लिए नियन्त्रित वातावरण प्रदान किया जाता हैं।’’

10.5 भाषा-प्रयोगशाला

भाषा-प्रयोगशाला कुछ टेप-रिकॉडरो का नेटवर्क है, जिसमें अध्यापक के टेपरिकॉर्डर Cansoleसे 8 से लेकर 30-32 टेप रिकॉर्डर जुड़े होते हैं।

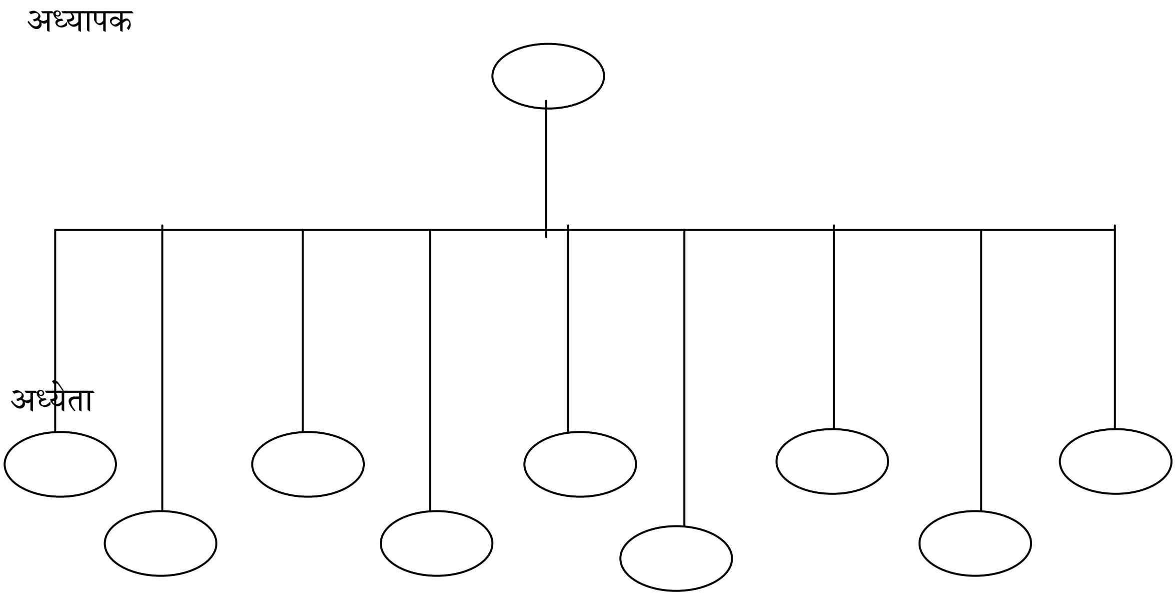

पाठ कन्सोल से छात्रों तक पहुँचाता हैं। छात्र कन्सोल से आने वाले पाठ, जैसे साँचा अभ्यास को सुनकर अपना वाक्य बोलते हैं। छात्र के टेप रिकाँर्डर पर दोनों ध्वानियाँ अंकित हो जाती हैं। फिर छात्र अपना टेप रिकॉर्डर चलाकर दोनों ध्वा ानियों या उच्चारणों का मिलान कर सकता - और अपना निष्पादन सुधार सकता हैं। कुछ संपन्न भाषा-प्रयोगशालाओं में भाषा के संदर्भ को स्पष्ट करने के लिए फिल्म प्रोजेक्टर, स्लाइड प्रोजेक्टर आदि का भी प्रयोग किया जाता हैं। चूँकि भाषा-प्रयोगशाला जुड़ा हुआ हैं, अध्यापक छात्रों के कार्य का अपनी जगह से निरीक्षण कर सकते हैं और उन्हें व्यक्तिगत या सामूहिक सुझाव दे सकते हैं। इसी तरह छात्र कंसोल की व्यवस्था के अनुसार आपस में बातचीत कर सकतें हैं। भाषा-प्रयोगशाला ध्वनि उच्चारण, वाक्योंच्चारण साँचा अभ्यास, निंयत्रित वार्तालाप, वाचन आदि अनेक कार्या के लिए उपयोगी साधन हैं।

भाषा-प्रयोगशाला में वाक्य बोलने के लिए साँचा अभ्यास का उपयोग किया जाता हैं। ध्वनि के उच्चारण के लिए श्रवण और भाषा □बोलना□ के अभ्यास बनाये जाते हैं। टेप पर दो बार आदर्श उच्चारण होगा, छात्र अपना उच्चारण करेगे। फिर टेप चलाकर दोनों की तुलना कर सकते हैं।

जैसे-

टेप : काना

वक्ता : ....

टेप : काना

वक्ता : ....

छात्र टेप पर अभ्यास करते समय पहले व्यक्तिगत ध्वानियों का उच्चारण सीखेंगें, फिर व्यतिरेक का उच्चारण का उच्चारण सीखेंगें।

उदाहरण के लिए /भ/ के उच्चारण अभ्यास का □ँचा देखिए। यह/ब/ के व्यतिरेक में होगा।

सोपान 1 /भ/ की पहचान

सोपान 2 /ब/ और/भ/के अंतर की पहचान

सोपान 3 /ब/ का उच्चारण

सोपान 4 /भ/ का उच्चाबण जैसे भार, भाल, सभा, लाभ आदि।

सोपान 5 /ब/ और /भ/में व्यतिरेक का अभ्यास जैसे-बला/भला

/बार/भार आदि।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1- भाषा प्रयोगशाला को परिभाषित करते हुए भाषा प्रयोगशाला का वर्णन कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

10.6 भाषा-प्रयोगशाला की प्रयोग विधि

भाषा-प्रयोगशाला का लक्ष्य भाषा के व्यवहारिक पक्ष को सुदृढ़ करना हैं इसके द्वारा उच्चारित भाषा के अवयवों जैसे - उच्चारण, वलाघात, विराम, भाव, शैली, शब्द-चयन, वाक्य संरचना, और विचार संयोजन के साथ पुस्तक वाचन और कविता पाठ इत्यादि को शुद्ध विधि का शिक्षण, अभ्यास और संसोधन का प्रयास किया जाता हैं। इसके लिए शिक्षक साहित्य की विविध विधाओं के ध्वन्यांकित टेप या सी.डी. विधार्थियो का सुनवाता हैं। बीच-बीच में वह भाषा उच्चारण और शैली के ध्यातव्य पक्षों पर टिप्पणी भी करता है और उन्हें नाटे करने करने की हिदायत देता है ताकि विधार्थी उन पक्षों पर विषेश ध्यान दे।

इसके उपरान्त वह विधाथियों को सुनी गई विधा में ही पुस्तक अथवा कम्प्यूटर स्क्रीन की मदद से वाचन या पाठ करने और ध्वन्यांकित। रिकार्ड करने का निर्देश देता हैं। फिर विधार्थी उस ध्वन्यांकित अंश को सुनते है और नोट किये गये बिन्दुओं के आधार पर अपना मूल्यांकन करते हैं। इस कार्य में शिक्षक विधार्थी की सहायता करता हैं। वह क्रमशः प्रत्येक विधार्थी के ध्वन्यांकित वाचन। पाठ के अंश सुनकर सुधार के लिए परामर्श देता है। यह प्रक्रिया पाठ्य अंश के वाचन में अपेक्षित सुधार आने तक दोहराई जाती हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 2- भाषा प्रयोशाला की प्रयोगविधि के मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डालिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

10.7 भाषा-प्रयोगशाला में उपकरण तथा प्रक्रिया

भाषा-प्रयोगशाला के निम्नलिखित तीन अनुभाग होते हैं-

1. श्रवण □सुनना□ कोष्ठ-बूथ (Hearing Booths)
2. परामर्शदाता/सलाहकार का कोष्ठ
3. नियंत्रण कक्ष

10.7.1 श्रवण कोष्ठ

प्रायः भाषा-प्रयोगशाला में 16 अथवा 20 श्रवण कोष्ठ होते है प्रत्येक कोष्ठ में एक मेज तथा कुर्सी होती है जिस बैठकर छात्र कार्य कर सकता है। कोष्ठ में अन्य सामग्री निम्न प्रकार होती हैं।

1. दूरभाष- परामर्षदाता से बार्तालाप के लिए
2. श्रवणेन्द्रिय दूरभाष - ईयरफोन (Ear phones)
3. स्विच (Switches)
4. टेप रिकॉर्डर Tape recorder

उपर दर्शाये गये यंत्रों का छात्रों का नियंत्रण कक्ष से सम्पर्क स्थापित होता है अपनी आवाज को रिकार्ड करने तथा फिर सुनने का प्रबन्ध होता है छात्र आवश्यकता अनुसार टेप का चुनाव कर लेते हैं।

प्रत्येक कोष्ठ की चार फुट की ऊँची दीवारें अथवा अलग-अलग भाग होते है ताकि छात्र बिना किसी बाधा के अपना कार्य कर सके। छात्र परामर्शदाता से परामर्श ले सकता हैं।

10.7.2 परामर्शदाता का कोष्ठ

इस कोष्ठ में कई टेप तथा मास्टर टेप रहते हैं तथा इस प्रकार की व्यवस्था रहती हैं जिससे परामर्शदाता छात्र से सम्पर्क स्थापित कर सके।

परामर्शदाता के कोष्ठ में निम्नलिखित सामग्री उपलब्ध होती हैं -

क) डिस्टीब्यूशन स्विच्सः इसमें माध्यम से छात्रों के लिए रिकार्ड किया गया प्रोग्राम नियत्रिंत किया जाता हैं।

ख) मॉनीटरिंग स्विच्सः इनके माध्यम से छात्रों को आवाज आदि को परामर्शदाता सुन सकता है तथा उपयुक्त सुधार कर सकता हैं।

ग) इण्टरकॉम स्विच्सः इसके द्धारा छात्रों से दोतरफा Two ways सम्प्रेक्षण किया जाता हैं।

घ) ग्रुप कॉल स्विच्सः इसके द्वारा उन छात्रों के लिए घोषणाएँ की जाती हैं जो विशेष टेप से कार्य करते हैं।

ड.) ऑल कॉल स्विच्सः यह सभी छात्रों के लिए घोषणाएँ करने के लिए प्रयुक्त किया जाता हैं।

10.7.3 नियंत्रण कक्ष कोष्ठ

इस कक्ष में सभी प्रकार के टेप रिकार्ड तथा उपकरण होते है ताकि आवश्यकतानुसार छात्रों को उपलब्ध कराये जा सकें।

क) अध्यापक तथा परामर्शदाता मास्टर टेप का प्रयोग करता हैं। प्रत्येक कोष्ठ में विधमान टेप में आवाजों को रिकार्ड कर लिया जाता हैं।

ख) छात्र अपने टेप को सुनता हैं तथा मौखिक अनुक्रिया करता हैं ये अनुक्रियाएं छात्र के बूथ में रखे गये उपकरण द्धारा रिकार्ड की जाती हैं। छात्र अपने टेप का अनेक बार प्रयोग कर सकता हैं। वह स्वंय जान जाता है कि उसकी उपलब्धियाँ संतोसनक हैं अथवा नहीं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 3- भाषा प्रयोशाला के किसी एक अनुभाग को संक्षेप में बताएँ।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

10.8 भाषा-प्रयोगशाला की उपयोगिता

भाषा-प्रयोगशाला मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास का उपयोगी माध्यम हैं। मौखिक भाषा का अधिगम परिवार और परिवेश से होता हैं। लेकिन वहाँ प्रचलित भाषा का उच्चारण, शब्द-प्रयोग, शैली इत्यादि की दृष्टि से शुद्ध और सटीक होना प्रायः असंभव ही होता हैं। विधालय में भी सभी विधार्थियों और शिक्षकों की भाषा का सर्वभावेन त्रुटिहीन होना असम्भव हैं। कक्षा में हिन्दी-षिक्षण के दौरान शिक्षक से यथायोग्य वाचन की अपेक्षा की जाती हैं किन्तु उसे सभी विधार्थियों द्वारा ग्रहण किये जाने के विड्□ा में कुछ नहीं कहा जा सकता। यदि कक्षा में वाचन/पाठन अभ्यास की बात की जाये तो वही वहाँ एक समप में अधिकाधिक एक ही विधार्थी को अवसर दिया जा सकता हैं और इससे सभी विधार्थियों के वाचन कौषल के विकास को सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। इन वास्ताविकताओं को दृष्टि मत रखते हुए भाषा-प्रयोगशाला को सभी विधालयों के लिए अनिवार्य शिक्षण उपकरण माना जाना चाहिए।

भाषा-प्रयोगशाला में सभी विधार्थी एक साथ व्यक्तिगत तन्मयता के साथ पाठ्यवस्तु के ध्वन्यांकित अंश सुनते हैं, विशेषा बिन्दुओं को नोट करते हैं और उच्चारण, विराम, बलाघात, पति-गति, अनुतान और शैली जैसे तत्वों को यथारूप ग्रहण करते हैं। फिर उसी विधा के पाठयंओ का स्वंय वाचन करके वाचन करके उसे रिकार्ड करते हैं और विषेशज्ञों की दृष्टि से उनका पुनः श्रवण करते हैं। शिक्षक के निर्देशों, नोट किये गये बिन्दुओं और उच्चारित भाषा के मानकों को जानने के बाद वे स्वंय अपनी ही भाषा का विश्ेषण कर सकते है और अपनी भाषा, शब्द-प्रयोग, वाचन और

उच्चारण की त्रुटियों का निवारण कर सकते हैं। इस विधि से उच्चारित भाषा कौशलों का विकास सहायता से कराया जा सकता हैं।

भाषा हैं। अपने केबिन मे बैठकर हैडफोन के माध्यम से ध्वन्यांकन को सुनकर उन्हे आसनी से अनुभव हो जाता है कि भाषा में किस तत्व का कितना महत्व और उपयोग हैं। इस दौरान एकाग्रता और शिक्षक के निर्देशों के कारण विधार्थी भाषा के उन तत्वों को भी सुनते और अनुभव करते हैं जिन्हें कक्षा में अथवा आम बोल-चाल के समय वह पहचान नहीं करते।

भाषा-प्रयोगशाला की एक अन्य उपयोगिता व्यक्तिगत आवधान हैं। भाषा-प्रयोगशाला में प्रत्येक विधार्थी अपनी गति के अनुसार ध्वन्यांकन का श्रवण और अपनी रचना या निर्दिष्ट रचना का ध्वन्यांकन कर सकता हैं। जहाँ कहीं वह श्रवण अथवा वाचन में कठिनाई अनुभव करता हैं बटन दबाकर शिक्षक से उसके बारे में स्पष्टीकरण एंव निर्देष प्राप्त कर सकता हैं दूसरी ओर शिक्षक भी नियंत्रण कक्ष से ही बटन दबाकर किसी भी विधार्थी द्धारा की जा रही गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकता है और आवश्यक निर्देश दे सकता हैं। इस प्रकार भाषा-प्रयोगशाला के माध्यम से विधार्थियों के श्रवण एंव मौखिक भाषा कौशल का विकास सुनिश्चित किया जा सकता हैं।

10.9 भाषा-प्रयोगशाला से लाभ

1) छात्र अपनी गति से सीखता हैं।

2) छात्र को अभिप्रेरित मिल जाती हैं।

3) शब्दों को उच्चारण में सहायता मिलती हैं।

4) बार-बार शुद्ध विषय-वस्तु को सुनने से शुद्ध उच्चारण अधिगम में सहायता प्राप्त होती हैं।

5) छात्र अभ्यास द्धारा अपनी गलतियों को ठीक कर सकता हैं।

6) छात्र पाठ को बार-बार दोहरा सकता हैं।

7) छात्र का उच्चारण किसी दूसरे छात्र को सुनायी नही देता वह बिना हिचकिचाहट से कार्य करता हैं।

8) साधारण कक्षा अध्ययन में भाषा अभ्यास के लिए जितना समय चाहिए, वह नहीं मिलता, परन्तु भाषा-प्रयोगशाला में यह सुविधा विधमान हैं।

9) छात्र में क्रियाशीलता बढ़ती हैं।

10) भाषा-प्रयोगशाला में हर छात्र को अभ्यास के लिए पूरा समय मिलता हैं, जबकि कक्षा में समय बटँ जाता हैं।

11) भाषा-प्रयोगशाला में आवश्यकतानुसार अभ्यास का समय मिलता हैं, जबकि कक्षा का समय सीमित होता हैं।

12) भाषा-प्रयोगशाला में किये गये कार्य का रिकार्ड रखा जा सकता है और छात्र अपनी प्रगति का स्वंय निरिक्षण कर सकता हैं।

13) भाषा-प्रयोगशाला छात्रों को व्यक्ति परक शिक्षण (Individualized Teaching)की सुविधा देती हैं, जबकि कक्षा का कार्य सबके लिए समान होता हैं।

14) भाषा-प्रयोगशाला में दृढ़ीकरण की सुविधा के कारण अर्जन निश्चित दिशा में हो सकता हैं.-

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 4- भाषा प्रयोशाला की उपयोगिता तथा लाभ को संक्षेप में लिखों।

....
....
....
....
....
....
....
....
....

10.10 भाषा-प्रयोगशाला की सीमाएँ

भाषा-प्रयोगशाला के अनेक लाभ हैं किन्तु कुछ सीमाएँ भी हैं इनमें सर्वप्रथम है कि इस व्यवस्था में शिक्षक और विधार्थी का सम्बन्ध अप्रत्यक्ष होता है जो कक्षा की अवधारणा से बिलकुल विपरीत हैं। भाषा शिक्षण के सम्बन्ध में चाक्षुक सम्पर्क का बहुत महत्व हैं। बातचीत हो, वाचन हो या पठन, हाथो, आँखो, सिर और अन्य अंगो का संचालन से कथन को स्पष्ट करना भी भाव-सम्प्रेक्षण का माध्यम होता हैं। भाषा के अन्य अवयवों की ही तरह अंग-संचालन का अभ्यास भी सम्पर्क और निरीक्षण के माध्यम से ही होता हैं। किन्तु भाषा-प्रयोगशाला की सारी कार्यविधि यांत्रिक होती हैं जिससे सम्पर्क जन्य अभ्यास की सम्भावना नहीं रहती।

भाषा-प्रयोगशाला विधुत रूप से व्यष्टि शिक्षण का माध्यम हैं। सामान्य कक्षा में विधार्थियों के सामने अन्य विधार्थियों की अ्युद्धियों, त्रुटियों और असफलताओं के माध्यम से भी सीखने की सम्भावना होती हैं। सजग विधार्थी शिक्षक द्धारा अन्य विधार्थियों को दिये जाने वाले निर्देशिों को सुधारता हैं। भाषा-प्रयोगशाला में बैठा विधार्थी अन्य विधार्थियों की योग्यताओं और कमियों से अपरिचित रहता हैं और हर निर्देश अथवा परामर्ष के लिए शिक्षक पर ही निर्भर होता हैं। यह स्थिति विधार्थी को दिग्भ्रमित भी कर सकती हैं।

भाषा-प्रयोगशाला में विधार्थी का दायित्व काफी बढ़ जाता हैं उससे आपेक्षा होती हैं कि वह प्रत्येक विधार्थी को उसकी कमियों को दृष्टिगत करके ध्वन्यांकित अंश सुनवाएँ और उसमें ध्यात्वय बिन्दुओं पर टिप्पणी करें। साथ ही उसे प्रत्येक विधार्थी द्धारा ध्वन्यांकित अंश को सुनकर आवश्यक टिप्पणी परामर्श देना होता हैं, किसी भी वास्तविक परिस्थिति में इन दायित्वों को निभा पाना कठिन होता हैं। अतः भाषा-प्रयोगशाला की निम्न सीमाएँ हैं।

1) भाषा-प्रयोगशाला का प्रयोग भाषा पढ़ने तथा लिखने में नहीं हो सकता।

2) 16 तथा 20 से अधिक छात्र एक ही समय में कार्य नहीं कर सकतें।

3) विदेशों में जो अन्य भाषाएँ सिखाई जाती हैं उनके विद्धान मिलना कठिन हो जाता हैं।

4) यह खर्चीली विधि हैं।

5) जीवंत परिवंश के आभाव में कार्य यांत्रिक और अरूचिकर हो सकता हैं। लोग मशीनों से जल्दी उब जाते हैं।

6) भाषा-प्रयोगशाला नियंत्रित अभ्यास के लिए उपयोगी हो सकता हैं, लेकिन स्वतंत्र अभिव्यक्ति का विकास अधिक नियंत्रण नही किया जा सकता। भाषा सृजनशील और बहु-विकल्पी होने के कारण उच्च स्तर पर भाषा-प्रयोगशाला की अधिक उपादेयता नहीं हैं।

7) भाषा-प्रयोगशाला की स्थापना तथा संचालन व्ययसाध्य हैं। इस संदर्भ में लाभ की गणना को व्यय के अनुपात में देखा जाना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 5- भाषा प्रयोशाला की सीमाएँ लिखों।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

10.11 सारांश

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है। कि भाषा प्रयोगशाला सभी शिक्षार्थियों के लिए अधिगम के समान अवसर प्रदान करता है। भाषा प्रयोगशाला अच्छा सुनने के कौशल को विकसित करने और संचार की प्रक्रिया में सुधार करन ेलिए शिक्षार्थियों की सहायता करता है। यह झिझक से छुटकारा पाने में मदद करता है। शिक्षक व्यक्तिगत छात्रों पर नजर रखने और अधिक कुशलता से उन लोगों के साथ बात कर सकता है। शिक्षार्थियों एवं उनकी अनुकूलन क्षमता के अनुसार अधिगम में वृद्धि करता है। भाषा प्रयोगशाला में उनके लिए एक निजी टयूटर है। जैसे प्रशिक्षक अगले प्रश्न या ड्रिल उत्पादन पर ध्यान केन्द्रित नहीं करते है। तो शिक्षक छात्र प्रतिक्रियाओ ंपर अधिक ध्यान केन्द्रित कर सकते है। वर्तमान परिदृश्य में यह भाषा शिक्षण में सूचना संचार प्रौद्योगिक के अनुप्रयोग प्रदान करता है। इस प्रकार शिक्षण को सरल और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुरुप बनाने में विज्ञान और तकनीक का योगदान अद्वितीय है इस दिशा में डिजिटल भाषा प्रयोगशाला एक उपयोगी कदम है।

10.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1- ए. एस. हियास - ने भाषा-प्रयोगशाला की परिभाषा इस प्रकार दी हैं, ‘‘भाषा-प्रयोगशाला एक कक्षा-कक्ष हैं जिसमें विदेशी भाषा के अधिगम को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए विशेष प्रकार के उपकरण जुटाये जाते हैं। सामान्यतया यह कार्य साधारण व्यवस्था में इतना प्रभावशाली नही बन सकता।’’

भाषा-प्रयोगशाला कुछ टेप-रिकॉडरो का नेटवर्क है, जिसमें अध्यापक के टेपरिकॉर्डर; बूंदेवसम से 8 से लेकर 30-32 टेप रिकॉर्डर जुड़े होते हैं।

पाठ कन्सोल से छात्रों तक पहुँचाता हैं। छात्र कन्सोल से आने वाले पाठ, जैसे साँचा अभ्यास को सुनकर अपना वाक्य बोलते हैं। छात्र के टेप रिकॉर्डर पर दोनों ध्वानियाँ अंकित हो जाती हैं। फिर छात्र अपना टेप रिकाँर्डर चलाकर दोनों ध्वा ानियों या उच्चारणों का मिलान कर सकता - और अपना निष्पादन सुधार सकता हैं। कुछ संपन्न भाषा-प्रयोगशालाओं में भाषा के संदर्भ को स्पष्ट करने के लिए फिल्म प्रोजेक्टर, स्लाइड प्रोजेक्टर आदि का भी प्रयोग किया जाता हैं। चूँकि भाषा-

प्रयोगशाला जुड़ा हुआ हैं, अध्यापक छात्रों के कार्य का अपनी जगह से निरीक्षण कर सकते हैं और उन्हें व्यक्तिगत या सामूहिक सुझाव दे सकते हैं। इसी तरह छात्र कंसोल की व्यवस्था के अनुसार आपस में बातचीत कर सकतें हैं। भाषा-प्रयोगशाला ध्वनि उच्चारण, वाक्योंच्चारण साँचा अभ्यास, निंयत्रित वार्तालाप, वाचन आदि अनेक कार्या के लिए उपयोगी साधन हैं।

उत्तर 2- भाषा-प्रयोगशाला का लक्ष्य भाषा के व्यवहारिक पक्ष को सुदृढ़ करना हैं

इसके द्वारा उच्चारित भाषा के अवयवों जैसे- उच्चारण, वलाघात, विराम, भाव, शैली, शब्द-चयन, वाक्य संरचना, और विचार संयोजन के साथ पुस्तक वाचन और कविता पाठ इत्यादि को शुद्ध विधि का शिक्षण, अभ्यास और संसोधन का प्रयास किया जाता हैं।

शिक्षक साहित्य की विविध विधाओं के ध्वन्यांकित टेप या सी.डी. विधार्थियो का सुनवाता हैं।

भाषा उच्चारण और शैली के ध्यातव्य पक्षों पर टिप्पणी भी करता है और उन्हें नाटे करने करने की हिदायत देता है ताकि विधार्थी उन पक्षों पर विषेश ध्यान दे।

उत्तर 3- प्रायः भाषा-प्रयोगशाला में 16 अथवा 20 श्रवण कोष्ठ होते है प्रत्येक कोष्ठ में एक मेज तथा कुर्सी होती है जिस बैठकर छात्र कार्य कर सकता है। कोष्ठ में अन्य सामग्री निम्न प्रकार होती हैं।

1. दूरभाषा- परामर्शदाता से बार्तालाप के लिए

2. श्रवणेन्द्रिय दूरभाषा- ईयरफोन

3. स्विच

4. टेप रिकॉर्डर

उपर दर्शाये गये यंत्रों का छात्रों का नियंत्रण कक्ष से सम्पर्क स्थापित होता है अपनी आवाज को रिकार्ड करने तथा फिर सुनने का प्रबन्ध होता है छात्र आवश्यकता अनुसार टेप का चुनाव कर लेते हैं।

प्रत्येक कोष्ठ की चार फुट की उँची दीवारें अथवा अलग-अलग भाग होते है ताकि छात्र बिना किसी बाधा के अपना कार्य कर सके। छात्र परामर्शदाता से परामर्श ले सकता हैं।

उत्तर 4- भाषा-प्रयोगशाला मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास का उपयोगी माध्यम हैं। मौखिक भाषा का अधिगम परिवार और परिवेश से होता हैं। लेकिन वहाँ प्रचलित भाषा का उच्चारण, शब्द-

प्रयोग, शैली इत्यादि की दृष्टि से शुद्ध और सटीक होना प्रायः असंभव ही होता हैं। विधालय में भी सभी विधार्थियों और शिक्षकों की भाषा का सर्वभावेन त्रुटिहीन होना असम्भव हैं। कक्षा में हिन्दी-शिक्षण के दौरान शिक्षक से यथायोग्य वाचन की अपेक्षा की जाती हैं किन्तु उसे सभी विधार्थियों द्धारा ग्रहण किये जाने के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। यदि कक्षा में वाचन/पाठन अभ्यास की बात की जाये तो वही वहाँ एक समप में अधिकाधिक एक ही विधार्थी को अवसर दिया जा सकता हैं और इससे सभी विधार्थियों के वाचन काशैल के विकास को सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। इन वास्ताविकताओं को दृष्टिगत रखते हुए भाषा-प्रयोगशाला को सभी विधालयों के लिए अनिवार्य शिक्षण उपकरण माना जाना चाहिए।

भाषा-प्रयोगशाला में दृढ़ीकरण की सुविधा के कारण निम्नलिखित लाभ हो सकता हैं.-

छात्र को अभिप्रेरणा मिल जाती हैं।

शब्दों को उच्चारण में सहायता मिलती हैं।

बार-बार शुद्ध विषय-वस्तु को सुनने से शुद्ध उच्चारण अधिगम में सहायता प्राप्त होती हैं।

छात्र अभ्यास द्धारा अपनी गलतियों को ठीक कर सकता हैं।

छात्र पाठ को बार-बार दोहरा सकता हैं।

छात्र में क्रियाशीलता बढ़ती हैं।

भाषा-प्रयोगशाला में हर छात्र को अभ्यास के लिए पूरा समय मिलता हैं, जबकि कक्षा में समय बटँ जाता हैं।

भाषा-प्रयोगशाला में आवश्यकतानुसार अभ्यास का समय मिलता हैं, जबकि कक्षा का समय सीमित होता हैं।

भाषा-प्रयोगशाला में किये गये कार्य का रिकार्ड रखा जा सकता है और छात्र अपनी प्रगति का स्वंय निरीक्षण कर सकता हैं।

उत्तर 5- भाषा-प्रयोगशाला के कुछ सीमाएँ भी हैं इनमें सर्वप्रथम है कि इस व्यवस्था में शिक्षक और विधार्थी का सम्बन्ध अप्रत्यक्ष होता है जो कक्षा की अवधारणा से बिलकुल विपरीत हैं। भाषा शिक्षण के सम्बन्ध में चाक्षुक सम्पर्क का बहुत महत्व हैं। बातचीत हो, वाचन हो या पठन, हाथो, आँखो, सिर और अन्य अंगो का संचालन से कथन को स्पष्ट करना भी भाव-सम्प्रेक्षण का माध्यम होता हैं। अतः भाषा-प्रयोगशाला की निम्न सीमाएँ हैं।

भाषा-प्रयोगशाला का प्रयोग भाषा पढ़ने तथा लिखने में नहीं हो सकता।

16 तथा 20 से अधिक छात्र एक ही समय में कार्य नहीं कर सकतें।

विदेशों में जो अन्य भाषाएँ सिखाई जाती हैं उनके विद्धान मिलना कठिन हो जाता हैं।

यह खर्चीली विधि हैं।

जीवंत परिवंश के आभाव में कार्य यांत्रिक और अरूचिकर हो सकता हैं। लोग मशीनों से जल्दी आ जाते हैं।

भाषा-प्रयोगशाला नियंत्रित अभ्यास के लिए उपयोगी हो सकता हैं, लेकिन स्वतंत्र अभिव्यक्ति का विकास अधिक नियंत्रण नही किया जा सकता। भाषा सृजनशील और बहु-विकल्पी होने के कारण उच्च स्तर पर भाषा-प्रयोगशाला की अधिक उपादेयता नहीं हैं।

10.13 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न -1- 'भाषा-प्रयोगशाला द्धारा भाषा कौशलों का प्रभावी शिक्षण सुनिश्चित किया जा सकता हैं' - सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

प्रश्न -2- भाषा-प्रयोगशाला से आप क्या समझते हैं? भाषा-प्रयोगशाला में उपकरण तथा प्रक्रिया का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

प्रश्न -3- विधालय में भाषा-प्रयोगशाला होने के क्या लाभ हैं? भाषा-प्रयोगशाला के लाभ तथा सीमाएँ बताइये।

इकाई 11मूल्यांकनकी संकल्पना, उद्देश्य और महत्व

11.1 प्रस्तावना
11.2 उद्देश्य
11.3 मूल्याकंन की संकल्पना
11.4 मूल्यांकन का उद्देश्य
11.5 मूल्यांकन का महत्व
11.6सत्तत एवं व्यापक मूल्यांकन का सन्दर्भ
11.7 परीक्षा एवं मूल्यांकन की आवश्यकता
11.8 सारांश

11.9 निबंधात्मक प्रश्न

11.1 प्रस्तावना

मूल्यांकन के महत्त्व का स्पष्ट पता उस वक्त चलता है जब मूल्यांकन के तरीकों और मानदंडों में परिवर्तन होता है। भाषा के मूल्यांकन का गहरा संबंध, भाषा के उद्देष्यों के साथ होता है। परीक्षा एवं मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली के अनिवार्य अंग है। विद्यार्थियों ने एक निष्चित अवधि में कितना कुछ सीखा, कितनी प्रगति की, शिक्षा के उद्देष्य कहां तक प्राप्त हुए- इन की जांच करने के लिए परीक्षायें आयोजित की जाती है। परीक्षाओं के लिए प्रश्न -पत्र बनाये जाते है जिन की परीक्षाओं द्वारा मूल्यांकन किया जाता है। प्रस्तुत इकाई में आप हिंदी शिक्षण के मूल्यांकन के विषय में अध्ययन करेंगे|

11.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप-

हिंदी शिक्षण में मूल्यांकन के संप्रत्यय को समझ जायेंगे|

हिंदी शिक्षण में परीक्षा एवं मूल्यांकन की आवश्यकता को जान जायेंगे|

हिंदी शिक्षण में सत्तत एवं व्यापक मूल्यांकन को समझ जायेंगे|

11.3 मूल्याकंन की संकल्पना

भाषा शिक्षण में मूल्यांकन का बहुत महत्त्व है। मूल्यांकन के महत्त्व का स्पष्ट पता उस वक्त चलता है जब मूल्यांकन के तरीकों और मानदंडों में परिवर्तन होता है। मान लीजिए कि एक विद्यालय में समझ को भाषा के मूल्यांकन का महत्त्वपूर्ण पहलू माना जा रहा है, तो उस समय दिए गए पाठ या विषयवस्तु में कही गई बातों को समझने की क्षमता का मूल्यांकन करना भाषा के शिक्षण की प्रक्रिया का मुख्य सरोकार बन जाएगा लेकिन किसी दूसरे विद्यालय में विषयवस्तु का विष्लेषण करना भाषा के मूल्यांकन का महत्त्वपूर्ण पहलू मान लिया जाता है। तो मात्र समझ से बात नहीं बनती।

पहले विद्यालय और दूसरे विद्यालय में भाषा को पढ़ाने के तरीकों पर विचार करने पर पता चलता है कि दोनों स्थितियों में पढ़ाने के तरीके भिन्न हो जाएँगे। दोनों विद्यालयों में कक्षा में पूछे जाने

वाले प्रश्न , उपयोग में लाई जाने वाली सहायक सामग्रियाँ, शिक्षक/शिक्षिका की भूमिका, कक्षा में विद्यार्थी-विद्यार्थी के रिष्ते आदि अलग तरह के होंगे। मूल्यांकन के तरीके कक्षा प्रक्रियाओं को निर्धारितऔर नियंत्रित करते हैं। इस विवरण में मूल्यांकन के विचार की ताकत का आभास मिलता है।

भाषा के मूल्यांकन का गहरा संबंध, भाषा के उद्देष्यों के साथ होता है। मूल्यांकन की रूपरेखा, बनाते समय किसी शिक्षिका या शिक्षक के सामने भाषा शिक्षण के प्रमुख उद्देष्य कौन से होते है, मूल्यांकन के पैमानों, तरीकों तथा रणनीतियों पर उनका असर रहता है। भिन्न उद्देष्यों के लिए भिन्न पैमाने तथा रणनीतियों की अपेक्षा होती है।

किसी शिक्षिका या शिक्षक के लिए यह समझना भी आवष्यक है कि भाषा के कौषल और पहलुओं के मूल्यांकन के लिए किन बिंदुओं को ध्यान में रखना होगा। चूँकि अलग-अलग कौषलों के लिए मूल्यांकन के भिन्न बिंदु होते हैं। अतः बिन्दुओं को पहचानने में जितनी स्पष्टता होगी उतनी ही स्पष्टता के साथ उनके अवलोकन के बिंदुओं को पहचाना जा सकता है तथा उनके लिए सबूत इकट्ठे किए जा सकते है।

मूल्यांकन का अर्थ यह नहीं है कि शिक्षिका या शिक्षक ने विद्याथियों की क्षमता जाँच ली है। इसका अर्थ यह भी है कि परिणाम के आधार पर वे विद्यार्थी को भाषा की बारीकियों को समझने में मदद करें। इस प्रकार मूल्यांकन की प्रक्रिया विद्यार्थियों को विषय में गहरे पैठनें में सहायक होती है।

11.4 मूल्यांकन का उद्देश्य

1. स्तत मूल्यांकन के विभिन्न उपकरणों एवं रणनीतियों के बारे में जानना।

2. हिंदी भाषा के विभिन्न कौषलों के मूल्यांकन के तरीकों के बारे में समझ बनाना।

3. हिंदी भाषा के विभिन्न पहलूओं के मूल्यांकन के तरीकों के बारे में समझ बनाना।

4. मूल्यांकन के बिंदुओं की पहचान करने की समझ बनाना।

5. मूल्यांकन हेतु साक्ष्य एकत्र करने के तरीकों को समझ पाना।

11.5 मूल्यांकन का महत्व

1. उद्देष्यों की प्राप्ति कहाँ तक हुई है, इसकी जानकारी की जाती है।

2. समुचित उपचारात्मक अनुदेषन के लिये किन उद्देष्यों की प्राप्ति पूर्णतः नहीं हो पाई, इसका पता लगाना।

3. छात्रों के श्रेणीकरण करने में सहायता।

4. विधियों एवं प्रविधियों के औचित्य का पता लगाना, जो कि शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा अपनाई गई थी।

5.शिक्षण व्यूह-रचना में सुधार, नवीन व्यूह रचना का प्रयोग

6. शिक्षक तथा छात्र दोनों की सफलता का अंकन कर उन्हें पुनर्बलित करती है।

11.6सत्तत एवं व्यापक मूल्यांकन का सन्दर्भ

पढ़कर समझने की क्षमता के मूल्यांकन के लिए रिक्त स्थान की पूर्ति एक अच्छा तरीका हो सकता है। इससे बच्चे की भाषा के संबंध में सभी तरह की निपुणता के स्तरों को मापा जा सकता है। क्लोज टेस्ट में पाठ्यवस्तु का संदर्भ स्पष्ट होना चाहिए। अंष चुनौतीपूर्ण एवं रुचिकर हो। पाठ्यवस्तु के शुरूआत की पंक्ति ज्यों की त्यों रखें। दूसरी पंक्ति से लगभग समान अंतराल से एक शब्द हटा दिया जाए अंतिम पंक्ति ज्यों की त्यों रखी जाए। छात्रों को स्पष्ट निर्देष दे कि गद्यांष को दो-तीन बार अच्छी तरह प रिक्त स्थान पर उचित शब्द लिखें। उदाहरण स्वरूप आगे देखिए।

मूल पाठ

एक वन में एक ऊँट और गीदड़ रहते थे। दोनों मित्र थे। नदी के उस पार खेतों में खूब गनने उगे थे। उन्होंने नदी के उस पार जाने का निष्चय किया। गीदड़ ऊँट की पीठ पर बैठ गया और उन्होंने नदी को पार कर लिया। खेतों के रखवाले दूर कहीं विश्राम कर रहे थे। निष्चित होकर दोनों ने गन्ने खाने आरंभ कर दिए। गीदड़ का पेट शीघ्र भर गया। परंतु ऊँट अभी भूखा था। गीदड़ ने कहा, 'खूब खाया, चित्त प्रसन्न हो गया। अब तो मैं गाऊँगा।' ऊँट ने कहा, 'मित्र ऐसा मत करना। मैनें अभी खाना शुरू ही किया है।' गीदड़ बोला, 'मैं और प्रतीक्षा नहीं कर सकता। पेट भर खाना के तुरंत पश्चात् जोर-जोर से गाना मेरा स्वभाव है। मैं तो गाऊँगा।' गीदड़ तुरंत चिल्लाने लगा। गीदड़ की आवाज सुनकर रखवाले वहाँ आ गए। गीदड़ तो भाग गया, ऊँट पकड़ा गया और बुरी तरह डंडो से पीटा गया। बेचारा ऊँट मार खाकर वहाँ से भागा और अपने स्वार्थी मित्र से बदला लेने की तरकीब सोचने लगा।

नदी किनारे दोनों फिर इकट्ठे हुए और पहले की तरह गीदड़ अपने मित्र ऊँट की पीठ पर बैठ गया दोनों नदी पार करने लगे। जब बीच धार में पहुँचे तो ऊँट ने कहा, ''मैं तो डुबकी लगाऊँगा क्योंकि खाने के बाद नदी के पानी में डुबकी लगाना और लेटना मेरा स्वभाव है।' गीदड़ ने उससे बहुत प्रार्थना की कि वह ऐसा नहीं करे परंतु ऊँट नहीं माना और उसने वहीं डुबकी लगा दी। गीदड़ पानी में डूब गया। उसने अपनी करनी का फल पाया।

क्लोज

एन वन में एक ऊँट और एक गीदड़ रहते थे। .... (1) मित्र थे। नदी के उस पार खेतों में खूब गन्ने उगे थे।.......... (2) नदी के उस पार जाने का निष्चय किया। गीदड़ ऊँट की पीठ पर बैठ गया और .... (3) नदी को पार कर लिया। खेतों के रखवाले दूर कहीं विश्राम कर रहे थे।निष्चित होकर......... (4) ने गन्ने खाने आरंभ कर दिए। ....(5) का पेट शीघ्र भर गया। परंतु ऊँट अभी भूखा था। गीदड़ ने कहा, 'खूब खाया, चित्त प्रसन्न हो गया। अब तो मैं गाऊँगा।' ....(6) ने कहा, 'मित्र ऐसा मत करना। मैनें अभी खाना शुरू ही किया है।' गीदड़ बोला, ... (7) और प्रतीक्षा नहीं कर सकता। ....(8) भर खाना के तुरंत पश्चात् जोर-जोर से गाना मेरा स्वभाव है। मैं ....(9) गाऊँगा।' ....(10) तुरंत चिल्लाने लगा। गीदड़ की .... (11) सुनकर रखवाले वहाँ आ गए। .... (12) तो भाग गया, ऊँट पकड़ा गया और बुरी तरह डंडो से ....(13) गया। बेचारा .... (14) मार खाकर वहाँ से भागा और अपने स्वार्थी मित्र से .... (3) लेने की तरकीब सोचने लगा।

नदी किनारे .... (16) फिर इकट्ठे हुए और पहले की तरह गीदड़ अपने मित्र ऊँट की पीठ पर बैठ गया।.......... (17) नदी पार करने लगे। ....(18) बीच धार में पहुँचे तो ऊँट ने कहा, ''मैं तो डुबकी लगाऊँगा .... (19) खाने के बाद नदी के पानी में डुबकी लगाना और लेटना मेरा स्वभाव है।' गीदड़ ने उससे बहुत प्रार्थना की कि वह ऐसा नहीं करे,..........(21) ऊँट नहीं माना और उसने वहीं डुबकी लगा दी। गीदड़ पानी में डूब गया। उसने अपनी करनी का फल पाया।

क्लोज टेस्ट जाँचने के दो तरीके हैं। पहलो तरीका तो यह कि मूल पाठ्य-सामग्री के शब्द ही रिक्त स्थान भरे जाए अथवा विद्यार्थी को इस प्रकार की छूट हो कि वह ऐसा शब्द भरे जो उपयुक्त माना जा सके।

इस गतिविधि के दौरान हम बच्चों के साथ कौन, क्या, कहाँ जैसी चर्चा भी कर सकते हैं। कुछ प्रश्न किए जा सकते हैं; यथा-

1.ऊँट और गीदड़ में क्या रिश्ता था?

2.ऊँट गीदड़ से बदला लेने की तरकीब क्यों सोचने लगा?

3.ऊँट ने गीदड़ को पानी में क्यों डुबाया?

4.इस कहानी को पढ़कर मित्रता के बारे में अपनी राय दीजिए।

इस प्रकार के प्रश्न समूह बनाकर भी पूछे जा सकते है। इसी कहानी को वे अपनी मातृभाषा में भी सुना सकते हैं। ऊपर जिस गतिविधि पर हमने चर्चा की, उसके माध्यम से पठन क्षमता एवं पढ़कर

समझने की क्षमता के विकास का मूल्यांकन तो हो ही रहा है साथ ही बालक/बालिका की सुनकर समझने की योग्यता का मूल्यांकन भी हो सकता है। सुनकर समझना भाषाई विकास का महत्वपूर्ण उपादान है। सुनकर अर्थग्रहण करने की योग्यता का मूल्यांकन हमारे विद्यालयों में नहीं के समान है। यही कारण है कि बालसभा, विद्यालय के उत्सव, पास-पड़ोस के उत्सव, राजनीतिक भाषणों आदि का वांछित प्रभाव नहीं पड़ पा रहा है। शिक्षक/शिक्षिका का दायित्व है कि वे भाषा के इन महत्त्वपूर्ण गुणों की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकृष्ट कराएँ। सुनने की योग्यता के मूल्यांकन हेतु कई गतिविधियाँ है; यथा सस्वर वाचन, वार्तालाप, वाद-विवाद, भाषण, कविता, कहानी, आकाषवाणी, तथा दूरदर्षन से प्रसारित कार्यक्रम आदि। रेडियों पर समय-समय पर कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर वार्ताएँ प्रसारित होती रहती हैं। उन्ही वार्ताओं में से किसी एक का चयन कर छात्र/छात्राओं को सुनाया जा सकता है।

11.7 परीक्षा एवं मूल्यांकन की आवश्यकता

परीक्षा एवं मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली के अनिवार्य अंग है। विद्यार्थियों ने एक निष्चित अवधि में कितना कुछ सीखा, कितनी प्रगति की, शिक्षा के उद्देष्य कहां तक प्राप्त हुए- इन की जांच करने के लिए परीक्षायें आयोजित की जाती है। परीक्षाओं के लिए प्रश्न -पत्र बनाये जाते है जिन की परीक्षाओं द्वारा मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार परीक्षा एवं मूल्यांकन की एक निष्चित प्रक्रिया अपनाई जाती है। इस की आवष्यकता पर चर्चा करने से पहले इस के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों के विचारों का उल्लेख करना समीचीन होगा:-

1.क्लार एवं स्टार का विचार-''मूल्यांकन वह निर्णय या विष्लेषण है जो विद्यार्थी के कार्य से प्राप्त सूचनाओं से निकाला जाता है''

2. सी.सी.रॉस का विचार- मूल्यांकन और मापन में अन्तर है। इस का प्रायः बच्चे के पूरे व्यक्तित्व अथवा समूची शिक्षा-स्थितियों की जांच-प्रक्रिया के लिए प्रयोग किया जाता है।''

3.डॉ0 हिल का विचार -''पुरानी प्रणाली में परीक्षा समूचे पाठ्यक्रम तथा शिक्षण-विधि को निर्देशित किया करती थी जबकि नई प्रणाली में परीक्षा एवं शिक्षण दोनों विशिष्ट शिक्षण-उद्देष्यों द्वारा निर्धारित कियें जाएंगे। अतः इन्हीं शिक्षा एवं मुल्यांकन आधारित होनी चाहिए।

11.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के बाद आपने हिंदी शिक्षण के मूल्यांकन के विषय जाना कि भाषा शिक्षण में मूल्यांकन का बहुत महत्त्व है। मूल्यांकन के महत्त्व का स्पष्ट पता उस वक्त चलता है जब मूल्यांकन के तरीकों और मानदंडों में परिवर्तन होता है।किसी शिक्षिका या शिक्षक के लिए यह समझना भी आवष्यक है कि भाषा के कौषल और पहलुओं के मूल्यांकन के लिए किन बिंदुओं को

ध्यान में रखना होगा।उद्देश्यों की प्राप्ति कहाँ तक हुई है, इसकी जानकारी की जाती है।परीक्षा एवं मूल्यांकन शिक्षा प्रणाली के अनिवार्य अंग है। विद्यार्थियों ने एक निष्चित अवधि में कितना कुछ सीखा, कितनी प्रगति की, शिक्षा के उद्देष्य कहां तक प्राप्त हुए- इन की जांच करने के लिए परीक्षायें आयोजित की जाती है।

11.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. मूल्याकंन के संप्रत्यय को स्पष्ट कीजिये?

2. परीक्षा एवं मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं?

इकाई 12माध्यामिक कक्षाओं में लेखन,पठन,श्रुतलेख,सुलेख,तीव्रलेखन,त्रुटिमुक्त लेखन,आशु भाषण, काव्यपाठ

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3लेखन

12.4पठन

12.5श्रुतलेख

12.6 सुलेख
12.7तीव्रलेखन
12.8त्रुटिमुक्त लेखन
12.9आशु भाषण
12.10काव्यपाठ
12.11 सारांश
12.12 निबंधात्मक प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में माध्यामिक कक्षाओं में लेखन,पठन,श्रुतलेख,सुलेख,तीव्रलेखन,त्रुटिमुक्त लेखन,आशु भाषण, काव्यपाठ द्वारा शिक्षण व इसके मूल्यांकन के बारे में आप अध्ययन करेंगे|पढ़ने के साथ-साथ लिखना सिखाने में कई लाभ भी हैं।केवल अक्षर-ज्ञान पढ़ना नहीं है। पढ़ना एक कला है एक आदत है, एक व्यसन है और उससे प्रेम उत्पन्न हो जाने पर व्यक्ति आजीवन पढ़ने के लिए आतुर बना रहता है। पठन का एक दृष्टि से और भी अधिक महत्त्व है। आज का सीखा हुआ ज्ञान कल तुच्छ और नगण्य सिद्ध हो सकता है। और बौद्धिक दृष्टि से हम स्थिर और पंगु बने रह सकते हैं। श्रुतलिपि में अध्यापक बोलता जाता है और बालक सुनकर लिखते जाते हैं।

12.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप-

माध्यमिक कक्षाओंमें लेखन एवं पठन शिक्षण के बारे में जान जायेंगे |

माध्यमिक कक्षाओं में श्रुतलेख,सुलेखएवंतीव्रलेखके बारे में जान जायेंगे |

माध्यमिक कक्षाओं में आशु भाषणएवं काव्यपाठ के द्वारा शिक्षण के बारे में जान जायेंगे |

12.3माध्यमिक कक्षाओंमें लेखन शिक्षण

शिक्षाशास्त्रियों में इस बात पर मतभेद है कि प्रारम्भ में बालक को लिखना सिखाया जाय या वाचन। मेरिया माण्टेसरी के मतानुसार बालक को सर्वप्रथम लिखना सिखाया जाय, तत्पश्चात पढ़ना। उनके विचार में पढ़ने की अपेक्षा लिखना सरल है। पढ़ने में बालक को मानसिक परिश्रम की आवष्यकता रहती है, जबकि लिखने में केवल अनुकारण की आवश्यकता होती है। लिखने मे प्रमुख रूप से माँपेशियों पर बल पड़ता है जिसका अभ्यास शिक्षकों की सहायता से पर्याप्त हो जाता

है। खेल-खेल में बालक कलम पकड़ना सीख जाताहै। दूसरे, उनके अनुसार बालकों को लिखने में पढ़ने की अपेक्षा अधिक आनन्द आता है।

परन्तु यह सोचना कि लिखना, पढ़ने की अपेक्षा कहीं अधिक सरल है, एक प्रकार से पूर्णतया सत्य नहीं है। इस विषय में भाई योगेन्द्रजीत लिखते हैं- ''श्रीमती मॉण्टेसरी ने चाहे लिखने की क्रिया को पढ़ने की क्रिया से सरल कहा हो, परन्तू है वह पढ़ने की क्रिया से कठिन ही। पढ़ने में बालकों को अक्षरों की आकृति का ज्ञान होना चाहिए, परन्तु लिखने में अक्षरों की आकृति के साथ-साथ उन अक्षरों को वैसा का वैसा लिख सकने की क्षमता भी होनी चाहिए। दूसरे, इस बात का अनुभव बहुतों ने किया होगा कि यदि किसी नई भाषा को सीखने में हमें छः सप्ताह लगते हैं, तो उस भाषा में लिखना सीखने में अधिक समय लगेगा।''

इस प्रकार लेखन-क्रिया कोई सरल क्रिया नहीं। अतः अध्यापक को इसका शिक्षण देने में आवश्यक सावधानी ध्यान रखनी चाहिए।

कुछ विद्वानों के अनुसार पढ़ना और लिखना साथ-साथ चलना चाहिए। जैसा कि सरयू प्रसाद चौबे लिखते हैं-'' पढ़ने के साथ-साथ लिखना सिखाने में कई लाभ भी हैं। प्रथम यह है कि देखना, सुनना तथा करना-ये तीनो क्रियाएँ लिखने में साथ-साथ चलती हैं। अतः लिखना और पढ़ना एक-दूसरे के सहायक हो जाते हैं। द्वितीय लाभ यह है कि लिखने की शारीरिक क्रियाएँ पढ़ने को रोचक बना देती है।'' अतः पढ़ने के साथ-साथ लिखना सिखाने में कोई दोष नहीं हैं।

12.4माध्यमिक कक्षाओंमें पठन

''साक्षरता की बड़ी समस्या लोगों को केवल यह सिखाना नहीं है। कि वे कैसे प ़ें, बल्कि-यह सिखाना है कि वे प ़ें,पढ़ने के लिए लालायित रहें, उनमें पढ़नें के लिए अनुराग उत्पन्न हो, और उन्हें पढ़नें में आनन्द की अनुभूति होने लगे। पठन-कौशल सम्बन्धी यांत्रिकाताओं पर अधिकार होजाने और पठन-योग्यता प्राप्त हो जाने पर पढ़ने की आदत पक्की और सुदृढ़ हो जानी चाहिए, अन्यथा स्कूल छोड़ने पर अधिकत्तर बालक पढ़ना जानते हुए भी पुनः निरक्षतरता की शोचनीय स्थिति में पहूँच जाते हैं। साक्षर को पाठकबनाना आवष्यक है।''1

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि केवल अक्षर-ज्ञान पढ़ना नहीं है। पढ़ना एक कला है एक आदत है, एक व्यसन है और उससे प्रेम उत्पन्न हो जाने पर व्यक्ति आजीवन पढ़ने के लिए आतुर बना रहता है। यदि वह प्रेम नहीं उत्पन्न हुआ तो प्राइमरी ही नहीं; बल्कि माध्यमिक कक्षाओं से उत्तीर्ण बालक भी धीरे-धीरे साक्षर मात्र रह जाते हैं और अच्छे पाठक नहीं बन पाते। अतः भाषा-शिक्षण का उद्देष्य अक्षर-ज्ञान कराना नहीं बल्कि बालक को पढ़ना सिखाना है।

पठन शिक्षण का महत्त्व

पठन-शिक्षण का महत्त्व इस तथ्य से ही प्रकट हो जाता है कि 'पढ़ना' शब्द शिक्षा-प्राप्ति का ही पर्याय बन गया है। प्रायः बालक से पूछा जाता है- ''तुमने कहाँ तक पढ़ा है, कहाँ पढ़ रहे हो?'' आदि

विद्यालय द्वारा प्रदत्त सबसे अधिक उपयोगी कौशल अथवा बौद्धिक प्रक्रिया पठन-शिक्षण है। ज्ञानार्जन की दृष्टि से इससे बढ़कर और कौषल नहीं है। पढ़ने की शिक्षा पर ही अन्य विषयों का ज्ञान निर्भर है। जीवन के भावी अध्यवसाय की यही आधारशिला है। 'पढ़ना' सीख लेने पर बालक विद्यालयक के अन्य विषयों को भलीभाँति पढ़ सकते हैं और उनका ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

पठन योग्यता के विकसित होने पर ही बालक की समस्त मानसिक और भावात्मक उन्नति निर्भर है। मानव जाति द्वारा अर्जित ज्ञान-राशि लिखित रूप में विद्यमान है जिसका उपयोग हम पठन द्वारा ही कर सकते हैं। पठन शिक्षा के अभाव में संसार के सारे मन्थागार हमारे लिए व्यर्थ से हैं। साहित्य का आनन्द भी हम पठन द्वारा ही प्राप्त करते हैं। इस प्रकार बौद्धिक एवं भावात्मक विकास पठन की आदत पर निर्भर है।

छात्र यदि विद्यालय छोड़ने के पश्चात् 'अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यमार्थ च चिन्तयेत्' के आदर्श का अनुगामी नहीं बनते तो विद्यालय की सारी शिक्षा ही व्यर्थ है। इस आदर्श का आधार पढ़ने का ही व्यसन है। विद्यार्थी-जीवन के दो-चार वर्ष बाद ही सर्वोत्तम छात्र भी पाठ्य विषय सामग्री भूल जाता है। पर यदि वह नया ज्ञान प्राप्त करता रहता है तो जीवन में रूचि और आनन्द बना रहता है। नए ज्ञान, नए तथ्य, नए जीवन-दर्षन ही, मनुष्य को जीवन्त और विकासषील बनाए रखते हैं। जीवन के इस संवर्द्धन का सर्वोत्तम साधन पढ़ना है।

नूतन ज्ञानार्जन एवं जीवन-दर्षन के तीन प्रमुख स्त्रोत है (1) निरीक्षण (2) विद्वानों की सत्संगति और उनके बीच बातचीत (3) पठन। मौलिक निरीक्षण शक्ति कुछ थोड़े से लोगों को ही प्राप्त होती है। विद्वानों की संगति और उनके बीच रह कर ज्ञानार्जन भी सबको सुलभ नहीं। अतः ज्ञानवर्द्धन का सबसे सरल, सुलभ साधन पढ़ना है। बालक के विकास लिए सबसे अधिक प्रेरणादायी तत्त्व पठन ही है जो उसे सदा ही ज्ञानवृद्धि, श्रीवृद्धि और आनन्दवृद्धि के लिए निरन्तर संलग्न बनाए रख सकता है।

पठन का एक दृष्टि से और भी अधिक महत्त्व है। आज का सीखा हुआ ज्ञान कल तुच्छ और नगण्य सिद्ध हो सकता है। और बौद्धिक दृष्टि से हम स्थिर और पंगु बने रह सकते हैं। पर निरंतर पठन से हमारे पूर्वर्जित ज्ञान में संषोधन और परिवर्द्धन होता रहता है। आज के वैज्ञानिक एवं तीव्र गति से होने वाली ज्ञान-विकीर्णता के युग में यदि इस संषोधन ऐसी नहीं है। जिसे एक बार ही सदा के लिए

प्राप्त कर ली जाये। शिक्षा आजीवन, अनवरत चलने वाली विकासषील प्रक्रिया और इस प्रक्रिया का आधार पठन है।

यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि हमारी रूचियों में परिवर्तन होता रहता है। जो वस्तु आज रूचिकर है, वहीं कालांतर में अरूचिकर होसकती है। और जिसमें आज कोई रूचि नहीं है। उसमेंकुल प्रगाढ़ रूचि हो सकती है। पठन इस रूचि-परिवर्तन एवं परिष्कार का बहुत बड़ा साधन है।

साहित्यिक कार्यक्रमों द्वारा भी छात्रों में काव्यात्मक रूचि बढ़ाने का प्रयत्न् अपेक्षित है। कतिपय साधन इस प्रकार हैं-

(1) कविताएँ कण्ठस्थ करना - छात्रों को अच्छी-अच्छी कविताएँ कण्ठस्थ करने के लिए सदा प्रेरित और प्रोत्साहित करना चाहिए। इस दृष्टि से शिक्षक के पास कक्षा-स्तर का ध्यान रखते हुए अच्छभ् कविताओं का संकलन होना चाहिए। इन कविताओं में राष्ट्र प्रेम, नैतिक आदर्ष, त्याग, बलिदान, वीरता, साहस, करूणा आदि सम्बन्धी कविताएँ अवष्य होनी चाहिए।

(2) कविता सुपाठ - समय-समय पर कविता-सुपाठ प्रतियोगिता का आयोजन करना चाहिए। बालकों को अच्छी तरह तैयारी करके भाग लेने का निर्देष देना चाहिए।

(3) अन्त्याक्षरी - छोटी कक्षाओं में कण्ठस्थ की हुई कविताओं को अच्छे □ंग से कहने की शिक्षा का उत्तम साधन अन्त्याक्षरी है। अन्त्याक्षरी के आयोजनों से बालकों में कविता कण्ठस्थ करने की प्रवृत्ति भी बढ़ती है।

(4) समस्या पूर्ति -किसी दी हुइ समस्या (कोई एक पंक्ति देकर अथवा कविता का अंष देकर, पंक्ति का आधा भाग देकर) की पूर्ति के रूप में छात्रों को कविता कराना। इससे छात्रों में कविता रचने की योग्यता का विकास होता है।

(5) कविता लिखने का अभ्यास - समस्या पूर्ति के अतिरिक्त स्वतंत्र रूप से भी कविता लिखने का अवसर और प्रोत्साहन छात्रों को देना चाहिए। कुछ बालको में यहजन्मजात प्रतिभा होती है। और वे माध्यमिक स्तर पर ही तुकबन्दियाँ करने लगते हैं। तुक मिलाने के लिए शब्द □ू□ने का अभ्यास भी खेल-खेल में कराया जा सकता है।

(6) कविता सम्मेलन - विद्यालय में समय-समय पर कवि सम्मेलन का आयोजन करना चाहिए। इसमें अच्दे कवियों को ही निमंत्रित करना चाहिए। बालकों मे इस आयोजन के प्रति बहुत उत्साह देखा जाता है और अनेक बालक स्वयं कविता रचने और सुनाने के लिए उत्सुक रहते हैं।

(7) कवि-दरबार कवि जयन्ती-अभियात्मक रूप में छात्र कवि दरबार आयोजित कर सकते हैं। छात्र कबीर, सूर, तुलसी आदि प्रसिद्ध कवियों के रूप में आकर उनकी कविताएँ सुनाते हैं। वेष-भूषा,

आकार-प्रकार में भी वे उनका प्रतिरूप बनने का प्रयत्न करते हैं। कवि-दरबार का आयोजन विद्यालयों में बहुत ही रोचक सिद्ध होता है।

प्रसिद्ध कवियों की जन्मतिथियाँ भी मनानी चाहिए। इस अवसर पर कवि की अच्छी कविताओं का पाठ करना चाहिए।

यदि इन विविध आयोजनों द्वारा विद्यालयों का वातावरण साहित्यिक बना रहे तो बालकों में अपने-आप कविता और साहित्य के प्रति रूचि पैदा होगी और वे स्वयं इन आयोजनों में सक्रिय भाग लेते रहेंगे।

12.5 माध्यमिक कक्षाओं में श्रुतलेख

1.श्रुतलेख क्या हैं - श्रुतलिपि में अध्यापक बोलता जाता है और बालक सुनकर लिखते जाते हैं। कहीं-कहीं पर श्रुतलेख के लिए सीतावाद्य (ग्रामोफोन) या ध्वनि-लेख यन्त्र (टेप-रिकार्डर) का भी प्रयोग होता है। सुनकर लिखे जाने के कारण इसे श्रुतलेख कहा जाता है।

2.श्रुतलेख का प्रारम्भ कब करवाया जाये-जब विद्यार्थीयों को भाषा की ध्वनियों का, उन ध्वनियों का व्यक्त करने वाले अक्षरों का, अक्षरों की आकृतियों तथा प्रतिलिपि करने का अभ्यास हो जाए, तभी श्रुतलिपि या श्रुतलेख का प्रारम्भ करवाया जाए।

3.श्रुतलेख को कैसे सफल बनाया जाए- श्रुतलेख की सफलता निम्नलिखित बातों पर निर्भर करती है-

(1) विषय-सामग्री, बालकों की रूचि, अनुभव तथा ज्ञान के आधार पर चुनी जाये। (2) बालकों के पास उचित लेखन-सामग्री हो। (3) छात्र ठीक आसन पर बैठाए जाएँ। (4) अध्यापक का उच्चारण स्पष्ट हो। (5) अध्यापक को बोलने की गति ठीक हो। (6) अध्यापक जो गद्यांष चुन, वह न तो बहुत सरल हो और न बहुत कठिन। प्रारम्भ में छात्रों को पाठ्य-पुस्तक का ही कोई अंष चुनना चाहिए। बाद में पत्र-पत्रिका का कोई गद्यांष चुना जा सकता है।

4.श्रुतलेख की विधि -विधि की दृष्टि से हम श्रुतलेख को चार सोपानों में विभाजित कर सकते हैं-

प्रथम सोपान-गद्यांष के नवीन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखा जाए। जब सभी बालक इन शब्दों को अच्छी प्रकार से देख लें, तब उन्हें मिटा दिया जाये।

द्वितीय सोपान -अध्यापक गद्यांष का सस्वर वाचन करे। बालक केवल सुनें और केन्द्रीय भाव को समझ कर लिखने के लिए तैयार हो जायें।

तृतीय सोपान - अध्यापक अपेक्षाकृत मन्द गति से; स्वर आरोह-अवरोह सहित, शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण करते हुए गद्धांश को बोलें और बालक उसे सुनकर लिखते जाएँ। बोलते समय किसी शब्द या वाक्यको आवृत्ति नहीं करनी चाहिए।

चतुर्थ सोपान - अध्यापक अपेक्षाकृत तीव्रगति से गद्यांष का वाचन करे, ताकि छात्र छूटे हुए और अषुद्ध शब्दों को ठीक कर सकें।

5.श्रुतलेख का संशोधन -श्रुतलिपित या श्रुतलेख का उपयोग तभी है, जबकि उसका संषोधन किया जाए। संषोधन के ये ंग हो सकते हैं-

(1) यदि बालकों की संख्या कम हो, तो अध्यापक व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक बालक को सामने बुलाकर संषोधन करें।

(2) बालकों की संख्या अधिक होने पर अध्यापक छात्रों की अभ्यास पुस्तिकाएँ अपने घर ले जाकर संषोधित करें, यदि इस कार्य में विलम्ब हुआ तो संषोधन का पूरा-पूरा लाभ छात्रों को नहीं मिल पाएगा।

(3) यदि गद्यांष पाठ्य-पुस्तक में लिखा गया है, तो छात्रों को स्वयं अपने कार्य को संषोधित करने क लिए कहा जा सकता है।

सुन्दर लेखन के अनेक महत्त्व हैं, जैसे-

(4) पत्र-पत्रिका से लिया हुआ गद्यांष श्यामपट्ट पर लिखा जा सकता है और छात्र उसे देखकर अपनी अषुद्धियाँ सुधार सकते हैं।

(5) छात्र एक-दूसरे को कापियाँ लेकर भी संषोधन कर सकते हैं।

(6) बालकों ने जो शब्द अषुद्ध लिखे हैं, उनका शुद्ध स्वरूप उनसे पाँच-पाँच बार लिखवाया जाए, ताकि वह उनके मन में स्थिर हो सके।

11.6 माध्यमिक कक्षाओं लेखन सुलेख

1. सुन्दर और स्पष्ट लिखावट सरल चित का द्योतक मानी जाती है, अथवा इससे चित्त शुद्ध और सरल बनता है।

(2) लिखावट सुन्दर और स्पष्ट रहने से पुराने पुराना कागज भी सरलता से पढ़ लिया जाता है। पुराने दस्तावेजों का पढ़ना इन दिनों कठिन हो गया है क्योंकि वे अधिंकांश अस्पष्ट है।

(3) सुन्दर और स्पष्ट लिखने वाला परीक्षार्थी स्वतः अधिक अंक प्राप्त कर लेता है।

(4) गंदी लिखावट न केवल आलस्य वरन् असावधानी, अभ्यास का अभाव 'तथा कभी-कभी मानसिक उलझनों का द्योतक होती है, जिसके विचार स्पष्ट होंगे-उनकी लिखावट प्रायः सुन्दर होती है। महात्मा गाँधी की लिखावट अपवाद है।

(5) कुरूप और अस्पष्ट लेखन परीक्षक द्वारा उपेक्षित हो जाता है। इसमे प्रथम श्रेणी का परीक्षार्थी द्वितीय श्रेणी प्राप्त करता है।

सुन्दर लेखन के उपाय -

लेखन सुन्दर हो इसके लिए कुछ उपाय बताए गए हैं, जैसे-

(1) लेखन कार्य को सुन्दर और स्पष्ट बनाने के लिए सर्वप्रथम लेखक की सुन्दर अभिरूचि होनी चाहिऐ उसमें कलात्मक तत्व हो।

(2) लेखन का कार्य सरल, सुबोध तथा परिचित शब्दों से आरम्भ किया जाये।

(3) अक्षर लिखने के पूर्व रेखानुकरण का अभ्यास किया जाये।

(4) लेखन कार्य जिस-वस्तु पर ही वह अवस्थानुसार बदलता रहे।

प्रारम्भ में बालक बालू की □ पर अंगुलियों से अक्षर बनावें, बाद में स्वच्छ धरती पर रंगीन या सफेद चॉक से वर्ण लिखें, तद्पश्चात् काठ की काली रंगीन मोटी तख्ती पर मोटी खरी की कलम और खल्ली की सफेद स्याही से लिखने का अभ्यास करें। इससे आगे बढ़ने पर स्लेट और पेंसिल का प्रयोग कराया जाये। स्लेट की जगह कागज के पन्ने पर काठ की मोटी पेंसिल दी जाये। अन्त में कलम कागज का स्थान आता है। बच्चों की आरम्भ में कलम, विषेषतः फाउन्टेनपेन, नहीं देना चाहिए। इससे अक्षर सुन्दर बनते है और न पुष्ट। हाथ अभ्यस्त होने पर ही इससे मोती निकलते हैं।

5. लेखन की सुन्दर बनाने का दृढ़ निष्चय हो, प्रयास हो।

लिखित अभिव्यक्ति शिक्षण में ध्यान देने योग्य सावधानियाँ-

बालकों को लिखना किस प्रकार सिखाया जाए? इसके लिए कुछ विधियाँ प्रचलित हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ किया जायेगा-

(1) रेखाओं के माध्यम से -कुछ विद्वानों के अनुसार तीन या चार वर्ष की आयु के बालक सीधी, तिरछी या उल्टी-सीधी रेखायें खींचने लगते हैं। अतः इस अवस्था में उनको रेखा खींचने का अभ्यास कराना चाहिये। इस विषय में डॉ. सरयू प्रसाद चौबे लिखते है कि ''सबसे पहले बच्चों को बालू में और फिर स्लेट पर चिल-विलैया करने आने चाहिए ऐसा करने से हाथ में आवष्यक मोड़ आता है। तदनन्तर उसे परिचित वस्तुओं की आकृतियाँ खींचने देना चाहिए। ये आकृतियाँ बिल्कुल ठीक नही

बनेंगी। अतः हाथ पकड़कर सहायता की जाये और खाने पर उस स्वयं अभ्यास करने दिया जाए। इस प्रकार सीधी-टेढ़ी रेखायें, वृत्त, अर्द्धवृत्त आदि खींचने का काम-चलाऊ अभ्यास हो जायेगा। इसके बाद परिचित वस्तुओं के मात्रा-रहित नामों के लिखने का अभ्यास करना उचित है।'' छात्रों के हाथ जब भी प्रकार सध जाएँ, तब मात्रा लगाना तथा गोल घुण्ड़ियों का अभ्यास कराया जाए।

(2) मॉन्टेसरी विधि - मॉन्टेसरी प्रणाली में लिखिना सिखाने के लिए तीन विधियों का प्रयोग किया जाता है-

लेखनी पकड़ने का अभ्यास - लेखनी पकड़ने के अभ्यास के लिए कागज या पट्टी पर रेखागणित की विभिन्न आकृतियाँ खींचकर उनमें लेखनी द्वारा स्याही भरवाई जाती है। धीरे-धीरे बालक लेखनी पकड़ना सीख जाता है।

अक्षरों का ध्वन्यात्मक विश्लेषण - रेगमाल कागज पर अंगुली फेरने के साथ-साथ बालक उस अक्षर की ध्वनि का भी उच्चारण करता जाता है। इस क्रिया के माध्यम से वह अक्षर उसकी ध्वनि में साहचर्य की स्थापना कर लेता है। इसके पश्चात् बालक स्वतः लिखना प्रारम्भ कर देता है।

इस विधि का सबसे बड़ा दोष यह है कि बालक व्यर्थ के अक्षरों के प्रति अधिक रूचि नहीं रखते। दूसरे, देवनागरी लिपि में इसका प्रयोग नहीं किया जा सकता।

अनुकरण विधि - अध्यापक श्यामपट्ट, स्लेट या तख्ती पर स्पष्ट और सुडौलता के सथ वर्ण लिख देता है। बालक अध्यापक द्वारा लिखे गये वर्णोंको लिखते हैं। इस प्रकार अनुकरण के माध्यम से बालक लिखना सीख जाते हैं।

पेस्टालॉजी विधि - इस विधि का प्रमुख आधार सरल से कठिन की ओर चलता है। अक्षर ज्ञान इसमें कराया जाता है। इक्षरों आकृति की विभिन्न टुकड़ों में विभाजित कर लिया जाता है, तत्पष्चात् टुकड़ों के योग से उस अक्षर की रचना कराई जाती है। पहले उन वर्णो को सिखाया जाता है, जो सरल होते हैं।

जैकासर विधि -इस विधि में छात्रों के सामने सम्पूर्ण वाक्य प्रस्तुत किया जाता है। छात्र अनुकरण करते हुए वाक्य का एक शब्द लिखते है तथा संपूर्ण वाक्य को पुनः मिलाकर उसकी शुद्धता का पता लगाते हैं। अन्त मेंअध्यापक स्मृति के आधार पर सम्पूर्ण वाक्य लिखने के लिए कहता है, परन्तु छोटे बच्चों के लिए यह विधि अत्यन्त जटिल तथा कठिन होती है। बालक सम्पूर्ण वाक्य को ग्रहण करने में असमर्थ रहते हैं।

मनोवैज्ञानिक विधि -उपर्युक्त विधियाँ लिखना सिखाने की पूर्णतया उत्तम विधियाँ नहीं हैं। इनमें से प्रत्येक के अन्दर कोई न कोई दोष है। अतः अध्यापक को लिखना सिखाने के लिए मनोवैज्ञानिक प्रणाली का प्रयोग करना चाहिये। बालकों को सर्वप्रथम वर्णमाला के अक्षर या शब्द

आदि सिखाने की अपेक्षा पूर्ण वाक्य को बोलना तथा उनका लिखना सिखाया जाए। इस विषय में एक विद्वान का कथन है कि ''सर्वप्रथम हमें बच्चों को बोलना सिखाना चाहिए। इन पूर्ण वाक्यों के लिए किसी चिह्न विषेष के सिखाने की आवश्यकता नहीं है। भाग-चित्र इनके मस्तिष्क में बन जाएँ, इनता ही पर्याप्त होता है। जब बच्चे मौखिक रूप से पूर्ण वाक्य बोलने लगे और उनकी कर्मेन्द्रियाँ तथा ज्ञानेन्द्रियाँ दृढ़ हो जाएँ, तो उन्हें पढ़ने व लिखने के लिए तैयार करनी चाहिए।'' एक अन्य लेखक के शब्दों में, ''बालक जब पाठषाला में भर्ती होने आता है, तो छोटे-छोटे वाक्यों में बोलना जानता है। वर्णमाला के भिन्न-भिन्न अक्षर उसके लिए निरर्थक तथा सारहीन होते है। उनका अपने में कोई अर्थ नहीं होता। आपस में मिलाकर जब वे शब्दों अथवा वाक्यों के रूप में आते हैं, तभी सार्थक बनते हैं, अर्थात् उनका अर्थ होता है। अतएव, शिक्षा-षास्त्रियों ने इस विषय में जो प्रयोग किये हैं, उनके आधार पर बालकों को पहले सार्थक शब्द अथवा वाक्य ही सिखाये जायें।''

12.7माध्यमिक कक्षाओं मेंतीव्रलेखन

1.बैठने का आसन- अध्यापक को बालकों को बैठने के आसन पर विषेष रूप से ध्यान देना चाहिए। यदि बालक ठीक प्रकार से बैठेंगे नहीं, तो उनसे ठीक प्रकार से लिखो भी नहीं जायेगा। अध्यापक को यह बात सदा मस्तिष्क में रखनी चाहिए कि लिखना भी एक कला है। प्रायः छात्र अपना सिर मेज पर झुकाकर लिखते हैं। यह दोषपूर्ण ढंग है। लिखते समय यथासम्भव ऋण डेस्क का प्रयोग किया जाय। ऋण-डेसक के अन्दर कुर्सी का आन्तरिक भाग अन्दर की ओर घुसा हुआ रहता जिससे छात्र को लिखने में सुविधा रहती है। लिखित कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व छात्रों का शरीरसन्तुलित रहना चाहिए। कुर्सी पर जाँघें सीधी रहें तथा उनका निचला भाग लम्बरूप में रहना चाहिए। पैर फर्ष पर टिके हों तथा बायें हाथ में कागज सँभाला जाय। आँखें कॉपी से लगभग एक फुट दूरी पर रहें। मेज पर झुककर लिखने से मेरूदण्ड झुक जाता है।

2.कलम पकड़ने का आसन-कलम पकड़ने पर भी विषेष रूप से ध्यान दिया जाय। कलम छात्र इस ढंग से पकड़ें कि वह अँगूठे और अँगुली के गड्ढे में आ जाय। कलम का मुख कन्धे के बाहर की ओर रहे। लिखते समय हथेली स्पष्ट दिखाई दे। कलम या लेखनी 540 पर पकड़ी होनी चाहिए।

3.लेखन सामग्री - स्पष्ट और सुडौल लिखने के लिए उचित लेखन सामग्री का होना आवष्यक है। इस विषय में रायबर्न का कथन उल्लेखनीय है। वे लिखते हैं, ''छात्र प्रारम्भिक कक्षाओं में स्लेट और बत्ती का उपयोग करें प्रारम्भिक कक्षाओं में स्याही के प्रयोग में मूल्य संदिग्ध है, क्योंकि छात्रों को इसके कारण साफ रहने में बड़ी असुविधा रहती है। स्याही का उपयोग उस समय तक न किया जाय, जब तक कि छात्र उसका उपयोग अच्छी प्रकार से न कर सकें।'' अधिकांश विद्वानों का मतहै कि नागरी लिपि का प्रारम्भ तख्ती पर ही किया जाय। तख्ती चौरस और इस प्रकार की हो कि छात्र ठीक प्रकार से उस पर लिख सके। अक्षर स्पष्ट, चमकीलो तब ही उभर सकेंगे जबकि खेड़िया भी ठीक

होगी। उच्च कक्षाओं में निब तथा होल्डर का ही प्रयोग किया जाये। फाउण्टेन पैन का प्रयोग विष्वविद्यालय स्तर पर ही ठीक रहता है।

4.अक्षरों की सुडौलता तथा स्पष्टता -हाथ के सध जाने पर अध्यापक को अक्षरों की सुडौलता पर ध्यान देना चाहिए। अध्यापक को चाहिए कि जब बालक लिख रहे हों, उस समय प्रत्येक बालक के लेख को जाकर देखे कि अक्षर सुडौल और स्पष्ट हैं कि नहीं। सुन्दर तथा सुडौल अक्षर का प्रत्येक अंग ठीक-ठीक अनुपात में होता है। अक्षर न अधिक बड़े हों और न अधिक छोटे हों। दो शब्दों के मध्य कम से कम एक अक्षर के बराबर फासला अवष्य होना चाहिए। दो पंक्तियों के मध्य अन्तर भी छोड़ा जाय।

5.लेखन की शैली-बालकों की लेखन-षैली पर भी ध्यान देना आवष्यक है। कुछ छात्र तिरछी लिखावट लिखतें हैं। अध्यापक की तिरछी लिखवाट को यथासम्भव निरूत्साहित करना चाहिए। तिरछा लिखने से बालकों की माँसपेशियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है तथा थकावट भी शीघ्र आती है। सीधी लिखाई बालकों के लिए सर्वोत्तम होती है, क्योंकि इस शैली में लिखने में थकावट नहीं आती और अक्षर भी स्पष्ट तथा सुडौल बनते हैं।

6.श्रुतिलेख का प्रयोग - बालकों को तीव्र गति से लिखने का अभ्यास करने के लिए श्रुतिलेख का प्रयोग किया जा कसता है। कोई योग्य छात्र या अध्यापक किसी पाठ को बोलता जाता है। और छात्र सुनकर लिखने का अभ्यास करते हैं। पहले श्रुतिलेख धीरे-धीरे बोला जाय, बाद में उसकी गति तीव्र कर दी जाय। श्रुतिलेख की अषुद्धियों को अवष्य शुद्ध कराया जाय।

7.आदर्श नमूने-अध्यापक को स्वयं अक्षर या शब्द अत्यन्त स्पष्ट तथा सुडौल बनाने चाहिए। जिससे कि उनके आधार पर छात्र लिख सकें।

8.अभ्यास - लिखने की कला अभ्यास से आती है, अतः छात्रों को लिखने का पर्याप्त अभ्यास कराया जाय।

12.8माध्यमिक कक्षाओं में त्रुटिमुक्त लेखन

(1) जिस अक्षर को बालक थोड़े प्रयत्न द्वारा लिख सकते हैं, पहले उसको ही चुना जाए। फिर उसे अक्षर से चार-पाँच वर्णो का निर्माण कराया जाए। (2) यदि बालक को सर्वप्रथम उसका नाम लिखना ही सिखाया जाए, तो अति उत्तम है। ऐसा करने से उसको प्रसन्नता का अनुभव होगा और लेखन में रूचि लेने लगेगा। (3) पहले बालकों के सुलेख की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए तथा वे जो कुछ भी लिखें, ठीक-ठीक लिखें। लिखने की गति की ओर ध्यान बाद में दिया जाए। (4) लिखना सिखाने में सदा 'सरल से कठिन' सूत्र का ध्यान रखा जाए। पहले बालकों से सरल शब्द लिखवायें जाएं बाद में कठिन। (5) प्राथमिक अवस्था में बालक बड़े-बड़े अक्षर लिखें। धीरे-धीरे

करके उनके आकार को छोटा किया जाए। (6) विद्वान जे.मैककी और श्री जे. मैनरी के अनुसार जिन वस्तुओं पर लिखने की शिक्षा प्रदान की जाए, उनका क्रम इस प्रकार रहे- जमीन पर अंगुली से, श्यामपट्ट पर खड़िया से, फिर स्लेट पर चिकनी पेन्सिल (बत्ती) से और अन्त में कागज पर कलम और स्याही से। (7) जिस घण्टे में लिखना सिखाया जाए, वह अधिक बड़ा न हो। अधिक लम्बे घण्टे में बालक थक जायेंगे। तथा उनमें लेखन के प्रति रूचि उत्पन्न नहीं होगी। (8) यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि यदि बालक किसी पाठ को ठीक-ठीक पढ़ लेता है, तो उसे ठीक-ठीक लिख भी सकेगा। अतः पढ़े हुए पाठ में ही लेखन का अभ्यास कराया जाए। (9) लिखते-लिखते जब छात्रों के हाथ सध जाएँ, तब लिखने की गति तेज की जाए। (10) बालकों की रूचि को ध्यान में रखते हुए अरूचिकर अक्षर तथा शब्दों की पुनरावृत्ति की जा सकती है।

12.9माध्यमिक कक्षाओं में आशु भाषण

यह भाषण का परिवर्तित रूप है। भाषण में पूर्व तैयारी की जा सकती है, किन्तु इसमें उसी समय सोचकर अपने विचार अभिव्यक्त करने होते हैं। अवस्था के अनुसार बोलने वाले को विषयका बोलने से पाँच मिनट पूर्व तक पता नहीं रहता। बोलने वाले विषयों की एक सूची तैयार करके पूर्णतः गुप्त रखा जाता है। वक्ता स्टेज पर आकर अपनी पत्रिका (पर्ची) उठता है। विषय पर सोचता है और दो से पाँच मिनट तक सोचता है, फिर विषय के पक्ष-विपक्ष में जो भी उसे बोलना होता है, बोलता है। आशु भाषण में ने केवल अभिव्यक्ति का ही विकास होता है, अपितु कल्पना शक्ति, चिन्तन और त्वरित बुद्धि का भी विकास होता है।

12.10 माध्यमिक कक्षाओं में काव्यपाठ

उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में स्थान-स्थान पर कविताएँ लिखती मिलती हैं जिन्हें समझना और आनंद लेना जरूरी है। कविता की समझ बनाने के लिए जरूरी है कि बार-बार कविता का वाचन किया जाए। वाचन ही वह सोपान है जो कविता के समझने में सर्वाधिक महत्त्व रखता है। कविता वाचन में उच्चारण, स्वर, लय, आरोह-अवरोह, गति-यति का ध्यान रखा जाता है। इसके आधार पर जब कविता का पाठ होता है तब कविता बोधगमय बन जाती है। यानी समझ में आने लगती हैं। कवि द्वारा मंच पर पढ़ी जाने वाली कविता का आकर्षण बिंदु उसकी वाचन-शैली ही है। कविता का वाचन मर्मर्स्पषी और भावोद्दीपका होना चाहिए। वाचन के बाद कविता के विचारों, भावों, कल्पनाओं और शब्दचित्रों को व्यवस्थित [ ]ा से समझना जरूरी होता है। इसके लिए प्रष्न करना, तुलना करना, विरोधाभास आदि को पहचानना जरूरी होता है। कविता को समझने के लिए कभी तो हम उसे गाकर पढ़ते हैं कभी उसमें आई नाटकीयता का ध्यान रखते हुए पढ़ते हैं। कभी शब्दार्थ बोध से कविता को समझने का प्रयास करते हैं तो कभी व्याख्या का सहारा लेते हैं। इस सब का उद्देष्य होता है कविता का आनंद लेना। वाचन और व्याख्या के बाद कविता के सौंदर्य की बात आती है। कविता का सौंदर्य अभिव्यक्ति, भावांे व विचारों में निहित होता है।

अभिव्यक्ति सौंदर्य - अभिव्यक्ति सौंदर्य से अभिप्राय है- नाद और ध्वनि का सौंदर्य, वर्णों और शब्दों दोनों की आवृत्ति (अनुप्रास, यमक, श्लेष), यति-गति का सौंदर्य, विविध छंदों और उनके सस्वर पाठ का सौंदर्य।

भाव सौंदर्य - हर्ष, शोक, प्रेम, वात्सल्य, करूणा, उत्साह आदि विविध भाव कविताओं में व्यक्त होते हैं। इनके आधार पर कविता के मर्मस्पर्षी स्थलों की पहचान कर उनका रसास्वाद किया जाना चाहिए, इन भावपूर्ण पंक्तियों को बार-बार दोहरा कर उनका आनंद लिया जाना चाहिए और अपनी अभिव्यक्ति (लिखित/मौखिक) में उनका प्रयोग किया जाना चाहिए।

विचार सौंदर्य - कबीर, तुलसी, रहीम, वृंद आदि के दोहों में विचार का सौंदर्य उल्लेखनीय है। आधुनिक कवियों की कविता भी विचार सौंदर्य से अछूती नहीं है। उनमें आए सात्त्विक और उदात्त गुणों के सौंदर्य को रेखांकित किया जाना चाहिए ताकि विचार सौंदर्य का आनंद लिया जा सकें। कविता का सौंदर्य भी आदमी के सौंदर्य की तरह दो प्रकार का है एक रूपात्मक सौंदर्य और दूसरा गुणात्मक सौंदर्य। जिस तरह सुन्दर रूप आकृष्ट करता है उसी तरह व्यक्ति के गुण भी आकृष्ट करते है। कोई आदमी भोला है, सच्चा है, ईमानदार है, सरल सहज है; वह हमें अच्छा लगने लगता है। कविता का रूप (शिल्प) और भाव दोनों ही पाठक/श्रोता को आकृष्ट करते हैं। आकर्षण का केंद्र कविता का सौंदर्य ही है। यदि हम कविता को समझ कर उसका आनंद लेना चाहते हैं तो जरूरी है कि उसका शब्दार्थबोध, व्याख्या, और सौंदर्यबोध से रू-ब-रू होकर उन्हें समझे और कविता के प्रति अपने प्रेम को बढ़ाएँ।

प्रश्न -

1.कविता क्यों पढ़ी-पढ़ाई जानी चाहिए?

2.कविता के सौंदर्य तत्त्व कौन-कौन से हैं? सौंदर्यबोध के लिए किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

3.कविता में रूचि कैसे पैदा की जा सकती है? सोदाहरण उत्तर दीजिए।

4.कविता की व्याख्या के लिए आप किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे।

12.11 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आप अध्ययन करने के उपरांत जान गए होंगे कि पढ़ने में बालक को मानसिक परिश्रम की आवष्यकता रहती है, जबकि लिखने में केवल अनुकारण की आवश्यकता होती है।साक्षरता की बड़ी समस्या लोगों को केवल यह सिखाना नहीं है। कि वे कैसे प , बल्कि-यह सिखाना है कि वे प , पढ़ने के लिए लालायित रहें, उनमें पढ़नें के लिए अनुराग उत्पन्न हो, और उन्हें पढ़नें में आनन्द की अनुभूति होने लगे। श्रुतलिपि में अध्यापक बोलता जाता है और बालक सुनकर

लिखे जाते हैं। कहीं-कहीं पर श्रुतलेख के लिए सीतावाद्य (ग्रामोफोन) या ध्वनि-लेख यन्त्र (टेप-रिकार्डर) का भी प्रयोग होता है। सुनकर लिखे जाने के कारण इसे श्रुतलेख कहा जाता है।आशु भाषण में ने केवल अभिव्यक्ति का ही विकास होता है, अपितु कल्पना शक्ति, चिन्तन और त्वरित बुद्धि का भी विकास होता है।कविता की समझ बनाने के लिए जरूरी है कि बार-बार कविता का वाचन किया जाए। वाचन ही वह सोपान है जो कविता के समझने में सर्वाधिक महत्त्व रखता है।

12.12 निबंधात्मक प्रश्न

1. श्रुतलेख से आप क्या समझते हैं?

2. माध्यमिक कक्षाओंमें पठन से आप क्या समझते हैं?

3. माध्यमिक कक्षाओं में काव्यपाठ शिक्षण से आप क्या समझते हैं?

इकाई 13 - क्रियात्मक शोध

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 क्रियात्मक शोध का अर्थ एवं महत्व

13.4 क्रियात्मक शोध के सोपान

13.5 क्रियात्मक शोध एवं मूलभूत शोध में अंतर

13.6 भाषिक संदर्भ में क्रियात्मक शोध के विभिन्न क्षेत्र

13.6.1 श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति

13.6.2 पठन एवं अर्थग्रहण

13.6.3 भाषा लेखन

13.7 क्रियात्मक शोध के विभिन्न अभिकल्प

13.7.1 एकल समूह अभिकल्प

13.7.2 समान्तर समूह अभिकल्प

13.7.3 चक्र समूह अभिकल्प

13.8 क्रियात्मक शोध आख्या (रिर्पोट)

13.9 क्रियात्मक शोध संबधी उदाहरण

13.9.1 क्रियात्मक शोध की रूपरेखा

13.10 परियोजना निर्माण एवं क्रियांवयन में आने वाली कठिनाइयाँ एवं निराकरण

13.11 सारांश

13.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.13 उपयोगी पुस्तकें

13.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में आप अध्ययन करेंगे कि भाषा-शिक्षण में आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए भाषा शिक्षक किस प्रकार अपने शिक्षण कार्य के साथ-साथ प्रयोग एवं परीक्षण पर आधारित शोध कार्य भी कर सकता हैं। इस प्रकार का क्रियागत अनुसंधान व्यावहारिक तथा उपयोगी तो होगा ही, साथ ही अन्य भाषा शिक्षकों के लिए प्रेरणादायी भी सिद्ध होगा। ऐसा शोधकार्य शिक्षार्थियों की भाषागत उपलब्धियों के उन्नयन तथा भाषा अधिगम में आने वाली विभिन्न बाधाओं के निराकरण तथा उपचार में सहायक होगा। भाषा शिक्षण की प्रक्रिया का अंग बन जाने तथा प्रस्तुत समस्याओं हेतु शिक्षण के साथ-साथ चलने वाले शोधकार्य के कारण ही इसे क्रियात्मक शोध कहा जाता हैं।

13.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

1. क्रियात्मक शोध का अर्थ एवं महत्व बता सकेंगे।
2. भाषा-शिक्षण के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित समस्याओं और प्रकरणों का चयन कर सकेंगे।
3. क्रियात्मक शोध अभिकल्पों का विवेचन कर सकेंगे।
4. शोध आख्या (रिर्पोट) को प्रभावी □ग से प्रस्तुत कर सकेंगे।

13.3 क्रियात्मक शोध का अर्थ एवं महत्व

हम सब भली-भाँति जानते है कि किसी भी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु शिक्षार्थी होता हैं। हमारे समस्त शैक्षणिक कार्य सारी चेष्टाएं, सारे प्रयत्न शिक्षार्थी को ध्यान में रखकर ही किए जाते हैं क्योंकि उन सबका प्रतिफलन शिक्षार्थी में ही सार्थक होता हैं। किंतु यह भी एक निर्विवाद सत्य हैं कि समस्त शिक्षण-प्रक्रिया का स्रोत शिक्षक है और हर सफल शैक्षणिक प्रयोग के पीछे शिक्षक का सजग चिंतन उसका सतत प्रयोगधर्मी दृष्टिकोण और अपने शिक्षण-कार्य को अधिकाधिक सार्थक बनाने की लगन एवं प्रयत्न होते हैं। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रयोगधर्मी दृष्टिकोण ने ही शैक्षणिक अनुसंधान के क्षेत्र में एक ऐसी महत्वपूर्ण प्रवृत्ति को जन्म दिया जो ऐसे व्यक्तियों द्वारा शैक्षिक अनुसंधान करने का आग्रह करती है जो शिक्षा के क्षेत्र में सीधे जुड़े हुए हों। कुछ शिक्षा शास्त्रियों को यह लगा कि शिक्षा के क्षेत्र में अनेक समस्याएं होती हैं जिनका हल खोजने में ऐसे व्यक्ति अधिक महत्वपूर्ण योगदान कर सकते है जो उसी क्षेत्र में कार्य कर रहे हों। ये लोग अपनी शैक्षिक समस्याओं से भली-भॉति परिचित होने कारण उनका हल खोजने में और समाधानों का प्रयोग द्वारा मूल्यांकन करने में अधिक सक्षम होते हैं। अतः उनके द्वारा किए गए शोध-कार्यो से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सार्थक सुधार आ सकेगा। शिक्षा शास्त्रियों के इसी चिंतन के फलस्वरूप शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में क्रियात्मक शोध का जन्म हुआ। स्टीफन एम कोरे के अनुसार क्रियात्मक शोध एक ऐसी प्रक्रिया जिसके अन्तर्गत शिक्षक तथा शिक्षा से सम्बद्ध अन्य व्यक्ति अपनी कल्पना शक्ति का सृजनात्मक एवं रचनात्मक प्रयोग करते हुए साहसपूर्ण उन क्रियाकलापों का परीक्षण करते हैं जिनसे अधिक सफलता मिलने की आशा होती है और फिर उनकी उपयोगिता की जाँच के लिए विधिवत् एवं व्यवस्थित रूप से प्रमाण इकट्ठे करते हैं।

13.4 क्रियात्मक शोध के सोपान

क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता उसके अर्थ एवं स्वरूप से अवगत हो जाने के उपरान्त प्रश्न यह उठता है कि इस अनुसंधान प्रक्रिया को किस प्रकार व्यवहार में लाया जाए अर्थात शोधकार्य के लिए क्या क्रियाविधि अपनाई जाए। सामान्यतया क्रियात्मक शोध की निम्नांकित क्रियाविधि एवं सोपान माने जाते हैं।

1. समस्या का चयन
2. समस्या का सीमांकन
3. समस्या के संभाव्य कारणों का निदान एवं विश्लेषण
4. क्रियात्मक परिकल्पनाओं का निर्माण
5. कार्य योजना का निर्माण और उसका प्रयोग
6. क्रियात्मक परिकल्पनाओं का परिक्षण एवं प्रमाणीकरण

समस्या का चयन- समस्या की स्पष्ट पहचान के बिना समस्या का समाधान पाना संभव नहीं होगा क्योंकि क्रियात्मक शोध में समस्या ही वह विषय है जिसका अनुसंधान द्वारा समाधान ढूंढ़ा जा रहा है। भाषा शिक्षक के नाते क्रियात्मक शोध के अन्तर्गत आपको समस्या का संबंध भाषा शिक्षण अधिगम के क्षेत्र से होना चाहिए। इस दृष्टि से उच्चारण वर्तनी, शब्द प्रयोग, शब्द रचना, वाक्य रचना, पठन, लेखन आदि के क्षेत्र में विविध समस्याएं हो सकती है जिनका क्रियात्मक शोध द्वारा समाधान भाषा-शिक्षक के कार्य को प्रभावी बना सकता हैं। समस्या की पहचान एवं चुनाव करने में निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना उपयोगी होगा।

1. समस्या शिक्षण की वास्तविक आवश्यकता एवं उद्देश्य की पूर्ति में सहायक हों।
2. समस्या सार्थक एवं व्यावहारिक हो।
3. समस्या के चयन में शोधकर्ता महत्वाकांक्षी न हो अपितु अपनी योग्यता, कार्य-क्षमता को ध्यान में रखे।
4. समस्या के चयन में आधार सामग्री, समय तथा धन की उपलब्धता को ध्यान में रखें।
5. समस्या की पृष्ठभूमि में शोधकर्ता की अपनी रूचि का ध्यान भी रखना चाहिए।
6. समस्या संभावित परिकल्पनाओं के निर्माण द्वारा परीक्षणीय हो।

उपयुक्त बातों को ध्यान में रखकर समस्या की पहचान करनी ही क्रियात्मक शोध का पहला चरण हैं।

समस्या का सीमांकन-समस्या के व्यापक रूप को पहचानने के बाद उसमें से एक निश्चित विशिष्ट समस्या का चुनकर उस समस्या की सीमाएं निर्धारित करना समस्या का सीमाकंन कहलाता है। उदाहरण के रूप में वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हैं। इस व्यापक क्षेत्र में से विशिष्ट समस्या जैसे श, स से संबंधित वर्तनी त्रुटियों को शोध के लिए चुनना समस्या का सीमांकन हैं। यही एक प्रकार से समस्या का परिभाषी कारण हैं। व्हिटनी के मतानुसार- किसी समस्या को परिभाषित करने का अर्थ हैं। उसके चारों ओर बांड (सीमाएं) लगाना।

समस्या के संभाव्य कारणों का निदान एवं विश्लेषण-समस्या चयन के बाद शोधकर्ता को यह देखना चाहिए कि समस्या के संभाव्य कारण क्या है और क्यों हैं? इसका पता लगाने के लिए शोधकर्ता को प्रमाणों का सहारा उसी प्रकार लेना पड़ता हैं जिस प्रकार चिकित्स को रोग के लक्षणों आदि का। जिस प्रकार रोग के कारणों का ठीक-ठाक पता लग जाने पर ही रोग का ठीक उपचार संभव होता है उसी प्रकार समस्या के प्रासंगिक कारणों के ज्ञान से ही समाधान संभव हो सकेगा।

क्रियात्मक परिकल्पनाओं का निर्माण-समस्या के कारणां के निदान एवं विश्लेषण के बाद अगला चरण हैं क्रियात्मक परिकल्पनाओं का निर्माण अर्थात् उन क्रियाओं के बारे में विचार करना जिनसे समस्या का निराकरण संभव हो ये क्रियात्मक परिकल्पनाएं आनुमानिक समाधान हैं इनकी प्रमाणिकता प्रयोग और परीक्षण की कसौटी पर ही मालूम हो सकती हैं। परिकल्पनाएं हमें क्रियात्मक

शोध के लिए दिशा प्रदान करती हैं, वे हमें ऐसी संभावित क्रियाए सुझाती है जो समस्या के हल निकालने में सहायक होती हैं।

कार्य योजना का निर्माण और उसका प्रयोग-क्रियात्मक परिकल्पनाओं के निर्माण के बाद शोधकर्ता कार्य योजना तैयार करता है। परिकल्पनाओं की परीक्षा के लिए उपयुक्त रूपरेखा तैयार करता हैं जिसमें कार्ययोजना को संपादित करने के लिए अपेक्षित साधन, विधियां, आधार-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपकरणों आदि का उल्लेख होता है और उनकी उपयुक्तता के कारणों पर प्रकाश डाला जाता हैं।

क्रियात्मक परिकल्पनाओं का परीक्षण एवं प्रमाणीकरण-कार्य-योजना बनाने के उपरांत शोधकर्ता परीक्षण विधियों का प्रयोग करते हुए परिकल्पनाओं की उपयोगिता व सार्थकता का पता लगाता हैं। अर्थात् समस्याओं के निराकरण के लिए जिन समाधानों का अनुमान लगाया गया था, उनकी सत्यता-असत्यता की परख करता हैं। यदि कार्य योजना के सम्पादन से शोधकर्ता के लक्ष्य की पूर्ति होती है तो उस समाधान को स्वीकार कर लिया जाता हैं। अन्यथा उसे छोड़ दिया जाता हैं। कार्य सम्पादन के समय शोधकर्ता आवश्यकतानुसार परिकल्पनाओं में सुधार भी कर सकता हैं।

बोध प्रश्न

1. क्रियात्मक शोध से आप क्या आशय है ? चार पंक्तियों में उत्तर लिखें।

....
....
....
....
....
....

13.5 क्रियात्मक शोध एवं मूलभूत शोध में अंतर

अनुसंधान के प्रमुख दो प्रकार हैं- मूलभूत (फण्डामैन्टल) अनुप्रयुक्त (एप्लाइड) अनुप्रयुक्त अनुसंधान ही क्रियात्मक शोध हैं। यद्यपि दोनों की क्रिया-विधि एक ही है लेकिन उद्देश्य, क्षेत्रों एवं परिणाम की दृष्टि से इन में अंतर निहित हैं।

उद्देश्य की दृष्टि से

''मौलिक शोध'' में आप शोधकर्ता के रूप में सर्वमान्य नियमों एवं सिद्धान्तों की खोज करते हैं, जबकि क्रियात्मक शोध में आप अपने भाषा शिक्षण के क्षेत्र में ही कक्षा कार्यो में सुधार लाने के

लिए अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढते हैं। उदाहरणार्थ- मौलिक अभिव्यक्ति के क्षेत्र में ''उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियों का अन्वेषण एंव उनका सुधार''।

समस्या के स्वरूप एवं महत्व की दृष्टि से

मौलिक शोध से आप समस्या का सैद्धान्तिक कठिनाइयों से अधिक सम्बन्ध होता हैं, जबकि क्रियात्मक अनुसंधान में समस्याएं कक्षा/विद्यालयगत व्यावहारिक कठिनाइयों से सम्बंधित होती है। अतः समस्या के स्वरूप में पर्याप्त अन्तर पाया जाता हैं।

आधारभूत न्यायदर्श की दृष्टि से

मौलिक अनुसंधान में न्यादर्श का आकार क्रियात्मक अनुसंधान की अपेक्षा बड़ा होता है और न्यादर्श का चुनाव भी बहुत ही सावधानी से किया जाता है, ताकि न्यादर्श पूरी जनसंख्या का प्रतिनिधि बन सके, जबकि क्रियात्मक शोध में न्यादर्श किसी कक्षा के छात्र तथा कभी-कभी विशिष्ट विद्यार्थियों तक ही सीमित हो पाता हैं।

सामान्यीकरण की दृष्टि से

क्रियात्मक शोध की अपेक्षा मौलिक अनुसंधान के सामान्यीकरण की प्रमाणिकता अधिक होती हैं। यहॉ सामान्य नियमों का निर्धारण किया जाता है, नवीन सत्यों एवं तथ्यों को खोज निकाला जाता हैं, जबकि क्रियात्मक शोध में स्थानीय सन्दर्भ में सामान्य निष्कर्ष मात्र निकाले जाते हैं और वे भी विषयागत कक्षानुरूप कार्य पद्धति सुधारने हेतु। उदाहरणार्थ- यदि भाषा शिक्षक के रूप में आप अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाले कक्षा 9 के विद्यार्थियों की हिन्दी उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण एवं उनके सुधार सम्बन्धी शोध कार्य करना चाहते है तो सामान्यकीरण की दृष्टि से जो भी निष्कर्ष आयेंगे, वे केवल आपके एवं कक्षा के सन्दर्भ में ही लागू हो पायेंगे, अन्य प्रकार के विद्यार्थियों एवं कक्षा पर नहीं, क्योंकि अन्य परिस्थितियों में कारण एवं उपचार दोनों ही दूसरे होंगे।

शोध रूपरेखा की दृष्टि से

शोध कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व आप जो भी शोध कार्य की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं, क्रियात्मक शोध में वह रूपरेखा वास्तविक कक्षा एवं विद्यार्थीगत परिस्थितियों के कारण एवं परिवर्तनशील होती हैं, जबकि मौलिक अनुसंधान में यह रूपरेखा जटिल होती हैं, उसमें परिवर्तन शीघ्रतापूर्वक नहीं लाया जा सकता।

13.6 भाषिक संदर्भ में क्रियात्मक शोध के विभिन्न क्षेत्र

भाषा के चार कौशलों-सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना को हम क्रियात्मक शोध के परिप्रेक्ष्य में चार प्रमुख क्षेत्र मान सकते हैं। इसके सम्बन्ध में आई हुई कठिनाईयों को दूर करने के लिए हम विषयों का चयन कर सकते हैं। आइए विचार करें कि सुनने (श्रवण), बोलने (मौखिक अभिव्यक्ति), पढ़ने

तथा लिखने के क्षेत्र में कौन सी कठिनाईयां एवं समस्याए उत्पन्न होती हैं। जिसका निराकरण भाषा अधिगम की दृ्ष्टि से आवश्यक हैं।

13.6.1 श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति

श्रवण तथा बोलना दोनों का संबंध हैं। बालक का प्रारम्भिक भाषार्जन तो सुनने के माध्यम से ही होता हैं। किंतु श्रव्य सामग्री को बालक ने कहॉ तक ग्रहण किया इसका पता हमें उसके बोलने के माध्यम से ही चलेगा। अतः सुनना तथा बोलना दोनो कौशलों में अनुभूत समस्याओं को क्रियात्मक शोध के लिए एक साथ लेना अधिक उपयुक्त होता हैं। श्रवण कौशल से संबंधित कुछ दोष हो सकते हैं-मौखिक रूप से दिए गए निर्देशों को न समझना, स्वराघात, बलाघात, स्वर के उतार-चढ़ाव के अनुसार अर्थग्रहण न कर पाना, श्रव्य सामग्री का केन्द्रीय भाव न बता पाना, आदि। क्रियात्मक शोध द्वारा इन समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन-विश्लेषण करके तदनुरूप सुधार किया जा सकता हैं।

यदि बालक शुद्ध एवं स्पष्ट भाषा में अपने विचारों एवं भावों को प्रकट करने में कठिनाई का अनुभव करता हैं तो शिक्षक को इसके कारणों की खोज करनी पड़ेगी। ये कठिनाइयॉ कई प्रकार की हो सकती हैं-(1) अशुद्ध उच्चारण (2) उपयुक्त शब्दों का प्रयोग न होना (3) वाक्य में पदक्रम सम्बन्धी दोष, (4) ंिलंग, वचन, कारक के अशुद्ध प्रयोग, (5) विषय सामग्री का क्रमबद्ध संयोजन न होना आदि। विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों भाषण, वार्ता, कहानी, संवाद, वाद-विवाद आदि के समय हम उनकी त्रुटियां जान सकते हैं और उनसे सम्बन्धित क्रियात्मक शोध की योजनाएं तैयार कर सकते हैं।

13.6.2 पठन एवं अर्थग्रहण

पाठ्यपुस्तकों में अनेक नए शब्दों का समावेश होता है। शिक्षार्थी उन्हें पढ़ते समय अर्थग्रहण में कठिनाई अनुभव करते हैं। अर्थग्रहण के अनेक स्तर हो सकते हैं, जैसे शब्दार्थ ग्रहण करना, सरलार्थ ग्रहण करना, भावार्थ ग्रहण करना, कार्य-कारण संबंध जानना, निष्कर्ष निकालना आदि। शिक्षार्थी अनेक बार पाठ का सरलार्थ तो समझ लेते हैं किन्तु उसके निहितार्थ जैसे पाठ् सामग्री का विश्लेषण, मूल्यांकन तथा लेखक के उद्देश्य को नहीं समझ पाते। इसके विभिन्न कारण हो सकते हैं। जैसे विचारों की जटिलता, भाषा-शैली की जटिलता अथवा शिक्षार्थियों में अपेक्षित पठन योग्यता का अभाव आदि। अर्थग्रहण संबंधी इन कठिनाइयों को जानने के लिए क्रियात्मक शोध विधि अपनाई जा सकती हैं।

सस्वर पठन

हिन्दी पढ़ते समय प्रायः शिक्षार्थी अनेक कारणों से शब्दों का सही उच्चारण नहीं कर पाते। अशुद्ध उच्चारण के कारणों का पता लगाना क्रियात्मक अनुसंधान का क्षेत्र हो सकता हैं। इसी प्रकार यदि

वाचन की गति उपयुक्त नहीं हैं अथवा विराम चिन्हों पर उचित ध्यान न देने की समस्या हो तो उसका पता लगाने के लिए क्रियात्मक अनुसंधान का सहारा लेना उपयुक्त होगा।

पठन अभिरूचि एवं आदत

पठन की दक्षता के विकास के लिए शिक्षार्थियों में पठन अभिरूचि तथा आदत का विकास करना भी आवश्यक हैं। प्रायः देखा जाता है कि छात्र पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त साहित्य सामग्री का अध्ययन उपयुक्त मात्रा में नहीं करते। इसके कारण हो सकते हैं, जैसे-उपयुक्त पुस्तकों का उपलब्ध न होना, उनकी रूचि तथा स्तर के अनुरूप साहित्य की जानकारी न होना आदि। क्रियात्मक अनुसंधान द्वारा हम जान सकते हैं कि पठन में इस प्रकार के दोषों के क्या कारण हो सकते है तथा कारणों को जान कर उनके निवारण के उपाय भी खोजे जा सकते हैं।

13.6.3 भाषा लेखन

लेखन कौशल के अपेक्षित गुण हैं- सुन्दर लेख, शुद्ध वर्तनी, उपयुक्त वाक्य रचना, अनुच्छेद निर्माण, सुसंगत अभिव्यक्ति एवं सृजनात्मक लेखन। हर स्तर के शिक्षार्थी लिखने में कुछ सामान्य अशुद्धियॉ करते हैं। लेखन की इन अशुद्धियों के कारणों का सर्वेक्षण क्रियात्मक शोध के माध्यम से किया जा सकता हैं।

उदाहरण के लिए हम वर्तनी की अशुद्धियों के कारणों पर विचार करें। सामान्यतः वर्तनी की अशुद्धियॉ तीन कारणों से होती है। मानक वर्णमाला का सही ज्ञान न होना, अशुद्ध उच्चारण, व्याकरण नियमों की अनभिज्ञता। अतः इनके संदर्भ में हम वर्तनी संबंधी अशुद्धियों का विश्लेषण कर अशुद्धियों के कारणों का पता लगाएं और उन्हें दूर करने का उपाय खोजें। इसी प्रकार सुलेख तथा रचना संबंधी कठिनाइयों का भी पता लगाएं और उनके कारणों का विश्लेषण करें और इन्हें दूर करने के लिए क्रियात्मक शोध की योजना बनाएं।

संक्षेप में श्रवण, मौखिक-अभिव्यक्ति, पठन एवं लेखन के क्षेत्रों में अनेक प्रकार की अधिगम प्रकार की अधिगम सम्बन्धी समस्याएं उठती रहती हैं। आपके सामने जो समस्या प्रस्तुत हो उससे कठिनाइयों और कारणों की खोज के लिए क्रियात्मक शोध विधि का उपयोग करें।

बोध प्रश्न

चार पंक्तियों में उत्तर दें।

2. क्रियात्मक शोध व मूलभूत शोध में क्या अंतर हैं?

....
....
....
....
....
....

3. पठन-कौशल से संबंधित कौन-कौन से तीन क्षेत्र हैं जहॉ क्रियात्मक अनुसंधान किया जाना आवश्यक हैं ?

....
....
....
....
....
....

4. मौखिक अभिव्यक्ति के क्षेत्र में किस प्रकार के दोष शिक्षार्थियों में देखे जाते हैं ?

....
....
....
....
....
....

5. भाषा लेखन संबंधी क्रियात्मक शोध कौन-कौन से हो सकते हैं ?

....
....
....
....
....
....

13.7 क्रियात्मक शोध के विभिन्न अभिकल्प

क्रियात्मक शोध के अनेक सोपानों के अध्ययन से पता चलता है कि क्रियात्मक शोध का मूल तत्व वैज्ञानिक विधि का प्रयोग हैं। इस वैज्ञानिक विधि को कार्यरूप देने के लिए जो व्यूह रचना की जाती हैं उसे अनुसंधान की भाषा में ''अभिकल्प'' कहा जाता हैं। अभिकल्प 'क्रियात्मक शोध' में अनुसंधान की एक विशिष्ट योजना की ओर संकेत करता हैं जिसके द्वारा अनुसंधान की समस्या का वैज्ञानिक ढं से हल खोजने का प्रयास किया जाता हैं।

क्रियात्मक शोध की दृष्टि से उपयुक्त एवं तर्कसंगत अभिकल्प निम्नलिखित हैं।

- एकल समूह अभिकल्प
- समान्तर समूह अभिकल्प
- चक्र समूह अभिकल्प

13.7.1 एकल समूह अभिकल्प

क्रियात्मक अनुसंधान में इस अभिककल्प का सर्वाधिक प्रयोग किया जाता हैं। इस अभिकल्प के अन्तर्गत समस्या का अध्ययन करने के लिए शिक्षार्थियों का प्रयोज्यों का एक समूह लिया जाता हैं। किसी समस्या पर एकल समूह प्रयोग द्वारा अध्ययन के लिए भाषा शिक्षक कक्षा में किसी एक प्रमुख भाषा समस्या यथा अशुद्ध उच्चारण/ अशुद्ध वाचन की तीव्रता का अनुमान लगाता हैं। उदाहणार्थ वह देखता है कि कक्षा के कितने शिक्षार्थियों में आदर्श वाचन के दौरान अशुद्ध उच्चारण करने की अधिकतम प्रवृत्ति है या कितने शिक्षार्थी कविता का भावनुसार एवं लय सहित पाठ नहीं कर पाते। इसके पश्चात् भाषा शिक्षक इस समस्या के शोधन हेतु कार्य योजना निर्मित करता हैं और तदनुसार अशुद्ध उच्चारण के निवारणार्थ अपेक्षित उपायों को प्रयोग में लाता हैं।

समस्या निवारणार्थ प्रयुक्त उपायों को क्रियान्वित करने के पश्चात् निश्चित अवधि तक उसी समस्या में शिक्षार्थियों की स्थिति को पुनः उसी प्रकार मापा जाता हैं जैसा कि निवारणार्थ उपायों को करने से पूर्व मापा गया था। इस प्रकार प्राप्त परिणामों के आधार पर यह देखा जाता है कि निवारणार्थ प्रयुक्त उपाय कहा तक कारगर हुए हैं, समस्या का समाधान किस सीमा तक हो सका हैं।

इसे निम्नांकित उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता हैं।

समस्या

शिक्षार्थियों द्वारा आदर्श वाचन में अशुद्ध उच्चारण।

मूल्यांकन

मूल्यांकन के लिए प्रदत्तों को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

क्रम सं0 आदर्श वाचन में शब्दों के अशुद्ध उच्चारण करने वाले शिक्षार्थियों के नाम क्रियात्मक शोध के पूर्व अशुद्ध उच्चारित शब्दों की संख्या क्रियात्मक शोध के पश्चात् अशुद्ध उच्चारित शब्दों की संख्या उच्चारण शोधन उपायों के परिणाम

सकारात्मक नकारात्मक

1.
2.
3.
4.

योग............................

मध्यमान..............................

उपयुक्त प्रायोगिक अभिकल्प में एक माह के अंदर विभिन्न उपायों को लागू करने के पश्चात् शब्दों के अशुद्ध उच्चारण की तालिका के मध्यमान और शोध कार्य से पूर्व शब्दों के अशुद्ध उच्चारण की तालिका के अध्ययन में अंतर अंकित किया जाएगा।

13.7.2 समान्तर समूह अभिकल्प

इस अभिकल्प को ''तुलनात्मक अभिकल्प'' के नाम से भी जाना जाता हैं। इसमें अशुद्ध उच्चारण करने वाले शिक्षार्थियों के दो या तीन एक समान लघु समूह बनाए जाते हैं। इसमें एक समूह को प्रयोगात्मक समूह तथा दूसरे को नियन्त्रित समूह कहा जाता हैं। नियन्त्रित समूह में उच्चारण शोधन संबंधित वही सामान्य कक्षागत क्रियात्मक आयोजित होते रहते हैं। जिन्हें शिक्षक पहले भी करता था, लेकिन प्रयोगात्मक समूह के उच्चारण शोधन हेतु सामान्य क्रियाकलापों के स्थान पर कुछ विशेष क्रियाकलापों का आयोजन किया जाता हैं। जैसे टेप आधारित अभ्यास आदि। ''प्रायोगिक समूह'' में प्रयुक्त उपायों के आधार पर शिक्षार्थियों के उच्चारण में आए हुए परिवर्तन/परिणाम की तुलना नियंत्रित समूह से प्राप्त परिणाम के आधार पर की जाती हैं।

3.7.3 चक्र समूह अभिकल्प

क्रियात्मक अनुसंधान का यह अभिकल्प समान्तर समूह अभिकल्प से थोड़ा भिन्न हैं। इस अभिकल्प के आधार पर दो समान्तर समूहों की कार्य पद्धति में एक निश्चित अवधि के पश्चात् परिवर्तन कर दिया जाता हैं। इस निश्चित अवधि को प्रथम चक्र का नाम दिया जा सकता हैं। प्रथम चक्र में भाषा शिक्षक ने जिस एक समूह को ''नियन्त्रित समूह'' का नाम दिया था, एक निश्चित अवधि के पश्चात् दूसरे चक्र में वह प्रायोगिक समूह बना दिया जाता हैं, और द्वितीय चक्र में जो द्वितीय समूह ''प्रायोगिक समूह'' था, उसे नियन्त्रित समूह बना दिया जाता हैं। पूर्व में अपनाई गई शिक्षण प्रक्रिया की पुनरावृत्ति की जाती हैं, केवल विषय वस्तु के स्वरूप को बदला जाता हैं, लेकिन इसका स्तर वही रहता हैं तथा

भाषा शिक्षक भी वही रहता हैं। देखना यह होता है कि द्वितीय चक्र से बनाए गए ''प्रायोगिक समूह'' ने इस बार निर्मित ''नियंत्रित समूह'' की तुलना में कितनी कुछ उपलब्धियाँ अर्जित की जिससे प्रथम चक्र के नियंत्रित समूह को भी प्रायोगिक समूह की भांति अतिरिक्त शिक्षण विधियों, क्रियाकलापों का लाभ मिल सके।

बोध प्रश्न

6. शोध अभिकल्प के प्रकारों का उल्लेख कीजिए। इनमें से किस अभिकल्प का प्रयोग भाषा शिक्षकों के द्वारा अधिक किया जाता हैं ? चार पंक्तियों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....
....

7. एकल समूह अभिकल्प'' में जिस विशेषता पर हमें जिसका प्रभाव देखना होता हैं उसकी माप कब की जाती हैं ? सही विकल्प छांटिए।

i. क्रिया करने से पूर्व
ii. क्रिया करने के पश्चात्
iii. क्रिया करने से पूर्व एवं पश्चात्
iv. क्रिया से कोई सम्बन्ध नहीं

13.8 क्रियात्मक शोध आख्या (रिर्पोट)

भाषा कार्य से संबंधित किसी भी शोध परियोजना को विधिवत् सम्पन्न करने के पश्चात् आपको उसकी रिर्पोट लिखने की आवश्यकता महसूस होगी। रिर्पोट प्रस्तुतीकरण की एक निश्चित विधि हैं। शोध की रिर्पोट को पांच भागों में विभाजित किया जाता हैं।

i. प्रस्तावना
ii. विधि
iii. आधार सामग्री का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं विवेचन
iv. सारांश एवं निष्कर्ष
v. सन्दर्भ सामग्री

प्रस्तावना

प्रस्तावना में अध्ययन संबंधी समस्या का निरूपण किया जाता हैं। प्रस्तावना में संबंधित शोध साहित्य की समीक्षा द्वारा उन अनुसंधान योग्य बिंदुओं को प्रदर्शित किया जाता हैं, जिनके समाधान हेतु प्रस्तुत क्रियात्मक शोध किया गया हैं। यहॉ आपको अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डालना आवश्यक हैं। तत्पश्चात् शोध के उद्देश्यों तथा तत्संबन्धी परिकल्पनाओं का भी उल्लेख करना होता हैं।

विधी

अनुसंधान रिर्पोट के प्रस्तुतीकरण में शोध कार्य विधि का विस्तार से वर्णन किया जाता हैं। वर्णन की प्रस्तुति इस प्रकार की जाए कि यदि कोई अन्य शोधकर्ता इस प्रक्रिया की पुनरावृत्ति करना चाहे तो वह बिना किसी कठिनाई से कर सके। इस दृष्टि से शोध अध्ययन के लिए न्यादर्श का चयन ’उनके चयन का आधार’ उनकी आयु, लिंग, सामाजिक स्तर, परिस्थिति, नियन्त्रित-अनियन्त्रित दिशाएं, प्रदत्त संग्रह स्थान, समय, अनुसंधान की प्रक्रिया में कोई परिवर्तन आदि सभी कुछ को बिन्दुवार सम्मिलित किया जाए। आधार सामग्री के संग्रह के लिए आवश्यक उपकरणों जैसे परीक्षण, प्रश्नावलियो आदि का परिचय भी आवश्यकतानुसार दिया जाए। परीक्षा-पत्र या प्रश्नावली आदि का समावेश भी किया जाना आवश्यक हैं।

□ ***धार सामग्री का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं विवेचन***

रिर्पोट में प्रदत्तों के प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण की प्रक्रिया भी बताई जाती हैं। भाषा के क्षेत्र में आधार सामग्री को सामान्यतः सारणियों, रेखाचित्रों तथा कभी-कभी फोटोग्राफ के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता हैं तथा उसके विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया जाता हैं। विश्लेषण के आधार पर व्याख्या और उनसे प्राप्त निष्कर्षो की विवेचना की जाती हैं। यहॉ अपनी उपलब्धियों की तुलना अन्य संबंधित अनुसंधानों के परिणामों से भी करते हैं तथा समानता एवं असमानता के संभावित कारणों को प्रस्तुत किया जाता हैं।

सारांश एवं निष्कर्ष

यहॉ अध्ययन की समस्या एवं प्रक्रिया का संक्षेप में वर्णन करते हुए निष्कर्षो की विवेचना करनी होती हैं तथा निर्धारित परिकल्पनाओं की पुष्टि करनी होती हैं।

सन्दर्भ सामग्री

संदर्भ सामग्री के अंतर्गत शोध में प्रयुक्त पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा अन्य सामग्री का उल्लेख किया जाता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शोध अध्ययन से संबंधित सन्दर्भ पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं आदि की सूची मुख्य आख्या के पश्चात् प्रस्तुत की जाती हैं।

परिशिष्ट

अध्ययन में प्रयुक्त स्वनिर्मित परीक्षण-प्रश्नावलियों, मूल्यांकन प्रपत्र तथा लंबी सारणियों या बडें चित्र आदि को परिशिष्ट में सम्मिलित किया जाता हैं।

13.9 क्रियात्मक शोध संबंधी उदाहरण

क्रियात्मक शोध के विभिन्न पहलुओं एवं सोपानों पर चर्चा के पश्चात् अब आपके सम्मुख छात्रों की अशुद्ध वर्तनी से संबंधित एक क्रियात्मक शोध की रूपरेखा को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

13.9.1 क्रियात्मक शोध की रूपरेखा

शोधकर्ता-कक्षा 7 का भाषा शिक्षक

कक्षा-7

समस्या-शिक्षार्थी वर्तनी की अशुद्धियॉ बहुत करते हैं।

समस्या का सीमांकन एवं विशिष्टीकरण-श, ष, स, वर्णो से संबंधित वर्तनीगत अशुद्धियॉ।

शिक्षार्थी श, ष, स के उच्चारणगत अंतर को स्पष्ट रूप से नहीं समझते और बोलने तथा पढ़ने में इन वर्णो वाले शब्दों का अशुद्ध उच्चारण करते हैं। इसका प्रभाव उनकी वर्तनी पर भी पड़ता हैं। लिखने में ’श’ की जगह ’ष’ या ’स’ की जगह ’श’ और ’श’ की जगह ’स’ या ’ष’ की जगह ’श’ या ’स’ लिख देते हैं।

निदान-समस्या के कारण

- शिक्षार्थी श, ष, स का स्पष्ट अंतर नहीं समझते हैं।
- श, ष, स का अशुद्ध उच्चारण करते हैं।
- विसर्ग संधि संबंधी उन नियमों से परिचित नहीं हैं जहॉ विर्सग का ’’श’’ या ’’ष’’ या ’’स’’ हो जाता हैं।
- शिक्षक ’’श’’, ’’ष’’, ’’स’’ संबंधी इन त्रुटियों के उचित संशोधन की ओर ध्यान नहीं देते हैं।
- ’’श’’, ’’ष’’, ’’स’’ वाले शब्दों को लिखित अभ्यास पर्याप्त मात्रा में नहीं कराए जाते।
- स्थानीय बोलियों का प्रभाव।
- क्रियात्मक परिकल्पनाएं
- यदि शिक्षार्थियों को ’श’, ’ष’, ’स’ वर्णो का स्थान एवं प्रयत्नगत अंतर स्पष्ट करते हुए शुद्ध उच्चारण कराया जाए और तदनुसार उनका लिखित रूप में भी ज्ञात करा दिया जाए तो वे त्रुटियॉ नहीं करेंगे।

- शिक्षक 'श', 'ष', 'स' वाले शब्दों के उच्चारण का आदर्श प्रस्तुत करें और शिक्षार्थियों से उन शब्दो का शुद्ध उच्चारण कराते हुए श्यामपट्ट पर उनके लिखित रूप का अभ्यास कराएं तो शिक्षार्थियों से वे त्रुटियॉ नहीं होंगी।
- 'श', 'ष', 'स' वाले शब्दों के अधिकाधिक लिखित अभ्यास दिए जाएं तो शिक्षार्थी अशुद्धियॉ नहीं करेंगे ये अभ्यास कई प्रकार के हो सकते हैं जैसे-
- -केवल 'स' का प्रयोग-उल्लास, विकास, आवास, पड़ोस, प्रयास, रस, नीरस आदि।
- -केवल 'श' का प्रयोग-अवकाश, आशा, निराशा, आदेश, गणेश, विदेश, देश, केश, आदि।
- -केवल 'ष' का प्रयोग-घोष, दोष, धनुष, दृष्ट, दृष्टि, निषेध आदि।
- -ऐसे शब्द जिसमें 'श', 'ष', 'स' में किन्ही दो का प्रयोग हुआ हो जैसे-शेष, शासन, प्रशंसा, शीर्षक, शोषण, विश्वास आदि।
- -निः एवं दुः उपसर्गयुक्त शब्द-निष्कट, निष्पक्ष, निष्फल, निश्चल, निशंक, निस्संकोच, निस्संदेह, दुष्कर्म, दुष्परिणाम, दुस्साहस, दुश्चरित्र।
- शिक्षार्थियों को यदि यह अच्छी तरह ज्ञात करा दिया जाए कि विसर्ग का क, ट, ठ, प, फ के साथ सदा 'ष', च, छ, श, के साथ सदा 'श' और त, स के साथ सदा 'स' होता हैं तो वे श, ष, स की वर्तनी संबंधी अशुद्धियां नहीं करेंगे।
- यदि शिक्षक लिखित रचना में 'श', 'ष', 'स' संबंधी त्रुटियों के संशोधन पर विशेष ध्यान दें और शिक्षार्थी शुद्ध रूप का अभ्यास करते रहें तो ये त्रुटियां नहीं होंगी।
- यदि शिक्षार्थियों को प्रतियोगिता के रूप में अथवा कक्षा परीक्षण के रूप में निम्न प्रश्न दिए जाए-

-ऐसे शब्दों को लिखो जिनके अंत में 'श' का प्रयोग हो।

-ऐसे शब्दों को लिखो जिनके अंत में 'ष' का प्रयोग हो।

-ऐसे शब्दों को लिखो जिनके अंत में 'स' का प्रयोग हो।

-ऐसे शब्दों को लिखो जिनके अंत में 'श' और 'ष' दोनों का प्रयोग हो।

-ऐसे शब्दों को लिखो जिनके अंत में 'श' और 'स' दोनों का प्रयोग हो।

-ऐसे शब्दों को लिखो जिनके अंत में 'श' और 'श' दोनों का प्रयोग हो।

-ऐसे शब्दों को लिखो जिनके अंत में 'स' और 'स' दोनों का प्रयोग हो।

-निः और दुः लगाकर शब्द बनाओं जिनमें विसर्ग को श, ष अथवा स हो जाता हैं।

-विसर्ग संधि के कुछ उदाहरण लिखो जिनमें विसर्ग को श्, ष् अथवा स् हो जाता हैं।

13.10 परियोजना निर्माण एवं क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाइयां एवं निराकरण

क्रियात्मक शोध परियोजना के निर्माण और क्रियान्वयन में प्रायः निम्नलिखित कठिनाइयाँ आती हैं।

- पर्याप्त उत्प्रेरणा का अभाव।
- पर्याप्त निर्देशन एवं परामर्श का अभाव।
- क्रियात्मक अनुसंधान संचालित किए जाने से संबंधित विद्यालय स्तर पर विशेषज्ञों का अभाव।
- भाषा-शिक्षण में कार्यरत साथी शिक्षकों का असहयोगात्मक रवैया।
- धनाभाव।
- शोध परियोजना के निर्माण तथा संचालन में आने वाली उपयुक्त कठिनाइयों के निराकरण हेतु हमें निम्न प्रयास करने होंगे-
- भाषा-शिक्षण कक्षा में पर्याप्त उत्प्रेरण प्रदान करने हेतु विद्यालय स्तर पर ऐसे शिक्षक-शिक्षिकाओं के समय विभाजन चक्र में अभिनव प्रयोग के संचालन हेतु समय का निर्धारण।
- सफलतापूर्वक प्रायोजनाओं के संचालन के पश्चात् उनका मूल्यांकन कराया जाए तथा उत्प्रेरणास्वरूप् शिक्षकों के सेवा-अभिलेख में इसे उनकी विशिष्ट उपलब्धि के रूप में अंकित किया जाए।
- परियोजनाओं के मूल्यांकन के पश्चात् उनके शोध कार्य को प्रचारित एवं प्रसारित करने हेतु विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी कराया जाए ताकि अन्य शिक्षक भी उनसे लाभान्वित हों।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन0सी0ई0आर0टी0) नई दिल्ली का शिक्षक-शिक्षा एवं प्रसार विभाग प्रतिवर्ष ऐसे प्रयोग एवं परीक्षणरत अनुभवी शिक्षक वर्ग हेतु ''सेमीनार रीडिंग प्रोग्राम'' आयोजित करता है, जिनमें राष्ट्रीय स्तर शिक्षकों एवं प्रधानाचार्यो से प्राप्त लेखों का मूल्यांकन कराया जाता है और उत्कृष्ट प्रविष्टियों को प्रशस्त्रि-पत्र प्रदान किए जाते हैं।

4. मौलिक अभिव्यक्तियों संबंधी दोष- अशुद्ध उच्चारण, उपयुक्त शब्दों क प्रयोग न आना, पदक्रम संबंधी दोष, लिंग, वाचनख् कारक के अशुद्ध प्रयोग विषय-सामग्री का क्रमबद्ध संयोजन न होना।

5. भाषा लेखन के सम्बन्ध तीन वरीयता शोध क्षेत्र हैं।

i. छात्रों की लेख सुधार योजना
ii. सृजनात्मक लेखन कार्यक्रम
iii. छात्रों के गृहकार्य की जांच

13.11 सारांश

उद्देश्यों के आधार पर शिक्षण और परीक्षण के दो प्रकार माने जाते हैंः विकासात्मक और उपचारात्मक। पूर्व ज्ञान को समृद्ध करना और नये ज्ञान एवं अनुभवों को सिखाना, विकासात्मक शिक्षण हैं। मंद बुद्धि, खराब परिवेश, शिक्षण के अभाव या उसके अवैज्ञानिक होने के कारण या अस्वस्थता के कारण छात्रों के अधिगम में कमिया, दोष अथवा त्रुटियॉ होती रहती हैं। भाषा शिक्षण अधिगम प्रक्रि में इस प्रकार की त्रृटियॉ मातृभाषा या परिवेश की अन्य भाषाओं के प्रभाव के कारण अधिक ही पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए पंजाबी, उर्दू, ब्रज, भोजपुरी आदि भाषाओं के व्याघात से खड़ी बोल हिंदी के उच्चारण, वर्तनी, व्याकरण आदि में अनेक त्रुटियॉ हो जाती हैं। इन त्रुटियों को दूर करके शुद्ध भाषा सिखाने के लिए निदानात्मक परीक्षण तथा उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था विद्यालयों होनी चाहिए। भाषा शिक्षकों को इसकी पूरी प्रक्रिया का प्रशिक्षण मिलना चाहिए। इसी उद्देश्य से इस इकाई में त्रुटियों के कारण और प्रकार, निदानात्मक परीक्षण की प्रक्रिया का प्रशिक्षण तथा उपचारात्मक कार्यो, अभ्यासों के नमूने देकर उपचार की पद्धति को अधिक स्पष्ट किया गया हैं। इस पद्धति से शिक्षार्थियों को भाषा कौशलों एवं अन्य भाषा तत्वों के शुद्ध और मानक प्रयोग सिखाए जा सकते हैं।

13.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. भाषाई त्रुटियों का पता लगाना तथा उनके कारणों का निर्धारण।
2. शारीरिक तथा मानसिक कारण

   त्रुटिपूर्ण शिक्षण

   भम्र तथा अज्ञानता

   अभ्यास की कमी

   अरूचि तथा उपेक्षा भाव
3. छात्रों के पठन का निरंतर निरीक्षण

   रूचि अभिज्ञापन प्रश्नावली का प्रयोग

   पठन के समय आंखों की गति का निरीक्षण

   प्रमाणीकृत पठन परीक्षण

   शिक्षक निर्मित पठन परीक्षण
4. ज्ञान प्राप्ति के मार्ग में कमियों का निराकरण करना

कौशलों की अधिगम प्रक्रिया में घटित त्रुटियों एवं दोषों को सुधारना

समुचित दिशा में विकास का मार्ग प्रशस्त करना

समाज के स्वीकृत आदतों का परिमार्जन करना

विषय विशेष को सीखने में अक्षमताओं को दूर करना

5. उपचारात्मक शिक्षण के सिद्धान्तः

जहॉ पर छात्र हैं वहॉ से कार्यक्रम प्रारंभ किया जाए

छात्र को समय-समय पर रेखाचित्र आदि से प्रगति बताई जाए

दिए गए अभ्यास के मूल प्रयोजन की संतुष्टि करें

अच्चे कार्यो के लिए छात्रों की सराहना की जाए

कार्यो एवं अभ्यासों में विभिन्नता हो

6. सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा अपना आदर्श वाचन सभी दृष्टियों से आदर्श बनाना

छात्रों के अशुद्ध उच्चारण को शुद्ध कराना

शुद्ध उच्चारण सिखाने के बाद अनुतान, गति, यति में प्रशिक्षित करना

शब्दार्थ संबंधी कठिनाइयों को दूर करना और अर्थग्रहण की योग्यता बढ़ाना

अच्चे-अच्चे अनुच्छेदों का चयन कर वाचन कराना

7. वक्ता की बात की ध्वनि व्यवस्था को ठीक न समझ पाना

विभिन्न ध्वनियों में भेद न कर पाना

8. ध्वनियों, शब्दों का गलत उच्चारण

यथास्थान बलाघात का न होना

गलत अनुतान या अनुतानहीनता

उचित स्थान पर विराम न देना

व्याकरण के नियमों का उल्लंधन

शब्दों का गलत प्रसंग में प्रयोग

9. शब्द स्तर

वाक्य स्तर

अनुच्छेद स्तर

संपूर्ण पाठ स्तर

10. दोष का निदानः

वर्तनी की त्रुटियॉः

विद्या	-	विध्या	आशीर्वाद	-	आर्शीवाद
विद्यालय	-	विध्यालय	स्वयं	-	स्वंय
अध्यापक	-	अद्यापक	अध्ययन	-	अध्यन

उपचारः

- कारण बताना।
- अनुलेख, श्रुतलेख, प्रतिलेख, आदि विधियों से वर्तनी दोष ठीक करना।

13.13 उपयोगी पुस्तकें

रस्तोगी, कृष्णगोपालभाषा संप्राप्ति मूल्यांकन, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

रस्तोगी, कृष्णगोपालभाषा शिक्षण के निदान और उपचार, अर्चना प्रकाशन, दिल्ली

पांडेय, रामशकल त्रुटि विश्लेषणः सिद्धान्त और व्यवहार, केंद्रीय हिन्दी संस्थान आगरा

माथुर, एस0एस0 शिक्षण कला-शिक्षण तकनीक एवं नवीन पद्धतियॉ

श्रीवास्तव, राजेन्द्र प्रसादहिन्दी शिक्षण, 147 बी, अमर कालोनी, लाजपत नगर नई दिल्ली-24

इकाई 14 माध्यमिक कक्षाओं में गद्य शिक्षण

14.1 प्रस्तावना
14.14 उद्देश्य
14.3 गद्य का परिचय
14.4 गद्य शिक्षण की उपयोगिता
14.5 गद्य शिक्षण की अर्थबोध का परिचय
14.6 गद्य शिक्षण की व्याख्या का परिचय
14.7 विश्लेषण का परिचय
14.8 संयुक्त विधि का परिचय
14.9 सारांश
14.10 निबंधात्मक प्रश्न

14.1 प्रस्तावना

गद्य साहित्य हमारी बुद्धि को बहुत प्रभावित करता है। गद्य में जीवन की वास्तविकता के दर्षन होते है। गद्य के द्वारा ही बच्चों को शब्द ज्ञान वाक्य-ज्ञान तथा विभिन्न लेखन शैलियों का ज्ञान कराया जाता है। पाठ्य-पुस्तकों में गद्य-शिक्षण सूक्ष्म पाठ और द्रुत पाठ के द्वारा पढ़ाया जाता है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में गद्य का स्थान महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत इकाई में आप गद्य शिक्षण की उपयोगिता, इसके अर्थबोध का परिचय, गद्य शिक्षण की व्याख्या इसका विश्लेषण और समीक्षा का अध्ययन करेंगे|

14.14 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप-

गद्य शिक्षण के अर्थ से परिचित हो जायेंगे|

गद्य शिक्षण की उपोगिता समझ जायेंगे|

गद्य शिक्षण की व्याख्या कर सकेंगे|

14.3 गद्य का परिचय

गद्य साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है। निस्सन्देह इस में पद्य जैसा साहित्य और सरसता नहीं होती, फिर भी यह हमारी बुद्धि को बहुत प्रभावित करता है। यदि कविता आनन्द की वस्तु है तो गद्य में जीवन की वास्तविकता के दर्षन होते है।

भाषा शिक्षण की दृष्टि से गद्य-शिक्षण का बहुत महत्व है। गद्य के द्वारा ही बच्चों को शब्द ज्ञान वाक्य-ज्ञान तथा विभिन्न लेखन शैलियों का ज्ञान कराया जाता है। पुस्तव ज्ञान वाक्य-ज्ञान तथा विभिन्न लेखन शैलियों का ज्ञान कराया जाता है। वास्तव में गद्य-शिक्षण के माध्यम से ही उनहें बहुत बनाया जाता है। इसके लिए पाठ्य-पुस्तकों में गद्य-शिक्षण सम्बन्धी अनेक विषय होते है| जिन्हें सूक्ष्म पाठ और द्रुत पाठ के द्वारा पढ़ाया जाता है। इन विषयों का विवरण अग्रलिखित है।

पाठ्य-पुस्तक

सूक्ष्म-पाठ- गद्य पद्य नाटक कहानी जीवन यात्रा निबंध

द्रुत-पाठ - कहानी उपन्यास जीवनी यात्रा कविता सम्पूर्ण एकांकी पत्र आलोचना स्फुट संस्मरण|

14.4 गद्य शिक्षण की उपयोगिता

गद्य और पद्य से पहले किसका प्रादुर्भाव हुआ, यह कहना कठिन है। पंडित करूणापति त्रिपाठी का कथन इस सन्दर्भ में ध्यान देने योग्य है। वे कहते हैं। ‘इस भाँति नर-समाज ने पहले गद्य-साहित्य का आविष्कार किया होगा, परन्तु गद्य-साहित्य से उसकी पूर्ण पुष्टि न हो सकती। अतः प्रभावोत्पादकता और रमणीयता की अभिवृद्धि करने के विचार से मनुष्य ने अपनी साहित्यिक अभिव्यक्ति में संगीत तत्व का सम्मिश्रण कर उसे ‘कविता’ नाम दिया। संगीत तत्व से अनुप्राणित साहित्य का यह रूप इतना लोकप्रिय हो गया कि इसके सामने गद्यात्मक आख्यायिका आदि का साहित्य गौण हो गया। फलतः आज हम संसार के सभी प्राचीन साहित्यों में पद्य की ही प्रचुरता पाते हैं।’’

भामह ने काव्यालंकार में गद्य को ‘‘प्राकृत अनाकुल श्रव्य शब्दार्थ पदवृति’’ कहा है। कुछ विचारक गद्य और पद्य की भाषा में कोई अन्तर नहीं मानते, किन्तु दोनों में कुछ अन्तर अवष्य है। पद्य साधारणतः छन्दोबद्ध रचना होती है। कुछ विचारकों की दृष्टि में गद्य और पद्य का भेदक तत्व छन्द है। नई कविता छन्द से मुक्त होती है, किन्तु वहाँ भी लय, गति, प्रवाह स्वराघात, संगीत, अर्थ की लय, अनुभूति आदि तो विद्यमान रहते ही हैं।

प्रसिद्ध समालोचक डी. डब्लयू. रेनी का कहना है कि कविता बौद्धिक सृजन करती है, गद्य बौद्धिक निर्माण करता है। हरबर्ट रीड के अनुसार भी कविता सृजनात्मक अभिव्यक्ति (क्रियेटिव

एक्सप्रेषन) है और गद्य निर्माणात्मक अभिव्यक्ति (कन्स्ट्रक्टिव एक्सप्रेषन)। सृजन नूतनता की उद्भावना है और निर्माण पहले प्राप्त वस्तुओं में व्यवस्था लाना है। भवन का नक्षा तैयार करना सृजन है, ईट, चूना गारा आदि को व्यवस्थित करना निर्माण।

गद्य शब्द संस्कृत भाषा की 'गद्' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है-स्पष्ट कहना। साहित्य दर्पण के अनुसार वृत वधोज्झितं गद्यजें 'अपादः पदसंतानों गद्यजे' अर्थात् वृत्त-बन्ध हीन रचना गद्य है। काव्यादर्ष के अनुसार 'अपादः पद्संतानो गद्यजे' अर्थात् पद समुदाय में गद्य-मात्र आदि के निपत पाद का न होना गद्य है। अंग्रेजी में गद्य को 'प्रोज' कहते हैं। प्रोज की परिभाषा यों की गई है' 'स्टेट, डाइरेक्ट, अनएडान्र्ड स्पीच' अथवा 'लैंग्वेज स्पोकन ऑफ रिटन, ऐज इन आर्डिनरी यूसेज, विदाउट मीटर ऑफ राइम'। अरबी में गद्य को नस्त्र या 'इबारत्' या 'नज्म का उल्टा' कहा गया है। उर्दू में भी अरबी के अनुसार ही गद्य को स्पष्ट किया गया है।

साहित्य की विभिन्न विधाओं में गद्य का स्थान महत्वपूर्ण है। 'गद्यं कवीनां निकर्ष वदान्ति' उक्ति के अनुसार गद्य को कवियों की कसौटी कहा गया है। काव्य में अलंकार, पिंगल आदि के रूपों में कवियों के समझ कुछ मार्गदर्षक तत्व होते हैं, किन्तु गद्य में इनका होना आवष्यक नहीं है। गद्य रचना में लेखक स्वतन्त्र रहता है। स्वतन्त्र होने के नाते उसे बहुत सावधान भी रहना पड़ता है। काव्य में भाषा-सम्बन्धी भूल को यह मानकर स्वीकार कर लिया जाता है। कि लय एवं भाव दृष्टि से व्याकरण पर कवि का ध्यान नहीं गया, किन्तु गद्य में लेखक को व्याकरणिक त्रुटि के लिए क्षमा नहीं किया जाता उसे उसका दोष घोषित कर दिया जाता है।

आज ज्ञान की प्रत्येक शाखा मे विषय का विस्तार होता जा रहा है। बीसवीं शताब्दी से ज्ञान का विकास बड़ी द्रुतगति से हो रहा है। साहित्य के क्षेत्र में भी कहानी, उपन्यास, निबन्ध, लेख आदि प्रचुर मात्रा में रचे जा रहे हैं। इन विषयों का माध्यम काव्य नहीं हो सकता। इतिहास, भूगोल, नागरिकषास्त्र, विज्ञान आदि का माध्यम गद्य ही होता है। कहानी, नाटक, उन्यास, लेख आदि भी गद्य में ही रचे जा रहे हैं। गद्य के ही माध्यम से हम अपने दैनिक जीवन में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इस दृष्टि से गद्य का शिक्षण भाषा-शिक्षण का आवष्यक अंग बन जाता है।

14.5 गद्य शिक्षण अर्थबोध का परिचय-

इस विधि में अध्यापक पुस्तक के माध्यम से स्वयं वाचन करता है तथा शब्दार्थ बताकर शब्दों की व्याख्या करता है। इस प्रकार की प्रणाली में बालक पाठ के विकास का सक्रिय सहयोग नहीं कर पाता तथा न ही इन्हें मस्तिष्क का प्रयोग करने का अवसर मिल पाता है, जिससे उनके मानसिक विकास हो। इस प्रकार की प्रणाली से बालक परीक्षा को तो पास कर लेंगे, लेकिन उनका सर्वतोमुखी विकास नहीं हो पाता है।

14.6 गद्य शिक्षण की व्याख्या का परिचय

1. शब्द व्याख्या, 14. वस्तु या भाव व्याख्या।

शब्द व्याख्या की दृष्टि से उन दुर्बोध शब्दों को चुना जाता है जो गद्यांष का अर्थ ग्रहण करने में बाधक सिद्ध होते हैं। इन कठिन शब्दों को कैसे स्पष्ट किया जाय-इसका स्पष्टीकरण हम कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट करने की युक्तियों के अन्तर्गत कर चुके हैं। यहाँ तो कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट करने के सम्बन्ध में एक ही समस्या उठती है। समस्या है - कठिन शब्दों को खोजे कौन-शिक्षक या विद्यार्थी? कुछ विद्वानों की राय है कि कठिन शब्दों को शिक्षक ही खोजे और विद्यार्थियों की सहायता से कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने की सरलतम युक्ति से एक के बाद एक शब्द को स्पष्ट जाय। इसके विपरीत कुछ विद्वानों की राय है कि कठिन शब्द तो छात्रों द्वारा ही खोजे जाने चाहिए। शिक्षक को तो उन्हें अलग-अलग युक्तियों से स्पष्ट करने का प्रयास करना चाहिए। कौन-सी राय सही है और कौन-सी सही नहीं-इसे बिना तर्क की कसौटी पर कसे कुछ कहना उचित नहीं। तर्कसंगत दृष्टि से यदि देखा जाय तो चूँकि कठिनाई विद्यार्थियों की होती है; अतः उन्ही से कठिन शब्द पूछे जाने चाहिए। शिक्षक तो उन शब्दों को अलग-अलग युक्तियों से स्पष्ट करे। इसमें एक समस्या अवष्य आ सकती है कि शिक्षक को अनावष्यक रूप से तंग करने की दृष्टि से छात्र उन शब्दों का अर्थ भी पूछ बैठें जिनका अर्थ उनहें आता है। इस समस्या भी सरल ही है। शिक्षक को, छात्र जो शब्द पूछें, उसी को श्यामपट पर लिखकर पूछ ले कि उस शब्द पूदें उसी को श्यामपट पर लिखकर पूछ ले कि उस शब्द का अर्थ कौन जानता है। हो सकता है वही छात्र उस शब्द का अर्थ भी बता दे, क्योंकि वहाँ उसकी मानसिकता बदल जाती है। पहले उसने शब्द शिक्षक को तंग करने हेतु पूछा था; बाद में श्रेय लेने की दृष्टि से उसी ने अर्थ बता दिया। शिक्षक चाहे तो यह भी कर सकता है कि उन सभी शब्दों को जिन्हें छात्र अर्थ की दृष्टि से कठिन शब्दों के रूप में पूछे, ऊर्ध्वाकार रूप में लिखता जाय, पुनः सभी शब्दों को श्यामपट पर लिखकर छात्रो से पूछे कि-‘‘इन शब्दों में से कौन-कौन; किन-किन शब्दों का अर्थ जानते हैं? ‘‘ जो छात्र अर्थ बताये, उससे या किसी अन्य छात्र से उस शब्द का वाक्य प्रयोग करा ले; और अन्त में उसका अर्थ श्यामपट पर लिख दे। इस प्रकार करने से दो-चार शब्द ही ऐसे शेष रहेंगे जिन्हें शिक्षक को स्पष्ट करना होगा। कहने का आषय यह है कि यदि शिक्षक कुशल है तो निष्चित रूप से इस प्रकार की सभी समस्याओं का समाधान स्वतः ही खोज सकता है।

14.7 गद्य शिक्षण की विश्लेषण विधि

विषय-वस्तु व्याख्या/वस्तु-विश्लेषण /विचार-विश्लेषण - ये तीनों एक ही नाम है। इसके अन्तर्गत उन वाक्य या वाक्यांशों को छात्रों को समझना होता है, जिन्हें कठिन शब्दों के अर्थ जानने के पश्चात् भी छात्र नहीं समझ पाते, यथा- ‘‘बिना ज्ञान के विवेक सम्भव नहीं’’ अथवा ‘‘विवेक सम्मत विचार ही सच्चा ज्ञान है’’ ऐसे वाक्यों को स्पष्ट करने हेतु ‘ज्ञान’ और विवेक’ के सम्बन्ध और अन्तर को स्पष्ट करना ही होगा और यह वस्तु-विश्लेषण द्वारा ही सम्भव है। अतः, गद्यांष में

निहित विचारों, भावों आदि को किसी न किसी प्रकार छात्रों को समझाया जाना ही चाहिए, तभी अवबोध के उद्धेष्य की पूर्ति सम्भव है। सरल से सरल गद्यांष में कठिन शब्दों के अतिरिक्त कुछ न कुछ ऐसी बातें ही हैं। और नहीं तो मिलते-जुलते शब्द ही मिल जायेंगे, जिनका अन्तर बताना आवष्यक हो जाता है, उदाहरणार्थ-'अद्भुत' एवं 'विचित्र', 'ग्रह' एवं 'गृह'। यहाँ ध्यान में रखने वाली बात यह है कि ये शब्द भी दो प्रकार के हो सकते हैं। एक वे जिनकी वर्तनी मिलती-जुलती है और अर्थ अलग-अलग है। दूसरे, वे शब्द जिनका अर्थ समान-सा प्रतीत होता है; लेकिन वर्तनी बिल्कुल भिन्न होती है। 'अद्भुत' एवं 'विचित्र' ऐसे ही शब्द है; जिनका अर्थ शिक्षक 'अनोखा' ही बताते हैं। किन्तु दोनों शब्दों में अन्तर है। एक का अर्थ है- कोई ऐसी घटना या दृष्य जिसे भूतकाल में देखा या सुना न गया हो; जबकि 'विचित्र' का अर्थ है- जिसे चित्रित न किया जा सके। इसी प्रकार 'अजीब' का अर्थ है- जिसे सामान्य जीव न कर सके। अतः तीनों शब्दों का प्रयोग अलग-अलग परिस्थितियों में होता है। ऐसे शब्दों के अन्तर को भी विश्लेषण में लिया जा सकता है। अब प्रश्न उठता है- विश्लेषण किया कैसे जाय?

शब्द-व्याख्या की भाँति, विश्लेषण की भी कई विधि सम्भव हैं। परन्तु, इन विविधयों के प्रचलित रूपों में तीन रूप प्रमुख हैं। ये रूप हैं-

1. प्रश्नों द्वारा,

14. कथन द्वारा

3. उपयुक्त वातावरण सृजन करके।

इसमें प्रथम विधि में शिक्षक विद्यार्थियों से पाठ में निहित भावों या विचारों पर आधारित तथा पाठ्य-वस्तु से सम्बन्धित प्रश्न पूछता है। विद्यार्थी अपनी बुद्धि और कल्पना से स्वतः ही उनको ग्रहण करते जाते हैं। द्वितीय विधि के अनुसार शिक्षक स्वयं अपनी ओर ही उन विचारों और भावों पर अपने कथन द्वारा प्रकाष डालता है, जिन्हें विद्यार्थी स्वतः ही पढ़कर नहीं समझ सकते। तीसरी विधि में न तो शिक्षक प्रश्न पूछता है और न कथन ही द्वारा किसी गूढ़ भाव या विचार को बताता है; अपितु वह अपने कथन, क्रिया या हाव-भाव द्वारा विद्यार्थियों के सम्मुख उस वातावरण को उपस्थित करता है, जिस विषेष वातावरण में उस प्रकार के भाव या विचार उत्पन्न होते हैं। विद्यार्थी स्वतः ही उन विचारों या भावों की गहराई तक पहुँचने का प्रयत्न करते हैं यहाँ एक स्वाभािवक प्रश्न उठता है कि शिक्षक को इनमें से कौन-सी विविध अपनानी चाहिए?

इन तीनों विधि की समझने के पश्चात्, दूसरी मुख्य बात जिस पर षिक्षकों को विषेष ध्यान देना चाहिए- वह है इनके प्रयोग को समझना। जैसा कि हम पहले कई बार कह चुके हैं- ''शिक्षण एक कला है और परिवर्तनषीलता कला का एक आवष्यक गुण।'' इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षक को चाहिए कि वह कभी भी किसी एक विधि का दास बनकर रहे विधियों की दास्ता में

सफल शिक्षण सम्भव ही नहीं। अतः; कोई शिक्षक केवल प्रश्न के सहारे ही पाठ को समझाने का प्रयत्न करे, वह भी अधिक अच्छा नहीं। उसे तो परिस्थिति के अनुरूप प्रश्न , कथन एवं उपयुक्त वातावरण का सृजन- इन सभी से काम लेना चाहिए।

मौन वाचन - मौन वाचन के दो मुख्य प्रयोजन हैं-

(1) विद्यार्थी किसी अंष को पढ़कर उसके भावों और विचारों को समझ सकें।

(14) पाठ से सम्बन्धित अपनी कठिनाईयों को खोज सकें।

इन दोनों उद्देष्यों की पूर्ति हेतु विद्यार्थियों द्वारा मौन वाचन कराया जाना चाहिए। जिस समय विद्यार्थियों की बैठक आदि अन्य बातों का भी निरीक्षण कर सकता है।

बोध प्रश्न -बोध प्रश्न को पूछने का मुख्य उद्देश्य यह जानना होता है कि विद्यार्थी पाठ या उसके किसी पढ़ाये हुए अंष को भली प्रकार समझ रहे हैं या नहीं? इसके साथ ही साथ छात्रों द्वारा दिये गये उत्तर के आधार पर यह भी जाना जा सकता है कि विद्यार्थी विचारों की अभिव्यक्ति में किस सीमा तक समर्थ होते हैं। प्रश्न किस प्रकार के होने चाहिए, इस सम्बन्ध में पूर्व अध्याय- ''शिक्षण के सहायक साधन''- में यथेष्ट प्रकाष डाला जा चुका है। यहाँ केवल इतना कह देना पर्याप्त है कि प्रश्न सरल, सुस्पष्ट और स्तरानुकूल होने चाहिए। इस बात का भी यथासम्भव प्रयत्न किया जाना चाहिए कि जहाँ तक हो सके, प्रश्न के उत्तर पूर्ण वाक्यों में ही आयें; अर्थात् प्रश्न लघुउत्तरात्मक हों तथा उत्तर देने से पूर्व उन पर विचार करना पड़े ताकि विद्याथियों की अभिव्यक्ति का पता लगाया जा सकें।

पुनरावृत्ति-पुनरावृत्ति के तीन प्रयोजन हैं-

1. यह ज्ञात करना कि पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हुई है या नहीं और यदि 'हुई' तो किस सीमा तक?

14. सम्पूर्ण पाठ को एक बार पुनः दुहरा देना, ताकि पाठ द्वारा अर्जित ज्ञान विद्याथियों के मस्तिष्क में और भी सुदृ□हो सके।

3. विद्यार्थी अर्जित ज्ञान का उपयुक्त परिस्थितियों तथा व्यावहारिक जीवन में उपयोग कर सकें।

इन तीनों ही प्रयोजनों की पूर्ति पर यदि गहराई से विचार किया जाय तो प्रथम प्रयोजन के अन्तर्गत सभी कुछआ जाता है; फिर भी हमने इन्हें अलग-अलग प्रदर्शित किया है। इन तीनो ही प्रयोजनों की पूर्ति हेतु शिक्षक विद्यार्थियों से कुछ प्रश्न पूछता है। प्रश्न के उत्तर द्वारा यह भली प्रकार जाना जा सकता है कि उपर्युक्त प्रयोजनों की पूर्ति किस सीमा तक हुई? ध्यान रखने की बात यह है कि पुनरावृत्ति के प्रश्न सम्पूर्ण पाठ पर आधारित तथा क्रमबद्ध होने चाहिए।

14.8 संयुक्त विधि का परिचय

यह विधि भी व्याकरण का ज्ञान किसी पुस्तक से देने का विरोध करती है। सूक्ष्म तथ्यों का ज्ञान व्यावहारिक कार्यो से उदाहरणों के माध्यम से कराया जा सकता है। दूसरे शब्दों में पाठ्य-पुस्तक (गद्य) या रचना कार्य करते समय प्रासंगिक रीति में व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराया जा सकता है। व्याकरण के समस्त नियम समवाय के द्वारा पढ़ाये जाने चाहिएं। इस प्रकार इस विधि में व्याकरण की षिक्षा अलग से न दे कर साहित्य के विभिन्न अंगों को पढ़ाते हुए ही देनी चाहिए।

निष्कर्ष:-यह विधि भी दोषयुक्त समझी जाती है। इसमें तार्किक क्रम का अभाव रहता है।: इस बात की भी सम्भावना रहती है कि गद्य के बदले व्याकरण या व्याकरण के बदले गद्य पर अधिक बल दिया जाने लगे, क्योंकि दोनो का समवायित अध्धयन किया जाता है। फिर भी स्वाभाविक □ा से इस विधि को अपनाना उपयोगी है। इस से व्याकरण के नीरस नियम प्रासंगिक रीति से बड़ी सरलता से समझाये जा सकते है।

भाषा-शिक्षण में व्याकरण का महत्त्व /स्थान

1. कुछ विद्वानों के अनुसार भाषा-शिक्षण का कार्य व्याकरण के बिना अपूर्ण है।

14. व्याकरण भाषा का मित्र एवं सहचर है जो उसे सदैव-सनमार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। अतः व्याकरण का ज्ञान भाषा के शुद्ध प्रयोग के लिए है।

3. व्याकरण के सहयोग से शुद्ध लिखना और बोलना सरलता से आ जाता है।

4. व्याकरण का आधार ले कर भाषा सीखने से सरलता होती है।

5. प्रत्येक भाषा का अपना ध्वनि विचार शब्द विचार, अर्थ विचार, और वाक्य विचार होता है। भाषा के पूर्ण ज्ञान के लिए इनका जानना आवष्यक है।

6. अन्य भाषा या भाषाओं के सीखने में भी व्याकरण सहायक होता है।

7. भाषा की अशुद्धियां व्याकरण द्वारा ही सीखी जा सकती है।, अन्यथा नहीं । व्याकरण ज्ञान के बिना भाषा के प्रयोग में अव्यवस्था आ जाती है।

8. व्याकरण अध्यापक के लिए अत्यंत आवष्यक है जिसका प्रयोग उसके शिक्षण को सफल बनाता है।

9. व्याकरण को षिक्षा की षिक्षा का एक आवष्यक अंग है।

वस्तुतः भाषा को शुद्ध बनाए रखने का काम व्याकरण द्वारा ही सम्पन्न होता है दूसरे शब्दों में भाषा का उचित रहस्य समझने के लिए व्याकरण का काम अत्यंत आवश्यक है।

14.9 सारांश

प्रस्तुत इकाई का आपने अध्ययन कर जाना कि गद्य साहित्य हमारी बुद्धि को बहुत प्रभावित करता है। गद्य में जीवन की वास्तविकता के दर्षन होते है। गद्य के द्वारा ही बच्चों को शब्द ज्ञान वाक्य-ज्ञान तथा विभिन्न लेखन शैलियों का ज्ञान कराया जाता है। गद्य और पद्य से पहले किसका प्रादुर्भाव हुआ, यह कहना कठिन है। गद्य शब्द संस्कृत भाषा की 'गद्' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है- स्पष्ट कहना। साहित्य की विभिन्न विधाओं में गद्य का स्थान महत्वपूर्ण है। इस इकाई में आपने गद्य शिक्षण के अर्थ, गद्य शिक्षण की उपोगिता एवं गद्य शिक्षण की व्याख्या को पढ़ा | आशा है कि अब आप गद्य शिक्षण से पूर्णत: परिचित हो चुके होंगे|

14.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. गद्य शिक्षण की उपयोगिता बताइए?

14. गद्य शिक्षण की विश्लेषण विधि से आप क्या समझते हैं?

इकाई 15 माध्यमिक कक्षाओं में पद्य शिक्षण

15.1 प्रस्तावना
15.2 उद्देश्य
15.3 पद्य शिक्षण की शब्दार्थ कथन
15.4 पद्य शिक्षण की खण्डान्वय विधि का परिचय
15.5 पद्य शिक्षण की व्यास विधि का परिचय
15.6 पद्य शिक्षण की समीक्षा विधि का परिचय
15.7 पद्य-शिक्षण की विधियों की उपयुक्ता का आकलन
15.8 पद्य की उपयोगिता
15.9 शैक्षिक स्तरों की दृष्टि से कविता के प्रकार
15.10 सारांश
15.11 निबंधात्मक प्रश्न

15.1 प्रस्तावना

पद्य सदा से ही भाषा की साहित्यिक एवं कलात्मक सौन्दर्यानुभूति का प्रमुख स्त्रोत रही है। प्राचीन भारतीय साहित्य शास्त्रियों ने रसात्मक वाक्य ही काव्य है, ध्वनि ही को काव्य की आत्मा बताया है। पद्य की हम चाहे जो भी परिभाषा करे और उनमें चाहे कितनी ही विविधता क्यों न हो, पर इतना तो निर्विवाद है ही कि उससे हमारे ह्दय में एक अद्भुत, लोकोत्तर आनन्द का संचार होता है | प्रस्तुत इकाई में आप पद्य शिक्षण का अध्ययन करेंगे|

15.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप-

पद्य शिक्षण के शब्दार्थ कथन से परिचित हो जायेंगे|

पद्य शिक्षण की व्यास विधि को जान जायेंगे|

पद्य शिक्षण की समीक्षा विधि से परिचित हो जायेंगे|

15.3 पद्य शिक्षण का शब्दार्थ कथन

जब मनुष्य प्रकृति के नाना रूपों और व्यापारों से ऊँचा उठकर अपने योग-क्षेम, हानि-लाभ, सुख-दुःख आदि को भूलकर ताकि अपनी पृथक् सत्ता से छूटकर केवल अनुभूतिमात्र रह जाता है, तब हम उसे मुक्त-हृदय कहते हैं। हृदय की इस मुक्ति साधना के लिए मनुष्य वाणी जो शब्द विधान करती आई है, तो उसे कविता कहते है।''

-आचार्य रामचन्द्र

शुक्ल

पद्य की परिभाषा

पद्य सदा से ही भाषा की साहित्यिक एवं कलात्मक सौन्दर्यानुभूति का प्रमुख स्त्रोत रही है। आदिकाल से ही वह मानव हृदय में आनन्द एवं रस का संचार करती रही इसी कारण मानव हृदय पद्य के प्रति जितना विमुग्ध होता है, उसकी रमणीयता में रमना चाहता है और उसकी, भाव लहरियों का अवगाहन कर आनन्द विभोर होना चाहता है, उतना भाषा की अन्य कृतियों में नहीं।

प्राचीन भारतीय साहित्य शास्त्रियों एवं विचारकों ने अपनी-अपनी दृष्टि से पद्य के सौंदर्य तत्त्वों का, दूसरे शब्दों में उसकी आत्मा का उल्लेख किया है-

विष्वनाथ कविराज- ''वाक्यम् रसात्मकम् काव्याम्।'' रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

पण्डितराज जगन्नाथ- ''रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।'' रमणीय अर्थ का प्रतिपादक शब्द ही काव्य है।

आचार्य आनन्दवर्धन- ''काव्यस्यात्मका ध्वनिः।'' ध्वनि ही काव्य की आत्मा है।

आचार्य वामन- ''रीतिरात्मका काव्यस्य।'' रीति ही काव्य की आत्मा है।

आचार्य दण्ड़ी-''काव्य शोभाकरनान्धमनिननलंकारान्द्र चक्षते।''

आचार्य मम्मट- ''तददोषौ शब्दार्थो सगुणावलंकृति पुनः क्वापि।'' दोष रहित, गुणयुक्त, प्रायः अलंकृति पर कभी-कभी अनलंकृत शब्द और अर्थ को काव्य कहते हैं।

जयषंकर प्रसाद- ''आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति काव्य है।''

पाष्चात्य साहित्यकारों द्वारा प्रस्तुत कविता की कतिपय परिभाषाओं का अवलोकन भी समीचीन प्रतीत होता है-

मिल्टन-कविता सरल, ऐंद्रिक एवं रागात्मक होनी चाहिए

कालरिज- सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम क्रम ही कविता है

कारलायल- संगीतमय विचार ही कविता है।

उपर्युक्त प्रत्येक परिभाषा में कविता के किसी न किसी विषिष्ट सौन्दर्य का संकेत है। रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि, गुण कविता के विधान एवं आत्मा के विविध परिचायक तत्त्व हैं। वस्तुतः कविता इन सभी तत्त्वों की समष्टि है। वह जीवन की समालोचना भी है और संगीतमय विचार भी, वह जीवन का प्रतिबिम्ब भी है और सर्वोत्तम शब्द-योजना भी। ये सभी गुण उसके विविध सौन्दर्य तत्त्व हैं और छात्रों में इन सौन्दर्य तत्त्वों के बोध एवं अनुभूति की योग्यता विकसित करना कविता-शिक्षण का सर्वप्रमुख उद्देश्य है।

पद्य की हम चाहे जो भी परिभाषा करे और उनमें चाहे कितनी ही विविधता क्यों न हो, पर इतना तो निर्विवाद है ही कि उससे हमारे हृदय में एक अद्भुत, लोकोत्तर आनन्द का संचार होता है और हम कुछ देर के लिए संासारिक बन्धनों से मुक्त होकर भावों के अनुपम जगत में विचरण करने लगते हैं। इसी कारण उसे ब्रहा्रनन्द सहोदर की संज्ञा प्रदान की जाती है। बालक के हृदय में इसी लोकोत्तर आनन्द का संचार और रस की सृष्टि करना पद्य शिक्षण का उद्देश्य है।

15.4 खण्डान्वय विधि -

इस विधि का दूसरा नाम प्रश्नोत्तर विधि भी है। इस विधि विश्लेषण और संष्लेषण, दोनों विधियाँ अपनायी जाती हैं। विचारों को पृथक रूप से व्यक्त किये बिना उनका समझना बड़ा कठिन है। इसलिये शिक्षक , प्रश्न के आधार पर कविता में निहित विचारों और भावों को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करता है और उन्ही के द्वारा दिये गये उत्तरों के आधार पर आगे बढ़ता है।

उदाहरणार्थ- शब्दार्थ विधि में उदाहरणस्वरूप लिये गये सवैये (नाम अजामिल.... ठाढ़े) को खण्डान्वय विधि से पढ़ाने के लिए निम्नलिखित प्रश्न पूछकर कविता के अर्थ और भाव को स्पष्ट किया जायेगा-

1. ऊपर की पंक्ति में ‘खल’ शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

2. ‘अजामिल’ के संसार से पार होने की कहानी आप में से किसी को याद हो तो सुनाइए।

3. ऐसे ही कुछ अन्य नाम बताइए, भगवान ने जिनका उद्धार कर दिया हो।

4. इस पद में भगवान का नाम लेने की और क्या-क्या महिमा बतायी गयी है?

5.‘‘हरे अध गाढ़े’’ का क्या आषय है?

6. गंगाजी किस प्रकार भगवान के चरण-कमलों से प्रकट हुई?

7. ''स्वै सरिता'' का यहाँ का क्या अर्थ है?

8. भगवान, गंगा को पार करने में समर्थ होते हुए भी उसे पार क्यों नहीं कर रहे हैं?

15.5 पद्य शिक्षण की व्यास विधि का परिचय

इस विधि द्वारा कविता पढ़ाने पर कविता के भाव और कला दोनों ही पक्षों की एक कथावाचक की भाँति विषद व्याख्या करनी पड़ती है। इसलिए विधि का नाम भी व्यास प्रणाली रखा गया है। भावों को हृदयंगम कराने के लिए इस विधि में शिक्षक को अनेक उदाहरण देने पड़ते हैं। कविता में आये हुए अलंकारों आदि से भी विद्यार्थियों को अवगत कराना पड़ता है-

(1) कवि ने ऐसा ही क्यों कहा? (2) इसके स्थान पर अमुक शब्द का प्रयोग किया जाता तो अर्थ में क्या अनतर आ जाता? इस प्रकार अनेक पैने प्रश्न पूछकर विद्यार्थियों की कल्पना और विचार शक्ति का विकास किया जाता है, उदाहरणार्थ- अर्थ बोध विधि में दिये हुए पद 'नाम अजामिल...ठाढ़े।'- को व्यास विधि से पढ़ाने के लिए शिक्षक को केवल इतना पढ़ाने से ही सन्तोष नहीं करना पड़ेगा जितना शब्दार्थ या व्याख्या विधि में बताया गया है, अपितु उसे भगवान के नाम की महिमा, चरणों का प्रताप, अजामिल और भागीरथी की अन्र्तकथाएँ आदि सभी कुछ बताने पड़ेगे।

शिक्षक सबसे पहले यह बताने का प्रयत्न करेगा कि किस प्रकार भगवान राम ने अजामिल जैसे खल का उद्धार किया? यहाँ अजामिल की अन्र्तकथा भी बतायी जायेगी।

अजामिल -अजामिल घोर पापी था। कभी भूलकर भी ईष्वर का नाम नहीं लेता था। किनतु सौभाग्यवष उसके सबसे छोटे पुत्र का नाम नारायण था। नारायण को अजामिल बहुत प्रेम करता था। उसकी अनुपस्थिति उसे सहन नहीं थी। एक बार अजामिल बहुत बीमार पड़ गया। उसकी बेहोषी बढ़ने लगी। उसी बेहोषी में अपना अन्त समय निकट समझकर उसने अपने पुत्र का नाम-स्मरण किया और मुख से निकल पड़ा-''हा नारायण! भगवान राम ने समझा कि मेरा कोई भक्त आर्त्त होकर मुझे याद कर रहा है। उन्होंने केवल अपना नाम लेने वाले पापी अजामिल का उद्धार कर दिया। इस प्रकार घोर पापी होते हुए भी अजामिल इस भवसागर से पार हो गया।

शिक्षक अजामिल के उद्धार की पुष्टिस्वरूप यह भी बतायेगा कि इस कथा का वर्णन अन्यत्र भी कई स्थानों पर मिलता है-

अपराध अगाध भये जनते अपने उर आनत नाहिन जू।

गानिका गज गीध अजामिल के गनि पातक पुंज सिराहिन जू।।

-श्री कवित्त रामायण

राम की महिमा- ‘रामचरितमानस’ के किसी भी अंष को उठाकर देखा जाय, तो उसमें राम नाम की महिमा का उल्लेख विष्द रूप में मिलेगा; उदाहरणार्थ-मानस के विभिन्न स्थलों से कुछ पद यहाँ उद्धृत किये जाते है-

प्रिय रामनाम ते जाहि न रामौ।

ताकहँ भलो अजहुँ कलिकालहुँ आदि मध्य परिनामौ।।

-विनयपत्रिका

इसके साथ ही शिक्षक यह बताने का भी प्रयत्न करेगा कि राम का नाम लेने पर केवल अजामिल का ही उद्धार नहीं हुआ; अपितु वाल्मीकि, जटायु आदि अनेक पापियों का भी उद्धार हो गया। तुलसी और सूर कृत विनय-पत्रिकाओं में अनेक स्थानों पर इसका उल्लेख मिलता है-

है हरि-भजन कौ परमान।

नीच पावैं ऊँच पदवी, बाजते नीसान।

भजन को परताप ऐसौ, जल तरै पाषान।

अजामिल अरू भीलि, गनिका, चढ़े जात विमान।।

सूर हरि की सरन आयौ, राखि लै भगवान।।

-सूरदास

इसके पश्चात्, शिक्षक बालकों से यह पूछेगा-

(1) ‘‘गिरि-मेरू........ बाढ़े’’ से कवि का क्या आषय है? (2) यह किस प्रकार सम्भव है?

विद्यार्थियों की कठिनाईयों को दूर करते हुए शिक्षक स्पष्ट करेगा कि ईष्वर का नाम लेने मात्र से ही पहाड़ और समुन्द्र, शिला कणों एवं बकरी के खुर के समान छोटे रूप में बदल जाते है; अर्थात् बड़ी से बड़ी कठिनाई भी छोटे रूप में बदल जाती है। यहाँ शिक्षक भगवान के नाम-स्मरण की महिमा का उल्लेख करेगा।

नाम-स्मरण की महिमा-कलियुग में केवल ईष्वर का नाम लेने से ही उद्धार हो जाता है-

कलियुग केवल नाम अधारा।

सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा।

-रामचरितमानस

यही नहीं, भगवान का उल्टा-सीधा, जाने-अनजाने किसी भी प्रकार लिया जाय, वह अनेक पापों को नष्ट कर देता है-

उल्टा नाम जपत जग जाना।

वाल्मीकि भये ब्रहा्र समाना।

भगवान के नाम में अनेक पापों को नष्ट करने की अपार शक्ति है। इसके उल्लेख स्कन्द-पुरणा में भी मिलता है-

''नाम्नोष्च यावती शक्ति पाप निर्दहने मय।

तवत्कतु न शक्नोति पालक पालकी जनः।।''

-स्कन्दपुराण

तीसरी पंक्ति को स्पष्ट करने के लिए शिक्षक गंगा की महिमा बताते हुए यह बताने का प्रयत्न करेगा कि गंगा किस प्रकार भगवान के चरण-कमलों से प्रकट हुई।

गंगाजी की अन्तर्कथा -जगननाथदास 'रत्नाकर'' कृत गंगावतरण में इस कथा का विस्तृत उल्लेख मिलता है। संक्षेप में कथा इस प्रकार है-

राजा सागर के दो रानियाँ थी- केसिनी और सुगति। परन्तु, दोनों में से किसी के भी कोई संतान न थी। इससे दुःखी होकर राजा सगर दोनों स्त्रियों सहित भृगु मुनि के आश्रम में गये। वहाँ उन्होंने घोर तपस्या की। ऋषिराज में प्रसन्न होकर उन्हें मनमाना वरदान दिया। परिणामस्वरूप, केसिनी के एक पुत्र पैदा हुआ जिसका नाम असमंज रखा गया। सुमति ने एक तूंबी को जनम दिया। उस तूंबी में से साठ हजार बीज निकले जो सगर के साठ हजार पुत्रों के नाम से प्रसिद्ध हुए। असमंज बड़ा पराक्रमी और उद्दण्ड था। गरीब प्रजा उसके व्यवहार से बड़ी दुःखी हो गयी। उसने नृप् सगर के सामने अपना दुःख रोया तो वह बहुत दुःखी हुए। उन्होंने उसी समय असमंज को घर से निकालने तथा असमंज के धर्मप्रिय और परिजन-हितकारी पुत्र अंसुमान को राज्य-कार्य-सौंपने का निष्चय किया। साथ ही राजा ने अष्वमेध यज्ञ करने का भी निष्चय किया। सभी जगह निमन्त्रण भेज दिये गये। गुरू वषिष्ठ अपने ऋषि समाज के साथ वहाँ आये और स्यामकरन नाम का घोड़ा अष्वमेध यज्ञ के लिए छोड़ दिया गया। घोड़े के साथ में बड़े-बड़े योद्धा भी थे। घोड़ा पृथ्वी पर चारों ओर घूम गया; लेकिन उसे पकड़ने का साहस किसी को नहीं हुआ। इसे देखकर इन्द्र बड़ा भयभीत हुआ। उसने

कुचाल चलने का निष्चय किया। प्रत्यक्ष तो वह घोड़े का अपहरण नहीं कर सकता था, इसलिए उसने घोड़े को चुराया और उसे पाताल लोक ले गया। पाताल लोक में ले जाकर कपिल मुनि के आश्रम में जहाँ वह तपस्या कर रहे थे, वहाँ पर छोड दिया।

इधर जब घोड़े के अपहरण का पता राजधानी में लगा तो सभी लोग आष्चर्यचकित हो गये। उन्होंने सम्पूर्ण पृथ्वी को खोज मारा, लेकिन कहीं भी घोड़े का पता पूछा। पण्डितों ने बताया कि घोड़ा पाताल लोक में है; किन्तु घोड़े का अपहरण करने वाले का स्थान बहुत ऊँचा है। घोड़ा तो मिल जायगा, लेकिन इसका अन्त शुभ नहीं है। सगर ने अपने साठ हजार पुत्रों को बुलाया और सभी कुछ बताकरअष्व को खोजने के लिए भेज दिया। सगर के पुत्रों ने पृथ्वीपर इतनी खोदखाद की कि देवताओं आदि सभी में उथल-पुथल मच गयी। अन्त में वे घोड़े को खोजते-खोजते कपिल मुनि के आश्रम में पहुँच गये। वहाँ घोड़े को बँधा देखकर वे बड़े प्रसन्न हुए, परन्तु मुनि पर क्रोधित होकर बुरा-भला कहने लगे। उस कोलाहल में मुनि की ध्यान-मुद्रा भंग हुई तो ज्यों ही मुनि अपने क्रोध भरे नेत्रों से देखा, उनके शरीर से ज्वाला की प्रचण्ड किरणें फूट पड़ी और सगर के साठ हजार पुत्र वहीं भस्म हो गये।

जब बहुत दिन तक घोड़े की खोज में गये हुए सगर के साठ हजार पुत्रों में से कोई भी वापिस नहीं आया तो राजा सगर ने अंसुमान को उनका पता लगाने के लिए भेजा। अंसुमान उन्हें खोजने चल दिया। रास्ते में उसे समुति का भाई गरूड़ मिला। गरूड़ ने अंसुमान को सभी वृत्तान्त कह सुनाया और यह भी बताया कि यदि किसी प्रकार वहाँ होकर गंगाजी निकल जाएँ तो उनका उद्धार हो सकता। उसने अंसुमान को मुनि के दर्षन भी कराये तथा एक तरफ चरता हुए घोड़ा भी बता दिया। गंगा महिमा का भी उन्होंने विषद वर्णन किया।

यह सब सुनकर और देखकर अंसुमान घोड़े सहित वापस लौट आया। जब पुत्रों के मरने का समाचार सगर ने सुना तो वे मूर्छित हो गये। कुछ अनुभवी व्यक्तियों ने अंसुमान को उनकी गोद में बिठा दिया क्योंकि वह अंसुमान को सबसे अधिक प्रेम करते थे। धीरे-धीरे उनकी आँखों से आँसू निकल अये और उनका हृदय विदीर्ण होने से बच गया। पुनः अंसुमान ने गरूड़ द्वारा बतायी गयी बातें सभी को बतायी। अष्वमेध यज्ञ पूर्ण हो गया। परन्तु, अंसुमान को अपने पित्रों के उद्धार की चिन्ता लगी ही रही। उसने गुरू से अपनी चिन्ता का समाधान कराया और अपना राज्य अपने पुत्र दिलीप को देकर जंगलों में तपस्या करने के लिए चला गया। जाते समय वह यह कह गये कि जब, तक गंगाजी पृथ्वी पर न आ जायें, तब तक तपस्या का यह क्रम, अनवरत चलता रहे। उसी परम्परा के अनुसार दिलीप ने भी गुरू से तपस्या करने की आज्ञा माँगी, परन्तु सफलता नहीं मिली। अन्त में, दिलीप के धर्मानुयायी पुत्र भागीरथ ने घोर तपस्या की। उनकी घोर तपस्या से भूमण्डल डोलने लगा। तब ब्रहा्जी भागीरथ के पास पहुँच गये और बताया कि गंगाजी की गति अति तीव्र होने के कारण उनको कोई रोकने वाला होना चाहिए। शंकर भगवान बड़े दयालु हैं और वही यह कार्य कर सकते हैं।

फिर शंकर भगवान की आराधना की गयी और वे गंगाजी को अपनी जटाओं में रोकने के लिए सहर्ष सहमत हो गये। तत्पष्चात् भगवान ने अपने चरण-कमलो से गंगाजी को छोड़ दिया और सगर के साठ हजार पुत्रों का उद्धार किया।

इस अन्तर्कथा को बताने के पश्चात् शिक्षक द्वारा यह भी स्पष्ट किया जायेगा कि किस प्रकार गंगाजी पापों को हरने वाली हैं। इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। लोगों का अभी भी विष्वास है कि अन्त समय में गंगास्नान या गंगाजल पिलाने से लोगों को सद्गति मिलती है। तुलसी ने भी इसे स्वीकार किया है-

भागीरथी जलपान करौं अरू नाम लै राम के लेत नितै हों।

मोको न लेनो, न देनो कछू, कलि! भूलि न रावरी ओर चितै हो।।-तुलसीदास

यहीं नहीं भगवान राम ने भी स्वयं गंगा के महत्त्व को स्वीकार किया है। केवट प्रसंग के अन्तर्गत वे गंगा को पार करके अपने मनारथों को पूर्ण करने की गंगा से प्रार्थना करते है-

तब मज्जनु करि रघुकुल नाथा। पूजि पारथिव नायउ माथा।।

सियँ सुर सरिन्हि कहेउ कर जोरी। मातु मनोरथ पुरउवि मोरी।।-रामचरितमानस

इन सबके पश्चात् अन्तिम पंक्ति को स्पष्ट करने के लिए यह तो स्पष्ट हो गया कि गंगाजी को 'स्वै सरिता' क्यों कहा गया है? यहाँ पर पाठकों के हृदय में एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि भगवान में जब इतनी शक्ति है तो वे नदी को पार क्यों नहीं कर जाते? शिक्षक को इसे स्पष्ट करना पड़ेगा। भगवान अपने भक्तों का उद्धार किसी न किसी प्रकार से करते ही हैं। भगवान भक्तों के वष में है और वे अपने भक्तों का उद्धार करने के लिए ही नर-लीलाएँ किया करते हैं। व्यास विधि में शिक्षक यदि कुषल है तो पाठ का कितना ही विस्तार कर सकता है।

समालोचना -यहविधि निस्सन्देह रूचिकर है, परन्तु उन्हीं के लिए जिन्हें साहित्य का ज्ञान है। इसी विधि द्वारा पढ़ाने पर बालकों के ज्ञान का अधिक विस्तार किया जा सकता है। यह विधि रूचिकर है, ज्ञानवर्द्धक है, परन्तु यह सब कुछ होते हए भी हम शिक्षण विधि से सभी शिक्षक सफलतापूर्व नही पढ़ा सकते इसमें शिक्षक का विस्तृत ज्ञान अपेक्षित है। दूसरे, बालक भी इससे उसी समय लाभ सकते है जब उन्हें भाषा का अच्छा ज्ञान हो। आजकल षिक्षा के स्तर को देखते हुए उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में भी इस विधि का अनुसरण भली-भाँति नहीं किया जा सकता। यह विधि तो उच्च कक्षाओं में, उच्च-स्तरीय, साहित्यिक अभिरूचि के विद्यार्थियों के लिए ही अधिक उपयुक्त रहती है।

15.6 पद्य शिक्षण की समीक्षा विधि

माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में पद्यशिक्षण की समीक्षा विधि का परिचय:-

इस विधि द्वारा पद्य पढ़ाने पर, पद्य के गुण-दोषों की आलोचना करनी पड़ती है। आलोचना का आधार वही होता है, जिसका उज्लेख हमने इसी अध्याय के प्रारम्भ में कविता के स्वरूप के अन्तर्गत किया है। कविता की आलोचना उसमें निहत कला और भाव दोनों पक्षों के आधार पर की जाती है। कलापक्ष के अन्दर भी यह देखा जाता है कि अलंकार, छन्द, शब्द शक्तियों, रीतियों आदि पर कविता कहाँ तक खरी उतरती है। दूसरे, भावपक्ष के अन्तर्गत बुद्धि, राग और कल्पना इन तत्त्वों का निर्वाह हुआ है या नहीं अथवा किस सीमा तक हुआ है? इस विधि के अनुसरणमें यदि मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया जाय तो इसमें शिक्षक की अपेक्षा बालक अधिक सक्रिय रहते हैं। शिक्षक तो केवल उनके मार्गदर्षन का कार्य करता है; उदाहरणार्थ- सूर द्वारा विरचितकृष्ण की बाललीला के पद-

जसोदा हरि पालने झुलावै।

हलरावै दुलराइ मल्हावै जोइ सोइ कछु गावै।

मैया मेरी मैं नहिं माखन खायो।

भोर भयो गैयन के पीछे मधुवन मोहि पठायो। आदि

किसी भी पद को क्यों न लिया जाय, उसे पढ़कर कृष्ण की बाल लीलाओं का एक दृष्य आँखाोंं के सामने नाचने लगता है। भावपक्ष का सफल निर्वाह इसी में है कि पाठक के हृदय में वही भाव जाग्रत हो जाएँ जिनको लेकर कवि ने कविता की रचना की थी। अतः इन सभी पदों में भावपक्ष की सरलता है; किनतु कलापक्ष की दृष्टि से यदि देखा जाय तो अधिकांष पदों में भाषा की शुद्धता नहीं है। शैली की दृष्टि से उन्होंने पद-षैली को अपनाया है जो अति सुन्दर बन पड़ी है।

इस विधि में यह विषेषता है कि इसमें व्यक्तिगत दृष्टिकोण की प्रधानता है। यह आवष्यक नहीं कि एक व्यक्ति की दृष्टि से जो कविता सुन्दर है, वह दूसरे के दृष्टिकोण से भी सुन्दर ही हो। जिसे एक आलोचक गुण मानता है, उसे दूसरा दोष मान सकता है। परन्तु दोनों को ही अपने उत्तर की पुष्टि में प्रमाण देना होगा। केवल अच्छा या बुरा कह देने मात्र से काम नहीं चल सकता।

समालोचना- इस विधि में व्यास विधि की भाँति शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को ही विषय का विषाद ज्ञान होना चाहिए। विद्यार्थियों को आलोचना के सिद्धांत जानना आवश्यक है, अन्यथा वे इस विधि का अनुसरण नहीं कर सकते। शिक्षक का ज्ञान भी बहुत अधिक विस्तृत न होगा तो वह उन्हें भली-भाँति मार्गदर्षन नहीं दे सकेगा। यह विधि कविता-षिक्षिण के अन्तर्गत केवल इसलिए रखी

गयी है। कि इसमें कविता की आलोचना करनी पड़ती है; अन्यथा यह एक प्रकार का पर्यवेक्षित अध्ययन है जिसे बालक शिक्षक के कुषल निर्देषन में स्वयं पूर्ण करते हैं।

15.7 पद्य-शिक्षण की विधियों की उपयुक्ता का आकलन-

कविता शिक्षण की जिन विभिन्न विधियों का उल्लेख पीछे किया गया, उनमें किस स्तर के लिए कौन-सी विधि अधिक उपयुक्त रहती है इसका भी उल्लेख साथ ही साथ कर दिया गया है। किन्तु, यह आवष्यक नहीं है कि उस पर केवल उसी विधि का ही प्रयोग किया जाय, अन्य विधियों का नहीं। विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर और शिक्षक के ज्ञान तथा उसके समझने की कुषलता को ध्यान में रखते हुए जो विधि भी उपयुक्त प्रतीत हो, उसका अनुसरण करना चाहिए।

दूसरे, शिक्षक कभी-कभी पढ़ाते समय स्वयं को विधियों का दास समझकर सीमाबद्ध हो जाते हैं। वे सोचते हैं कि उन्हें पूरा पाठ केवल एक ही विधि से पढ़ाना है। यह बहुत ही भ्रमात्मक स्थिति है। शिक्षक यदि चाहे तो वह एक ही पाठ को पढ़ाने के लिए, एक से अधिक विधियों को एक साथ अपना सकता है। उदाहरण के लिए-यदि शिक्षक अर्थबोध विधि से पढ़ा रहा है; किन्तु उसमे किसी पंक्ति की व्याख्या करना भी आदि आवष्यक है तो उसे व्याख्या विधि के द्वारा उस अंष को स्पष्ट कर देना चाहिए।

तीसरे बालकों का ध्यान पाठ पर केन्द्रित करने के लिए उसे बालकों से बीच-बीच में कुछ प्रश्न भी पूछ लेने चाहिए। यह प्रष्नोत्तर विधि के अंतर्गत आयेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षक को कभी भी और किन्हीं भी परिस्थितियों में विधियों की दासता स्वीकार नहीं करनी चाहिए। उसका दृष्टिकोण सदैव यह रहना चाहिए कि विद्यार्थी अधिक से अधिक सक्रिय रहें, पाठ में रूचि ले और पढ़ाये जाने वाले अंष को भली-भाँति समझ सकें। किन्तु, इसका तात्पर्य यह भी नहीं कि शिक्षक विद्यार्थियों को उस विधि से पढ़ाये जिसकी गणना कहीं नहीं और पूछने पर कह दे कि यह शिक्षण विधियों का मिला-जुला रूप है। उसके पढ़ाने की विधि यथासम्भव मनोवैज्ञानिक होनी चाहिए।

कविता-शिक्षण में भावानुभूति एवं सौन्दर्यानुभूति

इसी अध्याय के प्रारम्भ में गद्य और पद्य का अन्तर स्पष्ट करते हुए कवि ने प्रयत्न किया था कि पद्य में भावपद्वा औ रकलाक्ष दोनों की ही सबलता होने के साथ-साथ कविता के अन्तर्गत छन्द, अलंकार आदि सभी आ जाते हैं। गद्य और पद्य के शिक्षण उद्देश्य भी एक-दूसरे के सर्वथा भिन्न होंगे। मोटे तौर पर कविता-शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों को कविता पे निहित भाव और कला दोनोंका ही उचित अनुभव कराना है। भावों से अवगत कराना भावानुभूति और छन्द, रस, अलंकार आदि का ज्ञान देना सौन्दर्यानुभूति के अंतर्गत आता है। कविता-शिक्षण के ये ही प्रमुख उद्देश्य हैं, न कि विद्यार्थियों को नवीन शब्दों का ज्ञान देना। पुनः, कविता के भी तीन प्रमुख तत्त्व होते हैं-बुद्धि, राग और कल्पना। इन तीनों के लिए विद्यार्थियां को कविता में निहित निम्न बातों से अवगत कराना

पड़ता है।- 13. विचार सौन्दर्य 14. रागात्मक तत्त्व और 3. कवित की कल्पना। इसी प्रकार कलापक्ष या सौन्दर्यानुभूति के लिए कविता की भाषा एवं कविता की शैली का परिचय कराना आवष्यक है।

इसी का और अधिक विश्लेषण करने पर विचार सौन्दर्य क ेलिए यह देखना चाहिए कि कवितामे किस प्रकार के विचारो को प्रधानता दी गयी है? रागात्मक तत्त्व के लिए कविता में किस विषेष रस का निर्वाह हुआ है? इससे बालकों को अवगत कराया जाना चाहिए। इसी प्रकार कविता में कल्पना सौन्दर्य के लिए यहबताना आवष्यक है कि कवित कल्पना सृष्टि के विधान, सृष्टा की अद्भुत कारीगरी आदि मे कहाँ तक प्रवेष कर पायी है? भाषा में किस प्रकार के शब्दों का बाहुल्य है तथा किस प्रकार की है? उसमें अलंकारों का निर्वाह कहाँ तक हुआ है? इन सभी बातों का ज्ञान विद्यार्थियों को यथासम्भव दिया जाना चाहिए।

अब प्रश्न उठता है इन सभी को एक सीमित अवधि मे किस प्रकार बताया जाय? इस सम्बन्ध में हमारी राय यह है कि जो शिक्षक , शिक्षण को एक यान्त्रिक क्रिया मानकर चलेंगे वे सम्भवतः विद्याथियों को इन सभी का उचित ज्ञान देने में असमर्थ रहेंगे; किनतु जो शिक्षक , शिक्षण को स्वाभाविक रूप में अपनायेंगे, वे निष्चित रूप से सभ बातों को सरतला से विद्यार्थियों को बताने मे समर्थ हो सकते हैं। यान्त्रिक क्रिया से हमारा तात्पर्य है कि शिक्षक को यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि कविता पाठ के पश्चात् यदि पुस्तक में भाव बोधात्मक पाँच प्रश्न पूछे गय हैं तो हम भी पाँच प्रश्न ही पूछेंगे। पुस्तक में यदि अलंकार बताने पर बल दिया गया है तो हम भी अलंकारों को बतायेंगे ही बतायेंगे। कभी किसी कविता में अलंकार नहीं होते तो भी शिक्षक बरबस अलंकार बताने का प्रयत्न करता है। यह ठीक नहीं। इसलिए स्वाभाविक क्रम से हमारा तात्पर्य है कि कविता में जिस तत्त्व की भी विषेषता है, उससे बालकों को अवगत करा दीजिए और जिस बात की झलक तक कविता में है नहीं, उसे छोड़ दीजिए। इसी दृष्टिकोण को यदि ध्यान में रखेंगे तो आपका शिक्षण भी सफल होगा और विद्यार्थी भी उसका अधिक से अधिक अंष समझ सकेंगे। अब कविता में भावों और सौंन्दर्य की अनुभूति विद्यार्थियों को किस प्रकार करायी जाय, इस पर विचार करेंगे।

स्पष्टीकरण-प्रश्न त्तर विधि से पढ़ाने में शिक्षकों में अनेक भ्रम और अस्पष्ट धाराणाएँ हैं। अधिकतर शिक्षक एक साथ प्रश्न को पूछते जाते हैं और अन्त में उन सभी प्रश्न का उत्तर देते हुए उस अंष को स्पष्ट कर देते है? वस्तुतः, सफल शिक्षण की यह विधि है ही नहीं। प्रष्नोत्तर विधि द्वारा पढ़ाने पर शिक्षक को सदैव यह ध्यान रखना नितान्त आवष्यक है कि जब तक एक प्रश्न का उत्तर विद्यार्थियों के मस्तिष्क में बिल्कुल स्पष्ट न हो, तब तक किसी भी दषा में दूसरा प्रश्न पूछा ही न जाय। इस सामान्य नियम को ध्यान में रखने पर पहले- ''खल' शब्द किस के लिए आया है''- का अर्थ विद्यार्थियों की ही सहायता से उनके समक्ष स्पष्ट किया जाय तभी-अजामिल के संसार सागर में पार होने की अन्तर्कथा-पूछी जाय। यह भी ध्यान रखना आवष्यक है कि विद्यार्थियों को सक्रिय बनाने रखने के लिए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर विद्यार्थियों से ही प्राप्त करने का यत्न किया जाय। यदि

आवष्यकता पड़े तो विद्यार्थियों को उत्प्रेस्ति किया जाय और कुछ पूरक प्रश्न भी पूछे जायें। जब विद्यार्थी बिल्कुल ही किसी प्रश्न का उत्तर न दें सकें, तभी उसका स्पष्टीकरण शिक्षक द्वारा कर दिया जाय। परन्तु, इसका यह आषय भी नहीं कि शिक्षक एक ही प्रश्न का उत्तर निकलवाने में अधिक समय नष्ट कर दे। संक्षेप में, प्रश्नोत्तर विधि द्वारा पढ़ाने पर-

1. पहले प्रश्न के पूर्णतय स्पष्ट हो जाने पर ही अगला प्रश्न पूछा जाय।
2. प्रश्न का उत्तर निकलवाने में विद्यार्थियों का अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त किया जाय।
3. विद्यार्थियों को अवसरानुकूल उत्प्रेरित भी किया जाय और पूरक प्रश्न भी पूछे जायें।

15.8 पद्य की उपयोगिता

कविता-शिक्षण का उद्देश्य हृदय की रागात्मक वृत्तियों का संषोधन और संस्कार करना है। इसके द्वारा सात्विक वृत्तियों का उद्बोधन होता है और सत्कर्मों की प्रेरणा मिलती है।

सौन्दर्यानुभव की शक्ति बालक में प्रकृति प्रदत्त होती है। अबोध बालक भी उषा की लाली और चन्द्रजयोत्सना देखकर पुलकित हो उठता है। सुन्दर औरचटकीले खिलौने देखकर उन पर लट्टू हो जाता है, रंग-बिंरगे फूलों को देखकर उसका मन नाच उठता है। सन्दर एवं मनोहर वस्तुओं एवं दृश्यों के प्रति अनुराग की भावना उसकी प्रकृति में है। कविता-शिक्षण का उद्देश्य बालक के इस प्रदत्त सौन्दर्यानुभव की शक्ति का विकास करना है।

भावना प्रशिक्षण के अभाव में रागात्मक वृत्तियों-हर्ष-विषाद, प्रेम-घृणा, करूणा-क्रोध आदि का ठीक विकास नहीं होता और वे विकृत हो जाती हैं।, मानसिक कुण्ठा, प्रतिरोध, कलात्मक जड़ता तथा असामाजिक भावनाएँ घर कर लेती हैं, रचनात्मक प्रवृत्तियों का स्थान नकारात्मक एवं विध्वंसात्मक प्रवृत्तियाँ ग्रहण कर लेती हैं। कविता-शिक्षण इन विकृतियों से बचाने का एक उत्तम साधन है। इसके द्वारा रागात्मक प्रवृत्तियों का विकास होता है। बालक किसी रचना में, उसे साज-सँवार कर सुन्दर बनाने में आन्तरिक आन्तरिक आह्राद का अनुभव करता है और नवीन सृजन एवं अन्वेषण द्वारा षिवत्व की ओर अग्रसर होता है।

संक्षेप में कविता-शिक्षण के उद्देश्य इस प्रकार हैं-

1. शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण, उचित गति, यति, लय और भाव के अनुसार कविता का सस्वर वाचन।

2. कविता के प्रति सामान्य अनुराब-

(1) सुरूचिपूर्ण कविताओं का संकलन, स्वयं कविता-रचना का प्रयत्न और अभ्यास।

(2) प्रमुख कवियो की रचनाओं तथा काव्य-धारा का परिचय प्राप्त करना।

(3) कवता कण्ठस्थ करना तथा उचित भाव-भंगिमा एवं भावाभिव्यंजकता के साथ सस्वर पठन।

(4) अंतः कथाओं का जानना, समान भावों की कविताएँ ढूँढ़ना और कण्ठस्थ करना।

3. कवि द्वारा व्यंजित भावों, अनुभूतियो और कल्पनाओं को समझना, ग्रहण करना और रसास्वादन करना।

(1) प्रस्तुत कविता के मुख्य भावों को एवं विचारों को ग्रहण करना और कवि के आषय को समझना।

(2) मर्मस्पर्षी स्थलों की पहचान और तत्सम्बन्धी भावानुभूति।

(3) कविता के मूल प्रेरणा तत्त्व को समझना।

(4) कवि को अन्य रचनाओं को जानने का प्रयत्न करना।

(5) वाच्यार्थ के साथ लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ को समझना, व्याख्या करना एवं तत्सम्बन्धी भावों एवं विचारों को अपनी भाषा में अभिव्यक्त करना।

(6) यथावश्यक तद्विहित प्रसंगों की उद्धावना कर सकना।

4. छात्रों की रागात्मक शक्तियों का उदात्तीकरण, सात्विक भावों का उद्बोधन एवं उदात्त भावों का संवर्द्धन।

5. छात्रों की कल्पना शक्ति को जागृत करना तथा उन्हें मौलिक कल्पना के लिए प्रेरित करना।

6. काव्य सौन्दर्य तत्त्वों का बोध-

(क) नाद-सौन्दर्य का बोध जैसे

(1) वर्णो, शब्दों या पदों की आवृत्ति (अनुप्रास, यमक आदि)

(2) मध्यवर्ती तुकांतपद, दन्द की गति, यति मात्रा आदि।

(3) स्वरों का आरोह-अवरोह, कोमल तथा कठोर वर्ण; ओज, प्रसाद, माधुर्य गुण।

(4) भावानुरूप वर्ण-विन्यास; मधुर, द्वित्व, संयुक्त आदि।

(ख) भाव-सौन्दर्य; प्रेम, करूणा, क्रोध, उत्साह आदि विविध भावों की अनुभूति।

(ग) विचार-सौन्दर्य; कविता में वर्णित, नैतिक गुणों, धार्मिक विचारों, मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों की समझना। कबीर, तुलसी, रहीम, वृन्द आदि कवितयों के नीतिरपरक दोहों में विचार-सौन्दर्य की ही प्रधानता है।

(घ) शब्द-योजना के आधार पर दृष्य-चित्रोंकी कल्पना।

(ड़) प्रस्तुत एवं अप्रस्तुत की व्याख्या; उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का ज्ञान और उनके चमत्कार एवं सौन्दर्य की सराहना।

7. समालोचना सम्बन्धी विविध अंगों का सामान्य ज्ञान-

(1) विविध काव्यात्मक शैलियों का परिचय।

(2) भाव एवं विचार-सौन्दर्य गुण-दोष विवेचन और उनकी सम्यक् अभिव्यक्ति।

(3) वस्तु, चरित्र-चित्रण, वर्णन या संवाद, भाषा एवं शैली-शब्द चयन, छंद विधान, भाव-प्रवाह आदि

(4) कवि का जीवनवृत्त, उसकी रचनाएँ, उसके काव्य के विषय और साहित्यिक विचार आदि का परिचय।

(5) काव्यों की तुलनात्मक विवेचना।

8. कविता में वर्णित नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों द्वारा छात्रों की सद् वृत्तियों का विकास।

9. स्वतन्त्र साहित्यिक विचार, दृष्टिकोण एवं शैली का निर्माण।

15.9 शैक्षिक स्तरों की दृष्टि से कविता के प्रकार-

प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तरों के अनुसार कविता के तीन प्रकार हो सकते हैः-

1. प्राथमिक अवस्था-बालगीत तथा छंदोबद्ध लय वाले पद्य-प्राथमिक स्तर पर उपयुक्त होते हैं। बालकनाद सौन्दर्य प्रधान कविताएँ विषेष चाव से पढ़ते हैं। इस स्तर पर ऐसी कविताएँ पढ़ायी जायें जिनमें बालकों में कविता के प्रति रूचि जगे और आगे की कक्षाओं के कविता-शिक्षण की पृष्ठभूमि तैयार हो जाये।

छंदोबद्ध लययुक्त गेय पद इस अवस्था के बालकों को बहुत अच्छे लगते हैं। अतुकांत पद इसी प्रकार इन छात्रों की प्रिय नहीं होते। तुकांत पद छात्रों को आसानी से कण्ठस्थ भी हो जाते हैं। इन कविताओं

में भाषा की कठिनाई होनी चाहिए। शब्द सरल हों और भाव भी सरल हों। कविताएँ में भाषा की कठिनाई नहीं होनी चाहिए। शब्द सरल हो और भाव सरल हों। कविताएँ छोटी-छोआी हों। छन्द भी छोटें हों। कविता के विषय अनुभव सिद्ध हों।

इस स्तर पर केवल खड़ी बोली की कविताएँ ही चुनी जायें। बाल्य-जीवन एवं प्राकृतिक सौंदर्य-फूल, वन, बाग, जीव-जन्तु, सरिता, पर्वत, तारे, सूरज, चांद, वर्षा, वसंत, झरना आदि से सम्बन्धित कविताएँ इस स्तर पर रूचिकर और उपयोगी होती हैं।

2. माध्यमिक अवस्था-वर्णन प्रधान काव्य साहित्य- इस स्तर के लिए उपयुक्त है। इन कक्षाओं में भाव एवं विचार प्रधान कविताएँ पढ़ायी जा सकती है।, पर उनकी शैली वर्णन प्रधान हों। इतिवृतयात्मक कविताएँ इस स्तर के लिए सरलतापूर्वक ग्राह्ाृ सिद्ध होती हैं।

उत्साह, साहस, करूणा, राष्ट्रप्रेम, त्याग, बलिदान आदि भावनाओं की कविताएँ इस स्तर पर रूचिकर होती हैं। नीति के दोहे भी बालक खूब याद करते हैं। भाषा और शैली दोनों दृष्टियो ंसे इस स्तर पर कुछ उच्च स्तर की कविताएँ चुनी जा सकती हैं। अवधि एवं ब्रजभाषा की भी सरल कविताएँ पढ़ाई जा सकती है। पर प्रधानता खड़ी बोली की कविताओं को ही होनी चाहिए।

3. उच्चतर माध्यमिक अवस्था-भावात्मक एवं साहित्यिक सौंदर्य प्रधान कविताए इस स्तर पर उपयुक्त होती हैं। अलंकारयुक्त गूढ़, भावों तथा प्रतीकात्मक योजना वाली कविताएँ भी बालक समझाने लगते हैं।

इस स्तर पर हिन्दी काव्य साहित्य का पूर्ण प्रतिनिधित्व अपेक्षित है। चारों कालों के प्रतिनिधि कवियों की रचनाओं से प्रेरणाप्रद उत्तम अंष इस स्तर के लिए संकलित होने चाहिए। ब्रज और अवधी की कविताओं को भी अच्छा प्रतिनिधत्व होना चाहिए। कुछ कवियों की अनेक अथवा लम्बी कविताएँ देने की जगह अधिकाधिक कवियों की छोटी रचनाएँ देना अधिक संगत है।

इस स्तर के लिए कविताओं के चयन में यह भी ध्यान में रखना है कि आधुनिक युग क काव्य शैलियों का उचित प्रतिनिधत्व हो गया है जैसे द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगितवाद और प्रसंगवाद की प्रतिनिधि कविताएँ। स्वातं×योत्तर कालीन कवियों की भी कतिपय रचनाएँ इस स्तर पर पढ़ानी चाहिए।

इस स्तर पर छात्रों को हिन्दीत्तर भाषाओं की कविताओं से भी कुछ-कुछ परिचित होना आवष्यक है। अतः अन्य भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अनूदित कुछ कविताएँ भी रखी जाएँ। इसी प्रकार दो एक प्रसिद्ध विदेषी कवियो की हिन्दी में अनूदित कविताएँभी रखी जा सकती हैं। इनसे छात्रों की काव्य-रूचि के विस्तार और परिष्कार मे सहायता मिलेगी।

15.10 सारांश

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के बाद आप पद्य शिक्षण के शब्दार्थ कथन से परिचित हो चुके होंगे| पद्य सदा से ही भाषा की साहित्यिक एवं कलात्मक सौन्दर्यानुभूति का प्रमुख स्त्रोत रही है। आदिकाल से ही वह मानव हृदय में आनन्द एवं रस का संचार करती रही इसी कारण मानव हृदय पद्य के प्रति जितना विमुग्ध होता है| साथ ही इकाई का अध्ययन करने के बाद आप पद्य शिक्षण की व्यास विधि को जान चुके होंगे| इस विधि द्वारा कविता पढ़ाने पर कविता के भाव और कला दोनों ही पक्षों की एक कथावाचक की भाँति विषद व्याख्या करनी पड़ती है। इसलिए विधि का नाम भी व्यास प्रणाली रखा गया है।

15.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. पद्य शिक्षण की व्यास विधि का वर्णन कीजिये?

2. माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में पद्यशिक्षण की समीक्षा विधि का वर्णन कीजिये?

इकाई 16 माध्यमिक स्तर पर व्याकरण शिक्षण

16.1 प्रस्तावना
16.2 उद्देश्य
16.3 व्याकरण की परिभाषा
16.4 व्याकरण शिक्षण की उपयोगिता
16.5 व्याकरण शिक्षण की निगमन
16.6 व्याकरण शिक्षण की आगमन
16.7 व्याकरण शिक्षण की भाषसंसर्ग
16.8 व्याकरण शिक्षण की पाठ्य-पुस्तक विधियों का मूल्यांकन
16.9 सारांश
16.10 निबंधात्मक प्रश्न

16.1 प्रस्तावना

हमारे देश में व्याकरण के अध्ययन की अति प्राचीन परम्परा रही है। प्राचीन भारत में भाषा-अध्ययन की दृष्टि से व्याकरण पर इतना बल दिया जाता था कि व्याकरण स्वतः एक स्वतंत्र शास्त्र बन गया और उसका पृथक् अध्ययन होने लगा। निरूक्ताकार यास्क और अष्टाध्यायी के रचयिता पाणिनी विश्व के सर्वश्रेष्ठ वैयाकरणों में गिने जाते हैं। भाषा-प्रयोग का अध्ययन करते हुए भाषा की प्रवृत्तियों से परिचित कराना ही व्याकरण-शिक्षण का प्रयोजन है। व्याकरण-शिक्षण का कार्य माध्यमिक स्तर से ही प्रारम्भ होना चाहिए। उसके पहले प्राथमिक स्तर पर भाषा का शुद्ध प्रयोग और अभ्यास कराना ही वांछित है।प्रस्तुत इकाई में आप व्याकरण शिक्षण के विभिन्न बातों का अध्ययन करेंगे|

16.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के बाद

आप व्याकरण को परिभाषित कर पाएंगे|

आप व्याकरण शिक्षण की उपयोगिता समझ जायेंगे |

व्याकरण शिक्षण की पाठ्य-पुस्तक विधियों का मूल्यांकन|

16.3 व्याकरण की परिभाषा

भाषिक रूपों की सार्थक एवं क्रमयुक्त व्यवस्था ही उस भाषा का व्याकरण है।''

-लेनार्ड ब्लूमफील्ड

''हमारे देश में व्याकरण के अध्ययन की अति प्राचीन परम्परा रही है। प्राचीन भारत में भाषा-अध्ययन की दृष्टि से व्याकरण पर इतना बल दिया जाता था कि व्याकरण स्वतः एक स्वतंत्र शास्त्र बन गया और उसका पृथक् अध्ययन होने लगा। निरूक्ताकार यास्क और अष्टाध्यायी के रचयिता पाणिनी विष्व के सर्वश्रेष्ठ वैयाकरणों में गिने जाते हैं। कात्यायन, पतंजलि, कययट आदि भी प्राचीन भारत के प्रसिद्ध वैयाकरण हैं। 1314वीं शताब्दी में हेमचन्द्र द्वारा चरित प्राकृत भाषा का व्याकरण शब्दानुषासन प्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ है।

यूरोपीय देषों में भी व्याकरण की षिक्षा की परम्परा प्राचीन काल से ही मिलती है। पुनरूत्थान काल में वहाँ व्याकरण की षिक्षा पर बल दिया गया। भारत में अंग्रेजी राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर अंग्रेजी-षिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी व्याकरण की षिक्षा भी प्रारम्भ हुई। संस्कृत व्याकरण की परम्परा तो हमारे देश में थी ही। अतः संस्कृत और अंग्रेजी व्याकरणों के आधार पर हिन्दी भाषा के व्याकरण ग्रन्थ भी रचे जाने लगे।

हिन्दी गद्य-साहित्य का विकास होने पर हिन्दी भाषा का व्याकरण लिखने की ओर विद्वानों का ध्यान विषेष रूप से गया। नागरी प्रचारिणी सभा ने इस दिषा में विषेष प्रयास किया। कामताप्रसाद गुरू द्वारा लिखा गया हिन्दी व्याकरण उसी प्रयास का फल है डॉ. उदयानारायण तिवारी डॉ. बाबूराम सक्सेना, रामचन्द्र वर्मा, डॉ. हरदेव बाहरी, डॉ. भोलानाथ तिवारी आदि प्रसिद्ध भाषाषास्त्रियों ने 'हिन्दी व्याकरण' के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया।

भाषाषास्त्रियों एवं विषेषज्ञों ने व्याकरण की परिभाषा को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है। कुछ परिभाषाएँ निम्न प्रकार हैं-

पाणिनी और पतंजलि ने व्याकरण को 'षब्दानुषासन' कहा है। हिन्दी वैयाकरण श्री किषोरीदास वाजपेयी ने भी 'षब्दानुषासन' शब्द का ही प्रयोग किया है। यह नाम इस बात का द्योतक है कि व्याकरण ''षब्द की व्याख्या और वाक्य में उसका स्थान निर्धारित करता है'' डॉ. स्वीट के अनुसार व्याकरण भाषा का व्यावहारिक विश्लेषण है।

व्याकरणातिरेक सिद्धान्त और अव्याकृत सिद्धान्त दोनों ही अतिवादी सिद्धान्त हैं। व्याकरण का सर्वथा बहिष्कार हानिकारक है। पर व्याकरण को केवल परिभाषाओं एवं िनयमों का संग्रह मात्र मान कर पढ़ाना भी हानिकारक है। सहयोग सिद्धान्त व्याकरण के ठीक उपयोग पर बल देता है। भाषा की षिक्षा में उसका उचित प्रयोग आवष्यक है, जैसा कि करूणापति त्रिपाठी ने लिखा है-

''व्याकरण ग्रंथ का निर्माण करता हुआ भाषाविज्ञ यह नहीं कहता कि हमारे नियमों के अनुसार भाषा का व्यवहार करो, बस उसका कथन यह है कि अमुक-अमुक रूप और प्रवृतियाँ भाषा में अधिक प्रचलित हैं। अधिक प्रचलित होने से उनके द्वारा अर्थबोध भी शीघ्र और पूर्ण होता है। इनकी सहायकता से भाषा के प्रयोग में और उसे समझने में सुविधा होती है। अतः एक सीमा तक भाषा-शिक्षण में व्याकरण की षिक्षा सहायक होती है। पर व्याकरण इस □ंग से पढ़ाना चाहिए कि वह पढ़ाने वालों का सहायक मात्र हो, उनका सेवक हो, नियामक या शासक नहीं।''

16.4 व्याकरण शिक्षण की उपयोगिता

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि भाषा की षिक्षा में व्याकरण की षिक्षा की उपयोगिता और महत्त्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। आवष्यकता केवल इस बात की है कि व्याकरण के परंपरागत रूप को अर्थात् केवल नियमों और परिभाषाओं को रटाने की परंपरा को हटाना पड़ेगा। व्याकरण नियमों का संग्रह मात्र नहीं, वह भाषा के मानक रूप को बनाए रखने का आवष्यक साधन है।

भाषा-प्रयोग का अध्ययन करते हुए भाषा की प्रवृत्तियों से परिचित कराना ही व्याकरण-शिक्षण का प्रयोजन है। व्याकरण भाषा का अनुसरण करता है, भाषा व्याकरण का अनुसरण नहीं करती। व्याकरण को इसी कारण शास्त्र कहा गया है और लक्षण शास्त्र लक्ष्य शास्त्र का अनुसारी होता है। व्याकरण की भाषा के प्रचलित और मान्य रूपों को ही नियमों के रूप के सामने रखता है जिससे भाषा का परिनिष्ठित रूप चलता रहे। इससे भाषा की प्रेषणीयता और अर्थबोध में भी सरलता और सुलभता होती है।

व्याकरण भाषा का नियामक या शासक नहीं, उसका काम केवल अनुषासन है जिससे भाषा के प्रयोग में स्वच्छन्दता न आने पाए। अतःव्याकरणकी षिक्षा द्वारा बालक उन प्रयोगों एवं शुद्ध रूपों से परिचित होकर अपनी भाषा का संस्कार करता है और शुद्ध परिनिष्ठित भाषा का ही प्रयोग करता है।

व्याकरण-शिक्षण की उपयोगगिता संक्षेप में निम्नंकाति है-

(1) भाषित तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करना-ध्वनियों (उच्चारण और वर्तनी), शब्दों (षब्द-प्रयोग, शब्द-रचना, वाक्यों में शब्दों का स्थान आदि) और संरचनाओं (पदबन्धों, उपवाक्यों एवं वाक्यों के स्तर पर) का सही-सही ज्ञान और प्रयोग।

(2) भाषा की प्रकृति की पहचान-पहले यह लिखा जा चुका है कि प्रत्येक भाषा की प्रकृति दूसरी भाषा की प्रकृति से भिन्न है। यह भिन्नता ध्वनि-विज्ञान, रूप विज्ञान, शब्द विज्ञान, अर्थ विज्ञान, वाक्य विज्ञान आदि सभी दृष्टियों से पायी जाती है। व्याकरण द्वारा भाषा की प्रकृति एवं गठन का

व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है और भाषा-शिक्षण में इस व्यावहारिक ज्ञान में बहुत सहायता मिलती है।

हिन्दी एक बहुत बड़े क्षेत्र में भाषा है जिसमें अनेक जनपदीय भाषाओं का प्रयोग प्रचलन है। इन जनपदीय भाषाओं के उच्चारण और संरचनाओं का प्रभाव वहाँ के निवासियों द्वारा प्रयुक्त हिन्दी में स्पष्टत परिलक्षित होता है। यह प्रभाव या प्रक्षेप मानक हिन्दी भाषा की दृष्टि से अशुद्ध है। व्याकरण की षिक्षा से बालक इन अशुद्धियों को समझलेता है और शुद्ध हिन्दी का प्रयोग करने लगता है। नियम निकालने और नूतन ज्ञानोपलब्धि से बालक को आनन्द भी प्राप्त होता है और भाषा-विश्लेषण में उसकी रूचि बढ़ती है।

(3) अन्य भाषा सीखने में भी व्याकरण सहायक सिद्ध होता है। अपनी भाषा के व्याकरणिक रूपों का ज्ञान रहने से दूसरी भाषा के व्याकरणिक रूपों से तुलना करते हुए उस भाषा की ध्वनियों, शब्द-प्रयोगों और संरचनाओं को सीखने में यथेष्ट सहायता मिलती है।

(4) शिक्षक के लिए तो व्याकरण का सम्यक् ज्ञान अति आवष्यक है, जिससे वह यथा अवसर बालकों द्वारा की गई अषुद्धियों का संषोध कर सके, अषुद्ध प्रयोगों का विश्लेषण कर सके और समझ सके कि वह अषुद्ध क्यों है तथा उसका शुद्ध रूप क्या होना चाहिए।

शिक्षक द्वारा प्रस्तुत भाषा प्रयोग सम्बन्धी आदर्ष सर्वथा शुद्ध और निर्दोष तभी संभव है जब उसे भाषा के व्याकरणिक रूप का सम्यक् ज्ञान हो।

व्याकरण-शिक्षण की उपयोगिता के आधार पर ही इस व्याकरण-शिक्षण के उद्देष्यों का भी निर्धारण कर सकते हैं-

1. भाषिक तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करना और उनका सही प्रयोग करना।

2. भाषा की प्रकृति का परिचय प्राप्त करना। ध्वनि, रूप, अर्थ एवं वाक्य आदि अवयवों से परिचय प्राप्त कर उन्हें स्वाभाविक रूप से व्यवहृत करने की योग्यता प्राप्त करना।

3. शुद्ध, मानक भाषा के प्रयोग की आदत सुदृढ़ करना। स्थानीय भाषा में अषुद्ध प्रयोगों के प्रभाव से बचना।

4. भाषा-विश्लेषण की योग्यता प्राप्त करना और इस आधार पर शुद्ध एवं अषुद्ध भाषा की परख कर सकना।

5. अन्य भाषा के सीखने में अपनी भाषा के व्याकरणिक रूपों की सीखी जाने वाली भाषा के व्याकरणिक रूपों से तुलना कर सकना और समानता एवं असामता की तुलना द्वारा शीघ्र भाषा सीखने की कुषलता प्राप्त करना।

व्याकरण की षिक्षा प्राथमिक नहीं, माध्यमिक स्तर से प्रारम्भ होनी चाहिए

भाषा एक क्रियात्मक विषय है। शुद्ध आदर्ष, निरन्तर प्रयोग और अभ्यास ही भाषा सीखने के आधार हैं। अतः प्रारम्भिक अवस्था में बालकों के सामने शुद्ध भाषा का उदाहरण रखना और बालकों द्वारा उसका अनुकरण और प्रयोग करना ही उपयुक्त विधि है। इस कारण प्राइमरी कक्षाओं में व्याकरण का बोझ लादना और परिभाषाओं को रटाना उचित नहीं है। उनकी मानसिक परिपक्वता अभी ऐसी नहीं होती किवे नियमों और परिभाषाओं की विवेचना कर सकें।

भाषा-शिक्षण में व्याकरण का लाभ उसी अवस्था में हो सकता है जब बालक अपने भावों को शुद्ध भाषा में व्यक्त कर सकने की योग्यता प्राप्त कर चुके हों। कक्षा 6 से इसी कारण व्याकरण की षिक्षा प्रारम्भ करने का विचार भाषा-शिक्षण के सभी विषेषज्ञों ने प्रकट किया है-

अतः व्याकरण-शिक्षण का कार्य माध्यमिक स्तर से ही प्रारम्भ होना चाहिए। उसके पहले प्राथमिक स्तर पर भाषा का शुद्ध प्रयोग और अभ्यास कराना ही वांछित है। छठी कक्षा से सामान्यतः बालक शुद्ध भाषा का प्रयोग करने लगता है और भाषा-प्रयोग की वर्तमान प्रचलित प्रवृत्तियों को समझने के योग्य हो जाता है। वह व्याकरण-शिक्षण में शिक्षक द्वारा प्रस्तुत उदाहरणों के विश्लेषण द्वारा नियम या निष्कर्ष निकालने से भी सक्षम हो जाता है। इस कारण व्याकरण की षिक्षा माध्यमिक स्तर पर नियमित रूप से होने की आवष्यकताहै, केवल ध्यान यह रखना है कि (13) नियम, परिभाषा और पदव्याख्या सिखाने की अपेक्षा प्रयोग एवं व्यवहार को दृष्टि से आवष्यक बातें- उच्चारण, वर्तनी, शब्द रख्ना, वाक्य रचना, अनुच्छेद रचना, विराम चिह्न आदि-सिखायी जायें, (14) व्याकरण-शिक्षण का सम्बन्ध रचना एवं पठन कार्य से सदा बना रहे, और (3) समय-समय पर व्याकरणिक नियमों का जो छिट-पुट उल्लेख भाषा-शिक्षण में होता रहता है, उन्हें स्थायी बनाने के लिए अलग से भी व्यावहारिक व्याकरण की षिक्षा प्रदान की जाये।

व्याकरण-शिक्षण की विधियाँ

व्याकरण-शिक्षण की निम्नांकित विधियाँ प्रचलित हैं-

1. निगमन प्रणाली

क. सूत्र प्रणाली/विधि

ख. पाठ्यपुस्तक प्रणाली/विधि

2. आगमन प्रणाली

क. प्रयोग प्रणाली/विधि

ख. सहयोग प्रणाली विधि

16.5 सिद्धान्त प्रणाली अथवा निगमन प्रणाली

परम्परागत व्याकरण-शिक्षण प्रणाली को सिद्धान्त अथवा निगमन प्रणाली कहा गया है। इस प्रणाली में नियम या परिभाषा बताकर उसके उदाहरण दे दिए जाते हैं। इस प्रणाली के दो रूप लिखने हैं-

क. सूत्र प्रणाली-इसके अनुसार व्याकरण के नियम सूत्र रूप में रटा दिए जाते हैं और उनक लक्षण तथा उदाहरण बता दिए जाते हैं। यह प्रणाली अमनोवैज्ञानिक और परम्परागत संस्कृत व्याकरण-शिक्षण की ही नकल है जहाँ बालक संस्कृत भाषा में कुछ बोलने, लिखने और समझने का ज्ञान प्राप्त किए बिना ही लघुकौमुदी के सूत्रों को रटना प्रारम्भ कर देते हैं। इस प्रणाली से भाषा के प्रयोग का ज्ञान और अभ्यास नहीं हो पाता।

ख. पाठ्यपुस्तक प्रणाली -इस प्रणाली में भी व्याकरण की पुस्तक में दी गई परिभाषाएं और सिद्धान्त रटा दिये जाते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विषेषण आदि की परिभाषा और भेद छात्रों को बता दिए जाते हैं। इस प्रणाली से भी भाषा के प्रयोग का अभ्यास नहीं होता और बालक केवल व्याकरणिक नामों को याद करके संतोष कर लेता है।

16.6 आगमन प्रणाली

निगमन या सिद्धान्त प्रणाली दोषपूर्ण प्रणाली है। अतः उसकी जगह आगमन प्रणाली का प्रयोग वैज्ञानिक और उपयोगी माना जाता है। आगमन प्रणाली के दो रूप हैं-

क. प्रयोग प्रणाली के अनुसार व्याकरण पढ़ाते समय छात्रों के सम्मुख पहले उदाहरण रखे जाते हैं। अनेक उदाहरणों में समान लक्षण वाले अंषों के कार्य एवं गुण छात्रों से कहलाए जाते हैं, अंत में उन्ही के द्वारा कही हुई बातों के आधार पर सिद्धान्त या नियम निकलवाए जाते हैं, अंत में उन्हीं के द्वारा कही हुई बातों के आधार पर सिद्धान्त या नियम निकलवाए जाते हैं और फिर उन्हीं से उनका प्रयोग तक अभ्यास कराया जाता है। अतः इस प्रणाली में निम्नांकित सोपानों अथवा पदों के अनुसरण करना पड़ता है-

ख. सहयोग प्रणाली - आगमन प्रणाली का ही एक रूप सहयोग प्रणाली है। इसके अनुसार व्याकरण की षिक्षा अलग से देने की आवष्यकता नहीं है, बल्कि रचना-शिक्षण एवं गद्य-शिक्षण के साथ ही यथा प्रसंग होती चलतीं है। इसके उदाहरण हमें शब्द-शिक्षण , वर्तनी-शिक्षण , उच्चारण-शिक्षण , वाक्य-रचना-शिक्षण , अनुच्छेद रचना-शिक्षण के प्रसंग में दिए जा चुक हैं। गद्य-शिक्षण में अनेक प्रसंग आते हैं जिनका लाभ उठाकर शिक्षक व्याकरणिक रूपों और नियमों का ज्ञान प्रदान कर सकता है।

स्हयोग प्रणाली की सीमा यह है कि व्याकरण की विधिवत् षिक्षा नहीं हो पाती यथा प्रसंग आवष्यक नियम और प्रयोग बता दिए जाते हैं। इसमें प्रयोग प्रणाली की भाँति उदाहरण तुलना-विश्लेषण , नियम और अभ्यास का यथेष्ट अवकाष नहीं रहता और व्याकरण की षिक्षा गौण बन जाती है। व्याकरण का छिट-पुट ज्ञान या बिखरा हुआ ज्ञान इससे प्राप्त होता है, यद्यपि इसकी विषेषता यह अवष्य है कि व्याकरण पृथक् विषयय न होकर भाषा-शिक्षण के ही सन्दर्भ में पढ़ा दिया जाता है।

आगमन विधि निगमन विधि के ठीक विपरीत होती है। निगमन विधि में पहले नियम बताया जाता है, जबकि आगमन में पहले प्रयोग काया माध्यैनियम की खोज तो विद्यार्थी स्वयं करते है। यदि संज्ञा पढ़ानी है तो शिक्षक विद्यार्थियों के सामने कुछ वाक्य बोलेगा-या लिखोगा और उनहीें पर आधारित कुछ प्रश्न नियम के निकलवाने में विद्याथियों की सहायता करेगा और नियम निकलवायेगा, उदाहरणार्थ-

1. राम सुन्दर है।

2. श्याम पढ़ रहा है।

3. मेज अच्छी है।

4. पुस्तक अभी छपी नहीं है।

5. ताजमहल बहुत प्रसिद्ध है।

6. उदयपुर प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है।

शिक्षक इन वाक्यों से सम्बन्धित निम्नलिखित प्रश्न पूछेगा-

प्रश्न - पहले वाक्य में किसको सुन्दर बताया गया है?

उत्तर- राम को

प्रश्न -राम कौन है?

उत्तर- राम एक व्यक्ति है। राम-व्यक्ति का नाम

प्रश्न -दूसरे वाक्य में कौन पढ़ रहा है?

उत्तर-श्याम

प्रश्न -श्याम क्या है।

उत्तर- श्याम किसी व्यक्ति या बालक का नाम है। श्याम-व्यक्ति का नाम

प्रश्न - तीसरे वाक्य में किसको अच्छा बताया गया?

उत्तर-मेज को।

प्रश्न -मेज से किसका बोध होता है?

उत्तर-वस्तु का मेज- वस्तु का नाम

प्रश्न -पाँचवें वाक्य में किसको प्रसिद्ध बताया गया है?

उत्तर -ताजमहल को।

प्रश्न - ताजमहल क्या है?

उत्तर -ताजमहल एक सुन्दर इमारत (स्थान) है। ताजमहल-इमारत का नाम

प्रश्न -अन्तिम वाक्य में उदयपुर क्या है?

उत्तर -उदयपुर एक स्थान है। उदयपुर-स्थान का नाम

विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त उत्तरों को शिक्षक श्यामपट पर साथ-साथ ही लिखता जायेगा।

शिक्षक पुनः पूछेगा-

प्रश्न -राम, श्याम, मेज, पुस्तक, ताजमहल और उदयपुर में क्या समानता है?

उत्तर-ये सभी (किसी व्यक्ति, वस्तु, इमारत या स्थान के) नाम हैं।

शिक्षक -कथन- इस प्रकार के सभी नामों को संज्ञा कहते हैं। अब आप लोग बताइए कि संज्ञा शब्दों की क्या पहचान है?

उत्तर - किसी व्यक्ति, वस्तु, इमारत या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं।

अन्त में शिक्षक परिभाषा की त्रुटियों को सही करके विद्यार्थियों से उसका अभ्यास करने के लिए कहेगा।

परिभाषा-''किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते है।''

समालोचना-यह विधि पूर्णतः मनोवैज्ञानिक होने के कारण विद्यार्थियां ा का अवधान विषय पर केन्द्रित रखती है। इस विधि में तीन पद होते है और तीनों ही मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हैं-

1. उदाहरण-सबसे पहले विद्यार्थियों के सम्मुख कुछ उदाहरण रखे जाते हैं, जिन्हें वे चाव से पढ़ते हैं।

2. निरीक्षण एवं अवधान -छात्रों को उदाहरण पढ़कर शिक्षक के प्रश्न का उत्तर देनापड़ता है; इसलिए वे प्रत्येक वाक्य को बड़े ध्यान से पढ़ते हैं। उनका ध्यान पाठ पर केन्द्रित रहता है।

3.नियमीकरण-विभिन्न वाक्यों में समानता के आधार पर नियम भी विद्यार्थियों को स्वयं ही खोजना पड़ता है। इससे दो लाभ हैं-एक तो विद्यार्थी सूक्ष्म दृष्टि से नियम की खोज करते हैं। दूसरे, अपने ही खोजे हुए नियमों को भूलते नहीं। इन सभी दृष्टियोंसे यह विधि अच्छी है।

4.आगमन-निगमन विधि-यह कोई नयी नही; अपितु आगमन और निगमन दोनो ंविधियों का सम्मिलित रूप है। इसमें आगमन विधि द्वारा विद्यार्थी नियम की खोज करते हैं और फिर निगमन विधि द्वारा उस नियम का अभ्यास करते हैं; उदाहरणार्थ-संज्ञा पढ़ाने के लिए पहले उपर्युक्त विधि से नियम की खोज की जायेगी। उसके पश्चात् अभ्यास के लिए कुछ वाक्य लिखकर निगमन विधि द्वारा बालेकों से उनमें से संज्ञा शब्द छटवायें जायेंगे।

समालोचना-यह विधि सबसे अधिक प्रभावी है- क्योंकि इसमें आगमन विधि के सीाी गुण विद्यमान रहते ही हैं; परन्तु निगमन विधि का एक भी दोष नहीं आ पाता; क्योंकि नियम की खोज तो विद्यार्थी स्वयं करते हैं, जो पूर्णतः मनोवैज्ञानिक है। दूसरे, उसे नियमका कोई अस्तित्व नहीं जिसका अभ्यास नहीं किया जा सके या किया जाये। अतः, निगमन विधि का उपयोग तो केवल नियम को विद्याथियों के मस्तिष्क में सुदृढ़ बनाने बनाने के लिए किया जाता है। इस प्रकार आगमन-विधि द्वारा मनोवैज्ञानिक विधि से नियम की खोज और निगमन विधि द्वारा नियम का उपयोग तथा अभ्यास दोनों मिलकर इस विधि को सबसे अधिक महत्वपूर्ण बना देते हैं। यह विधि सभी स्तरों पर प्रयोग में लायी जा सकती है।

16.7 भाषा संसर्ग विधि-

जो विद्वान व्याकरण की विधिवत् षिक्षा न दिये जाने के पक्ष में हैं, उनकी दृष्टि से यह सर्वोत्तम विधि कही जा सकती है। इस विधि में व्याकरण का सैद्धान्तिक ज्ञान न दिया जाकर उसके व्यवहारिक पक्ष पर जोर दिया जाता है। विद्यार्थियों को ख्याति प्राप्त लेख्कों की कृतियाँ पढ़ने को दे दी जाती हैं। वे उनहें पढ़कर स्वयं निर्णय करते हैं कि भाषा का सही रूप कौन-सा है?

समालोचना - यहविधि इस रूप में मनोवैज्ञानिक अवष्य है कि विद्यार्थियों को बुद्धि और तर्क से काम लेना पड़ता है; परन्तु यह होते हुए भी यह विधि सर्वािा अपूर्ण हैं। इसके कई कारण हैं-

1. इस विधि से भाषा की षिक्षा दी जा सकती है, व्याकरण की नहीं। अतः, यह भाषा-शिक्षण की विधि कही जा सकती है, व्याकरण-शिक्षण की नहीं।

2. दूसरे, भाषा के शुद्ध और अषुद्ध रूप का विवेचन करने का कोई मापदण्ड अवष्य होना चाहिए, जो इस विधि में ही नहीं।

3. सम्भव है कि विद्यार्थी भाषा और अषुद्ध रूप का निर्णय करने में ही उलझ जायें और वे भाषा ज्ञान प्राप्त कर ही न सकें।

इस प्रकार यह विधि स्वयं पूर्ण ने होने के कारण व्याकरण-शिक्षण के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकती। दूसरी विधियों की सहयोगी अवष्य हो सकती है।

16.8 व्याकरण शिक्षण की पाठ्यपुस्तक विधियों का मूलयांकन

व्याकरण की विधियों का निष्कर्ष-व्याकरण शिक्षण की सभी विधियों में अपनी-अपनी विषेषताएँ और कमियाँ है। जो लोग व्याकरण की विधिवत् षिक्षा देने के पक्ष में नहीं हैं, वे भाषा संसर्ग और समवाय विधि को सबसे अच्छा समझते हैं; परन्तु इन विधियों की भी अपनी कमियाँ हैं। इनके द्वारा दी गयी व्याकरण की षिक्षा एक-अंगीय होती है। इन विधियों में सैद्धान्तिक पक्ष का तो कोई अस्तित्व ही नहीं। ये विधियाँ उच्च स्तर पर व्याकरण-शिक्षण के लिए उपयुक्त हो सकती हैं, माध्यमिक स्तर पर नहीं। हमारी दृष्टि में आगमन-निगमन विधि व्याकरण्-शिक्षण के लिए सर्वोत्तम है; क्योंकि यह पूर्णरूपेण मनोवैज्ञानिक है। हाँ, अभ्यास के लिए भाषा संसर्ग और समवाय विधि भी उत्तम सिद्ध हो सकती है। इस प्रकार व्याकरण का शिक्षण तो आगमन-निगमन विधि भी उत्तम सिद्ध हो सकती है। इस प्रकार व्याकरण का शिक्षण तो आगमन-निगमन विधि से किया जाय; परन्तु उसका अभ्यास भाषा संसर्ग तथासमवाय विधियों द्वारा कराया जाय तो और अच्छा रहेगा। व्यवहारिक व्याकरण-शिक्षण क्या हैं- इसकी कुछ झलक तो हमने ऊपर दे दी है। इसी को और अधिक स्पष्ट आगे कर रहे हैं।

व्यावहारिक व्याकरण-शिक्षण

कुछ विद्वान व्याकरण के विधिवत शिक्षण के पक्ष में न होकर उसकी व्यावहारिकता पर अधिक बल देते है; यथार्थतः, सिद्धान्तों की उस समय तक कोई उपयोगिता है भी नहीं जब तक कि उन्हं े व्यवहार में न लाया जाय। व्याकरण की व्यावहारिकता भाषा की शुद्ध अभिव्यक्ति (मौलिक एवं लिखित) में ही है। दूसरे, कुछ विद्वानों का यह भी कहना कि व्याकरण-शिक्षण नीरस होता है। परन्तु, इसे हम बहुत बड़ा दोष इसलिए नहीं मानते कि इस दोष को तो प्रयासों से दूर किया जा सकता है। कैसे दूर किया जा सकता है, इसको उललेख हम आगे कर रहे हैं। हाँ, इतनी बात अवष्य है कि व्याकरण की व्यावहारिक षिक्षामें समय की बचत के साथ-साथ व्याकरणिक त्रुटियों को दूर कर शुद्ध भाषा का यथेष्ट अभ्यास हो जाता है। अब प्रश्न उठता है- व्याकरण की व्यावहारिक षिक्षा कैसे दें?

व्याकरण की व्यावहारिक षिक्षा देना कोई कठिन कार्य नहीं, लेकिन कुशल शिक्षक की आवश्यकता अवश्य पड़ती है। व्याकरण की व्यावहारिकषिक्षाके लिए शिक्षक को केवल इतना करना है किवह व्याकरण की जोभी बात छात्रों को बताना चाहिता है, उसे भाषा की अन्य विधाओं-गद्य, पद्य, नाटक, कहानी आदि के शिक्षण के साथ-साथ दे। उदाहरण के रूप में आप इसी बात को इस प्रकार समझिए-मान लीजिए आपको बच्चों को 'संज्ञा' शब्द पढ़ाने हैं और आप गद्य-पाठ पढ़ा रहे हैं। जहाँ आप गद्य में कठिन शब्द या स्थलों की व्याख्या कर रहे हैं, उसी स्थल पर यदि कोई कठिन शब्द संज्ञा है तो आप बता दीजिए कि ऐसे शब्दों को व्याकरण की दृष्टि से संज्ञा कहते हैं। हाँ केवल इतना बताना ही पर्याप्त नहीं होगा कि वह संज्ञा शब्द है; आपको यह भी बताना पड़ेगा कि वह शब्दसंज्ञा क्या है और संज्ञा शब्दों को व्याकरण की दृष्टि से संज्ञा कहते है। हाँ, केवल इतना बताना ही पर्याप्त नहीं होगा कि वह संज्ञा शब्द है; आपको यह भी बताना पड़ेगा कि वह शब्द संज्ञा क्यों है और संज्ञा शब्दों की क्या पहचान हैं? लेकिन आप विस्तार में न जाकर 14-4 मिनट में ही अपनी बात समाप्त करके आगे बढ़ जायेंगे। पुनः कोई संज्ञा शब्द आता है तो आप बच्चों को पूछिये कि वह शब्द व्याकरण की दृष्टि से क्या है? संम्भव है कुछ बच्चे उत्तर दे दें। यदि न दे पायें तो आप उन्हें पुनः समझा दीजिए और यदि दे पायें उन्हीं में से किसी अन्य बच्चे से पूछ लीजिए कि वह शब्द संज्ञा क्यों है? इस प्रकार बार-बार पूछने पर संज्ञा शब्द बच्चों को पूरी तरह याद हो जायेंगे। परन्तु, इस बात का विषेष रूप से ध्यान रखिये कि आपका पाठ कहीं व्याकरण-पाठ न बन जाय। वहाँ व्याकरण-शिक्षण आपका उद्देश्य नहीं-अस दृष्टि से व्याकरण की षिक्षा तो दीजिए, परन्तु उसी में उलझिए मत। पद्य-शिक्षण में अलंकार बगैरह सभी की षिक्षा भी इसी प्रकार दी जा सकती है।

व्याकरण-शिक्षण से सम्बन्धित हमने पीछे बातें कहीं हैं, उनसे व्याकरण-शिक्षण प्रभावषाली बन सकता है इनके बावजूद भी दो समस्याएँ शेष रह जाती हैं वे हैं-

1. व्याकरण-शिक्षण अतिर नीरसहोता है; अतः उसे पाठ्यक्रम में स्थान देने की क्या आवष्यकता है?

2. व्याकरण-शिक्षण को रूचिकर कैसे बनाया जाय?

व्याकरण की शिक्षा इसलिए दिया जाना आवश्यक है कि व्याकरण शिक्षण के अभाव में भाषा के शुद्ध रूप को जानना सम्भव नहीं। दूसरे, व्याकरण-शिक्षण को रूचिकर बनाने की दृष्टि से किसी भी विषय का शिक्षण न तो इतना नीरस ही होता है कि उसमें बालक बिल्कुल रूचि ले ही नहीं और न ही इतना सरस कि विद्यार्थी एक ही विषय में रूचि लेते रहें। अपवादों की बात दूसरी है। यदि अपवादों को छोड़ दिया जाये तो व्याकरण-शिक्षण को भी उतना ही सरस बनाया जा सकता है, जितना कहानी वगैरह को। यह सब शिक्षक की कुषलता पर निर्भर करता है। शिक्षक इन सभी परिभाषाओ का विश्लेषण करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि व्याकरण-

(1) भाषा में वाक्यों की, वाक्यों में शब्द और शब्दों में अक्षरों की स्थिति और महत्त्व को स्पष्ट करता है। (2) भाषा से सम्बन्धित नियमों का बोध कराता है।

ये दोनों ही बातें 'शब्दानुषासन' (शब्द$अनु$ शासन) सूत्र में निहित हैं। संक्षेप में- व्याकरण भाषा में प्रयुक्त शब्दों और वाक्यों सम्बन्धी नियमों की जानकारी कराता है।

वस्तुतः व्याकरण वह शास्त्र है। जिसके ज्ञान प्रयोग से भाषा में एकरूपता और रोचकता आती है। भाषा के जिस रूप को अधिकांष सभ्य और षिक्षित कहे जाने वाले लोग काम लोते हैं, वहीं रूप शुद्ध और संस्कृत समझा जाता है। उदाहरणार्थ गाय को स्त्रीलिंग मानकर ''गाय जाती है'' यह लिखना, पढ़ना और बोलना ही षिक्षित लोग अच्छा और शुद्ध मानते हैं। अतः जो लोग हिंदी व्याकरण प[?]गे वे पाएंगे कि वहाँ ''गाय जाती है'' शुद्ध है और इसी को अपना कर प्रयोग में लाना चाहिए। ''गाय जाता है'' इसका नहीं। इस तरह हिंदी व्याकरण का ज्ञान षिक्षित लोगों के बीच ''गाय जाती है'' इसके प्रयोग में एकरूप्ता लाता है। यदि कोई शिक्षित समाज के बीच ''गाय जाता' का प्रयोग करे तो सुनने वाली उसकी भाषा को अशुद्ध, आरोचक और असंस्कृत कहेंगे तथा उसे अपनढ़ गँवार घोषित करेंगे। एकरूपता में सौन्दर्य होता है।

16.9 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने जाना कि संस्कृत व्याकरण की परम्परा तो हमारे देश में थी ही। अतः संस्कृत और अंग्रेजी व्याकरणों के आधार पर हिन्दी भाषा के व्याकरण ग्रन्थ भी रचे जाने लगे। हिन्दी गद्य-साहित्य का विकास होने पर हिन्दी भाषा का व्याकरण लिखने की ओर विद्वानों का ध्यान विषेष रूप से गया। हिन्दी एक बहुत बड़े क्षेत्र में भाषा है जिसमें अनेक जनपदीय भाषाओं का प्रयोग प्रचलन है। व्याकरण-शिक्षण का कार्य माध्यमिक स्तर से ही प्रारम्भ होना चाहिए। उसके पहले प्राथमिक स्तर पर भाषा का शुद्ध प्रयोग और अभ्यास कराना ही वांछित है। व्याकरण-शिक्षण की निगमन एवं आगमन विधियाँ प्रचलित हैं|

16.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. व्याकरण शिक्षण की उपयोगिता की व्याख्या कीजिये?

2. व्याकरण शिक्षण की आगमन विधि का वर्णन कीजिये?

इकाई -17 भाषा अधिगम मे भाषा-प्रयोगशाला

इकाई की रुप रेखा

17.1 प्रस्तावना
17.2 उददेश्य
17.3 भाषा-प्रयोगशाला की संरचना
17.4 भाषा-प्रयोगशाला की अर्थ एंव परिभाषा
17.5 भाषा-प्रयोगशाला
17.6 भाषा-प्रयोगशाला की प्रयोग विधि
17.7 भाषा-प्रयोगशाला में उपकरण तथा प्रक्रिया
17.7.1 श्रवण कोष्ठ
17.7.2 परामर्शदाता का कोष्ठ
17.7.3 नियंत्रण कक्ष कोष्ठ
17.8 भाषा-प्रयोगशाला की उपयोगिता
17.9 भाषा-प्रयोगशाला से लाभ
17.10 भाषा-प्रयोगशाला की सीमाएँ
17.11 सारांश
17.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
17.13 निबन्धात्मक प्रश्न
17.14 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

17.1 प्रस्तावना

विज्ञान और तकनीकी के विकास ने मानव के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित किया हैं। शिक्षा-व्यवस्था अैार शिक्षण-प्रणाली भी इनसे अछूती नहीं हैं। इनके माध्यम से परम्परागत शिक्षण की त्रुटियों और न्यूनताऔ को दूर करने और शिक्षण को सरल और अधिगम को चिर स्थाई बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं। शिक्षण को सरल और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुरूप बनाने में भी विज्ञान और तकनीकी का योगदान अद्धितीय हैं। इस दिशा में भाषा-प्रयोगशाला एक उपयोगी कदम हैं।

भाषा प्रयोगशाला एक नेटवर्क अनुप्रयोग है जो आधुनिक भाषा शिक्षण में एक सहायता के रुप में प्रयोग किया जाता है। यह शिक्षण के पारंपारिक तरीके से और पूरी तरह से अलग भाषा कौशल

प्रदान करने में एक तकनीकि स्त्रोत है। भाषा प्रयोगशाला मूल भाषा कौशल की पद्धति को विकसित करता है। यह व्यक्तिगत ध्यान का लाभ उठाने सुनने और विधि सुनने के माध्यम से सीखने और पूरी तरह से कम्प्यूटरीकृत वातावरण में सीखने की पद्धति के माध्यम से भाषा में महारत हासिल करने के लिए एक आसान तरीका प्रदान करता है। यह छात्रों को उनके लेखन और मौखिक क्षमताओं सही करने के लिए अनुमति देता है। यह छात्रों को भाषा पर महारत हासिल करने के लिए मदद करता है।

17.2 उददेश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

भाषा प्रयोगशाला के अर्थ स्पष्ट सकेगें।

भाषा प्रयोगशाला के मूल्यों को बता सकेंगे।

भाषा प्रयोगशाला का भाषा शिक्षण अधिगम में महत्व जान सकेंगे।

भाषा प्रयोगशाला का भाषा शिक्षण अधिगम में प्रयोग को जान सकेंगे।

भाषा शिक्षण अधिगम में उपयुक्त भाषा प्रयोगशाला की विधियों को जान सकेंगे।

भाषा प्रयोगशाला के द्वारा भाषा शिक्षण अधिगम का ज्ञान प्राप्त का सकेंगें।

भाषा प्रयोगशाला के बारे में बता सकेंगे।

विद्यार्थियों को अभ्यास करा सकेंगे।

विद्यार्थियों के अध्ययन का मूल्यांकन कर सकेंगे।

17.3 भाषा-प्रयोगशाला की संरचना

भाषा-प्रयोगशाला की संरचना का उद्भव शिक्षण तकनीकी से सम्बद्ध अमेरिकी संस्था-राष्ट्रीय शैक्षिक तकनीकी परिषद (National Council of Educational Technology – NCET) द्वारा आरम्भ हुआ। भाषा-प्रयोगशाला का लक्ष्य विज्ञान प्रयोगशाला की तरह कक्षा के विधार्थियों को भाषा के सूक्ष्म पक्षों से परिचित कराना है ताकि वे उच्चारण और प्रयोग के क्षेत्र में स्पष्टता और सटीकता ला सके। भाषा-प्रयोगशाला में प्रत्येक विधार्थी के बैठने के लिए ऐसा केबिन बना होता है जहाँ से वह कक्षा के अन्य विधार्थियों को देख-सुन नहीं सकता, लेकिन शिक्षक के निर्देषो को सुन सकता है। इस केबिन में टेपरिकॉर्डर, हैडफोन और भाषा कौषल के विभिन्न पक्षो से सम्बन्ध आँडियों कैसेटस की व्यवस्था होती हैं।

आजकल माइक्रोफोन, टेपरिकॉडर और ऑडियो कैसेट्स के स्थान पर कम्प्यूटर का प्रयोग प्रचलित हो रहा है कम्प्यूटर के माध्यम से ऑडयो रिकॉडिंग ध्वनयांकन और प्रस्तुतीकरण के अलावा ध्वनि और उच्चारण के सूक्ष्म विश्लेषण की सुविधा वाले अनेक कम्प्यूटर साफ्टवेयर बाजार में उपलब्ध हैं। इस प्रकार के सॉफ्टवेयर की मद्द से ध्वनि की सूक्ष्म और सटीक रिकॉर्डिंग और स्पष्ट प्रस्तुति सम्भव हैं। कम्प्यूटर की क्षमता टेप-रिकॉर्डर और ऑडियो कैसेट्स की अपेक्षा काफी अधिक होती हैं इसलिए किसी सामान्य कक्षा के सभी विधार्थियों के उच्चारण, वाचन और शैली के नमूने को भावी सन्दर्भ के लिए सुरक्षित रखा जा सकता हैं।

भाषा-प्रयोगशाला में शिक्षक का स्थान ऐसी स्थिति में होता है कि वह सभी विधार्थियों पर नजर और नियन्त्रण रख सकें। उसकी मेज पर विधार्थियों के पास मौजूद उपकरणों के साथ ही प्रयोगषाला के सभी केबिनों से सम्पर्क की सुविधा होती हैं। वह किसी भी विधार्थी से व्यक्तिगत या सभी विधार्थियों से एक साथ सम्पर्क करके निर्देश दे सकता है यद सम्पर्क द्विपक्षीय होता है अर्थात विधार्थी भी अपने केबिनों में उपलब्ध बटन दबाकर शिक्षक से सम्पर्क कर सकते हैं। इस प्रकार शिक्षक और विधार्थी अपने स्थान पर बैठे रहकर भी दिशा निर्देशों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। समस्या का समाधान कर सकते हैं और एक के बाद दूसरी के क्रम से अनेक गतिविधियों का संचालन कर सकते हैं।

17.4 भाषा-प्रयोगशाला की अर्थ एंव परिभाषा

भाषा-प्रयोगशाला का अर्थ स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्धानों ने परिभाषाएँ दी हैं जिनका विवरण निम्न प्रकार हैं -

ए. एस. हियास (***A.S. Hayas***) - ने भाषा-प्रयोगशाला की परिभाषा इस प्रकार दी हैं, ‘‘भाषा-प्रयोगशाला एक कक्षा-कक्ष classroom हैं जिसमें विदेशी भाषा के अधिगम को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए विशेष प्रकार के उपकरण जुटाये जाते हैं। सामान्यतया यह कार्य साधारण व्यवस्था में इतना प्रभावशाली नही बन सकता।’’

रॉबर्ट लेडो (***Robert Lado***) के विचार में, भाषा-प्रयोगशाला भाषा शिक्षण का केन्द्र है जिसमें छात्रों को सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने आदि के लिए नियन्त्रित वातावरण प्रदान किया जाता हैं।’’

17.5 भाषा-प्रयोगशाला

भाषा-प्रयोगशाला कुछ टेप-रिकॉडरो का नेटवर्क है, जिसमें अध्यापक के टेपरिकॉर्डर Cansole से 8 से लेकर 30-32 टेप रिकॉर्डर जुड़े होते हैं।

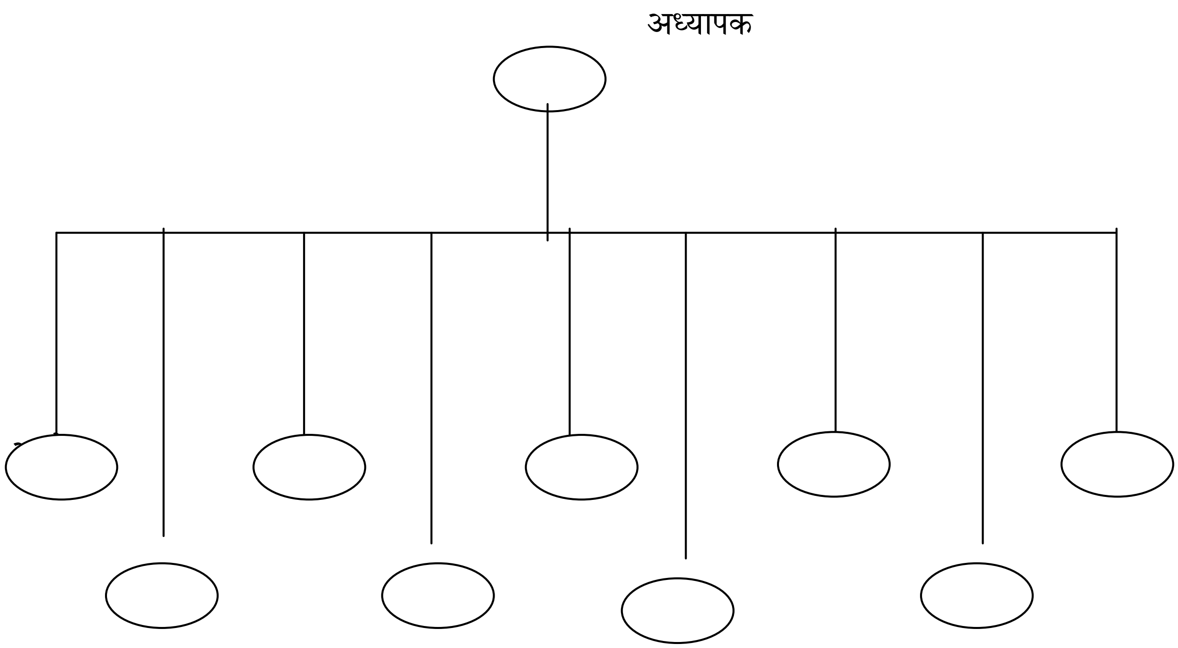

पाठ कन्सोल से छात्रों तक पहुँचाता हैं। छात्र कन्सोल से आने वाले पाठ, जैसे साँचा अभ्यास को सुनकर अपना वाक्य बोलते हैं। छात्र के टेप रिकाँर्डर पर दोनों ध्वानियाँ अंकित हो जाती हैं। फिर छात्र अपना टेप रिकॉर्डर चलाकर दोनों ध्वा ानियों या उच्चारणों का मिलान कर सकता - और अपना निष्पादन सुधार सकता हैं। कुछ संपन्न भाषा-प्रयोगशालाओं में भाषा के संदर्भ को स्पष्ट करने के लिए फिल्म प्रोजेक्टर, स्लाइड प्रोजेक्टर आदि का भी प्रयोग किया जाता हैं। चूँकि भाषा-प्रयोगशाला जुड़ा हुआ हैं, अध्यापक छात्रों के कार्य का अपनी जगह से निरीक्षण कर सकते हैं और उन्हें व्यक्तिगत या सामूहिक सुझाव दे सकते हैं। इसी तरह छात्र कंसोल की व्यवस्था के अनुसार आपस में बातचीत कर सकतें हैं। भाषा-प्रयोगशाला ध्वनि उच्चारण, वाक्योंच्चारण साँचा अभ्यास, निंयत्रित वार्तालाप, वाचन आदि अनेक कार्या के लिए उपयोगी साधन हैं।

भाषा-प्रयोगशाला में वाक्य बोलने के लिए साँचा अभ्यास का उपयोग किया जाता हैं। ध्वनि के उच्चारण के लिए श्रवण और भाषा बोलना के अभ्यास बनाये जाते हैं। टेप पर दो बार आदर्श उच्चारण होगा, छात्र अपना उच्चारण करेगे। फिर टेप चलाकर दोनों की तुलना कर सकते हैं।

जैसे-

टेप	:	काना
वक्ता	:	....
टेप	:	काना
वक्ता	:	....

छात्र टेप पर अभ्यास करते समय पहले व्यक्तिगत ध्वानियों का उच्चारण सीखेंगें, फिर व्यतिरेक का उच्चारण का उच्चारण सीखेंगें।

उदाहरण के लिए /भ/ के उच्चारण अभ्यास का ाँचा देखिए। यह/ब/ के व्यतिरेक में होगा।

सोपान 1 /भ/ की पहचान

सोपान 2 /ब/ और/भ/के अंतर की पहचान

सोपान 3 /ब/ का उच्चारण

सोपान 4 /भ/ का उच्चाबण जैसे भार, भाल, सभा, लाभ आदि।

सोपान 5 /ब/ और /भ/में व्यतिरेक का अभ्यास जैसे-बला/भला

/बार/भार आदि।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1- भाषा प्रयोगशाला को परिभाषित करते हुए भाषा प्रयोगशाला का वर्णन कीजिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

17.6 भाषा-प्रयोगशाला की प्रयोग विधि

भाषा-प्रयोगशाला का लक्ष्य भाषा के व्यवहारिक पक्ष को सुदृढ़ करना हैं इसके द्वारा उच्चारित भाषा के अवयवों जैसे - उच्चारण, वलाघात, विराम, भाव, शैली, शब्द-चयन, वाक्य संरचना, और विचार संयोजन के साथ पुस्तक वाचन और कविता पाठ इत्यादि को शुद्ध विधि का शिक्षण, अभ्यास और संसोधन का प्रयास किया जाता हैं। इसके लिए शिक्षक साहित्य की विविध विधाओं के ध्वन्यांकित टेप या सी.डी. विधार्थियो का सुनवाता हैं। बीच-बीच में वह भाषा उच्चारण और शैली के ध्यातव्य पक्षों पर टिप्पणी भी करता है और उन्हें नाटे करने करने की हिदायत देता है ताकि विधार्थी उन पक्षों पर विषेश ध्यान दे।

इसके उपरान्त वह विधाथियों को सुनी गई विधा में ही पुस्तक अथवा कम्प्यूटर स्क्रीन की मदद से वाचन या पाठ करने और ध्वन्यांकित। रिकार्ड करने का निर्देश देता हैं। फिर विधार्थी उस ध्वन्यांकित अंश को सुनते है और नोट किये गये बिन्दुओं के आधार पर अपना मूल्यांकन करते हैं। इस कार्य में शिक्षक विधार्थी की सहायता करता हैं। वह क्रमशः प्रत्येक विधार्थी के ध्वन्यांकित वाचन। पाठ के अंश सुनकर सुधार के लिए परामर्श देता है। यह प्रक्रिया पाठ्य अंश के वाचन में अपेक्षित सुधार आने तक दोहराई जाती हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 2- भाषा प्रयोशाला की प्रयोगविधि के मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डालिए।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

17.7 भाषा-प्रयोगशाला में उपकरण तथा प्रक्रिया

भाषा-प्रयोगशाला के निम्नलिखित तीन अनुभाग होते हैं-

1. श्रवण सुनना कोष्ठ-बूथ (Hearing Booths)

2. परामर्शदाता/सलाहकार का कोष्ठ

3. नियंत्रण कक्ष

17.7.1 श्रवण कोष्ठ

प्रायः भाषा-प्रयोगशाला में 16 अथवा 20 श्रवण कोष्ठ होते है प्रत्येक कोष्ठ में एक मेज तथा कुर्सी होती है जिस बैठकर छात्र कार्य कर सकता है। कोष्ठ में अन्य सामग्री निम्न प्रकार होती हैं।

1. दूरभाष- परामर्षदाता से बार्तालाप के लिए

2. श्रवणेन्द्रिय दूरभाष - ईयरफोन (Ear phones)

3. स्विच (Switches)

4. टेप रिकॉर्डर Tape recorder

उपर दर्र्शाये गये यंत्रों का छात्रों का नियंत्रण कक्ष से सम्पर्क स्थापित होता है अपनी आवाज को रिकार्ड करने तथा फिर सुनने का प्रबन्ध होता है छात्र आवश्यकता अनुसार टेप का चुनाव कर लेते हैं।

प्रत्येक कोष्ठ की चार फुट की ऊँची दीवारें अथवा अलग-अलग भाग होते है ताकि छात्र बिना किसी बाधा के अपना कार्य कर सके। छात्र परामर्शदाता से परामर्श ले सकता हैं।

17.7.2 परामर्शदाता का कोष्ठ

इस कोष्ठ में कई टेप तथा मास्टर टेप रहते हैं तथा इस प्रकार की व्यवस्था रहती हैं जिससे परामर्शदाता छात्र से सम्पर्क स्थापित कर सके।

परामर्शदाता के कोष्ठ में निम्नलिखित सामग्री उपलब्ध होती हैं -

क) डिस्टीब्यूशन स्विच्सः इसमें माध्यम से छात्रों के लिए रिकार्ड किया गया प्रोग्राम नियत्रिंत किया जाता हैं।

ख) मॉनीटरिंग स्विच्सः इनके माध्यम से छात्रों को आवाज आदि को परामर्शदाता सुन सकता है तथा उपयुक्त सुधार कर सकता हैं।

ग) इण्टरकॉम स्विच्सः इसके द्धारा छात्रों से दोतरफा Two ways सम्प्रेक्षण किया जाता हैं।

घ) ग्रुप कॉल स्विच्सः इसके द्वारा उन छात्रों के लिए घोषणाएँ की जाती हैं जो विशेष टेप से कार्य करते हैं।

ड.) ऑल कॉल स्विच्सः यह सभी छात्रों के लिए घोषणाएँ करने के लिए प्रयुक्त किया जाता हैं।

17.7.3 नियंत्रण कक्ष कोष्ठ

इस कक्ष में सभी प्रकार के टेप रिकार्ड तथा उपकरण होते है ताकि आवश्यकतानुसार छात्रों को उपलब्ध कराये जा सकें।

क) अध्यापक तथा परामर्शदाता मास्टर टेप का प्रयोग करता हैं। प्रत्येक कोष्ठ में विधमान टेप में आवाजों को रिकार्ड कर लिया जाता हैं।

ख) छात्र अपने टेप को सुनता हैं तथा मौखिक अनुक्रिया करता हैं ये अनुक्रियाएं छात्र के बूथ में रखे गये उपकरण द्धारा रिकार्ड की जाती हैं। छात्र अपने टेप का अनेक बार प्रयोग कर सकता हैं। वह स्वंय जान जाता है कि उसकी उपलब्धियाँ संतोसनक हैं अथवा नहीं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 3- भाषा प्रयोशाला के किसी एक अनुभाग को संक्षेप में बताएँ।

....
....
....

....
....
....
....
....
....

17.8 भाषा-प्रयोगशाला की उपयोगिता

भाषा-प्रयोगशाला मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास का उपयोगी माध्यम हैं। मौखिक भाषा का अधिगम परिवार और परिवेश से होता हैं। लेकिन वहाँ प्रचलित भाषा का उच्चारण, शब्द-प्रयोग, शैली इत्यादि की दृष्टि से शुद्ध और सटीक होना प्रायः असंभव ही होता हैं। विधालय में भी सभी विधार्थियों और शिक्षकों की भाषा का सर्वभावेन त्रुटिहीन होना असम्भव हैं। कक्षा में हिन्दी-षिक्षण के दौरान शिक्षक से यथायोग्य वाचन की अपेक्षा की जाती हैं किन्तु उसे सभी विधार्थियों द्धारा ग्रहण किये जाने के विड्[illegible] में कुछ नहीं कहा जा सकता। यदि कक्षा में वाचन/पाठन अभ्यास की बात की

जाये तो वही वहाँ एक समप में अधिकाधिक एक ही विधार्थी को अवसर दिया जा सकता हैं और इससे सभी विधार्थियों के वाचन कौषल के विकास को सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। इन वास्ताविकताओं को दृष्टि मत रखते हुए भाषा-प्रयोगशाला को सभी विधालयों के लिए अनिवार्य शिक्षण उपकरण माना जाना चाहिए।

भाषा-प्रयोगशाला में सभी विधार्थी एक साथ व्यक्तिगत तन्मयता के साथ पाठ्यवस्तु के ध्वन्यांकित अंश सुनते हैं, विशेषा बिन्दुओं को नोट करते हैं और उच्चारण, विराम, बलाघात, पति-गति, अनुतान और शैली जैसे तत्वों को यथारूप ग्रहण करते हैं। फिर उसी विधा के पाठयंओ का स्वंय वाचन करके वाचन करके उसे रिकार्ड करते हैं और विषेशज्ञों की दृष्टि से उनका पुनः श्रवण करते हैं। शिक्षक के निर्देशों, नोट किये गये बिन्दुओं और उच्चारित भाषा के मानकों को जानने के बाद वे स्वंय अपनी ही भाषा का विश्ेषण कर सकते है और अपनी भाषा, शब्द-प्रयोग, वाचन और उच्चारण की त्रुटियों का निवारण कर सकते हैं। इस विधि से उच्चारित भाषा कौशलों का विकास सहायता से कराया जा सकता हैं।

भाषा हैं। अपने केबिन मे बैठकर हैडफोन के माध्यम से ध्वन्यांकन को सुनकर उन्हे आसनी से अनुभव हो जाता है कि भाषा में किस तत्व का कितना महत्व और उपयोग हैं। इस दौरान एकाग्रता और शिक्षक के निर्देशों के कारण विधार्थी भाषा के उन तत्वों को भी सुनते और अनुभव करते हैं जिन्हें कक्षा में अथवा आम बोल-चाल के समय वह पहचान नहीं करते।

भाषा-प्रयोगशाला की एक अन्य उपयोगिता व्यक्तिगत आवधान हैं। भाषा-प्रयोगशाला में प्रत्येक विधार्थी अपनी गति के अनुसार ध्वन्यांकन का श्रवण और अपनी रचना या निर्दिष्ट रचना का ध्वन्यांकन कर सकता हैं। जहाँ कहीं वह श्रवण अथवा वाचन में कठिनाई अनुभव करता हैं बटन दबाकर शिक्षक से उसके बारे में स्पष्टीकरण एंव निर्देष प्राप्त कर सकता हैं दूसरी ओर शिक्षक भी नियंत्रण कक्ष से ही बटन दबाकर किसी भी विधार्थी द्धारा की जा रही गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकता है और आवश्यक निर्देश दे सकता हैं। इस प्रकार भाषा-प्रयोगशाला के माध्यम से विधार्थियों के श्रवण एंव मौखिक भाषा कौशल का विकास सुनिश्चित किया जा सकता हैं।

17.9 भाषा-प्रयोगशाला से लाभ

1) छात्र अपनी गति से सीखता हैं।

2) छात्र को अभिप्रेरित मिल जाती हैं।

3) शब्दों को उच्चारण में सहायता मिलती हैं।

4) बार-बार शुद्ध विषय-वस्तु को सुनने से शुद्ध उच्चारण अधिगम में सहायता प्राप्त होती हैं।

5) छात्र अभ्यास द्धारा अपनी गलतियों को ठीक कर सकता हैं।

6) छात्र पाठ को बार-बार दोहरा सकता हैं।

7) छात्र का उच्चारण किसी दूसरे छात्र को सुनायी नही देता वह बिना हिचकिचाहट से कार्य करता हैं।

8) साधारण कक्षा अध्ययन में भाषा अभ्यास के लिए जितना समय चाहिए, वह नहीं मिलता, परन्तु भाषा-प्रयोगशाला में यह सुविधा विधमान हैं।

9) छात्र में क्रियाशीलता बढ़ती हैं।

10) भाषा-प्रयोगशाला में हर छात्र को अभ्यास के लिए पूरा समय मिलता हैं, जबकि कक्षा में समय बटँ जाता हैं।

11) भाषा-प्रयोगशाला में आवश्यकतानुसार अभ्यास का समय मिलता हैं, जबकि कक्षा का समय सीमित होता हैं।

12) भाषा-प्रयोगशाला में किये गये कार्य का रिकार्ड रखा जा सकता है और छात्र अपनी प्रगति का स्वंय निरिक्षण कर सकता हैं।

13) भाषा-प्रयोगशाला छात्रों को व्यक्ति परक शिक्षण (Individualized Teaching) की सुविधा देती हैं, जबकि कक्षा का कार्य सबके लिए समान होता हैं।

14) भाषा-प्रयोगशाला में दृढ़ीकरण की सुविधा के कारण अर्जन निश्चित दिशा में हो सकता हैं.-

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 4- भाषा प्रयोशाला की उपयोगिता तथा लाभ को संक्षेप में लिखों।

....
....
....
....
....
....
....
....
....

17.10 भाषा-प्रयोगशाला की सीमाएँ

भाषा-प्रयोगशाला के अनेक लाभ हैं किन्तु कुछ सीमाएँ भी हैं इनमें सर्वप्रथम है कि इस व्यवस्था में शिक्षक और विधार्थी का सम्बन्ध अप्रत्यक्ष होता है जो कक्षा की अवधारणा से बिलकुल विपरीत हैं। भाषा शिक्षण के सम्बन्ध में चाक्षुक सम्पर्क का बहुत महत्व हैं। बातचीत हो, वाचन हो या पठन, हाथो, आँखो, सिर और अन्य अंगो का संचालन से कथन को स्पष्ट करना भी भाव-सम्प्रेक्षण का माध्यम होता हैं। भाषा के अन्य अवयवों की ही तरह अंग-संचालन का अभ्यास भी सम्पर्क और निरीक्षण के माध्यम से ही होता हैं। किन्तु भाषा-प्रयोगशाला की सारी कार्यविधि यांत्रिक होती हैं जिससे सम्पर्क जन्य अभ्यास की सम्भावना नहीं रहती।

भाषा-प्रयोगशाला विधुत रूप से व्यष्टि शिक्षण का माध्यम हैं। सामान्य कक्षा में विधार्थियों के सामने अन्य विधार्थियों की अ्युद्धियों, त्रुटियों और असफलताओं के माध्यम से भी सीखने की सम्भावना होती हैं। सजग विधार्थी शिक्षक द्धारा अन्य विधार्थियों को दिये जाने वाले निर्देशिों को सुधारता हैं। भाषा-प्रयोगशाला में बैठा विधार्थी अन्य विधार्थियों की योग्यताओं और कमियों से अपरिचित रहता हैं और हर निर्देश अथवा परामर्ष के लिए शिक्षक पर ही निर्भर होता हैं। यह स्थिति विधार्थी को दिग्भ्रमित भी कर सकती हैं।

भाषा-प्रयोगशाला में विधार्थी का दायित्व काफी बढ़ जाता हैं उससे आपेक्षा होती हैं कि वह प्रत्येक विधार्थी को उसकी कमियों को दृष्टिगत करके ध्वन्यांकित अंश सुनवाएँ और उसमें ध्यात्वय बिन्दुओं पर टिप्पणी करें। साथ ही उसे प्रत्येक विधार्थी द्धारा ध्वन्यांकित अंश को सुनकर आवश्यक टिप्पणी परामर्श देना होता हैं, किसी भी वास्तविक परिस्थिति में इन दायित्वों को निभा पाना कठिन होता हैं। अतः भाषा-प्रयोगशाला की निम्न सीमाएँ हैं।

1) भाषा-प्रयोगशाला का प्रयोग भाषा पढ़ने तथा लिखने में नहीं हो सकता।

2) 16 तथा 20 से अधिक छात्र एक ही समय में कार्य नहीं कर सकतें।

3) विदेशों में जो अन्य भाषाएँ सिखाई जाती हैं उनके विद्धान मिलना कठिन हो जाता हैं।

4) यह खर्चीली विधि हैं।

5) जीवंत परिवंश के आभाव में कार्य यांत्रिक और अरूचिकर हो सकता हैं। लोग मशीनों से जल्दी उब जाते हैं।

6) भाषा-प्रयोगशाला नियंत्रित अभ्यास के लिए उपयोगी हो सकता हैं, लेकिन स्वतंत्र अभिव्यक्ति का विकास अधिक नियंत्रण नही किया जा सकता। भाषा सृजनशील और बहु-विकल्पी होने के कारण उच्च स्तर पर भाषा-प्रयोगशाला की अधिक उपादेयता नहीं हैं।

7) भाषा-प्रयोगशाला की स्थापना तथा संचालन व्ययसाध्य हैं। इस संदर्भ में लाभ की गणना को व्यय के अनुपात में देखा जाना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 5- भाषा प्रयोशाला की सीमाएँ लिखों।

....
....
....
....
....
....
....
....
....

17.11 सारांश

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है। कि भाषा प्रयोगशाला सभी शिक्षार्थियों के लिए अधिगम के समान अवसर प्रदान करता है। भाषा प्रयोगशाला अच्छा सुनने के कौशल को विकसित करने और संचार की प्रक्रिया में सुधार करन ेलिए शिक्षार्थियों की सहायता करता है। यह झिझक से छुटकारा पाने में मदद करता है। शिक्षक व्यक्तिगत छात्रों पर नजर रखने और अधिक कुशलता से उन लोगों के साथ बात कर सकता है। शिक्षार्थियों एवं उनकी अनुकूलन क्षमता के अनुसार अधिगम में वृद्धि करता है। भाषा प्रयोगशाला में उनके लिए एक निजी टयूटर है। जैसे प्रशिक्षक अगले प्रश्न या ड्रिल उत्पादन पर ध्यान केन्द्रित नहीं करते है। तो शिक्षक छात्र प्रतिक्रियाओ ंपर अधिक ध्यान केन्द्रित कर सकते है। वर्तमान परिदृश्य में यह भाषा शिक्षण में सूचना संचार प्रौद्योगिक के अनुप्रयोग प्रदान करता है। इस प्रकार शिक्षण को सरल और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुरुप बनाने में विज्ञान और तकनीक का योगदान अद्वितीय है इस दिशा में डिजिटल भाषा प्रयोगशाला एक उपयोगी कदम है।

17.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1- ए. एस. हियास - ने भाषा-प्रयोगशाला की परिभाषा इस प्रकार दी हैं, ‘‘भाषा-प्रयोगशाला एक कक्षा-कक्ष हैं जिसमें विदेशी भाषा के अधिगम को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए विशेष

प्रकार के उपकरण जुटाये जाते हैं। सामान्यतया यह कार्य साधारण व्यवस्था में इतना प्रभावशाली नही बन सकता।''

भाषा-प्रयोगशाला कुछ टेप-रिकॉडरो का नेटवर्क है, जिसमें अध्यापक के टेपरिकॉर्डर; ब्ंदेवसम से 8 से लेकर 30-32 टेप रिकॉर्डर जुडे होते हैं।

पाठ कन्सोल से छात्रों तक पहुँचाता हैं। छात्र कन्सोल से आने वाले पाठ, जैसे साँचा अभ्यास को सुनकर अपना वाक्य बोलते हैं। छात्र के टेप रिकॉर्डर पर दोनों ध्वानियाँ अंकित हो जाती हैं। फिर छात्र अपना टेप रिकाँर्डर चलाकर दोनों ध्वाानियों या उच्चारणों का मिलान कर सकता - और अपना निष्पादन सुधार सकता हैं। कुछ संपन्न भाषा-प्रयोगशालाओं में भाषा के संदर्भ को स्पष्ट करने के लिए फिल्म प्रोजेक्टर, स्लाइड प्रोजेक्टर आदि का भी प्रयोग किया जाता हैं। चूँकि भाषा-प्रयोगशाला जुड़ा हुआ हैं, अध्यापक छात्रों के कार्य का अपनी जगह से निरीक्षण कर सकते हैं और उन्हें व्यक्तिगत या सामूहिक सुझाव दे सकते हैं। इसी तरह छात्र कंसोल की व्यवस्था के अनुसार आपस में बातचीत कर सकतें हैं। भाषा-प्रयोगशाला ध्वनि उच्चारण, वाक्योंच्चारण साँचा अभ्यास, निंयत्रित वार्तालाप, वाचन आदि अनेक कार्या के लिए उपयोगी साधन हैं।

उत्तर 2- भाषा-प्रयोगशाला का लक्ष्य भाषा के व्यवहारिक पक्ष को सुदृढ़ करना हैं

इसके द्वारा उच्चारित भाषा के अवयवों जैसे- उच्चारण, वलाघात, विराम, भाव, शैली, शब्द-चयन, वाक्य संरचना, और विचार संयोजन के साथ पुस्तक वाचन और कविता पाठ इत्यादि को शुद्ध विधि का शिक्षण, अभ्यास और संसोधन का प्रयास किया जाता हैं।

शिक्षक साहित्य की विविध विधाओं के ध्वन्यांकित टेप या सी.डी. विधार्थियो का सुनवाता हैं।

भाषा उच्चारण और शैली के ध्यातव्य पक्षों पर टिप्पणी भी करता है और उन्हें नाटे करने करने की हिदायत देता है ताकि विधार्थी उन पक्षों पर विषेश ध्यान दे।

उत्तर 3- प्रायः भाषा-प्रयोगशाला में 16 अथवा 20 श्रवण कोष्ठ होते है प्रत्येक कोष्ठ में एक मेज तथा कुर्सी होती है जिस बैठकर छात्र कार्य कर सकता है। कोष्ठ में अन्य सामग्री निम्न प्रकार होती हैं।

1. दूरभाषा- परामर्शदाता से बार्तालाप के लिए

2. श्रवणेन्द्रिय दूरभाषा- ईयरफोन

3. स्विच

4. टेप रिकॉर्डर

उपर दर्शाये गये यंत्रों का छात्रों का नियंत्रण कक्ष से सम्पर्क स्थापित होता है अपनी आवाज को रिकार्ड करने तथा फिर सुनने का प्रबन्ध होता है छात्र आवश्यकता अनुसार टेप का चुनाव कर लेते हैं।

प्रत्येक कोष्ठ की चार फुट की उँची दीवारें अथवा अलग-अलग भाग होते है ताकि छात्र बिना किसी बाधा के अपना कार्य कर सके। छात्र परामर्शदाता से परामर्श ले सकता हैं।

उत्तर 4- भाषा-प्रयोगशाला मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के विकास का उपयोगी माध्यम हैं। मौखिक भाषा का अधिगम परिवार और परिवेश से होता हैं। लेकिन वहाँ प्रचलित भाषा का उच्चारण, शब्द-प्रयोग, शैली इत्यादि की दृष्टि से शुद्ध और सटीक होना प्रायः असंभव ही होता हैं। विधालय में भी सभी विधार्थियों और शिक्षकों की भाषा का सर्वभावेन त्रुटिहीन होना असम्भव हैं। कक्षा में हिन्दी-शिक्षण के दौरान शिक्षक से यथायोग्य वाचन की अपेक्षा की जाती हैं किन्तु उसे सभी विधार्थियों द्धारा ग्रहण किये जाने के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। यदि कक्षा में वाचन/पाठन अभ्यास की बात की जाये तो वही वहाँ एक समप में अधिकाधिक एक ही विधार्थी को अवसर दिया जा सकता हैं और इससे सभी विधार्थियों के वाचन काशैल के विकास को सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। इन वास्ताविकताओं को दृष्टिगत रखते हुए भाषा-प्रयोगशाला को सभी विधालयों के लिए अनिवार्य शिक्षण उपकरण माना जाना चाहिए।

भाषा-प्रयोगशाला में दृढ़ीकरण की सुविधा के कारण निम्नलिखित लाभ हो सकता हैं.-

छात्र को अभिप्रेरणा मिल जाती हैं।

शब्दों को उच्चारण में सहायता मिलती हैं।

बार-बार शुद्ध विषय-वस्तु को सुनने से शुद्ध उच्चारण अधिगम में सहायता प्राप्त होती हैं।

छात्र अभ्यास द्धारा अपनी गलतियों को ठीक कर सकता हैं।

छात्र पाठ को बार-बार दोहरा सकता हैं।

छात्र में क्रियाशीलता बढ़ती हैं।

भाषा-प्रयोगशाला में हर छात्र को अभ्यास के लिए पूरा समय मिलता हैं, जबकि कक्षा में समय बटँ जाता हैं।

भाषा-प्रयोगशाला में आवश्यकतानुसार अभ्यास का समय मिलता हैं, जबकि कक्षा का समय सीमित होता हैं।

भाषा-प्रयोगशाला में किये गये कार्य का रिकार्ड रखा जा सकता है और छात्र अपनी प्रगति का स्वंय निरीक्षण कर सकता हैं।

उत्तर 5- भाषा-प्रयोगशाला के कुछ सीमाएँ भी हैं इनमें सर्वप्रथम है कि इस व्यवस्था में शिक्षक और विधार्थी का सम्बन्ध अप्रत्यक्ष होता है जो कक्षा की अवधारणा से बिलकुल विपरीत हैं। भाषा शिक्षण के सम्बन्ध में चाक्षुक सम्पर्क का बहुत महत्व हैं। बातचीत हो, वाचन हो या पठन, हाथो, आँखो, सिर और अन्य अंगो का संचालन से कथन को स्पष्ट करना भी भाव-सम्प्रेक्षण का माध्यम होता हैं। अतः भाषा-प्रयोगशाला की निम्न सीमाएँ हैं।

भाषा-प्रयोगशाला का प्रयोग भाषा पढ़ने तथा लिखने में नहीं हो सकता।

16 तथा 20 से अधिक छात्र एक ही समय में कार्य नहीं कर सकतें।

विदेशों में जो अन्य भाषाएँ सिखाई जाती हैं उनके विद्धान मिलना कठिन हो जाता हैं।

यह खर्चीली विधि हैं।

जीवंत परिवंश के आभाव में कार्य यांत्रिक और अरूचिकर हो सकता हैं। लोग मशीनों से जल्दी आ जाते हैं।

भाषा-प्रयोगशाला नियंत्रित अभ्यास के लिए उपयोगी हो सकता हैं, लेकिन स्वतंत्र अभिव्यक्ति का विकास अधिक नियंत्रण नही किया जा सकता। भाषा सृजनशील और बहु-विकल्पी होने के कारण उच्च स्तर पर भाषा-प्रयोगशाला की अधिक उपादेयता नहीं हैं।

17.13 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न -1- 'भाषा-प्रयोगशाला द्धारा भाषा कौशलों का प्रभावी शिक्षण सुनिश्चित किया जा सकता हैं' - सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

प्रश्न -2- भाषा-प्रयोगशाला से आप क्या समझते हैं? भाषा-प्रयोगशाला में उपकरण तथा प्रक्रिया का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

प्रश्न -3- विधालय में भाषा-प्रयोगशाला होने के क्या लाभ हैं? भाषा-प्रयोगशाला के लाभ तथा सीमाएँ बताइये।

17.14 चर्चा एवं स्पष्टीकरण के बिन्दु

चर्चा और स्पष्टीकरण के बिन्दुः-

इस इकाई के अध्ययन के बाद हो सकता है कि आप कुछ बिन्दुओं पर चर्चा करना चाहें व कुछ अन्य के बारे में कुछ स्पष्टीकरण चाहें, ऐसी स्थिति में कृपया उन्हें नीचे नोट कीजिए।

चर्चा के बिन्दु

....
....
....
....
....
....
....

....
....
....

स्पष्टीकरण के बिन्दु

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....